मासिक प्रकाशन • सितम्बर' ९६

कादम्बिनी

भारतीय भाषाओं की विशिष्ट पत्रिका

ातिवाद के गंभीर
ख़तरों को
समझिए

नौ वर्ष का बच्च
बेचता है : चरस
और भां



हां कुछ भी सच
ीं है

१२ रुपये
हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाश


50
स्वतंत्रता सेनानियों
को
राष्ट्र का प्रणाम
50वां स्वतंत्रता दिवस
davp 96/169

शब्द सामर्थ्य बढ़ाइए

• ज्ञानेन्दु

नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं और उसके बाद उनके उत्तर भी। उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही उत्तर हों, उन पर निशान लगाइए, और फिर यहां दिये गये उत्तरों से मिलाइए। इस प्रक्रिया से आपका शब्द-ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा।

१. **दैवागत** —क. देवताओं द्वारा प्रदत्त, ख. वरदान के रूप में प्राप्त, ग. आकस्मिक, घ. जिसकी आशा न हो।

२. **कालातीत** —क. पुराना, ख. जिसका समय बीत गया हो, ग. भूतकाल, घ. जिसका रिवाज खतम हो गया हो।

३. **पिपासित** —क. लालची, ख. लालायित, ग. जो किसी बात की आकांक्षा रखता हो, घ. प्यासा।

४. **आकलन** —क. मूल्य, ख. पहले से अनुमान लगाना, ग. संभावना, घ. आशा।

५. **साक्षाद्दृष्ट** —क. प्रकटतया, ख. गवाह के रूप में, ग. अपनी आंखों देखा हुआ, घ. साक्षात प्रमाण।

६. **परिज्ञान** —क. विद्वता, ख. पूरी जानकारी, ग. सूचना, घ. पूर्ण अनुभव।

७. **मोहभंग** —क. भ्रांति-निवारण, ख. आशा का टूटना, ग. असत्य भंग होना, घ. हवाई किले का ढह जाना।

८. **हतभाग्य** —क. दुर्भाग्य, ख. भाग्यहीन, ग. निराश, घ. हतोत्साह।

९. **बोधगम्य** —क. बुद्धिमान, ख. समझ में आने योग्य, ग. बुद्धि की बात, घ. योग्यता की बात।

१०. **परिभाषित** —क. परिभाषा के योग्य, ख. स्पष्ट रूप से कथित, ग. सरल, घ. सादे ढंग से।

११. **अल्पायु** —क. जिसकी उम्र थोड़ी हो, ख. परिमित, ग. छोटी उम्र का, घ. अस्थायी।

१२. **परिभाव** —क. पराजय, ख. अनादर, ग. अभाव, घ. थोड़ी मात्रा।

१३. **प्रज्ञापित** —क. भली-भांति सूचित, ख. विदित, ग. विज्ञापित, घ. समझाया हुआ।

उत्तर

१. ग. आकस्मिक, जो दैवयोग से हुआ हो। अनेक अच्छी या बुरी घटनाएं **दैवागत** होती हैं। दैव+आगत (व्युत्-आगम्)

२. ख. जिसका समय बीत गया हो (अंग.—टाइम-बार्ड)। उपनिवेशवाद **कालातीत** इतिहास का अध्याय है। (काल+अतीत)

३. घ. प्यासा। मनुष्य प्रायः प्रसिद्धि के लिए **पिपासित** रहता है। (व्युत्-पा, सन्)

४. ख. पहले से अनुमान लगाना। इस योजना पर व्यय का **आकलन** कर लिया गया है। (व्युत्—आ,कल्)

५. ग. अपनी आंखों से देखा हुआ। वह उसकी **साक्षाद्दृष्ट** घटना है। साक्षाद् (व्युत्—सह्,अक्ष) +दृष्ट (दृश्)

६. ख. पूरी जानकारी। किसी विषय का **परिज्ञान** होने से उस पर व्याख्यान देना वृथा

है । (व्युत् —परि,ज्ञा)
७. क. भ्रांति-निवारण । उसका राजनीति में उन्नति करने का **मोहभंग** हो गया है । (मोह+भंग)
८. ख. भाग्यहीन । वह **हतभाग्य** रहा कि मनोवांछित आजीविका का साधन नहीं जुटा पाया । हत (हन्) +भाग्य (भज्)
९. ख. समझ में आने योग्य । विद्वत्जन किसी विषय को **बोधगम्य** बना देते हैं । बोध (बुध्) +गम्य (गम्)
१०. ख. स्पष्ट रूप से कथित । धर्मग्रंथों के अनेक **परिभाषित** अंक प्राप्य हैं । (व्युत् —परि,भाष्)
११. क. जिसकी उम्र छोटी हो, थोड़ी आयु में मरनेवाला । **अल्पायु** में मृत्यु होना बहुत दु:खद होता है । (अल्प+आयु)
१२. ख. अनादर, तिरस्कार । कुकृत्य करनेवाले का **परिभाव** होता है । (व्युत् —परि,भू)
१३. क. भली-भांति सूचित । सरकारी आदेश भली प्रकार से **प्रज्ञापित** किये जाते हैं । (व्युत् —प्र,ज्ञा)

पारिभाषिक शब्द

At par	=सममूल्य पर
Below par	= अवमूल्य पर
At sight	= दर्शनी
Bill of payment	= बीजक बिल
Carrier	= वाहक
Promote	= पदोन्नति करना
Demote	= पदावनत करना
With effect from	= से प्रभावी
To the extent of	= सीमा तक
To the exclusion of	= को छोड़कर

ज्ञान-गंगा

स्पृहा हि तावती कार्या सत्ता भाग्यस्य यावती ।
पादप्रसारणं कार्य यावत्प्रच्छदनांशुकम् ।।

— आभाण शतकम्, १०२

— उतनी ही आकांक्षा करनी चाहिए जितनी भाग्यानुकूल हो । पैर उतने ही फैलाने चाहिए जितनी बड़ी चादर हो ।

आपो वस्त्रं तिलास्तैलं गंधो वा स यथा तथा ।
पुष्पाणामधिवासेन तथा संसर्गजा गुणाः ।।

— स्कंद पुराण ४५/२५

— जैसे पुष्प होते हैं, उनके संसर्ग से वैसे ही गंध वस्त्र, जल, तिल, तैल आदि में हो जाती है क्योंकि, गुण संसर्ग से ही उत्पन्न होते हैं ।

अपवादो हि सह्येत रक्तेन न मनोव्यथा ।

— हरिवंश पुराण १४/३९

— अनुरागी व्यक्ति अपवाद को तो सह सकता है, परंतु मन की व्यथा को नहीं सह सकता ।

अपथे पदमर्पयंति हि श्रुतवंतोऽपि रजोनिमीलिताः ।

— रघुवंश ९/७४

— राजसिक गुण से आक्रांत होने पर विद्वान व्यक्ति भी ऐसे अकरणीय कार्य,यानी जो नहीं किये जाने चाहिए, उन्हें भी कर बैठते हैं ।

प्रस्तुतिः महर्षि कुमार पाण्डेय

वर्ष ३६, अंक ११, सितम्बर, १९९६

मासिक प्रकाशन

कादम्बिनी

आकल्यं कवि नूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

लेख एवं निबंध

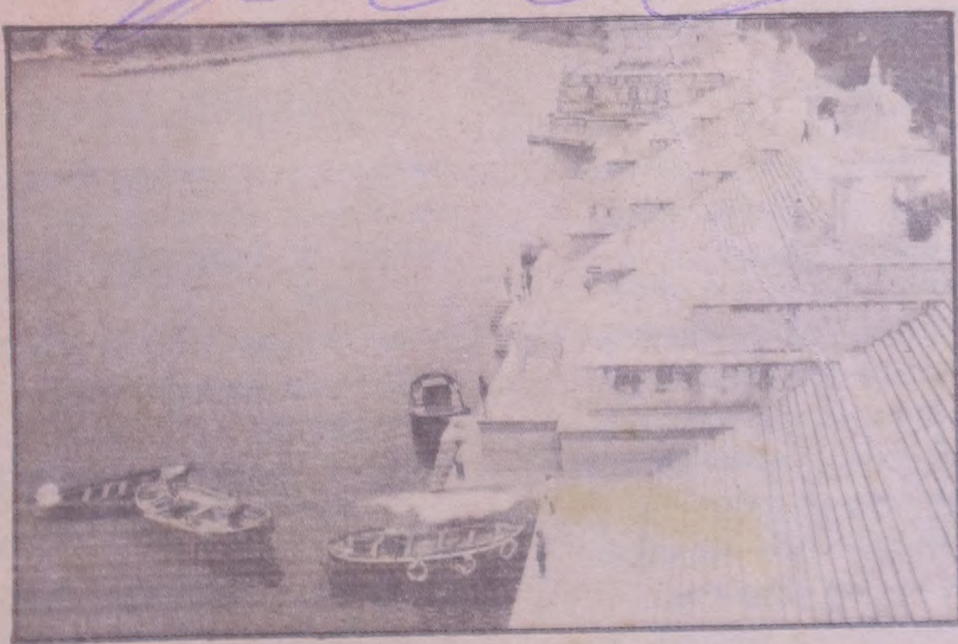
'कादम्बिनी' : चंदे की दरें

अर्द्धवार्षिक : ६० रुपये; वार्षिक : ११५ रुपये; द्विवार्षिक : २२५ रुपये; विदेशों में : पाकिस्तान, नेपाल एवं भूटान; अर्द्धवार्षिक; १८५ रु., (अमरीकी डॉलर-७, पौंड-४), वार्षिक: ३६५ रु. (अमरीकी डॉलर-१३.५०, पौंड-७.५०) अन्य सभी देशों के लिए: अर्द्धवार्षिक २७५ रुपये (१०.५० डॉलर, पौंड-६); वार्षिक: ५३५ रु. (२०.५० डॉलर, पौंड-११.५०)। शुल्क भेजने का पता: प्रसार व्यवस्थापक, 'कादम्बिनी' हिन्दुस्तान टाइम्स लि., १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१।

आवरण (पारदर्शी) : प्रेम कपूर

कार्यकारी अध्यक्ष
नरेश मोहन

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी



कहानियां एवं व्यंग्य

कविताएं

सार-संक्षेप

स्थायी स्तंभ

संपादकीय परिवार

मुख्य उप-संपादक : **भगवती प्रसाद डोभाल,**
वरिष्ठ उप-संपादक : **प्रभा भारद्वाज, सुरेश नीरव**
उप-संपादक : **डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, धनंजय सिंह, सुजीत वाजपेयी**
प्रूफ-रीडरः **प्रदीप कुमार**
कला विभाग प्रमुखः **सुकुमार चटर्जी**
चित्रकारः **भुपेन मंडल**
संपादकीय पताः **'कादम्बिनी' हिंदुस्तान टाइम्स लि., १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१ ।**
फोनः **३३१८२०१/२८६, टेलेक्स : ३१-६६३२७, फैक्सः ०११-३३२११८९**

प्रतिक्रियाएं



पुरस्कृत पत्र

हमने पतन का मार्ग चुन लिया है

वर्तमान में कालखंड के जिस खंड से हम गुजर रहे हैं, उसे कलयुग का आरंभ कहा जा रहा है और अभी से ही मनुष्य के हृदय से प्रेम, स्नेह और कर्त्तव्य-बोध कपूर की भांति उड़ रहा है । अधिकांश व्यक्तियों का परम इष्ट अब मात्र स्वार्थ और धनार्जन रह गया है । संपूर्ण विश्व उद्यान मानवता के अभाव में उसी प्रकार सूख रहा है जैसे—जल के अभाव में पौधा । दूषित राजनीति, विकृत मस्तिष्क, आतंकवाद, फूट और संपन्न तथा शक्तिशाली देशों की छोटे देशों पर जबरदस्ती—जैसे दावानल संपूर्ण विश्व की जड़ों को खोखला कर रहे हैं । चिंतक, दार्शनिक, मनीषी और समाज-सुधारक पत्रकार अपने रक्त से लिखकर जनचेतना का संदेश दे रहे हैं, उन्मादी अवस्था में चिल्लाकर आगाह कर रहे हैं कि अभी भी समय है चेत जाओ और इस सुंदर धरा को नष्ट होने से बचा लो, परंतु अंधे महत्त्वाकांक्षी लोग अब बधिर भी हो रहे हैं । भीषण और शर्मनाक कांड हाथी की मस्त चाल से चलते आ रहे हैं और संपूर्ण राष्ट्र की निष्ठा और मानवता पर हंसते हुए अंगूठा दिखाकर आगे बढ़ते जा रहे हैं । सचाई सिसक रही है और छल-कपट की खूब छन रही है । मनुष्यता मन मसोस रही है जबकि राजसत्ता राज्य कर रही है ।

क्या है हमारे कलियुग का यथार्थ स्वरूप ? सतयुग, त्रेतायुग और द्वापरयुग के संबंध में तो हम बहुत कुछ जान चुके हैं, परंतु कलयुग का यदि यह आरंभ है तो भविष्य का स्वरूप क्या होगा ? हमारी नन्हीं पौध को हम पाठशालाओं में भेजें या भविष्य का संभावित स्वरूप समझकर उन्हें भी कलियुग के हथकंडे सिखाने के लिए नवीन संस्थाएं खोलें, जिससे उन्हें आगे चलकर पग-पग पर कूटनीतिज्ञों और दानवता के दंगलों में करारी हार नहीं मिले और जिससे वह परिपक्व होकर हमें इस बात के लिए नहीं कोसें कि क्यों हमने उन्हें इस प्रदूषित कलियुग में सतयुग के संस्कार सिखाकर जीवित रहते हुए भी मृतप्राय कर दिया ? मेरा यह पत्र सभी संवेदनशील और भावुक व्यक्तियों की आवाज है ।

—विवेक हिरदे

२८९, लोकमान्य नगर, इंदौर

अंगरेजी का छलनामयी प्रयोग

कादम्बिनी का जुलाई अंक पढ़ा। सारगर्भित 'काल चिंतन' के माध्यम से आप ज्ञान उलीचते और उड़ेलते हैं। अंत में, सत्य के मोती हमारी हथेलियों में थमा देते हैं। इस तरह, जीवन के समस्त विकारों से जूझने का, हम अभयदान पा लेते हैं।

हिंदी अंतरराष्ट्रीय भाषा है, में हिंदी भाषा के प्रतिपल विलीन होते अस्तित्व का सही चित्रांकन किया गया है। बधाई। हमारी भाषा हिंदी की प्रगति, प्रचलन और उपयुक्तता के आकलन का कार्यभार, आम हिंदुस्तानी के कंधों पर है। पश्चिम की चकाचौंध में झुलसी मानसिक सोच को ही हम अंतिम प्रतीति मान लेते हैं, यही हमारी सबसे बड़ी विडंबना है। ऊर्ध्वता की कसौटी पर प्रारंभ से ही खरी उतरी, हिंदी भाषा को, हम अपने हृदय और मन की निभृत तलहटियों तक क्यों नहीं ले जा पाते हैं ? अपने ही आत्मजनों से, परिचितों से, बच्चों से, यहां तक कि घर के पालतू पशुओं से भी अंगरेजी में बात करने पर, हम हर वक्त क्यों आमादा होते हैं ? अपनी राष्ट्रीय भाषा का तिरस्कार कर गर्व से फूलकर कुप्पा हो जाते हैं हम। तो फिर, किन आदर्शों पर चलने का दंभ भरते हैं हम ?

हिंदी साहित्य ने, रचनाशील होने के संघर्ष में अपनी श्रेष्ठता और प्रामाणिकता सिद्ध कर दी है। फिर भी महानगर की जिंदगी में जो भी हिंदी बोलता है—वह अनगिनत कटाक्ष झेलता है, जो भी हिंदी लिखता है—वह उपालंभ की नीरव वेदना सहता है और जो भी हिंदी में सोचता है या उसे सहजता से ग्रहण करता है—वह आधुनिक माहौल में, अछूता छूट जाने की घनी पीड़ा सहता है।

चाहे स्कूल हो, दफ़्तर हो, या स्वयं के घर में मित्रों की जमावट ; चाहे विभिन्न प्रांतों के लोगों की बैठक हो या हिंदी भाषी प्रांतों के लोगों का जमाव—बातचीत अंगरेजी में ही होगी। मान-मर्यादा, प्रतिष्ठा, उच्च पदवी और धनी होने का परिचायक माना जाता है—'हिंदी नहीं बोलना।' आधुनिकता का यह मापदंड, हमारा दुर्भाग्य है। इतनी हेय दृष्टि से देखी-सुनी जाने वाली हिंदी भाषा, कब तक भारतीयों द्वारा ग्राहय-मान्य और स्वीकृत होने को तरसती रहेगी ? हिंदी को, सर्वोच्च शिखर पर, पुनः स्थापित करने का संकल्प, निस्संदेह, हम सभी को करना होगा।

—डॉ. अनिता द्विवेदी
१६२/बी/३३७
लेक गार्डन्स, कलकत्ता-४५

कुरसी-युद्ध

कालचिंतन में कुरसी के स्वरूप, उद्देश्य और प्रयोग को आपने अत्यधिक सुंदरता से बहुत कम अल्फाज में समेट दिया है। कालचिंतन के अंत का वाक्य—"देखें कब तक चलता है कुरसी युद्ध—कितनी बार, कितने समय, कब तक ?" यह वाक्य पाठक के लिए चिंतन का ऐसा सूत्र छोड़ जाता है जिसमें भौतिकतावाद, अध्यात्मवाद, मानवतावाद, पाशविकता और सामाजिकता के विभिन्न रंग छिपे हैं। कुरसी युद्ध अर्थात अस्तित्व युद्ध—और अस्तित्व युद्ध तो जीवन के विकास के साथ ही प्रारंभ हो गया था।

कुरसी के मूल उद्देश्य को कौन ढूंढ़ेगा, कौन संवारेगा, क्योंकि सब तो व्यस्त हैं अपने-अपने

युद्ध में, क्या कहें इस युद्ध को — अस्तित्व युद्ध, कुरसी युद्ध या संघर्ष युद्ध ?

—नवल भारतीय

चौधराना, फतेहपुर (उ. प्र.)

साहित्यकार मृत्युशैय्या पर

जुलाई अंक में 'आखिर कब तक' स्तंभ के अंतर्गत आप की टिप्पणी 'कौन पूछता है लेखकों को' विचारोत्तेजक लगी। निराला— जैसे महाकवि तथा मुंशी प्रेमचंद और कुबेर नाथ राय — जैसे लेखक शासन तंत्र की उपेक्षा के शिकार हुए हैं। आज यह खबर पढ़कर स्तब्ध रह गया कि ७२ वर्षीय लेखक श्री अमरकांत हड्डियों के गलने के रोग से पीड़ित हैं। वे आर्थिक दृष्टि से अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में भरती होने में असमर्थ हैं। लेखकों और पत्रकारों ने सरकार से श्री अमरकांत को आर्थिक सहायता प्रदान करने का अनुरोध किया, जिसे सरकार द्वारा ठुकरा दिया गया। यह असंवेदनशीलता और संवेदनहीनता की चरम सीमा है। नेता को छींक आने पर महंगे से महंगा इलाज उपलब्ध करानेवाली सरकार मृत्यु से संघर्ष करनेवाले साहित्यकार की सहायता नहीं करना चाहती।

—ललित कुमार शर्मा

भोपाल (म. प्र.)

सरकार को सहायता करनी चाहिए, किंतु साहित्यकार याचक बनकर सहायता पाने कब तक [illegible] है? [illegible] है, [illegible] है। सहायता साहित्यिक मित्रों को करनी चाहिए।—संपादक

[illegible]

प्रशंसा में हमें काफी संख्या में पत्र मिले हैं, उनमें प्रमुख हैं : तारकेश्वर शर्मा 'विकास', मंडल रेल प्रबंधक (राजभाषा), खड़गपुर (प. बं.), सुश्री नीता कुमारी, पीताम्बरनगर उन्नाव (उ.प्र.), राधाकांत भारती, रामाकृष्णपुरम, नयी दिल्ली, सत्येंद्र कुमार श्रीवास्तव, गोविंदपुर कॉलोनी, इलाहाबाद; वरुण कुमार मिश्र, बंजारी रोड, गोपालगंज (बि.), अंशुमाली रस्तोगी, बरेली, नवलखा, मधुबनी, संतोष तिवारी, लीडर रोड, इलाहाबाद; डॉ. अशोक रंजन सक्सेना, बाघम्बरी गृह योजना, इलाहाबाद, रमेश कुमार राठी, मंगलवारा बाजार, पिपरिया, बद्रीप्रसाद परसाई, आजाद वार्ड, पिपरिया, महेश शर्मा, राजेन्द्र नगर, पिपरिया, हरीशंकर शर्मा, मीठी गली, पिपरिया तथा अनंत साहू, अर्चना कृषि केंद्र, पिपरिया, होशंगाबाद।

कार और पाठक की जेब

'हवा में चलेंगी कारें' जुलाई' ९६ की कादम्बिनी में आपके द्वारा प्रकाशित जानकारी बढ़ते हुए प्रदूषण के लिए ठीक हो सकती है। विचारणीय है आपके द्वारा पाठकों से इस कार को खरीदने हेतु बुकिंग की अपील।

महोदय एक महत्त्वपूर्ण तथ्य कादम्बिनी के पाठकों के बारे में आपको बता देना जरूरी समझता हूं कि, हम लोग मर्सीडीज बेंज कार तो क्या, नयी साइकिल खरीदने की सोचने में आधी उमर लगा देते हैं। आपकी निगाह में मर्सीडीज बेंज की कीमत शायद कादम्बिनी के एक अंक के तुल्य होगी, परंतु कादम्बिनी के वास्तविक पाठकों की जेब का [illegible] आप [illegible] नहीं कर पाये, खेदपूर्ण है।

—[illegible] मोहन

[illegible]

हिंदू धर्म श्रेष्ठ जीवन दर्शन

कादम्बिनी (जुलाई ९६) में सार-संक्षेप के

अंतर्गत हिंदू धर्म क्या है ? पर गांधीजी के विचार पढ़ने को मिले, रुचिकर लगे ।

वास्तव में जिसे हम हिंदू धर्म कहते हैं, वह धर्म सिद्धांततः शाश्वत है, मानव धर्म है, एक श्रेष्ठ जीवन दर्शन है ; जिसके अंदर दुनिया के सब मत-मतांतर अपनी अस्मिता को सुरक्षित रखते हुए अपनी-अपनी पद्धति से उपासना कर सकते हैं । जैन व बौद्ध ही क्या, शाक्य, शैव, सिक्ख, वैष्णव, माधव, कबीर ये सब हिंदू-दर्शन के ही अंतर्गत आते हैं ।

वस्तुतः श्रेष्ठतम मानव की कल्पना या यूं कहें कि नर से नारायण बनने के लिए जो कुछ भी श्रेष्ठ गुण चाहिए, वह सब हिंदू धर्म के अंदर निहित हैं, अतः इसे एक श्रेष्ठ जीवन-दर्शन कहने में संकोच नहीं होना चाहिए ।

—सतीश तिवारी 'सरस'

मोहद (करेली), नरसिंहपुर (म. प्र.)

हमें इन पाठकों के भी पत्र मिले हैं : शतंजय शर्मा, नजीबाबाद मार्ग, कोटद्वार (गढ़वाल) ; कृष्ण कुमार सिंह, ढाना, सागर (म. प्र.) ; संजय वर्मा डी. एम., मनावर (म. प्र.) ; पूर्णिमा उक्सा, समुथर, झांसी (उ. प्र.) ; रचना भोला, फरीदाबाद (हरि.); श्रीमती शांता सरन, लूकरगंज, इलाहाबाद ; रमेश शर्मा, न्यू शांतिनगर, रायपुर (म. प्र.) ; दामोदर शर्मा, पोरसा, मुरैना (म. प्र.) ; गिरीशचंद पांडे, रानीबाग ; सीता सत्य उपाध्याय, बधवार कला, पन्ना (म. प्र.) ; जयप्रकाश मिश्र, शिवहर (बि.) ; चंद्रा र. देवत, नसियारोड, इंदौर ; दीपक अरोरा, चाकघाट (म. प्र.) ; रामदुलारी देवी, सिकंदरा जमुई (बि.) :

पाठकों से

जुलाई' ९६ अंक के पृष्ठ १५२ पर : बेढ़ब बनारसी का जन्म १८९५ में हुआ था तथा १७४ पर : यंग इंडिया ६-१०-१९२१ पढ़ें ।



— समिधा से पवित्र परिवेश और श्रोताओं की प्रतीक्षित जिज्ञासु आंखें !
— प्रवचन के पश्चात् महात्मा ने समस्त जिज्ञासुओं को देखा ।
— एक के बाद एक हाथ उठे ।

□

— उपस्थित हर व्यक्ति याचक था ।
— समस्याओं के अथाह स्रोत भीड़ के झरने में बह रहे थे ।
— महात्मा ने सौम्य दृष्टि से उपस्थित जन-समूह को देखा और मौन हो गये !
— एक के बाद एक भक्त प्रश्न पूछने लगे । विश्वास था उन्हें कि उनकी समस्याएं सहज हो जाएंगी ।
— क्रम चलता रहा !
— महात्मा ने देखा एक अत्यंत दीन-हीन जिज्ञासु पीछे बैठा है । उन्होंने पूछा, 'तुम ?'
— 'नहीं प्रभो ? मुझे कुछ नहीं चाहिए । मेरी कोई जिज्ञासा नहीं है । मैं मात्र आपके दर्शन के लिए आया हूं । आपकी कल्याणमयी अमृतवाणी ने मेरे अंत:करण को पवित्र कर दिया है । मैं संतुष्ट हूं ।'

□

— श्रोता स्तब्ध रह गये ! सबसे गरीब, सबसे अधिक याचक दिखनेवाला

व्यक्ति संतुष्ट है !

— संतोष तब है क्या ?

— समस्याएं जन्म कहां से लेती हैं ?

— संतोष श्रेष्ठ शांति है ।

— संतुष्ट व्यक्ति के लिए समस्या एक अज्ञात पक्षी है !

— कितने हैं ऐसे !

— कौन नहीं है याचक यहां । चाहते, न चाहते हुए भी हाथ फैल जाते हैं । याचना की लालसा धन-सम्पदा और स्थितियों को नहीं देखती । जिसके पास सब-कुछ है, वह भी और कुछ चाहता है ! लगता है तीव्र ग्रीष्म में सूखते हुए मुख के लिए बार-बार जल पाने के आकांक्षी की तरह, जहां जो मिल जाए, जितना मिल जाए पानेवाले हमेशा असंतुष्ट रहते हैं । पाकर भी वे पाते नहीं क्योंकि मोह और मिथ्या-जगत को बटोरने की उनकी आकांक्षा कभी प्यास को मरने नहीं देती !

— एक गरीब या वास्तव में पाने का अधिकारी संतुष्ट है । वह असंतोष के मोहपाश से दूर है ।

— सम्पन्नता अपने आपमें अभिशाप है और वह विपन्नता को जन्म देती है ।

- धन-सम्पत्ति है, बढ़ जाए तो क्या गलत है
- सांसारिक सुख-सुविधाएं हैं लेकिन नंगी दीवार पर कितनी भी कीलें ठोकिए दीवार नंगी ही रहेगी ।
- भोग मोहपाश में आवृत्त है । तप्त ग्रीष्म से जीभ लपलपाते श्वान की तरह वह अपनी धमनियों को शक्ति से अधिक व्यस्त रखता है ।
- कुरसी में आसीन अधिकारों के मखमली पृष्ठों पर काली स्याही के लंबे अक्षरों को सभी खोजते हैं । पृष्ठ कहीं सफेद न रह जाए, उनकी आकांक्षा है ।

□

— असंतोष से बड़ा अभिशाप और कुछ नहीं है ।

— संतोष स्वयं स्वर्ग की सीढ़ियां हैं ।

— रेगिस्तान में सूखे हुए परिवेश के बीच भी संतोषी व्यक्ति प्यास से दूर है ।

— प्यास याचना है ।

- याचक अमर्यादित होता है ।
- याचक असंतुष्ट होता है ।



- याचक सब-कुछ समेट लेना चाहता है
- सब-कुछ समेटने के बाद भी याचना पूरी नहीं होती
- सारा जीवन याचक बनकर हथेलियां फैलाए रखने में चला जाता है ।

— जिसकी हथेलियां खुली-होंगी वह दूसरों को क्या देगा ?

— देता वह है जिसकी मुट्ठी बंद होती है ।

— जन्म लेनेवाले बालक को देखिए ! वह बंद मुट्ठी से अपनी पहली सांस बाहर आकर छोड़ता है । परिजन उसकी मुट्ठी खोल देते हैं और हाथ सीधा पसार देते हैं ।

— एक बार पसरा हाथ फिर बंद तभी होता है जब श्वासों से राजमहल छिन्न-भिन्न होकर महाप्रतापी और शक्तिधारी को भी मात्र 'शव' की संज्ञा से अभिषिक्त कर देते हैं ?

□

— क्यों करते हो बंधु, यह सब !

— विवस्त्र जन्म लिया है और विवस्त्र ही जीवन अंत होता है । बीच में कितने वस्त्रों की पिटारी भरना चाहते हो ।

— मनुष्य-जीवन की सार्थकता है उसे नियमित और संयमित रखने में । कभी अपने घर का हिसाब देखिए, सबसे कम व्यय भोजन में होता है । कहा जाता है तब भी 'पापी पेट' के लिए क्या नहीं करना होता !

— पेट पापी कहां है ?

— पेट तो मात्र जल से भरा रह सकता है और जिंदगी को अमृत रस दे सकता है ।

— 'पापी पेट' के नाम धन-सम्पत्ति एकत्रित करना और मर्यादाओं की सीमाओं का गलत ढंग से आकलन करना मनुष्य जीवन का लक्ष्य नहीं है ।

— मर्यादाएं शून्य हैं यह भी अर्द्ध-सत्य है । पूर्ण सत्य तो है कि मर्यादाएं अपनी अकांक्षाओं की पूर्ति स्वयं कर लेती हैं और संतुष्ट होकर निश्चिंत और शांत हो जाती हैं ।

— इसी शांति की खोज ने न जाने कितने तत्त्वों को अशांत किया है । अशांत होने की स्थिति के पहले सोच लेते कि शरीर के हर अंग का अपना धर्म है । वही धर्म समूचे व्यक्तित्त्व को एकरूपता देता है और नये व्यक्ति का निर्माण करता है । शरीर की आकांक्षाएं-इच्छाएं भीतर से अभिभूत होती हैं, जैसे पसीना निकलना होता है निकलेगा ही । ठंडक मिल जाएगी, पसीना अपने आप अभ्यंतर में विलीन हो जाएगा । अतिरिक्त श्रम कर पसीना निकालना चाहेंगे तो हृदय की निर्झरणी जागृत होगी और अंततः शरीर को निर्बल बना देगी ।

— प्रत्येक व्यक्ति की कार्यशक्ति सीमित है ।

— कार्यशक्ति व्यक्ति की सम्पदा है । सम्पदा उतनी ही हो जितनी आवश्यक है । इसके विपरीत व्यर्थ के आडंबर उदित होंगे तो दृढ़ता से उनको वशीभूत करना होगा ।

— वशीभूत जिसने कर लिया, चाहे वह स्व के लिए हो अथवा पराश्रयी, सिद्धि की अंतिम सीढ़ी उसने पा ली ।

— सिद्ध-पुरुष के लिए विश्व-व्यापी सम्पदा के अमोघ द्वार खुले हैं ।

— सिद्ध-पुरुष याचक नहीं होगा । वह याचकों का आश्रयदाता होगा । ऐसे व्यक्ति के रक्त की एक बूंद 'विरक्तों' के लिए महानद है । उसका पसीना गुलाब के पुष्पों की वह सुगंध है जो मन और मस्तिष्क को तारोताजा तो करती ही है; वह गुलाब से बाहर आकर फिर भीतर जाती है और जो लिया है, वह वापस कर देती है ।

— विडंबना देखिए, गुलाब से सुगंध पाने के लिए गुलाब को विलंबित करना होता है, लेकिन सिद्ध और संतोष के पहेरुए सुगंध निकालकर फिर गुलाब को उसका मूल आधार दे देते हैं । गुलाब की चेतना कभी मिटती नहीं ।

— गुलाब की तरह ही जागृत अवयव उदित होते हैं । ये जागृत अवयव याचक बन सकते हैं, वही याचकों के दाता भी होते हैं ।



— सत्य को समझने की सामर्थ्य सीमित है ।
सत्य के सीमित को असीमित कर दिया जाए तो चिंतन के क्षण कहीं और कार्य-व्यस्त हो जाएंगे !

□

— बंधु ! जाइए, अवश्य जाइए— महापुरुष हों, तीर्थ के द्वार हों, मंदिर के देवालय हों, नवाज की दीवारें हों, गिरजाघर की घंटियां हों— कुछ भी हो जाइए । जाइए पर्वत-पहाड़, नदी-नालों के सौंदर्यलोक में जाइए, हाथ की मुट्ठी बंद रखिए, बस ।

— बंद मुट्ठी सवा लाख की ।

— खुली हथेलियां पीड़ित और पीलिया से बीमार कमजोर देह यष्टि की ।

— संतोष को जीवन का माध्यम बना लिया जाए तो असंतोष की बेलें हरसिंगार की तरह अचानक हथेलियों में कैद होंगी । उनकी सुगंध शरीर की रक्त शिराओं को गतिमान रखेगी और मनुष्य-देह अपनी क्षमता के अनुरूप विश्वव्यापी होगी ।

— महापुरुष हो या त्यागी-तपस्वी जिसने भी अंततः देवत्व की संज्ञा प्राप्त की है उसने पहले हरसिंगार ही पाया है और उसी की सुगंध को वह सबको लुटाने में समर्थ रहा है—सदेह हो या विदेह !

राजेन्द्र अवस्थी



रूस की बदली तसवीर

रूस की तसवीर इस बार बिलकुल अलग थी । एक विशाल साम्राज्य के रूप में समूचे रूस को मैंने कम-से-कम ३० बार देखा है । वहां के बड़े-से-बड़े प्रतिष्ठानों में मैंने भाषण दिया है और सभी महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों से धीरे-धीरे मेरी मित्रता हुई है । विघटन के पहले स्वयं गोर्वाच्योव से मेरी विस्तार से बात हुई थी । गोर्वाच्योव ने पूछा था, 'मि. अवस्थी इज इट बैड टू बी इन अमरीका' यानी—'क्या अमरीकी होना अनुचित है ?' मैंने उत्तर दिया था, 'सरटेनली नाट, अनलेस यू हैव इंपीरियलिस्टिक डिजाइंस (बिलकुल नहीं जब तक कि आपकी नीयत साम्राज्यवादिता से मुक्त है ।)' इसके बाद लंबी बातचीत के बाद मैंने बताया था कि भारत और रूस में बहुत अंतर है । भारत में लोकतंत्र की जड़ें बहुत गहरी हैं, इसलिए जब इंदिरा गांधी ने इमरजेंसी लगायी तो जनता उनकी विरोधी हो गयी । उसी जनता ने इंदिरा गांधी को फिर सर आंखों पर बैठा लिया । आपका देश तानाशाही के साये में वर्षों से पल रहा है, इसलिए पहले जनता को धीरे-धीरे लोकतंत्र में रहना सिखाइए ।

नहीं, मेरा रास्ता और

गोर्वाच्योव ने उत्तर दिया था, 'नहीं मैं सब एक साथ खोलना चाहता हूं ।' मैंने तभी गोर्वाच्योव को आगाह कर दिया था कि इसकी भारी कीमत आपके देश को चुकानी पड़ेगी । गोर्वाच्योव ने अपने हठीलेपन को बनाये रखा और आज एक महान



देश की हालत यह है कि 'एक दिल के टुकड़े हजार हुए, इक इधर गिरा इक उधर गिरा ।' समूचा महान सोवियत संघ छोटे-छोटे राज्यों में बंट गया ।

मास्को खामोश नहीं है

इस बार टूटे हुए देश के एक हिस्से यानी रूसी गणराज्य की यह मेरी दूसरी यात्रा थी । जिस दिन मैं पहुंचा, वहां (जुलाई का दूसरा सप्ताह) भीषण गरमी थी । तापमान ३० डिग्री सेल्सियस के आसपास था । रूस में कहीं पंखे नहीं हैं । सूरज रात साढ़े बारह बजे तक तेज रोशनी के साथ चमकता है और चार बजे सुबह फिर आ धमकता है यानी साढ़े तीन घंटे की रात, बिना पंखे के और सूरज की रोशनी में । तीन दिन खासे तपते रहे । चौथे दिन वर्षा हुई तो थोड़ा तापमान नीचे आया । जिस दिन मैं पहुंचा था, उसी दिन मास्को के मध्य में दो बम विस्फोट हुए । मुझे लगा कि एशिया के दूसरे देशों के बम धमाके यहां भी पहुंच गये हैं वरना रूस में धमाके होना एक सपना था । एक बात

और देखी 'रेड स्क्वायर' को छोड़कर समूचे मास्को शहर से लेनिन की प्रस्तर प्रतिमाएं हटा दी गयी हैं । वहां यह भी सुना कि मुसोलियन में रखा हुआ लेनिन का शव कभी भी दफन किया जा सकता है ।

अमरीका की घुसपैठ

अमरीका ने मास्को शहर में पूरी घुसपैठ कर ली है । एक जमाना था रूसी के सिवाय कोई भी भाषा वहां नहीं बोली जाती थी । मैंने देखा, इस बार कुछ 'न्यूसाइन' और 'कियोस्क' में यहां-वहां अंगरेजी पहुंच गयी है, लेकिन तब भी अंगरेजी वहां भाषा के रूप में अभी तक नहीं पहुंच पायी है । आप रूसी नहीं जानते तो फौलादों और पत्थरों से बना मास्को शहर वही पुराना शहर दिखायी देगा । रूसी दुभाषिया मिल जाए तो वह शहर भीतर से पिघलता हुआ नजर आएगा ।

कीमतें मत पूछिए

पहले एक जमाना था जब सवा डॉलर देने होते थे तब एकरूबल मिलता था, अब एक डॉलर पाने के लिए ५,१९१ रूबल देने पड़ते हैं । कीमतें अनाप-शनाप आसमान छू रही हैं । एक लाख रूबल के नोट धड़ल्ले से, पहले के एक रूबल की तरह उड़ जाते हैं । वेतन और मजदूरी उस हिसाब से बढ़ी नहीं, इसलिए हर आदमी अभावग्रस्त है ।

चेहरे पर शिकन नहीं

मास्को में अब रहने का कोई मजा नहीं है, लेकिन मुझे ताज्जुब हुआ कि मास्को निवासियों के चेहरों पर न शिकन है और न शिकायत । वोदका यदि महंगी हो गयी है तो भी खासी पी जा रही है । मेरे साथ नौ आयुर्वेदिक चिकित्सकों का एक शिष्टमंडल गया था । मैं उस शिष्टमंडल का प्रमुख था । इन वैद्यों ने संसद सदस्यों से लेकर सामान्य जनता तक लगभग अस्सी रोगियों को देखा । उनमें २५ प्रतिशत तो ऐसे थे जो इस बात की आयुर्वेदिक दवा चाहते थे कि उनकी शराब की लत कैसे छूटे ? वैसे भी एलोपैथी से उनका मन भर गया है और भारत की आयुर्वेदिक पद्धति को अपनाने के लिए पागल हैं ।



हमने एक [illegible] खोला

आयुर्वेद के प्रति इस बढ़ी हुई जिज्ञासा का प्रतिफल था कि संसद की सर्वोच्च स्वास्थ्य समिति ने हमारे साथ अनुबंध किया। शहर के 'हास्पीटल-८३' ने एक पूरा आयुर्वेदिक विभाग अपने खर्च पर खोलने का हमसे अनुबंध भी कर लिया है।

भारत के प्रति [illegible] और सम्मान

रशियन [illegible] की है। आज भी रूसियों का प्रेम भारत के साथ बरकरार है। जवाहर लाल नेहरू को वहां की वह नयी पीढ़ी भी नहीं भूल पा रही है जिसने जवाहर लाल नेहरू को नहीं देखा है। 'मैं अब आ रहा हूं' के बोल सरकारी लोगों में भी ठहाका के माध्यम बनते थे। इंदिरा गांधी और राजीव गांधी के चौक का नाम बरकरार है जबकि मास्को की सबसे महत्वपूर्ण सड़क 'गोर्की स्ट्रीट' का नाम बदल दिया गया है। अब उसका नाम है—तेरस्काया स्ट्रीट। एक समय था जब स्तालिनग्राद बना और अब उसका नाम पीटर्सबर्ग हो गया है, रूसी मिजाज के अपने नक्श। एक जमाने में रूस में जारशाही थी यानी वहां के शासक जार राजा थे। जार और कोई नहीं बल्कि उनका असली नाम है पीटर। मजेदार बात तो यह है कि पीटर—प्रथम को तो वे आज

भी 'पीटर दि ग्रेट' कहते हैं और उसके बाद के सारे पीटर यानी जार शासक अत्यंत निंदा और घृणा के पात्र हैं । जार शासकों ने बेहद ज्यादतियां की हैं, लेकिन मास्को जैसा दुनिया का सबसे मजबूत शहर भी उन्हों का बनाया हुआ है । मास्को में सात ऐसी मजबूत और कलापूर्ण इमारतें हैं कि दुनिया में कहीं नहीं देखने को मिलेंगी । जब रूस टूटा नहीं था तब भी इन सातों इमारतों को 'सेवन फोलियोज' कहा जाता था । यह नाम अब भी बरकरार है, लेकिन अब इनमें गृह मंत्रालय, विदेश मंत्रालय के साथ-साथ और भी कार्यालय हैं । एक में तो एक शानदार होटल भी बन गया है ।

अब वे दिन नहीं रहे

मैं अभी बता चुका हूं कि मास्को मैं तीस-बत्तीस बार गया हूं । वहां के सबसे बड़े होटल 'होटल रूसी' (होटल रशिया) में कई बार ठहर चुका हूं । यह दुनिया का सबसे बड़ा होटल है । 'होटल मसकवा' में ठहर चुका हूं । मसकवा नदी के किनारे बना है यह शानदार होटल । मसकवा नदी के कारण ही इस शहर का नाम मास्को पड़ा है, लेकिन अब इन होटलों में ठहराने का सामर्थ्य अतिथि सत्कार की इच्छाओं के होते हुए भी किसी में नहीं है । सात-आठ सौ से लेकर हजार डॉलर तक एक कमरे का किराया और एक डॉलर में हजारों रूबल ? कौन आखिर इतना पैसा खर्च करेगा ? मैंने वैसे बाकी सब चीजें बरकरार देखीं—निरंतर जलती हुई अग्निशिखा, सूना रेडस्क्वायर और रविवार के दिन अपने परिधानों में शहीदों के सामने श्रद्धावनत नये-नये शादीशुदा जोड़े । शादी के बाद हमारे यहां विवाहित दंपत्ति मंदिर, मजारों और गिरजाघरों में जाते हैं रूस में पुरानी परंपरा बरकरार है, वे शहीदों को सिर झुकाते हैं ।

वर्तमान सत्ता में रूसी सुखी नहीं हैं, लेकिन जो अपने काम में लगे हैं, उसे ईमानदारी से अपने ढंग से कर रहे हैं । पहले यह बात बता चुका हूं कि उनमें कोई शिकायत नहीं है और उसी तरह के हंसमुख भी हैं । इस यात्रा के दौरान अनेक व्यक्तियों ने हमारा सम्मान और स्वागत किया, इनमें बहुभाषी विश्वविद्यालय के कुलपति, रूसी संसदीय स्वास्थ्य समिति के अध्यक्ष, विश्व सांस्कृतिक शांति परिषद के अध्यक्ष वेलिंटिन सिदरो और हास्पीटल-८३ के सबसे प्रमुख व्यक्ति, वहां के निदेशक आदि इनमें शामिल थे । सिर्फ निराशा हुई तो रूसी गणराज्य की विषम परिस्थितियों में अनेक जाने-पहचाने और महत्त्वपूर्ण व्यक्ति या तो रहे नहीं, या महत्त्वहीन हो गये अथवा सत्ता से उनका कोई संबंध नहीं रहा ।

—राजेन्द्र अवस्थी

शब्द, वाक्य और सिद्धांत उस समय भोथरे हो जाते हैं, जब उनकी धार व्यवहारिक जीवन में कोई परिवर्तन नहीं ला पाती । शब्दों में और यथार्थ के जीवन में छल, छद्म और दुराव यहीं से शुरू होता है और शब्द अपनी अर्थवत्ता को खो देते हैं । जीभ पर सत्य और आचरण में असत्य— यह विरोधाभास किसी व्यक्ति को थोड़ा-बहुत सुकून भले ही दे दे, लेकिन आखिरकार वह अपनी विश्वसनीयता खो देता है । कुरान शरीफ जीवन के उस उज्ज्वल पक्ष की हिमायत करता है जहां सत्य, परोपकार, दया, प्रेम, साहचर्य, मैत्री और सद्भाव का बोलबाला हो और जहां घमंड, सांसारिक-वैभव के प्रति आसक्ति, विग्रह, द्वेष और प्रतिशोध की भावना का अभाव हो । इन सिद्धांतों को जीवन में उतारने से भला किस धर्मशास्त्र को विरोध हो सकता है ? इसलाम की मान्यताएं, जीवन शैलियां और इबादत की पद्धतियां भिन्न हो सकती हैं, लेकिन मूलभूत नैतिक सिद्धांत तो उसमें इसी प्रकार विद्यमान हैं— जैसे समुद्र के गर्भ में मोती हुआ करते हैं । बस उन्हें ढूंढ़ने और चुनने की क्षमता होनी चाहिए— फिर जीवन में आनंद-ही-आनंद है ।

सत्य का समर्थन

सत्य के आगे असत्य का टिकाव हो ही नहीं सकता चाहे वह कितना ही जोर लगा ले । कुछ समय के लिए ऐसा भ्रम अवश्य रहेगा कि असत्य की जीत हो रही है, लेकिन अंतिम विजय तो सत्य ही होता है । सत्य में इतना सब्र है कि वह इस देरी को बर्दाश्त कर सकता है । दुनिया के किसी भी भाग का इतिहास देख लें बुराई की सारी शक्तियों को अंत में अपने

इसलाम

ईश्वर कभी बीमार नहीं हो सकता !

• हरिश्चंद्र व्यास

हथियार डालने ही पड़ते हैं । कुरान शरीफ में सत्य की इसी प्रतिष्ठा को रेखांकित किया गया है— **"नहीं, बल्कि हम सच को झूठ पर खींच मारते हैं तो वह उसके सिर को कुचल देता है, फिर वह (झूठ) उसी दम मटियामेट हो जाता है ।** (कुरान २१:१८)" और (ऐ पैगम्बर ! लोगों से) **एलान कर दे कि सत्य प्रकट हो गया है और असत्य मिट गया; बेशक असत्य तो मिटनेवाला ही होता है ।"** (कुरान १७:१८) कुरान शरीफ का यह संदेश सत्य की शाश्वतता का संदेश है । इसमें

स्पष्ट रूप से कहा गया है कि अंत में असत्य को मिटना ही पड़ता है । मृगतृष्णा कभी पानी का विकल्प नहीं हो सकती और न कोई प्रतिबिंब असली वस्तु का स्थान ले सकता है । असत्य के सिर पर जब कभी सत्य की गाज गिरती है तो उसे खंड-खंड होना ही पड़ता है ।

सही रास्ते की ओर

बात फिर से आचरण पर आ गयी है । मुख में राम और बगल में छुरी, दोनों बातें एक साथ कैसे चल सकती हैं ? ईश्वर या कि अल्ला का लगातार नाम जपनेवाला व्यक्ति यदि दुश्चरित्र, दंभी और दुष्ट हो तो उसका ईश्वरीय प्रेम बिलकुल बेकार है । उसे वे शुभ फल कभी भी नहीं मिल सकते जिनकी वह आकांक्षा करता है । शुद्ध आचरण ही वह माध्यम है जो इनसान को ईश्वरीय लोक में प्रतिष्ठा दिला सकता है यानी उसे अल्लाह की कृपा से मंडित कर सकता है । कुरान इस दिशा में एकदम स्पष्ट है । यदि इनसान को ईश्वर के प्रति प्रेम है तो उसे उसके बंदों, विशेषकर जरूरतमंदों और गरीबों के प्रति अपना फर्ज निभाना आवश्यक है— **''और अल्लाह की मुहब्बत के लिए गरीबों, अनाथों और कैदियों को खाना खिलाते हैं ।** (वे कहते हैं) **हम तो तुमको बस अल्लाह की प्रसन्नता के लिए खिलाते हैं; न हम तुमसे बदला चाहते हैं और न शुक्रगुजारी ।''** (कुरान ७६: ८-९)

प्रोफेट की परंपरा में इस सत्य (गरीबों, बीमारों एवं जरूरतमंदों के प्रति करुणा के सत्य) को कई जगह व्याख्यायित किया गया है । कयामत के समय जब अंतिम न्याय की स्थिति आएगी तो खुदा उस बंदे से पूछेगा, ''ओ आदम के पुत्र ! मैं जब बीमार था, तुमने मेरी देखभाल नहीं की ।'' और वह व्यक्ति कहेगा, ''ऐसा कैसे हो सकता है ? आखिर आप सारे संसार के सर्वोच्च नियंता हो । ईश्वर कभी बीमार नहीं हो सकता ।'' तब अल्लाह का उत्तर यह होगा, क्या तुम्हें याद नहीं कि मेरा अमुक-अमुक दास बीमार पड़ा हुआ था ? और वह तुम्हारे काफी नजदीक भी था, लेकिन तुमने उसके प्रति कोई सहानुभूति नहीं दिखायी । यदि तुम उसके पास जाते तो तुम उसके पास बैठे हुए मुझे देख सकते थे लेकिन तुमने ऐसा नहीं किया ।

कुरान की आयतों एवं अन्य दृष्टांतों से स्पष्ट हो जाता है कि सहानुभूति, करुणा और सेवा इसलाम की मूलभूत शिक्षाओं में प्रमुख स्थान रखती हैं । सेवा भी वह मान्य है जो निःस्वार्थ भाव से की गयी हो । यदि बदले में वापस कभी कुछ पाने की कामना हो तो वह सेवा या सहानुभूति या करुणा बेकार चली जाती है । भगवद्गीता के अध्याय १६, श्लोक १, २, ३ में जिन २५ मानव मूल्यों का वर्णन किया गया है उनसे कुरान के उक्त दो दृष्टांतों के मूल्यों (सत्य, दान, त्याग, करुणा, भद्रता, पवित्रता और सहानुभूति) का मिलान करके देखें और फिर सोचें कि दोनों ग्रंथों के रचनाकालों एवं स्थानों में भारी अंतराल के बावजूद दोनों के विचारों में कितना अधिक साम्य है ? तभी तो कहा जाता है कि विश्व के सभी धर्म नैतिक मूल्यों के प्रसंग में एक मत हो जाते हैं । उनके बीच झीना हाशिया भी नहीं रह पाता ।

एक अंतहीन सिलसिला

बुराई का बदला यदि बुराई से ही लिया जाए, तो संसार में विग्रह, विद्वेष, युद्ध एवं रक्तपात का एक अंतहीन सिलसिला शुरू हो

[ज]ाएगा । तब तो इनसान फिर चैन की सांस ले [ह]ी नहीं सकेगा ।

इसके ठीक विपरीत बुराई के [ब]दले में यदि भलाई का व्यवहार किया जाए तो [प्र]तिपक्षी के मन की मैल स्वतः ही समाप्त हो [ज]ाती है और मैत्री का एक अटूट सिलसिला [श]ुरू हो जाता है । कुरान में इस सत्य को इस [प्र]कार व्याख्यायित किया गया है— **"और [ने]की और बदी बराबर नहीं (हो सकती; बुराई [क]ा) बदला अच्छे बरताव से दे तो तुझ में और [ज]िस आदमी में दुश्मनी थी, उसे तू ऐसा पाएगा [म]ानो वह सगा दोस्त (हो) और यह बात उन्हीं लोगों को हासिल होती है जो सब्र करते हैं और यह उन्हीं लोगों को नसीब होती है जिनके बडे भाग्य हैं ।"** कुरान ४१:३४)

कुरान का आध्यात्मिक आधार है तथा ईश्वर के प्रति आस्था उसका प्रमुख स्तंभ है । कुरान के प्रारंभ में ही सही रास्ते पर चलाने के लिए अल्लाह से प्रार्थना की गयी है, जो इस प्रकार है — **"अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला और मेहरबान है । हर तरह की तारीफ अल्लाह (ही) के लिए है, जो सारे संसार का पालनहार (रब) है; निहायत दयावान, बेहद मेहरबान है; सजा (अंतिम न्याय) के दिन का मालिक है । (या अल्लाह !) हम तेरी ही इबादत (भक्ति) करते हैं और तुझ से ही मदद चाहते हैं; हमको सीधी राह चला; उन लोगों की राह जिनको तू ने निअमत (से पुरस्कृत) किया, न कि उनकी (राह) जो तेरे गजब (प्रकोप) में पड़े और भटके हुओं (पथ भ्रष्टों) की राह पर न चला ।"**

कुरान में दया और करुणा के प्रसंग ३०० बार से भी ज्यादा जगहों पर आते हैं । इनके साथ क्षमा, सहानुभूति आदि गुणों को जोड़ दिया जाए तो पूरा ग्रंथ दमदमाते हीरों (मानव मूल्यों) का एक बेजोड़ खजाना बन जाता है । अब तक जिन गुणों को व्याख्यायित किया गया है उनमें से मूल्य समाहित हैं जो विश्व के विभिन्न धर्मों को जोड़नेवाले शाश्वत मूल्य हैं । ये तो कुछ ऐसे गुण हैं, जिनको यहां गिना दिया गया है । अनगिनत अन्य मूल्य भी इस महाग्रंथ में पिरोये हुए मिलेंगे जो सब मिलकर मनुष्य के जीवन को जीने योग्य बनाते हैं । इसलाम एक विराट मानव धर्म है जहां न कोई [illegible]खाने हैं, न [illegible], न कोई [illegible] है न [illegible] । 'इसलाम' नैतिकता से ओत-प्रोत है । नैतिकताविहीन धर्म तो आत्माविहीन काया की तरह होता है; उसे शव कहा जा सकता है; शिव

> ***आज समय की मांग है कि इसलामी लोगों को दृढ़ता से इसलामी शिक्षा को हृदयंगम करते हुए व्यावहारिक जीवन में उसका उपयोजन करें, जो प्रत्येक इसलामी-अनुयायी का कर्त्तव्य है । इससे मोहम्मद साहब की हदीस के उद्देश्यों की पूर्ति होगी । यह इनसान और इनसानियत को जोड़नेवाला धर्म तभी बना रह सकता है, जब हर मुसलिम 'उफाउलकुलूब' तथा 'कुरान' के अनुरूप व्यावहारिक जीवन में आचरण करने में सफल सिद्ध हो सकें ।***

नहीं । जिस प्रकार विश्व के सारे धर्मों का मुख्य उद्देश्य इसी शिव (यानी कल्याण) की साधना करना है, ठीक उसी प्रकार इसलाम में तो मानव व पशु दोनों के कल्याण की साधना करना है । अर्थात इसका दृष्टिकोण व्यापक है । इसीलिए विश्व के अन्य धर्मों की अपेक्षा कम आयु का होते हुए भी विश्व में इसका विस्तार अधिक है ।

'कुरान मजीद' पैरा १४ व २८, में धर्मनिरपेक्षता, सहिष्णुता तथा उदारता की नीति परिलक्षित होती है, लेकिन दुर्भाग्य है कि इसके अनुयायियों की कुरान की आत्मा को व्यवहार में क्रियान्वित रूप देने में कुछ कोताही अवश्य दृष्टिगोचर हो रही है जिसके फलस्वरूप इनसान-इनसान के खून का प्यासा बनता जा रहा है । अतः आज की आवश्यकता इसलाम के अनुयायियों को इसलाम धर्म की वास्तविक भावनाओं को जीवन में उतारने की है । आज सीमा पार कर कश्मीर या अन्य हिस्सों में गरीब तथा निहत्थे लोगों पर गोलियां चलाकर पूरे खानदान का सफाया करने की घटनाएं आये दिन पत्र-पत्रिकाओं में पढ़ने को मिलती है, जबकि कुरान मजीद, पैरा-२८ में लिखा है— **"जो लोग तुमसे दीन (धर्म) के बारे में नहीं लड़ते और न उन्होंने तुम्हारे घरों से निकाला है तो खुदा तुमको मना नहीं करता है कि तुम उनसे न्याय का बरताव न करो— बेशक अल्लाह मुंसिफ को दोस्त रखता है ।"** इससे स्पष्ट है कि इसलाम धर्म सदैव मानवता तथा जीवरक्षा का हिमायती रहा है । अतः आज समय की मांग है कि इसलामी लोगों को दृढ़ता से इसलामी शिक्षा को हृदयंगम करते हुए व्यावहारिक जीवन में उसका उपयोजन करें, जो प्रत्येक इसलामी-अनुयायी का कर्त्तव्य है । इससे मोहम्मद साहब की हदीस के उद्देश्यों की पूर्ति होगी । यह इनसान और इनसानियत को जोड़नेवाला धर्म तभी बना रह सकता है, जब हर मुसलिम 'उफाउलकुलूब' तथा 'कुरान' के अनुरूप व्यावहारिक जीवन में आचरण करने में सफल सिद्ध हो सकें ।

— प्राध्यापक,
राजकीय उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान,
बीकानेर (राजस्थान)

हवा खरीदिए

विश्व में मैक्सिको शहर की पहचान सर्वाधिक प्रदूषित एवं गंदी वायु प्रदान करनेवाले शहर के रूप में बन गयी है । जहां अन्य बीमारियों की अपेक्षा श्वसन संबंधी बीमारियों के संक्रमण से मृत्यु की घटना अत्यधिक बढ़ी है । परिणामस्वरूप वहां पर शुद्ध वायु प्राप्त करने की जरूरत भी बढ़ी है । जरूरतों के तहत वहां शुद्ध वायु की दुकानदारी बढ़ी है । बाजार जाइए, पैसा अदा कीजिए और शुद्ध हवा प्राप्त कीजिए । दो अमरीकन डॉलर में एक मिनट तक सांस लेने के लिए शुद्ध ऑक्सीजन प्रदान की जाती है । यदि स्थिति में सुधार न हुआ तो भविष्य में शुद्ध वायु में सांस लेना, एक मंहगा सौदा बन जाएगा ।

● अनुराधा श्रीवास्तव

दो कविताएं



मुझे क्या चाहिए

शायद सब कुछ चाहिए
मैदानों में एक पर्वत
पूरे वर्ष हरियाली
और खूब ठंडक
किंतु बर्दाश्त योग्य ।

वह भी चाहिए
जो लोगों के पास है
वह भी जो नहीं है ।

चाहिए प्रचुर सब कुछ
फिर नहीं भी चाहिए प्रचुर
क्योंकि उसे संभालने की
फुरसत नहीं ।
अगर है भी फुरसत
तो वह थोड़ी गप्पों के लिए
और थोड़ा
अपने आप से मिलने के लिए ।

कई बार न दूसरों से मिल
न अपने से मिल
सुख मिलता है उससे परे
किसी नितांत एकांत में ।

जब मन [illegible] कल्पना से परे
लगे या कल्पना भी [illegible]
याद रहे [illegible] में
मुझे कुछ नहीं चाहिए...

विकल्प

सुनिश्चित जगह हूं जहां से
चमत्कार देखने के लिए
करवट बदल रहा हूं
कुछ पल आंखों के भीतर
कल्पना में देखने का यत्न किया
कुछ पल यूं ही
बाहर बादली उजाले में
ठूह और शिखर देखने लगा
दीखा कुछ नहीं ।

कुछ नहीं किसे दीखता है कभी
जिसमें वही तो नहीं
जिसे हम देखना यानी देखने जैसा
पाना चाहते थे
बाकी कुछ नहीं में
क्या सब कुछ शामिल हो सकता है

अर्थात
मैं जो पाना चाहता हूं वही क्यों
चमत्कार की जगह हासिल न करूं
फिलहाल यह देखना स्थगित है
क्योंकि विघ्न का विकल्प खडा हो गया है ।

● गंगा प्रसाद विमल
बी-२०१, कर्जन रोड अपार्टमेंट्स
नयी दिल्ली ११०००१

प्रेरक प्रसंग

मैंने जीवन में एक ही सूत्र पाया है : खतरे में जियो, 'लिव डेंजरसली' । एकांत में रहना, डर से दूर भागना है । अच्छे लोग एकांतवासी होते जा रहे हैं । इसी कारण समाज में खतरों के बीच रहने की आदत कम होती जा रही है । बंदूक का बोलबाला होता जा रहा है, जबकि बंदूक का जवाब बंदूक नहीं हो सकती । हिंसा का उत्तर हिंसा से नहीं, अहिंसा से दिया जाना है । अहिंसा का आधार सदैव नैतिक ही हो सकता है ।

(फ्रेडरिच नीत्से)

वचन देकर प्रभाव जमानेवालों पर विश्वास नहीं किया जा सकता । जो लोग कसम खाते हैं, वचन देते हैं, वे संतुलित नहीं हैं, संतुलित होने का दिखावा कर रहे हैं, उन पर विश्वास नहीं किया जा सकता, इसलिए विश्वास दिलाने के लिए वे कसम का सहारा ले रहे हैं । वचन तोड़ने के लिए मनुष्य के भीतर बैठा हुआ 'मैं' या 'ईगो' प्रेरित करता है । जब तक 'मैं' नहीं टूटता, तब तक वचन टूटते रहेंगे । जैसे ही भीतर बैठा 'मैं' टूट जाता है, बात स्वयंसिद्ध हो जाती है । क्षणभर को आप प्रेम की बात सोचकर तो देखें, आपको कितनी शांति मिलती है, [illegible] आनंद आता है, आपके चारों ओर प्रफुल्लता की बगिया कैसे महकती है ।

(जार्ज गुर्जियफ)

सन १९६० की बात है । तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू टेलीविजन के प्रश्नोत्तर कार्यक्रम में भाग लेने आकाशवाणी भवन पधारे थे । उनसे प्रश्न करने अनेक लोग आये थे । वे नेहरूजी से विभिन्न विषयों पर प्रश्न कर रहे थे। एक वृद्ध सज्जन ने पूछा, 'पंडितजी, आप भी सत्तर से ऊपर के हैं और मैं भी । लेकिन क्या वजह है कि आप तो गुलाब की तरह ताजे दिखायी देते है और मैं हूं कि बुड्ढा हो चला हूं ?'

पंडितजी ने कहा, 'तीन बातें हैं । पहली तो यह कि मैं बच्चों में हिलमिल जाता हूं, उन्हें प्यार करता हूं, उनकी मासूमियत में जिंदगी पाता हूं । दूसरा यह कि हिमालय में मेरा मन बसता है, उसकी बर्फीली चोटियों, उन घने जंगलों, उन निर्जन हवाओं में मुझे नये प्राण मिलते हैं । तीसरी वजह यह है कि मैं छोटी-छोटी और ओछी किस्म की बातों

से ऊपर उठ सकता हूं । मेरी जेहनियत पर उसका असर नहीं पड़ता है । मैं तो दुनियाभर के मसलों को ऊंची नजर से देखने की कोशिश करता हू और इसलिए मेरी सेहत और मेरे विचार ढीलेढाले नहीं हो पाते ।

('संस्मरण'— जगदीश चंद्र माथुर)

परीक्षा में मेरी असफलता का कारण परीक्षक की अयोग्यता है । उन दिनों मैं हीन-ग्रंथियों का शिकार था । मुझ पर अपने साथियों की सफलता से पैदा हुई ईर्ष्या का भूत सवार था । मैं मिथ्याभिमानी हो गया था । लेकिन मैंने प्रयास करके अपने इस दोष को दूर किया और सार्वजनिक जीवन में भी अपनी गलतियों को स्वीकार करने की हिम्मत दिखायी । शुरू में मैं डरता था कि कहीं अपनी गलतियों को स्वीकार करने में अलोकप्रिय न हो जाऊं । किंतु मेरा यह भ्रम शीघ्र ही दूर हो गया । मैंने सीखा कि अपनी दुर्बलता या भूल या दोष को छिपाने से बड़ा कोई अपराध नहीं है । ऐसा अपराध जिससे व्यक्ति आत्मविश्वास खो देता है ।

(विन्स्टन चर्चिल की जीवनी से)

हमें ऐसे राजा के शासन में रहना चाहिए, जिसमें नेतृत्व करने का गुण हो, जो यशस्वी हो, जिसमें योग्य व्यक्तियों को सहारा देने की प्रवृत्ति हो, जो उदारता से दान देता हो, जो अर्जित किये हुए धन का उचित उपयोग करता हो और जो अपने लिए अच्छे तथा अधिक-से-अधिक मित्र बना सकता हो । जिसके पास ये छह गुण नहीं हैं, वह कभी भी शासक बनने योग्य नहीं है ।

('नीतिशतक'—भर्तृहरि)

मेरी सफलता के पीछे मेरी सोच भी है । मैं अपने सिद्धांतों का कठोरता से पालन करता हूं । मैं अपने प्रति भी उतना ही कठोर हूं जितना देश की उन्नति और दुनिया की भलाई के प्रति । मैं उन लोगों के बारे में एक क्षण भी विचार करके अपने महत्त्वपूर्ण समय को बर्बाद नहीं करता, जिन्हें मैं पसंद नहीं करता । मैं अपने ओवरकोट पर धूल पसंद नहीं करता । उसे झटकार देता हूं, ताकि मेरा ओवरकोट साफ-सुथरा रहे । अमहत्त्वपूर्ण लोग धूल की तरह हैं । विरोधी मुझे तंग नहीं कर सकते, क्योंकि मैं उन्हें अपने दिमाग और दिल पर हावी होने का अवसर नहीं देता । मैं उनके बारे में तुरंत निर्णय करता हूं । निर्णय पर अमल करता हूं । निर्णय में देरी से ही वे मेरे ओवरकोट पर धूल के समान विराजमान रहेंगे, जो मुझे पसंद नहीं, जो मेरे सोच-विचार और कार्य की पद्धति नहीं ।

(आइजन हॉवर)

विश्व कवि टैगोर की अप्रसारित-अचर्चित-रचना

पंद्रह आना

● रवीन्द्रनाथ टैगोर

जो व्यक्ति धनी होता है, उसके घर में बगीचा बड़ा रहता है । घर अत्यावश्यक होता है, बगीचा अतिरिक्त । न होने से भी काम चलता है । संपत्ति की उदारता अपने को अनावश्यक रूप में ही प्रमाणित करती है । बकरी के जितने बड़े सींग होते हैं, उससे उसका काम चल जाता है, किंतु हिरन के सींग के पंद्रह आना अनावश्यक वृद्धि देखकर हम मुग्ध हो जाते हैं । मयूर ने पंख में केवल रंग सौंदर्य के कारण विजय पायी हो, ऐसा नहीं है, उसने अपने आधिक्य गौरव के कारण ही विजय पायी है । सारिका, खञ्जन तथा कौआपरी की पूंछ निरंतर लज्जा से नीचे रहती है ।

जिस व्यक्ति ने अपने जीवन को पूर्णरूप से अत्यावश्यक बना लिया है, वह व्यक्ति आदर्श पुरुष है, इसमें संदेह नहीं, किंतु सौभाग्य की बात है कि उसके आदर्श का अधिक लोग अनुसरण नहीं करते । यदि अनुसरण करते तो मनुष्य समाज ऐसे फल की तरह हो जाता, जिसमें संपूर्ण बीज ही बीज होता गूदा बिलकुल भी नहीं होता ।

जो व्यक्ति केवल उपकार ही करता है, उसको भला कहे बिना रहा नहीं जा सकता, किंतु जो व्यक्ति व्यर्थ होता है, उसको भी लोग चाहते हैं । कारण यह है कि फिजूल का व्यक्ति पूर्ण रूप से अपने को व्यर्थ कर सकता है । पृथ्वी का उपकारी व्यक्ति केवल उपकार की संकीर्ण दिशा के द्वारा ही हमारे एक अंश का स्पर्श करता है । वह अपने उपकार के महत् प्राचीर से अन्य समस्त दिशाओं से घिरा रहता है । केवल एक दरवाजा खुला रहता है, जहां हम हाथ पसारते हैं । वह दान करता है और हमारा व्यर्थ का व्यक्ति किसी काम का नहीं है, इसी से उसकी कोई प्राचीर नहीं है । वह हमारा सहायक नहीं है, वह हमारा संगीमात्र है ।

कम लोग अमर होते हैं

उपकारी व्यक्ति के पास से हम कमाकर लाते हैं और व्यर्थ के व्यक्ति के पास केवल खर्च करते रहते हैं, जो हमारा खर्च करने का साथी है वही हमारा मित्र है । विधाता की कृपा से हिरन के सींग और मयूर की पूंछ के समान संसार में अधिकांश व्यक्ति व्यर्थ ही हैं । हम में से अधिकांश का तो जीवन चरित लिखने योग्य नहीं है और सौभाग्य से हम में से अधिकांश की मृत्यु के पश्चात् पत्थर की मूर्ति गढ़ी जाएगी तथा उसके प्रयत्न में चंदे की रसीद घर-घर घूमती

फिरेंगी । मरने के बाद कम लोग ही अमर होते हैं, इसी कारण पृथ्वी रहने योग्य है ।

ट्रेन के यदि सभी डिब्बे आरक्षित होते, तो साधारण यात्रियों की क्या दशा होती ? पहले तो बड़ा आदमी अकेला ही एक सौ लोगों के बराबर होता था अर्थात् जितने दिन जीवित रहता उतने दिन अनंत अपने भक्त और निंदकों के हृदय में शताधिक लोगों की जगह घेर रहता । उसके बाद, मरने पर भी वे जगह खाली नहीं करते, जगह खाली करना तो दूर, बहुत से मरने का सुयोग लेकर अधिकार विस्तार करते रहते हैं । हमारी एकमात्र सुरक्षा यह है कि इनकी संख्या कम है, अन्यथा केवल समाधि स्तंभों और स्मारकों के कारण सामान्य व्यक्ति की कुटियों के लिए भी स्थान नहीं रहता । पृथ्वी इतनी छोटी है कि जीवितों के साथ-साथ जीवितों को भी जगह के लिए लड़ना पड़ता । जमीन में हो या हृदय के भीतर हो, अन्य पांच लोगों की अपेक्षा थोड़ा-सा भी हिस्सा अधिक प्राप्त करने के लिए कितने लोग धोखाधड़ी करके लोक-परलोक खोने के लिए तैयार रहते हैं । यह जीवितों के साथ-साथ जीवितों की लड़ाई के समकक्ष लोगों की लड़ाई है, किंतु मृतकों के साथ जीवितों की लड़ाई बहुत कठिन है ।

मनुष्य का मनुष्य के प्रति भेदभाव

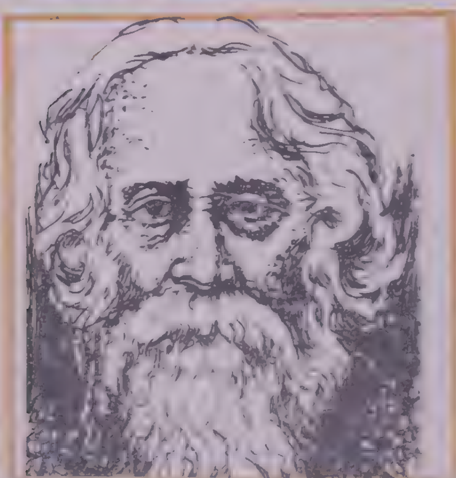
वे उस समय दुर्बलता-खडता से घेरे हैं, वे कल्पना लोक बिहारी हैं । हम माध्याकर्षण एवं अनेक प्रकार के आकर्षण-विकर्षण द्वारा पीड़ित मृत मनुष्य हैं, हम लोग उनसे पार कैसे पा सकेंगे ? इसलिए विधाता अधिकांश दिवंगतों को विस्मृति लोक में निर्वासन देते हैं । वहां किसी के लिए भी स्थानाभाव नहीं है । विधाता ने यदि कुछ बड़े-बड़े मृतकों के अधिकार क्षेत्र में से हमारे-जैसे छोटे-छोटे जीवितों को नितांत विमार्वमलिन बिलकुल कोने में ठेलकर रखा है तो उसने पृथ्वी को इतना सुंदर और उज्जवल बनाया ही क्यों है ? मनुष्य का मनुष्य के प्रति ऐसा अपूर्व भेदभाव किस कारण हुआ ?

नीतिज्ञ हम लोगों की निंदा करते हैं । कहते हैं, हमारा जीवन व्यर्थ हो गया । वे हम लोगों की भर्त्सना करते हुए कहते हैं कि 'उठो, जागो, काम करो और समय नष्ट मत करो ।' इसमें संदेह नहीं कि काम न करके बहुत से लोग अपना समय नष्ट करते हैं, किंतु काम करके जो समय नष्ट करते हैं, वे काम भी बिगाड़ते हैं और

जिस व्यक्ति ने अपने जीवन को पूर्णरूप से अत्यावश्यक बना लिया है, वह व्यक्ति आदर्श पुरुष है, इसमें संदेह नहीं, किंतु सौभाग्य की बात है कि उसके आदर्श का अधिक लोग अनुसरण नहीं करते । यदि अनुसरण करते तो मनुष्य समाज ऐसे फल की तरह हो जाता, जिसमें संपूर्ण बीज ही बीज होता गूदा बिलकुल भी नहीं होता ।

समय भी नष्ट करते हैं । उन्हीं के पदभार से पृथ्वी कांपती है और उन्हीं के प्रयत्नशील हाथों से असहाय संसार की रक्षा करने के लिए भगवान ने कहा है, 'संभवामि युगे-युगे !'

जीवन व्यर्थ गया तो व्यर्थ जाने दो । अधिकांश जीवन ही वृथा बीतने के निमित्त हुआ है । यह पंद्रह आना अनावश्यक जीवन विधाता के ऐश्वर्य का प्रमाण है । उसके जीवन भंडार में दैन्य नहीं है— व्यर्थ प्राण । हम लोग ही उसके अग्रण्य साक्षी हैं । बांसुरी जिस प्रकार अपनी शून्यता के भीतर से संगीत का नाद



करती है, उसी प्रकार हम संसार में पंद्रह आना अपनी व्यर्थता के द्वारा ही विधाता का नाद करते हैं ।

बुद्ध ने संसार क्यों त्यागा ?

बुद्ध ने हमारे लिए ही संसार त्याग किया था, ईसा ने हमारे लिए ही प्राणोत्सर्ग किया, ऋषियों ने हमारे लिए ही तपस्या की थी और साधुजन हमारे लिए ही जाग्रत रहते हैं ।

जीवन व्यर्थ गया, जाने दो । कारण कि जाना चाहिए—जीवन व्यर्थ, जाना ही एक सार्थकता है । नदी बह रही है— उसका संपूर्ण जल हमारे स्नान, पीने और खेतों में खर्च नहीं हो जाता, उसका अधिकांश जल केवल प्रवाह को बनाये रखता है और किसी काम न आकर केवल प्रवाह की रक्षा करने में ही जुटा रहता है, उसका जो पानी हम नहर खोदकर तालाब में लाते हैं, उसमें स्नान किया जा सकता है, किंतु उसे पिया नहीं जा सकता, उसके जिस पानी को घड़े में भरकर रखते हैं, उसे पिया जा सकता है, किंतु उसके ऊपर छांह का उत्सव नहीं होता । एकमात्र उपकार को ही सफलता समझना कृपणता की बात है, उद्देश्य को ही एकमात्र परिणाम समझना, दीनता का परिचय देना है ।

हम पंद्रह आना हैं

हम साधारण जन 'पंद्रह आना' हैं । हम अपने को कहीं हेय न मान लें क्योंकि हम ही संसार की गति हैं । धरती पर मनुष्य और हृदय में हमारा जीवन है, हम किसी में दखल नहीं देते, जमकर बैठते नहीं, चले जाते हैं संसार का समस्त कलगान हमारे द्वारा ही चलायमान है ।

समस्त छायालोक हमारे द्वारा ही स्पंदित है, हम हंसते हैं, रोते हैं, स्नेह करते हैं, मित्रों के साथ अकारण खेलते हैं, स्वजनों के साथ अनावश्यक गप्पें करते हैं, दिन का अधिकांश समय आस-पास के लोगों के साथ उद्देश्यहीन भाव से बिताते हैं, उसके बाद धूमधाम से पुत्र का विवाह करके, उसे ऑफिस में नौकरी दिलाकर, पृथ्वी पर अपनी प्रसिद्धि न छोडकर जलकर भस्म हो जाते हैं । हम इस विपुल संसार की विचित्र तरंगलीला के अंग हैं । हमारी छोटी-सी कौतुक हंसी से ही समस्त जन-प्रवाह झिल-मिल करता है । हमारी सामान्य गपशप से सारा समाज मुखरित और प्रसन्न होता है ।

प्रकृति का अधिकांश भाग व्यर्थ

हम जिसको व्यर्थ कहते हैं, प्रकृति का अधिकांश भाग वही है । सूर्य की किरणों का अधिकांश भाग शून्य में विकीर्ण हो जाता है । पेड़ों के तने का बहुत ही कम भाग फल आने तक टिकता है, किंतु हवा जिनका धन है, वही यह समझे कि वह व्यय-अपव्यय है या नहीं । 'विश्वकर्मा' के खाते को बिना देखे उसका विचार हम नहीं कर सकते । उसी प्रकार हम में से अधिकांश जो संगदान और गतिदान देने के अतिरिक्त और किसी काम में नहीं आते हैं, वे अपने तथा दूसरे का दोष न देकर उन्मुक्त हास्य और संगीत के द्वारा सहज रूप से यदि शांति लाभ करें तो इतने में ही वे यथार्थ भाव से जीवन के उद्देश्य की साधना क्यों नहीं कर सकते हैं ?

विधाता ने यदि हमको व्यर्थ बनाकर ही सृष्टि की रचना की है तो मैं धन्य हूं, किंतु उपदेशक के अधिकार से मैं क्यों बचूं कि मुझे उपकार करना ही होगा, काम में लगना ही होगा । जिस उत्कृष्ट व्यर्थता की सृष्टि विधाता करेगा उसमें हमारी स्वीकृति होगी । उसकी जवाबदेही हमको देनी होगी । दूसरों का उपकार करने के लिए ही सभी ने जन्म लिया है, इसलिए उपकार न करने में लज्जा की बात नहीं है । सभी घास धान नहीं होती है । धरती पर प्रायः घास ही होती है, धान कम होता है, किंतु घास अपनी स्वाभाविक निष्फलता को लेकर विलाप नहीं करती क्योंकि वह मानो स्मरण करती है कि पृथ्वी को वह हरीतिमा द्वारा आच्छादित करती है । संक्षेप में कहें तो मनुष्य दो वर्गों में विभक्त है । पंद्रह आना और एक आना । पंद्रह आना शांत है और एक आना अशांत । पंद्रह आना अनावश्यक है और एक आना आवश्यक । वायु में चलनेवाली वायु का परिणाम थोड़ा स्थिर है । स्थिर यानी थोड़ी शांति— नाइट्रोजन ही अधिक है । यदि उसका उल्टा हो जाए तो पृथ्वी जलकर राख न हो जाएगी ?

इसी प्रकार संसार में जब कोई एक दल पंद्रह आना और एक आना के समान अशांत और आवश्यक हो उठने का यत्न करता है तो ऐसी स्थिति में जगत का कल्याण नहीं है, तब जिनके भाग्य में मरण लिखा है उनको मरने के लिए प्रस्तुत होना ही होगा ।

प्रस्तुति : राजशेखर व्यास
ई-६०७, कर्जन रोड अपार्टमेंट
नयी दिल्ली-११०००१

रंग बदलने वाली पहाड़ी

दक्षिण आस्ट्रेलिया में एक ऐसी पहाड़ी है जो प्रतिदिन गिरगिट की तरह अपना रंग बदलती है । इस पहाड़ी का नाम "आयर्स रॉक" है और यह अंडाकार आकार में है और इसकी ऊंचाई ३५० मीटर है । सुबह से शाम तक पहाड़ी रंग बदलती है— कभी पीली, कभी नारंगी, कभी लाल तो कभी बैंगनी आदि । वैज्ञानिकों के अनुसार सूर्य की किरणों का इसके पत्थरों पर विभिन्न कोणों से पड़ना है । पत्थरों की विशेष संरचना भी इसका एक कारण है । जो भी हो यह प्रकृति का अनोखा करिश्मा है ।





हंसिकाएं

स्वाद

कुछ दूध के धुले
कुछ दूध के जले
मिल-जुल कर नया दल बनाने चले
बनाने के बाद—विवाद था
जली-सी खुरचन का स्वाद था

सांठ-गांठ

विवाह—कुछ पंडितों की ऐसी सांठ-गांठ
कि ऐसी गांठ लगा दी, गांठ की भी
होती रहे सदा वर्षगांठ

वास्तुशास्त्र

दुल्हन ही दहेज है सुनकर
दुल्हन ने चाहा यही जताना
शुक्रिया आपने इस नाचीज को
चीज तो माना

जमा पूंजी

प्रेमिका से बोले वे
आंखें चुराकर नजरें बचाकर
रख लेना इस चोरी के भी
बचत पत्र बनवाकर

—डॉ. सरोजनी प्रीतम



पाणिनि के समकक्ष आज भी कोई नहीं

पाणिनि पहले व्याकरणाचार्य थे जिन्होंने व्याकरण की रचना की । इन्हीं के प्रयास से संस्कृत भाषा अपने गौरव को प्राप्त कर सकी । साथ ही पाणिनि पर यह आरोप भी लगता है कि भाषा के विकास को रोकने में इनका हाथ है । लेकिन वास्तविकता यह है कि उनकी कृति से संस्कृत भाषा के गठन को और उसके स्वरूप को बहुत सहायता मिली ।

पाणिनि के व्याकरण की विशेषता है कि उसमें सारे शब्द धातुओं से निकलते हैं । उनकी अष्टाध्यायी संस्कृत की एकमात्र विशाल संहिता है जिसमें ३९९५ नियम, ३९८१ सूत्र और १४ प्रत्याहार हैं । सूत्र कम से कम शब्दों में हैं । शब्दों की प्रभावशीलता है ।

पाणिनि दूसरों के विचारों का सम्मान करते थे । उनके समय में वाजपायन और व्यादि नामक दो विद्वानों में यह विवाद चल रहा था कि शब्द आकृति को व्यक्त करता है या व्यक्ति को । पाणिनि को दोनों में ही सत्य का आभास हुआ और उन्होंने दोनों ही स्थितियों को स्वीकार किया । अष्टाध्यायी में पुरातन भारत के संबंध में काफी सामग्री प्राप्त होती है । उसमें देश, पर्वत, समुद्र, वन, नदी और जनपद की व्याख्या की गयी है । भौगोलिक सीमाओं के रूप में उन्होंने उत्तर में काम्बोज, दक्षिण में अस्मक, पश्चिम में सौवीर और पूर्व में सूरमा की चर्चा की है । भूगोल के अतिरिक्त अष्टाध्यायी में सांस्कृतिक सामग्री भी उपलब्ध है । उसमें कृष्ण और वासुदेव का नाम सामान्य मानव के रूप में है । अवतार के रूप में नहीं है ।

पाणिनि के जीवन के संबंध में अधिक पता नहीं है । पणि पुत्र होने के कारण उनका नाम पाणिनि पड़ा । वे ईसा पूर्व ५वीं सदी में रहे होंगे । पिता की ओर से उनका परिवार शिलातूर के प्रकांड पंडितों में था और और मां की ओर से उनका संबध दक्ष गौत्र के साथ था । उन्होंने वर्ष मुनि के आश्रम में शिक्षा पायी । पाणिनि को यायावर जीवन पसंद था । भ्रमण के दौरान उनके ज्ञान में वृद्धि हुई । आदमियों, स्थानों और वस्तुओं के संबंध में उनको बहुत कुछ पता चला । उन्होंने बोली और लिखी जानेवाली भाषाओं के संबंध में शोध किया । पाणिनि ने भाषा के स्वरूप और बनावट पर विचार कर अष्टाध्यायी की रचना की । पाणिनि ने मीमांसा के ध्यान की निरंतरता को माना और विस्फोट के सिद्धांत पर आस्था प्रकट की । पातंजलि ने पाणिनि के व्याकरण की बहुत प्रशंसा की है । व्याकरण के क्षेत्र में पाणिनि के समकक्ष आज भी कोई नहीं ठहरता । पाणिनि की पाषाण प्रतिमा उनकी मृत्यु के पश्चात उनके गांव में खड़ी की गयी । यान च्वांग ने इसकी चर्चा की है ।

—भ.प्र.

जातिवाद के गंभीर खतरों को समझिए

□ जगजीवन राम

आज संपूर्ण भारत में जातिवाद की जो ज्वाला भड़क रही है, उसके गंभीर परिणामों से देश का जागरूक व्यक्ति चिंतित है । ऐसी ही चिंताओं के समाधान के लिए भू. पू. उपप्रधानमंत्री बाबू जगजीवन राम ने विश्लेषणात्मक विचार लिपिबद्ध किये थे । प्रस्तुत हैं उनके यह विचार—

गांवों में रहनेवाले अनुसूचित जाति के लोग स्वभाव से ही शांतिप्रिय, बल्कि दब्बू होते हैं । लेकिन प्रभावशाली व्यक्ति किराये के गुंडों की सहायता से उन पर बराबर आक्रमण करते रहते हैं, उनकी संपत्ति लूट ली जाती है और झोंपड़ियां जला दी जाती हैं । ऐसे आक्रमणों का कारण बिलकुल स्पष्ट है । उन पर उस समय आक्रमण किये जाते हैं, जब वे उचित मजदूरी की मांग करते हैं या अपने छोटे-छोटे खेतों पर हल चलाना शुरू कर देते हैं । आततायी लोग उन्हें पकड़कर उनके हाथ-पांव बांध देते हैं और कई बार उनको जीवित ही जला देते हैं । कई बार तो अनुसूचित जातियों की बस्तियों की बस्तियां जला दी जाती हैं ।

सुसंस्कृत कहलाने का अधिकार नहीं

इन सब बातों के बावजूद कुछ लोग यह कहते हैं कि अनुसूचित जातियों और जनजातियों पर अत्याचार की घटनाएं बढ़ी नहीं हैं । ऐसे लोग बड़ी निर्लज्जता से यह तर्क देते हैं कि पिछली सरकार के काल में इससे भी अधिक अत्याचार होते थे, लेकिन ऐसी एक भी घटना हो जाए तो वह इस बात का प्रतीक है कि स्थिति कितनी गंभीर है । ये अत्याचार इतने क्रूर होते हैं कि यदि तथाकथित सभ्य लोग इनके विरुद्ध आवाज नहीं उठाते तो उन्हें शिक्षित या सुसंस्कृत कहलाने का कोई अधिकार नहीं है । दुर्भाग्य की बात है कि हमारे बुद्धिजीवी, हमारे उग्रवादी और प्रगतिशील मित्र एक भी शब्द इन घटनाओं की निंदा में न तो कहते हैं और न

लिखते हैं । स्थिति इतनी बिगड़ गयी है कि समाचार पत्र भी ठीक ढंग से ऐसे समाचार नहीं छापते । समाचार एजेंसियां चुप्पी साध लेती हैं । कभी-कभार कोई मानवतावादी पत्रकार ऐसा समाचार दे देता है । जो लोग ऐसे मामलों की रपट पुलिस में लिखवाते हैं, उन्हें आतंकित किया जाता है और जब तक विधानसभाओं या संसद में इन घटनाओं की चर्चा नहीं की जाती, तब तक अधिकारियों के कान पर भी जूं नहीं रेंगती । विधानसभाओं आदि में ऐसे मामलों का उठाया जाना कभी-कभार ही होता है और उसके पीछे भी राजनीतिक मुद्दा रहता है, क्योंकि यह मामला उठानेवाले राजनीतिक लाभ प्राप्त करना चाहते हैं । ये निरीह अनुसूचित जाति और जनजाति के लोग स्वयं अपनी शक्ति से परिचित नहीं हैं और वह शक्ति है इनकी अपार जनसंख्या । इन जातियों के करोड़ों लोग देशभर में फैले हुए हैं । यदि ये संगठित हो जाएं और उठ खड़े हों तो ये एक नये राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं । लेकिन इन दब्बू, शांतिप्रिय बल्कि दलित और दमित लोगों की अपार शक्ति शताब्दियों तक दमन की चक्की में पिसती रही है । आवश्यकता इस बात की है कि इन्हें संगठित किया जाए और इनके लिए एक नये और महान भविष्य का निर्माण किया जाए ।

समाज में स्थिति बदल गयी

अनुसूचित जातियों के लोग खेतों, खानों, जंगलों और कारखानों में काम करते हैं । वे न केवल अनाज, दालें और अन्य कृषि-उत्पाद उगाते हैं बल्कि सड़कें, पुल, बांध और भवन भी बनाते हैं । ये लोग सच्चे अर्थों में संपत्ति के निर्माता हैं । लेकिन इन्हें उचित पारिश्रमिक नहीं मिलता । इनमें से अधिकतर श्रद्धालु हिंदू हैं । लेकिन इसी धर्म के माननेवाले लोग इनकी छाया से भी दूर भागते हैं । ये लोग फिर भी अपनी श्रद्धा और विश्वास नहीं छोड़ते और दूर से ही हिंदू देवी-देवताओं की पूजा किये जाते हैं । इन्हें युगों तक घोर दमन का शिकार होना पड़ा है और अब यह हालत हो गयी है कि इनमें से अधिकतर अपनी इस निम्न स्थिति को स्वीकार कर चुके हैं और कभी सपने में भी नहीं सोचते कि वे अपना धर्म बदल लें । इतिहास के प्रारंभ से ही ये हिंदू रहे हैं । समय-समय पर जब दमन और अत्याचार की अति हो गयी और इनके लिए उसे सहन करना असंभव बन गया, तब इनमें से कुछ दूसरे धर्मों में चले गये । इनके नाम नये हो गये, नये संबंध हो गये और समाज में इनकी स्थिति भी बदल गयी ।

यद्यपि हरिजनों ने सवर्ण हिंदुओं के हाथों बड़े अत्याचार सहे हैं । मैं समझता हूं कि हिंदू धर्म का परित्याग करके ये अपनी समस्याओं को हल नहीं कर सकते ।

सन् १९३५ की बात है जब मैं दलित वर्ग संघ के प्रधान के रूप में रांची में हैमंड समिति के सामने गया और वहां पर मैंने हरिजनों की आवाज उठायी । उस समय मैंने कहा था कि इन लोगों को समुचित प्रतिनिधित्व मिलना चाहिए और शासन में इनका हिस्सा पहले से अधिक होना चाहिए । उस समय हम लोग अंग्रेजों के दास थे और स्वतंत्रता संग्राम बड़े जोरों से चल रहा था । ईसाई मिशनरी और ब्रिटिश शासक हरिजनों को प्रलोभन देकर अपने पक्ष में मिलाने की चेष्टा कर रहे थे । अंग्रेजों की मंशा तो केवल यह थी कि विरोधी

आदर नहीं दिखाते तो उन्हें तुरंत कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है । गांव का समाज उनका बहिष्कार कर देता है और आर्थिक संबंधों में भी उनका बहिष्कार होता है । वे खेतों में नहीं जा सकते, उनके ढोरों को चरने नहीं दिया जाता और कुओं से पानी तो भरने ही नहीं दिया जाता ।

ग्रामीण और अर्धग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक तनावों और जाति संघर्षों के संबंध में समाजशास्त्रियों ने कई अध्ययन किये हैं । इन अध्ययनों के अनुसार गांवों में भी अभी तक जागीरदारी का पुट बाकी है और दलित वर्गों का पहले के समान शोषण किया जाता है । जाति सोपानतंत्र ने कमजोर वर्गों, विशेष रूप से हरिजनों के बौद्धिक और सामाजिक विकास को अवरुद्ध कर दिया है । भारत के गांवों में तो ऐसी बातें युगों से होती आयी हैं और अभी तक इसमें बहुत कम परिवर्तन हुआ है । कोई अंतर पड़ा है तो केवल इतना कि शोषण के रूप बदल गये हैं । रूढ़िवादी और समृद्ध जमींदार संगठित हो गये हैं । उन्होंने इस बात को महसूस किया है कि ग्राम्य समाज पर अपना वर्चस्व बनाये रखने के लिए उन्हें सत्ता के तंत्र पर नियंत्रण बनाये रखना होगा । पंचायतों और विकास खंडों में उन्हीं की बात सुनी जाती है । अपने क्षेत्रों की राजनीति पर उनका प्रभाव है और वे सत्ता तंत्र पर नियंत्रण रखने के लिए स्वयं राजनीति में कूद पड़े हैं ।

जातिसूचक नाम बंद

जब तक जातिवाद को पूर्णतया निर्मूल नहीं कर दिया जाता, भूमि का नये सिरे से बंटवारा नहीं होता और अछूत कहे जानेवाले इन लोगों को बराबर के अवसर नहीं दिये जाते, तब तक भारत फूल-फल नहीं सकता, मुझे इस बात का पूरा विश्वास है । मैं यह भी समझता हूं कि जातिसूचक नाम और उपाधियां अपने नाम के साथ लगाने पर प्रतिबंध लगा देना चाहिए ।

श्रीयुत् श्रीमन्नारायण अग्रवाल ने, जो बाद में योजना आयोग के सदस्य और फिर गुजरात के राज्यपाल बने, अपने नाम के साथ अग्रवाल लिखना बंद कर दिया था । उस समय वह कांग्रेस के महासचिव थे ।

मुझे उनकी यह बात बहुत पसंद आयी । यद्यपि पंडित नेहरू और कई अन्य व्यक्ति इस बात के पक्ष में थे । यह विचार फैल नहीं पाया । अपने कई भाषणों में मैं यह कहता रहा हूं कि जातिसूचक नामों का प्रयोग बंद कर देना चाहिए बल्कि उनके प्रयोग पर प्रतिबंध लगना चाहिए । यह बात हमारे राष्ट्रीय और भावात्मक एकीकरण में बाधक हो रही है । अन्याय और सामाजिक असमानता का एक मुख्य कारण यही है ।

सरकार अकेली ही जातिवाद को निर्मूल नहीं कर सकती और न कानून पास करके ही ऐसा संभव है । जब तक लोग जातिवाद के गंभीर खतरों को नहीं समझेंगे, तब तक सफलता की कोई आशा नहीं है । भारत और भारत का समाज तभी फूल-फल सकता है, जब जातिवाद और छुआछूत को समाप्त कर दिया जाए । मैं समझता हूं कि समाज के इन असहाय वर्गों की दशा सुधर जाए, तभी राष्ट्र में समृद्धि आ सकती है ।

जहांगीर को स्नानागार में बंदी रहना पड़ा !

● प्रभात कुमार सिन्हा

शाहजादा मुहम्मद सलीम के जन्म से पूर्व सम्राट अकबर के कई पुत्र बाल्यकाल में ही मर चुके थे । अतः पुत्र रत्न की प्राप्ति के लिए व्याकुल अकबर ने फकीरों, संतों से मिन्नतें मांगीं । पुत्र जहांगीर पैदा हुआ, लेकिन युवा होने पर वह सुरा और सुंदरियों में मस्त होकर अकबर के आदेशों का उल्लंघन करने लगा । इन हरकतों से परेशान होकर अकबर ने उसे स्नानागार में चिकित्सक की देख-रेख में बंदी बना दिया । इसलिए कि उसमें सुधार हो जाए । यहां प्रस्तुत हैं जहांगीर के किस्से ।

मध्ययुगीन भारतीय शासकों में श्रेष्ठ मुगल सम्राट अकबर की पत्नी और जयपुर की राजकुमारी मरियम उज्जमानी ने अनेक संतों एवं फकीरों की मिन्नतों तथा फतहपुर सीकरी के शेख सलीम चिश्ती के आशीर्वाद के पश्चात ३० अगस्त १५६९ ई. को जिस पुत्र को जन्म दिया, उसका नाम सलीम रखा गया । आगे चलकर मुहम्मद सलीम ही जहांगीर के नाम से दिल्ली की गद्दी पर बैठा ।

फकीरों से मिन्नतें

शाहजादा मुहम्मद सलीम के जन्म से पूर्व अकबर के कई पुत्र बाल्यकाल में ही मर चुके थे । अतः पुत्र रत्न की प्राप्ति के लिए व्याकुल अकबर फकीरों, संतों से मिन्नतें करता था । वह अजमेर में ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती के दरगाह पर गया था तथा फतेहपुर सीकरी में शेख सलीम चिश्ती से भेंट की थी । अतः पुत्र प्राप्ति के बाद सम्राट अकबर ने उनका नाम मुहम्मद

सलीम रखा और प्यार से वह सलीम को 'शेखो बाबा' कहकर पुकारता था ।

सम्राट अकबर शाहजादा सलीम को दिलोजान से चाहता था और उसे अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहता था । लेकिन अत्यधिक लाड़-प्यार एवं ऐशो आराम से शाहजादा सलीम बिगड़ैल बन गया और अकबर के विरुद्ध बगावत कर बैठा । सलीम के दुष्कृत्यों से क्षुब्ध होकर सम्राट अकबर ने उसे स्नानागार में बंदी बना लिया था ।

सम्राट अकबर ने अपने लाडले सलीम के लिए फतेहपुर सीकरी में शिक्षा-दीक्षा का पूर्ण प्रबंध किया था । फलतः सलीम ने विभिन्न व्यायामों, शिकार, घुड़सवारी तथा अस्त्र-शस्त्रों के संचालन में तो प्रवीणता पायी ही, फारसी, अरबी, तुर्की, संस्कृत और हिंदी भाषा का भी ज्ञान प्राप्त किया, लेकिन अपनी जवानी के उफान में सलीम ने अनेक बुरे शौक पाल लिये ।

शराब और शवाब का बेहद शौकीन था शाहजादा सलीम । किशोरावस्था से ही वह सुरा और सुंदरियों का दीवाना बन गया था । उस पर वह भारत का सम्राट बनने का भी स्वप्न देखने लगा था । उसमें धैर्य की कमी थी और सम्राट बनने के लिए वह उतावला था । समकालीन इतिहासकार बदायूंनी ने तो लिखा है कि सलीम ने अपने पिता अकबर को विष देकर मारने का भी प्रयत्न किया था ।

सत्ता पाने का उतावला सलीम

सम्राट अकबर ने सन् १५९९ में शाहजादा सलीम को अजमेर का गवर्नर नियुक्त कर मेवाड़ के राणा अमर सिंह के विरुद्ध अभियान का आदेश दिया । लेकिन भोग विलासी एवं आराम पसंद सलीम को मेवाड़ की पहाड़ियों और जंगलों में कष्ट सहना मंजूर नहीं हुआ । अतः निराश होकर अकबर ने अपने तीसरे पुत्र दानियाल पर ध्यान दिया । इधर सलीम का धैर्य समाप्त हो रहा था । वह मुगल सल्तनत की बागडोर संभालने के लिए व्यग्र था । अतः वह सम्राट अकबर के विरुद्ध विद्रोह के लिए उतावला हो गया । वह अजमेर छोड़कर इलाहाबाद चला गया और मार्ग में उसने बिहार से आ रहे राजस्व के ३० लाख रुपये को लूट लिया ।

उस समय सम्राट अकबर असीरगढ़ के घेरे में व्यस्त था । जब शाहजादा सलीम के विद्रोह की उसे जानकारी मिली, तब वह दुखी हो गया । उसने व्यक्तिगत रूप से सलीम से पत्राचार किया और अपने सहपाठी शरीफ खां के माध्यम से उसे समझाने का प्रयत्न किया लेकिन असफल रहा ।

लाचार होकर अकबर स्वयं सलीम के विरुद्ध उचित कार्यवाही के लिए दक्षिण से लौट पड़ा । उन्मादी सलीम एक बड़ी फौज के साथ अपने पिता का सामना करने इटावा तक आ पहुंचा, लेकिन फिर महाबली अकबर के भय से इलाहाबाद लौट गया ।

अब सम्राट अकबर ने अपने सबसे योग्य और परममित्र अबुल फजल को शाहजादा सलीम को समझाने के लिए भेजा । लेकिन रास्ते में ही सन् १६०२ में बुंदेला सरदार वीरसिंह देव ने शाहजादे के इशारे पर उसका कत्ल कर दिया । इस समाचार से महाबली अकबर आग-बबूला हो गया ।

पुत्र वात्सल्य से प्रेरित

इसी बीच सलीमा बेगम की मध्यस्थता से विद्रोही शाहजादा सलीम को आगरा लाया गया। सलीम ने अपने पिता के महल की देहरी चूमकर सम्राट के चरणों में अपना सिर रख दिया और उससे क्षमा मांगी। पुत्र वात्सल्य से प्रेरित होकर अकबर ने उसे गले से लगाकर क्षमा प्रदान की। लेकिन अकबर और सलीम का यह मिलन स्थायी नहीं था। क्योंकि सलीम महाबली अकबर के प्रति निष्ठावान नहीं रह सका।

सन् १६०३ में सम्राट अकबर ने शाहजादा सलीम को मेवाड़ पर चढ़ाई करने की आज्ञा दी। सलीम ने पहले इलाहाबाद से गोला-बारूद लाने की आज्ञा मांगी, जिसे सम्राट ने मान लिया। फलतः सलीम इलाहाबाद चला गया और मेवाड़ अभियान के बजाय वह शराब में डूब गया। वह हर पल शराब के प्याले को मुंह से लगाये रखता था। भोग विलास के सिवा उसे कुछ सूझता ही नहीं था। इस अवस्था में उसने अपनी क्रूरता का भी प्रदर्शन किया। उसने अपने एक संवाद लेखक जिसने सम्राट अकबर से उसकी शिकायत की थी, की जिंदा खाल खिंचवा ली। नशे में ही उसने एक नौकर को पीटते-पीटते जान से मार डाला।

सुरा-सुंदरियों में लीन

शाहजादा सलीम की इन कारगुजारियों से क्षुब्ध होकर उसकी पहली पत्नी मानबाई (जो आमेर नरेश राजा भगवानदास की पुत्री और राजा मानसिंह की बहन थी) ने अफीम खाकर आत्महत्या कर ली। इससे सलीम को काफी दुःख हुआ, लेकिन कुछ ही दिनों पश्चात वह पुनः सुरा सुंदरियों में खो गया।

सम्राट अकबर को भी इन समाचारों से काफी कष्ट पहुंचा। जिस पुत्र की प्राप्ति के लिए उसने मंदिरों, मस्जिदों, दरगाहों में हजारों बार सिर नवाया था, उसकी दुष्कृतियों से अकबर का बुढ़ापा अत्यंत कष्टप्रद हो गया। अतः शाहजादा सलीम को सबक सिखाने वह इलाहाबाद की ओर चल पड़ा। लेकिन इसी बीच सन् १६०४ में अकबर के तीसरे पुत्र दानियाल की मृत्यु हो गयी। उसकी माता की भी मृत्यु हो गयी। अतः अकबर टूट-सा गया।



जहाँगीर

पिता के क्रोध को झेला

महाबली अकबर की दिली इच्छा थी कि विद्रोही सलीम अब सही रास्ते पर आ जाए। क्योंकि सन् १५९७ में उसके बेटे मुराद की भी मृत्यु हो चुकी थी। संयोग से इस दशहरा पर्व पर विद्रोही सलीम राजधानी में उपस्थित हुआ। उसने भरे दरबार में सम्राट अकबर से क्षमा मांगी। सम्राट ने उस समय तो कोई नाराजगी नहीं दिखलायी, लेकिन अपने शाही कक्ष में जाने के बाद महाबली के क्रोध एवं दुःख का

बांध टूट गया । उसने सलीम को काफी भला-बुरा कहा और उसकी खूब भर्त्सना की । महाबली उस समय इतना क्रोधित हो गया कि उसने सलीम के मुंह पर एक करारा तमाचा दे मारा । सलीम चुपचाप अपने पिता के क्रोध को झेलता रहा ।

इसके बावजूद सम्राट अकबर का गुस्सा ठंडा नहीं हुआ था । सलीम के विद्रोहों एवं बुरे व्यसनों से उसे विश्वास हो गया था कि उसका पुत्र मानसिक रोगों से ग्रस्त है । अतः उसने उच्चकोटि के चिकित्सक राजा सालिवाहन की देखरेख में सलीम को अपने शाही स्नानागार में बंदी बना लिया ।

लगभग दस दिनों तक शहजादे सलीम को स्नानागार में बंदी बना रहना पड़ा । इस दौरान उसे शराब, अफीम व अन्य नशे से पूर्णतः वंचित कर दिया गया था । इतने ही दिनों में सलीम का होश ठिकाने आ गया । तब सम्राट ने उसे क्षमा प्रदान कर उसे पश्चिमी प्रांतों का गवर्नर नियुक्त किया ।

क्या स्नानागार में दस दिनों तक बंदी रहने के कारण सलीम के होश ठिकाने आ गये थे ? ऐसा समझना भूल होगी । दरअसल सम्राट अकबर ने सलीम के व्यवहार से क्षुब्ध होकर उसके लड़के शाहजादा खुसरो को अपना उत्तराधिकारी बनाने का निर्णय कर लिया था, क्योंकि उसके अन्य पुत्र मुराद, दानियाल मर चुके थे । राजा मानसिंह, अजीज कोका जैसे मुख्य सरदार भी खुसरो का समर्थन कर रहे थे ।

इन परिस्थितियों में शाहजादा सलीम ने विद्रोहों से तोबा कर ली और सम्राट अकबर के प्रति वफादार बन गया, ताकि अकबर के बाद गद्दी उसे ही मिले । यहां तक कि गद्दी पाने के लिए सलीम अकबर के मृत्युपर्यंत आगरा में ही पड़ा रहा । अपने अंतिम क्षणों में अकबर ने सलीम को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया । इस प्रकार ३ नवम्बर सन् १६०५ को आगरा के किले में जहांगीर का राज्याभिषेक हुआ और उसने 'नूरुद्दीन मुहम्मद जहांगीर बादशाह गाजी' की उपाधि धारण की ।

—व्याख्याता, इतिहास
पोस्ट बॉक्स नं.-१०
चित्रगुप्त नगर, मधुबनी ८४७२११

मैं एकदम चुस्त हूं

मौलाना मैं जरा थक गया हूं । आप जरा जल्दी आये हैं । अभी चार-पांच मिनट बाकी हैं । इजाजत दें, तो जरा आराम कर लूं, बापू ने कहा ।

''बेशक आराम कर लें'', मौलाना अब्दुल कलाम आजाद ने कहा !

बापू लेट गये और एक क्षण में ही गहरी नींद में सो गये । नाक से आवाज भी आने लगी । यह देखकर मौलाना साहब तो हैरान रह गये । वे इससे भी ज्यादा हैरान उस समय हुए, जब बापू ठीक चार मिनट के बाद अपने-आप जाग गये और बैठते ही बोले, ''मौलाना साहब, अब बताइए, अपनी बातें । मैं एकदम चुस्त हूं ।''

• **लाल बहादुर श्रीवास्तव**

विश्व के हर धर्म, जाति, प्रांत व समाज में 'विवाह' एक पावन संस्कार और आदर्श सामाजिक स्थिति के रूप में परिभाषित हुआ है। अनैतिक और उच्छृंखल यौन क्रीड़ाओं को अनुशासित और संगठित रूप देने के लिए समाजशास्त्रियों ने विवाह संस्था को जन्म दिया। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके तहत अनियंत्रित प्रेम संबंधों और विनाशकारी यौन उन्मुक्तता का नियमन किया गया है। निश्चित पति-पत्नी के दरमियान संवाद-शून्यता या संवेदनहीनता, अहं के टकराव (ईगो-क्लैश), यौन असंतुष्टि, पारिवारिक द्वंद्व, आधुनिकता बोध और बदलते मूल्यों के इस दौर में अब अपने जीवनसाथी के अतिरिक्त संबंध स्थापित करने की लालसा तेजी से बढ़ी है। ठीक वैसे ही जैसे 'वर्जित फल' खाने की तीव्र लालसा कभी आदम और हव्वा के मनों में जागी थी। परिणाम भी करीब-करीब वही है, अपनी श्रेष्ठ

न पति परमेश्वर : न स्त्री घर की लक्ष्मी

● अमिताभ शर्मा

तौर पर नियमबद्ध प्रेम संबंधों की आदर्श स्थिति का सामाजिक विकास से एक सहज और आधारभूत संबंध रहा है। विवाह संस्था के अन्तर्निहित मूल्यों में गिरावट से समाज एक त्रासद परिणति की ओर तेजी से बढ़ रहा है। आज महानगरों की तो बात ही असंगत होगी, छोटे शहरों और गांवों तक में विवाहेत्तर संबंध किसी संक्रामक रोग की तरह फैलते जा रहे हैं। अपनी संपूर्ण सामाजिक शक्ति के बावजूद अब विवाह संस्था स्त्री पुरुष संबंधों के विविध आयामों को स्वयं में समाविष्ट करने में असफल होती जा रही है। पारिवारिक कुसामंजस्य, यौन स्वच्छंदता, जीवन की एकरसता नीरसता, और सम्माननीय स्थिति से गिरना-जैसे आदम और हव्वा 'ईडन' से गिरे थे।

अब पति परमेश्वर नहीं है

यह मान्यताओं के विखंडन का दौर है, यह मूल्यों के बदलाव का दौर है, यह मानदंडों की पुनर्परिभाषाओं से बना समय है, जब परिवर्तन सब ओर है, तब पारंपरिक जीवन शैली और विवाह संबंधों की व्याख्या भी आधुनिक संदर्भों में ही अवश्यंभावी है। उपभोक्तावाद की भयानक चीत्कार और मीडिया द्वारा प्रदत्त अपसंस्कृति की लहर में दांपत्य संबंधों के पवित्र धागे तेजी से कटने लगे हैं। दमित वासनाओं का उद्दाम वेग, नैतिकता के सारे तकाजों और

संस्कार, परंपराओं या मूल्यों की सारी दुहाइयों पर भारी पड़ रहा है।

अब न पति परमेश्वर है और न ही स्त्री घर की लक्ष्मी। नैतिकता के मायने बदल चुके हैं। यह वह समय है जब बिन-ब्याही मां बनना लज्जा की बात नहीं रह गयी है। यह मान्यताओं, आस्थाओं, विश्वासों और यकीनों के टूटन का दौर है, यहां नाजायज कुछ भी नहीं है। विवाहेत्तर संबंधों और बिन-ब्याहे बच्चे को जन्म देने का हवाला अब गर्वोक्ति और शान के साथ दिया जाता है।



टी.वी. सीरियल : संबंधों की मशालें

'इन्सेस्ट' का संबंध रखने की इच्छा या लालसा अब इस समाज में किसी अपराध बोध को जन्म नहीं देती। उद्योगपति घरानों पर बने टी. वी. सीरियल्स अब विवाहेत्तर संबंधों की मशाल थामे बढ़ रहे हैं। आह्वान है मध्यमवर्ग और तेजी से धनाढ्य होते वर्ग को भी कि आओ हमारे पीछे-पीछे और तहस-नहस कर दो विवाह नामक इस नाकारा संस्था को। यहां महेश भट्ट अपनी सुंदरी बेटी से विवाह की दमित इच्छा को जाहिर करते हैं और एक पत्रिका के 'मनोवैज्ञानिक सलाह' स्तंभ में एक पुत्री अपने पिता से यौन संबंध स्थापित करने की अपनी इच्छा संबंधी सवाल रखती है। यह जीवन की नैसर्गिक और अनिवार्य पवित्रताओं के खंडन का क्रूर समय है। ऐसे फिसलनभरे समय में विवाहेत्तर संबंधों के प्रति विचलन, समाज की परिवर्तित मानसिकता का ही प्रतिबिंब है।

बदलते जीवन मूल्य : पारिवारिक विघटन

विवाहेत्तर संबंधों के पनपने की कोई एक खास वजह निर्धारित नहीं की जा सकती। कुल मिलाकर इसे वातावरण की उपज ही माना जा सकता है। विकास की प्रक्रिया में, महिलाओं की बाहर के मोरचों पर सक्रियता और भागीदारी बढ़ी है। इसी के साथ पुरुषों के साथ साहचर्य के अवसर भी। जीवनसाथी से सम्यक सामंजस्य के अभाव और अहं के टकराव की स्थिति में, व्यक्ति समस्त चेतना और विवेक का त्याग कर प्रबल वेग से उसकी ओर खिंचने लगता है जो विचारों, रुचियों और मानसिकता के स्तर पर समान बिंदु पर हो। जीवनपथ पर चलते-चलते अनायास ही कोई ऐसा मिल जाता है जो मान्यताओं और स्वप्नों के हिसाब से आदर्श होता है। अब पुरुष और महिला दोनों ही अपने जीवनसाथी का अन्य साथियों और सहकर्मियों से तुलनात्मक अध्ययन करने लगे हैं। जीवनसाथी की उन मानदंडों पर कमी, विवाहेत्तर संबंधों को आमंत्रित करती है। देखा यही गया है कि अधिकांशतः 'फन' या 'सेक्स आकर्षण' इन संबंधों के सूत्रधार नहीं हुआ करते, बल्कि भावनात्मक जरूरत इनमें प्रमुख होती है। 'ईगो क्लेश', एक-दूसरे की रुचियों

का खयाल न रखना, मानसिक स्तर में अंतर, आपसी समझ का अभाव, सहनशीलता की कमी, शक अथवा ईर्ष्या से ग्रस्त होना, लड़ाई-झगड़े या तनाव, निराशा/अवसाद/चिड़चिड़ापन, संवेदनशीलता की कमी, जीवनसाथी द्वारा अत्याचार और कभी-कभी यौन संबंधों में असंतुष्टि भी इस तरह के संबंधों में सहायक होती है । वैवाहिक कुसामंजस्य की स्थिति में, सदियों से मान्य परंपराओं और संस्कारों से स्वयं को मुक्त कर अपनी कारक रही है । ऐसे में कहीं से भी थोड़ी-सी सहानुभूति, प्यार और विश्वास मिलने पर आत्मीय संबंध बनने लगता है, जो धीरे-धीरे विवाहेत्तर संबंधों में बदल जाता है । लेकिन इसके अतिरिक्त भी कुछ कारक है, मसलन— गैर परंपरावाद का प्रसार/आधुनिकता बोध/'वीमनलिब' के नारे/ सेक्स साहित्य और फिल्मों द्वारा परोसी गयी 'वलोरिटी'/मीडिया द्वारा प्रदत्त 'सेक्सी वूमन' की इमेज और तेजी से बदलती जीवन-शैली और मान्यताएं । निर्बाध

> *उपभोक्तावाद की भयानक बौछार और मीडिया द्वारा प्रदत्त अपसंस्कृति की लहर में दांपत्य संबंधों के पवित्र धागे तेजी से कटने लगे हैं । दमित वासनाओं का उद्दाम वेग, नैतिकता के सारे तकाजों और संस्कार, परंपराओं या मूल्यों की सारी दुहाइयों पर भारी पड़ रहा है ।*

भावनात्मक व शारीरिक जरूरतें पूरी करने में उसे कोई संकोच नहीं होता । बदलते जीवन मूल्यों के इस दौर में पारिवारिक विखंडन का प्रमुख कारण भावनात्मक अलगाव ही है । आपसी संबंधों में भावनाओं और संवेदनाओं को कोई जगह नहीं दी जाती, इसीलिए पति-पत्नी के बीच दृढ़ता से बंधे रहने का कोई कारण या आकर्षण शेष नहीं रह जाता ।

पति-पत्नी में नीरसता

विवाहेत्तर संबंधों के फूलने-फलने में पति-पत्नी के संबंधों में बनी नीरसता, पारिवारिक ऊब और संवादहीनता एक प्रमुख स्वतंत्रता हमारे समय की सबसे जटिल समस्या है और सत्य यही है कि प्राचीन मान्यताओं की टूटन के इस दौर में आधुनिक विचारधारा के प्रबल वेग को रोकना किसी के वश में नहीं है, मात्र उसकी धारा को मोड़ने या उसमें कुछ मूल्य अपनी ओर से डालकर उसके प्रचंड ताप को कुछ सीमा तक कम करने जैसे काम किये जा सकते हैं । यह वैचारिक संक्रमण का दौर है । समस्या यह भी है कि जब आप आधुनिकता की आलोचना कर रहे होते हैं, तब एक नकारात्मक भाव धारा का सृजन कर रहे होते हैं ।

प्रश्न यह है कि अपसंस्कृति के प्रसार या

पाश्चात्य मूल्यों के बहाव के खिलाफ आपका सकारात्मक काम क्या है ? जब प्राचीन मूल्यों के बासीपन और संस्कारों की निरर्थकता की बात की जाए तो आधुनिक मूल्यों पर आधारित विचार पद्धति या स्वस्थ वैचारिक विकल्प के नाम पर आपके पास क्या है ? बात सिर्फ कोसने से नहीं, विकल्प देने से ही बनेगी । जरूरत है कि जब प्राचीन मान्यताओं को निरर्थक ठहराया जाए तो मूल्यों पर आधारित नवीन और वैज्ञानिक विचारधारा सामने आये । हमें संस्कारों से कटना नहीं है, लेकिन विज्ञान के इस युग में अपनी हर मान्यता की तर्कसम्मत और वैज्ञानिक व्याख्या का सामर्थ्य तो विकसित करना ही होगा । विवाहेत्तर संबंधों के पैरोकारों को भी समुचित प्रत्युत्तर के लिए, ऐसे ही अर्थपूर्ण प्रयत्नों की जरूरत है ।

सच तो यह है कि विवाहेत्तर संबंधों का जाल काटने के लिए किसी बाहरी औजार की नहीं, अपनी स्वस्थ दिमागी सोच की जरूरत है । भावनात्मक लगाव, संवेदनशीलता और एक-दूसरे के प्रति बेहतर समझ से वैवाहिक जीवन में सरसता और सामंजस्य लाकर ही इसे रोका जा सकता है । विवाहेत्तर संबंधों का अन्यथा आकर्षण तो आदिकाल से ही चला आ रहा है । वर्जित फल खाने की लालसा मानव सभ्यता के इतिहास से ही शुरू हो जाती है, चाहे मामला आदम-हव्वा का हो, मनु-इड़ा का हो या रामायण-महाभारत के प्रबल आदर्शवादी युग का हो ।

— राजभाषा अधिकारी,
इलाहाबाद बैंक क्षेत्रीय कार्यालय,
बिलासपुर (म.प्र.)
पिन-४९५००१

इनके भी क्यां जुदा-जुदा

आपका बंदा और फिरूं नंगा
आपका नौकर और खाऊं उधार

—गालिब

हजारों साल नरगिस बेनूरी पे रोती है
बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा

—इकबाल

फर्ज अदा कीजिए फिर इसके बाद
अपने हक का मुतालिबा कीजिए

—दिवाकर राही

फलक का जिक्र तो किया है जमीं के भी न रहे
हम अपनी चाल से आखिर कहीं के भी न रहे

—शाद अजीमाबादी

फलक देता है जिनको ऐश उनको गम भी होता है
जहां बजते हैं नक्कारे वहां मातम भी होता है

—दाग

सिर्फ एक कदम उठा था गलत राहे शौक में
मंजिल तमाम उम्र मुझे ढूंढ़ती रही

—अब्दुल मजीद अदब

सैयाद यह गुंचे से सीखी है अदा हमने
जो चोट भी खायी है हंसते हुए खायी है

—कौसर नियाजी

कभी भूलकर किसी से न करो सलूक ऐसा
कि जो तुमसे कोई करता तो नागवार होता

—इस्माइल मेरठी

कहां का नाखुदा कैसे सफीने, दस्तोबाज क्या
खुदा ही याद आता है सहारे टूट जाने पर

—हफीज मेरठी

फासले ऐसे भी होंगे यह कभी सोचा न था
सामने बैठा था मेरे और वह मेरा न था

—अहमद फराज

प्रस्तुति : कुलदीप तलवार

गुलाबबाई और नौटंकी

• प्रदीप अग्निहोत्री

जब हम लोकनाट्य 'नौटंकी' की बात करते हैं, तब हमारे जेहन में एक नाम बरबस उभरकर आता है, वह है पद्मश्री गुलाबबाई । इस महान अदाकारा ने अपना संपूर्ण जीवन इस कला को न्यौछावर कर दिया । उसमें गायन एवं अभिनय की गजब की क्षमता थी । उसकी आवाज से पूरा माहौल गुंजायमान हो जाता था ।

गुलाबबाई



उत्तर प्रदेश के कानपुर देहात तथा फर्रूखाबाद जिलों की सीमा पर स्थित एक छोटे से गांव बलपुरवा के छोटे किसान परिवार में सन् १९२० में एक लड़की का जन्म हुआ । यह वह जमाना था जब गांव व कस्बों में नौटंकी का एक तरह से साम्राज्य था । इस समय नौटंकी जैसे सशक्त लोकनाट्य का सारी रात खुले पंडाल में मंचन हुआ करता था । सूत्रधार की जानदार गायकी और नृत्य से पूरा वातावरण लय-ताल में आबद्ध हो जाता था । नक्कारे की टनाटन टन से गांव का वातावरण गूंज उठता था ।

नौटंकी कैसे शुरू की

बलपुरवा गांव में जाड़ों में एक मेला लगता था । मेले में नौटंकी भी आती थी । गुलाबबाई नौटंकी देखने की जिद करती थी । गुलाबबाई के पिता लड़की के नौटंकी देखने जाने के खिलाफ थे, पर बाबा ने बच्चों का मन रखने के लिए हां कर दी ।

उस साल मशहूर कन्नौजवाले पं. त्रिमोहन की नौटंकी कम्पनी गांव में आयी हुई थी । बच्चों के आग्रह पर बाबा गुलाब को नौटंकी दिखाने ले गये । हरिश्चंद्र-तारामती के प्रसंग का मंचन हो रहा था । गुलाब सारी रात तन्मयता से बैठकर नौटंकी देखती रही । उसके बाद बार-बार जिद करके और बाबा को मनाकर [illegible] नौटंकी देखने लगी । [illegible] रात में नौटंकी देखती और नन्ही-सी उम्र में

सहेलियों के साथ गुड्डे-गुड़िया का खेल खेलने के बजाय नौटंकी खेलती थी। यहीं से उसमें नौटंकी के प्रति अनुराग पैदा हो गया।

उन दिनों नौटंकी में औरतें काम नहीं करती थीं। औरतों की भूमिका भी पुरुष कलाकार ही किया करते थे। महिलाओं का स्टेज पर मंचन करना बुरा समझा जाता था। पर गुलाब को तो नौटंकी से इतना अनुराग हो गया था कि उसने नौटंकी में काम करने की इच्छा व्यक्त कर बाबा को सकते में डाल दिया। बाबा ने पहले तो समझाया, पर बच्ची के हठ के आगे उन्हें झुकना पड़ा। सुबह बाबा गुलाब को पं. त्रिमोहन के पास ले गये। पंडितजी भी सोच-विचार में पड़ गये और अंततः उन्होंने गुलाब की परीक्षा ली। परीक्षा में खरी उतरने पर उन्होंने गुलाब को अपनी कंपनी में रख लिया।

पं. त्रिमोहन के सान्निध्य में रहकर यह विलक्षण प्रतिभा पूरी तरह से निखरने लगी। पंडितजी ने गुलाब को नौटंकी की बारीकियां सिखायीं। इस प्रकार शुरू हुई गुलाब की नौटंकी यात्रा।

नौटंकी में जीवन फूंका

गुलाब से गुलाबजान और तत्पश्चात गुलाबबाई नाम से मशहूर इस कलाकार ने मात्र २० वर्ष की उम्र में ही इतनी लोकप्रियता प्राप्त कर ली थी कि उसकी नौटंकी में आगे बैठने के लिए लाठियां तक चल जाया करती थीं। इसी कारण एक बार उनकी नौटंकी कंपनी को शहर से निष्कासित भी कर दिया गया था। गुलाबबाई की कंपनी के मशहूर खेल हरिश्चंद्र-तारामती, जहांगीर का इंसाफ, गुलबकाबली, लैला-मजनूं, अमर सिंह राठौड़, शीरी-फरहाद, अनारकली आदि थे।

अब तक गुलाबबाई नौटंकी की पर्याय बन चुकी थी। तभी एक छोटी-सी बात से उनके मन को ठेस लगी। उन्होंने पंडितजी के चरण स्पर्श कर आशीर्वाद लिया और कंपनी से किनारा कर लिया। परंतु गुलाबबाई मात्र एक कलाकार न होकर स्वयं कंपनी बन चुकी थी। पं. त्रिमोहन की कंपनी से अलग उन्होंने खुद की कंपनी गुलाब थियेटर की नींव डाली। गुलाबबाई की लोकप्रियता के कारण उस समय के जाने-माने कलाकार गुलाब के साथ काम करना अपना सौभाग्य मानते थे। फलतः गुलाब थियेटर बेहतरीन अदाकारों का संगम बन गया। बाकी कंपनियों को गुलाब थियेटर ने

गुलाबबाई का गाया गीत 'नदी नारे न जाओ श्याम पइयां पडूं' तो बच्चे-बच्चे की ज़ुबान पर रट गया था। 'मोहे पीहर में मत छोड़' और 'शहर बनारस जइयो, तो लहंगा ले अइयो' जैसे गीत इतने लोकप्रिय हो गये कि एच. एम. वी. ने इसके रेकॉर्ड बनाकर बेचे।

बहुत पीछे छोड़ दिया। गुलाब थियेटर की लोकप्रियता का आलम यह था कि कानपुर शहर में नौटंकी कलाकारों जैसे कपड़े पहनना फैशन हो गया था।

गुलाबबाई का गाया गीत 'नदी नारे न जाओ श्याम पइयां पड़ूं' तो बच्चे-बच्चे की जुबान पर रट गया था। 'मोहे पीहर में मत छोड़' और 'शहर बनारस जइयो, तो लहंगा ले अइयो' जैसे गीत इतने लोकप्रिय हो गये कि एच. एम. वी. ने इसके रेकॉर्ड बनाकर बेचे।

गुलाबबाई को पद्मश्री

सन् १९५४ के आस-पास गुलाबबाई ने कानपुर के बाबू बलबीर सिंह के साथ विवाह कर लिया। घर-गृहस्थी में रमने के बावजूद नौटंकी से उनका संबंध बना रहा। गुलाब थियेटर लगातार नौटंकी के प्रति समर्पित रहा। नौटंकी कला के प्रति निष्ठा और समर्पण को देखते हुए उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी ने सन् १९७० में तथा संगीत नाटक अकादमी ने सन् १९८४ में पुरस्कृत कर गुलाबबाई को सम्मानित किया। भारत सरकार ने भी नौटंकी के क्षेत्र में अविस्मरणीय योगदान के लिए गुलाबबाई को सन् १९९० में राष्ट्रपति श्री वेंकटरमण के हाथों पद्मश्री सम्मान से अलंकृत किया।

धीरे-धीरे सभ्यता के विकास के साथ-साथ मानव का यंत्रीकरण होता गया। ऐसे मशीनीकरण के युग में लोककला और संस्कृति मात्र किताबों तक सीमित होने लगी। पाश्चात्य संस्कृति से ओत-प्रोत छिछले एवं कथित प्रयोगवादी नाट्य-शैलियों का श्रृंगार किया जाने लगा। शादी-बारातों में नौटंकी के मंचन का प्रचलन समाप्त होता गया। उसकी जगह वीडियो ने ले ली। जैसा कि एक बार हालात से क्षुब्ध होकर गुलाबबाई ने भी कहा था कि महगाई के इस दौर में गिने-चुने लोग ही शादी-विवाह में नौटंकी कंपनी बुलाते हैं, क्योंकि छोटी-से-छोटी कंपनी भी एक रात के पांच हजार रुपये तक ले लेती है। जबकि वीडियो से तीन-चार हजार रुपये में ही काम चल जाता है।

बहरहाल कुछ महंगाई की मार और कुछ बदलती जीवन-शैली के कारण नौटंकी में विकृतियां आती गयीं। सस्ते मनोरंजन के लिए अब 'अमर सिंह राठौड़', 'हरिश्चंद्र-तारामती' की जगह या तो वीडियो ने ले ली या फूहड़ फिल्मी गीतों और कथानक ने। गुलाबबाई जैसी महान कलाकार कला के प्रति अपनी अंतिम सांस तक सच्ची निष्ठा और लगन के साथ पूर्ण समर्पित रही। १३ जुलाई १९९६ की शाम ४.३० बजे उनके निधन से नौटंकी जैसी सशक्त लोकनाट्य-शैली के एक युग का अंत हो गया। वह पदचाप जिसकी थिरकन से सारा वातावरण गुंजायमान हो जाता था। वह सुर जिसके जादू से सभा लयबद्ध हो जाती थी, हमेशा-हमेशा के लिए चिर निद्रा में लीन हो गया।

— ए-३०१, किदवई नगर (पूर्व)
नयी दिल्ली-११००२३

चकास्ति योग्येन हि योग्यसङ्गमः।

(नैषधीयचरितम् ९/५६)

योग्य से योग्य का संगम ही सुशोभित होता है।



दीपक अरोड़ा, चाक घाट (म.प्र.)

● लोकसभा में सत्तारूढ़ पक्ष के विरुद्ध एक बार विश्वास मत पारित होने के पश्चात् फिर कब अविश्वास प्रस्ताव लाया जा सकता है ?

□ **लोकसभा के जिस सत्र में सरकार को विश्वास मत प्राप्त हो चुका है फिर उस सत्र में दुबारा अविश्वास प्रस्ताव नहीं लाया जा सकता है ।**

बी.के. प्रभाकर, मैसूर

● द्वादश ज्योतिर्लिंग संबंधी श्लोक कौन-सा है ?

□ ***सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम् ।***
उज्जयिन्यां महाकालमोंकारममलेश्वरम् ॥१॥
परल्यां बैद्यनाथं च डाकिन्यां भीमशंकरम् ।
सेतुबंधे तु रामेशं नागेशं दारुकावने ॥२॥
वाराणस्यं तु विश्वेशं त्रयंबकं गौतमी तटे ।
हिमालये तु केदारं घुसृणेशं शिवालये॥३॥
एतानि ज्योतिर्लिलिङ्गानि सायं प्रातः पठेन्नरः ।
सप्तजन्म कृतं पापं स्मरणेन विनश्यति ॥४

अरुण बोस, दरभंगा

● समुद्री जीव ऑक्टोपस का शारीरिक गठन और भोजन किस प्रकार का है ?

□ **ऑक्टोपस लगभग सभी महासागरों में पाया जाता है । यह ५-५४० सेंटीमीटर लंबा होता है । इसकी आठ भुजाएं होती हैं । बड़े ऑक्टोपस की भुजाएं तो ९०० सेंटीमीटर तक पहुंच सकती हैं । सामान्य ऑक्टोपस का भार दो किलोग्राम होता है । इसकी दो आंखें तथा सींगदार चोंच के चारों ओर स्पर्शक मुद्रिका होती है, और शरीर थैली सदृश होता है । यह केकड़े और समुद्री झींगा खाता है तथा खतरा महसूस करने पर रोशनाई सदृश द्रव फेंककर भाग लेता है ।**





राघवेन्द्र त्रिपाठी, जबलपुर

● लंदन में स्वामीनारायण न्यास द्वारा निर्मित मंदिर के बाद अन्य नगरों में भी मंदिर बनेंगे ?

□ **इंगलिश मिडलैंड्स में रहनेवाले दक्षिण भारतीयों ने उस क्षेत्र में दो मंदिर बनाने की योजना बनायी है । लगभग ३५ लाख पौंड की लागत से श्री वेंकटेश्वर मंदिर का निर्माण ओल्डवरी में और कोई १० लाख पौंड से वेस्ट ब्रामविच में श्रीकृष्ण मंदिर का निर्माण कराया जाएगा । इन दोनों मंदिरों के वास्तुकार इस बार अंगरेज डॉ. ऐडम हार्डी हैं ।**

वलीन संतोषी, मुरादाबाद

हिंदुओं में कितने प्रकार के संस्कार होते ?

शरीर के सोलह मुख्य संस्कार बताये ये हैं : (१) गर्भाधान, (२) पुंसथल, ३) सीमंतोन्नयन, (४) जातकर्म, (५) प्रकरण, (६) निष्क्रमण, (७) न्नप्राशन, (८) चूडाकरण, (९) र्णवेध, (१०) विद्यारंभ, (११) नयन, (१२) वेदारंभ, (१३) केशांत, १४) समावर्तन, (१५) विवाह और १६) अंत्येष्टि ।

की नंदन शर्मा, भगेगा

राज्यसभा की पहली उप-सभापति कौन ?

कर्नाटक से राज्यसभा से निर्वाचित मती वायलेट अल्वा पहली उप-सभापति । उन्होंने सबसे पहले सन् १९६२ में कार्यभार संभाला था और इस पद पर सन् १९६६ तक रहीं । दुबारा चुनकर आने पर उन्हें पुनः निर्वाचित किया गया था । एक अन्य महिला श्रीमती प्रतिभा पाटिल भी इस पद पर दो वर्ष (१९८६-८८) तक रहीं थीं ।

माधवी पटेल, मंडला

● महात्मा गांधी की शिष्या मीरा बेन का पूरा नाम क्या था ?

□ **मीरा बेन मूलतः ब्रिटिश महिला थीं । उनके पिता, सर एडमंड स्लेड, ब्रिटिश नौसेना में एडमिरल थे । वह सन् १९२५ में महात्मा गांधी के संपर्क में आयीं और साबरमती आश्रम में उसी वर्ष से रहने लगीं । वह सन् १९३२ में गांधीजी के साथ गोलमेज सम्मेलन के समय ब्रिटेन भी गयीं थीं । लगभग एक वर्ष पूर्व उनका देहांत हो गया ।**

विजय कुमार कर्ण, हसपुरा

● महात्मा बुद्ध की जन्म तिथि कौन और स्थान

कहां है, उनका वास्तविक नाम क्या था ?

□ **भगवान बुद्ध के जन्म के संबंध में विभिन्न संप्रदायों में भिन्न-भिन्न मत हैं। तथापि, अधिकतर ग्रंथों में उनका जीवनकाल ईसा पूर्व ५६३-४८३ अंकित है। हां, यह सर्वमान्य है कि उनका जन्म वैशाख माह की पूर्णिमा को साल वृक्ष के वनों लुंबिनी नामक एक उद्यान में हुआ था। उनका वास्तविक नाम सिद्धार्थ था। गौतम कुल के होने के कारण उन्हें गौतम बुद्ध और शाक्य वंशीय होने के कारण शाक्य मुनि भी कहते हैं।**

मनमोहन देसाई, पालनपुर

● लुंबिनी में स्थापित स्तंभ में क्या, किस भाषा में लिखा है, यह किसका प्रयास है ?

□ **कलिंग विजय के पश्चात् सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म की दीक्षा ली और अपने राज्यारोहण के बीसवें वर्ष में बौद्ध भिक्षु उपगुप्त के नेतृत्व में लुंबिनी की यात्रा की और वहां बुद्ध के जन्मस्थान पर एक प्रस्तर-स्तंभ स्थापित कराया। इस स्तंभ में उसने ब्राह्मी लिपि में जो लिखवाया, उसका अनुवाद इस प्रकार है— 'देवों के प्रिय राजा प्रियदर्शी अशोक ने अपने राज्यारोहण के बीसवें वर्ष (ईसा पूर्व २४९) में यहां की स्वयं यात्रा की और यह कहते हुए कि 'यहां बुद्ध शाक्य मुनि जन्मे थे' पूजा की। शीर्ष पर अश्व प्रतिमायुक्त शिला स्तंभ लगवाया। क्योंकि यहां भगवान जन्मे, इसलिए इस पुनीत गांव के निवासियों को राजस्व कर से मुक्त किया जाता है। उपज का केवल आठवां भाग ही कर रूप में देना होगा।' अभी हाल में यहां हुई खुदाई में वह कक्ष भी मिल गया है जहां बुद्ध का जन्म हुआ था। अद्भुत संयोग यह है कि वैशाख (मई) की पूर्णिमा को भगवान पैदा हुए, पैंतीस वर्ष बाद वैशाख पूर्णिमा को बोधगया में उन्हें बुद्धत्व प्राप्त हुआ, और अस्सी वर्ष की अवस्था में वैशाख पूर्णिमा के दिन ही उन्हें निर्वाण प्राप्त हुआ।**

सौरभ शक्ति, झरिया

● इंटरनेट क्या है ?

□ **यह लाखों कंप्यूटरों का एक नेटवर्क है जो संचार तकनीकों से आपस में जुड़े हुए हैं। इस नेटवर्क के एक कंप्यूटर से नेटवर्क से जुड़े किसी भी अन्य कंप्यूटर से संपर्क स्थापित करके उसकी सूचना प्राप्त की जा सकती है। सूचना के इस विशाल खजाने की चाभी किसी एक व्यक्ति या संस्था के पास नहीं है।**

अभया त्रिपाठी, इलाहाबाद

● गंडकी नदी कहां है ?

□ **नेपाल की महत्त्वपूर्ण नदियों में गंडकी भी एक है।**

चलते-चलते

प्रश्न : हिंदी दिवस सितम्बर में एक ही दिन क्यों मनाया जाता है ?

उत्तर : **मरसिया साल में एक बार ही पढ़ा जाता है और श्राद्ध भी एक ही दिन किया जाता है।**

—सूत्रधार

'गिरगिट की तरह'

● डॉ. सुधा पांडे

यज्ञ और दान, कर्मफल, पुनर्जन्म, पाप का प्रायश्चित—जैसी अवधारणाएं पुराणों के समय से चली आ रही अवधारणाएं हैं। महाराज हों या साधारण मनुष्य अपने श्रेष्ठ-अश्रेष्ठ कर्मों का परिपाक उसे भोगना ही पड़ता है। स्वर्ग-नरक—जैसी मान्यताओं से प्रभावित धर्मभीरूता सदैव अपना स्थान बनाती रही है। परसंपत्ति हरण की अग्नि सारे देश, सारे कुल के विनाश का कारण बनती है। प्राचीन आस्थाओं को मुखरित करनेवाली यह पुराण कथा न्याय न कर पानेवाले उस महाराज की व्यथा है, जो अपनी निष्क्रियता से 'गिरगिट' की तिर्यक् योनि में शापभोगता रहा था... और प्रायश्चित से उसे मुक्ति मिली...

'तुम छिपकर रहनेवाले और केवल सिर हिलानेवाले गिरगिट होकर नरक में होगे' महाराज के सामने बार-बार ये पंक्तियां ...भर रही थीं। उस रात्रि देह त्याग के समय ...जा नृग का मन उद्वेलित था। उनके सामने ...पनी राजसभा में प्रतिवेदन करने आये ब्राह्मण ...जकों के विवाद की स्मृतियां साकार हो उठीं ...थीं।

पौराणिक युग के महायशस्वी राजा थे नृग। ...ज्ञ और दान—जैसी प्रवृत्तियों के साधक भी थे। वे नृपति प्रजा के हित चिंतन और कठोर शासन के प्रति भी समर्पित थे।

वह वर्ष महत्त्वपूर्ण वर्ष था। जब उन्होंने रमणीय तीर्थों से घिरे पयोष्णी नदी के तट पर एक महान यज्ञ का आयोजन किया। यज्ञ की महिमा से अभिभूत इंद्र भी पधारे—

"मैं स्वयं इस यज्ञ में सोमपान का आनंद लूंगा।"

हर्ष से भरे इंद्र ने [illegible] सार्थक बनाया था।

राजा नृग ने भी अपनी पूर्व परंपरा के अनुसार ब्राह्मणों को स्वर्ण से सजी एक करोड़ सवत्सा धेनुएं दान में दीं, और प्रचुर दक्षिणा भी दी। राजा से अपरिमित धन धान्य पाकर ब्राह्मण अपनी जीविका की ओर से काफी समय तक निश्चिंत हो गये थे। अपरिमित दान वैभव से राजा भी तृप्त थे।

"मैं इतना अधिक पुण्य लाभ करूं कि मेरी कीर्ति देवों में अपना स्थान बनाये एवं मुझे स्वर्ग लाभ हो सके," राजा के मन में फिर से यह कामना जागी...।

'आप पहले ही कई यज्ञ कर चुके हैं किंतु गो-दान की निरंतरता यदि बनी रहे तो यज्ञ के समान ही पुण्य मिलेगा, आपकी इच्छा भी पूर्ण हो सकेगी' पुरोहितों ने राजा के अनुरूप ही परामर्श दिया था।

पुरोहितों के समर्थन की देर थी कि राजा पुनः दान कर्म में लग गये। सुपात्र ब्राह्मणों को बुला-बुला कर लाख-लाख गाएं दान में दी जाने लगीं...और गायों के पालन-पोषण के लिए भी ब्राह्मणों को प्रचुर धनराशि भी दी जाती थी। गो-संवर्धन उत्सव के दिन दूसरे राज्यों से भी दानार्थी आकर दान लेते थे।

बाईस वर्षों से भी अधिक समय तक दान का यही क्रम चलता रहा और स्वर्ण से सजी-धजी सवत्सा धेनुओं की संख्या बढ़ती गयी। गोदान का क्रम राजा के जीवन के अंतिम क्षण तक चलता रहे। राजकर्मचारी भी इस चेष्टा के प्रति सजग थे, किसी भी दिन गायों की कमी नहीं होने दे रहे थे।

"आज 'शबला' नहीं दिखायी दे रही है...शाम हो चली है, किंतु वह लौटी क्यों नहीं ?"

आश्रमवासी वह अग्निहोत्री ब्राह्मण प्रवास से लौटकर आया था और अपनी गाय को न पाकर व्याकुल था...। घर के सभी सदस्य भी चिंतित थे।

गाय सुबह से चरने के लिए वन की ओर गयी थी। चरते-चरते वह कहीं दूर भटक गयी थी। ...राजा के प्रतिनिधियों ने उसे पकड़कर दान दी जानेवाली गायों में शामिल कर दिया था। एक दिन संकल्प करके राजा ने उसे भी किसी दूसरे ब्राह्मण को दान में दे दिया था।

गाय को न पाकर अग्निहोत्री ब्राह्मण विचलित था और घर से तुरंत चल पड़ा अपनी गाय को ढूंढ़ने। ...भूखा-प्यासा वह ब्राह्मण कई दिनों दूर-दूर तक भटकता रहा। भटकते-भटकते वह कनखल के पास पहुंच गया था। अचानक एक घर के सामने जाकर ठिठक गया—

"यह क्या ? यह तो मेरी शबला ही है... !"

"शबले शबले। मेरे पास आओ ?"

ब्राह्मण का स्वर सुनते ही गाय उसके पास पहुंचने को विकल हो गयी। बंधी थी। अतः विवश करुण भाव से वह दूर से निहारती रही।

"कौन हैं आप ?" गृह स्वामी बाहर आ चुका था...

"महाशय ! यह मेरी प्यारी गाय है... कई दिनों से घर से गायब थी। ...मैं भी घर में नहीं था। इसे ढूंढ़ते-ढूंढ़ते यहां आ पहुंचा हूं। कृपया मेरी गौ लौटा दीजिए। ...आपने इसे यहां सकुशल रखा है, इसके लिए मैं हृदय से कृतज्ञ हूं।" अग्निहोत्री ब्राह्मण अपनी व्यथा

सुना चुका था ।

"कैसी बातें कह रहे हैं आप ? आप शायद भ्रम में हैं । ...इसे तो दानी महाराज नृग ने मुझे दान में दिया है ? वहां आपकी गाय कैसे पहुंच सकती है । समान आकृति के कारण भ्रम में हैं आप शायद ।"

"क्यों झूठ बोलते हैं ? चोरी करके लायी गाय को आप राजा से दान में प्राप्त बता रहे हैं ।" अग्निहोत्री ब्राह्मण आवेश से भर उठा था ।

"मैं सबके सामने इसे राजा से दान में लाया हूं । किसी भी दशा में इसे नहीं दूंगा ।" दूसरा ब्राह्मण भी तैश में आ चुका था ।

बिना किसी मूल्य के प्राप्त उस सीधी-साधी गाय को वह भी आसानी से नहीं देना चाहता था । ...दोनों में विवाद बढ़ता जा रहा था । गाय वहीं कोने में खड़ी कातर आंखों से अपने स्वामी को निहारती विवश थी ।

"इस व्यर्थ के विवाद से क्या लाभ ? यदि तुम्हें गाय चाहिए तो राजा नृग के पास जाओ । पहले यह गाय तुम्हारी रही भी हो तो मुझे इससे क्या ? अब तो यह मेरी है । किसी दूसरे से न पाकर, मैंने राजा के यहां उनके हाथों से ही यह गाय पायी है ।"

दोनों में विवाद बढ़ता देख ग्रामवासी एकत्रित हो चुके थे । पर विवाद शांत नहीं हो पा रहा था ।

"महाराज नृग के ही यहां चलें । वहीं जाकर इस विवाद का अंत संभव है ।" उस ब्राह्मण ने सुझाव दिया था ।



"ठीक है, ठीक है वहीं न्याय होगा ।" दूसरे ब्राह्मण सहित गांववाले भी सहमत थे ।

अग्निहोत्री ब्राह्मण को भी सहमति देनी पड़ी थी । राजा नृग के पास पहुंच गये थे वे दोनों ।

प्रतिदिन की भांति राजा गो-दान के कर्म से निवृत्त होकर पुरोहितों अमात्यों के साथ यज्ञशाला से राजभवन की ओर मुड़े ही थे कि किसी व्यक्ति की आवाज उनके कानों में पड़ी । वह उन्हें ही संबोधित करके कह रहा था—

"महाराज ! अभी उस दिन ही आपने मुझे यह गाय दान में दी है, और यह ब्राह्मण कह रहा है कि यह गाय मेरी है । इसी कारणवश मुझसे विवाद भी कर रहा है ।"

दान में उस गाय को प्राप्त करनेवाला वह ब्राह्मण अपने पक्ष को ही प्रबल बनाकर सही बात कह रहा था मानो... ।

राजा चिंता में पड़ गये थे क्षणभर को । प्रतिदिन प्रचुर संख्या में गाएं दान में देने के कारण उनके लिए यह स्मरण रखना असंभव था कि किस दिन किस व्यक्ति को कौन-सी गाय दी है ? फिर ब्राह्मण होकर यह झूठ क्यों बोलेंगे ? मेरे प्रतापी शासन में कोई भी असत्य वचन नहीं बोलता । फिर यह तो ब्राह्मण है । मन ही मन ऐसा विचार करके राजा ने अपना कोई अभिमत प्रकट नहीं किया और उसी की बात सच मानकर मौन रह गये ।

अब अग्निहोत्री ब्राह्मण की बारी आयी । ...उसकी मानसिक स्थिति अस्त-व्यस्त थी । कई दिवसों के श्रम से वह पहले से शांत था । ...राजा का निर्देश पाते ही क्षुब्ध स्वर में बोला—

"हे राजन् ! आपकी महिमा और कीर्ति इहलोक और परलोक में छायी रहे । इस प्रत्याशा में आपके मुंहलगे झूठे मंत्रियों ने इस गाय को चुरा आपसे दान करवाया है । और चोरी की वस्तु दान में देकर आपने मिथ्या पुण्य लाभ का जो यह आयोजन किया है, वह आप जैसे महाराजाओं के लिए अशोभनीय है ।" आक्रोश से तमतमा उठा था उसका मुखमंडल ।

भरी राजसभा में भी कोई प्रतिवाद करने का साहस न कर सका था । ब्राहमण अभी भी शांत नहीं हुआ, फिर लगभग चीखते हुए बोला, "हे राजन् ! यह गाय कई वर्षों से मेरे पास है । ...यह मेरी ही गाय है, यदि आप सच्चे पुण्यवान और न्यायकर्ता हैं तो मेरी गाय वापस दिलवा दें...मैं आपसे और कुछ नहीं चाहता ।"

महाराज के सामने भीषण धर्मसंकट आन पड़ा था, एक तो राज्य के निवासियों का विवाद । दूसरा भरी सभा में राजकर्मचारियों तथा पुरोहितों के बीच उन पर चोरी का लांछन लगाकर जघन्य पाप का संकेत । वर्षों की प्रतिष्ठा क्षणभर में ही दांव पर लग चुकी थी । कैसे मुक्ति पायी जा सके इस विपत्ति से । वे समझ नहीं पा रहे थे ।

दोनों ही पक्ष अपनी-अपनी बात पर अड़े थे । अपने ही पक्ष में न्याय चाहते थे । चिंता में लीन राजा ने अग्निहोत्री ब्राह्मण को अनेक प्रकार से समझाने का प्रयास किया—"असंख्य गायों में आपकी गाय को मैं पहचान न पाने के कारण भ्रमवश दान कर चुका हूं । दान दी गयी वस्तु वापस कैसे ली जा सकती है ?"

"यदि आप न्यायप्रिय हैं तो आप मेरी वही गाय वापस दिलवा दें," ब्राह्मण ने फिर वही

बात दुहरायी थी ।

"आप उस गाय के बदले मेरे कोष से प्रभूत धनराशि ले लें । किंतु मेरे इस प्रमाद के कारण मुझे क्षमा करें ।"

महाराज किसी प्रकार से भी दोनों ब्राह्मणों को समझाने में स्वयं को असफल पा रहे थे । कोई मार्ग नहीं सूझ रहा था ।

राजा के द्वार पर न्याय की प्रत्याशा में वे ब्राह्मण कई दिनों तक ठहरे रहे, किंतु राजा से कोई न्याय न मिल सका, दोनों ब्राह्मणों के हृदय क्रोध से भर उठे थे । राजा की मनोदशा भी न्याय करने में स्वयं को समर्थ न पाकर अत्यंत शोचनीय हो चली थी ।"

"यह राजा स्वयं को दानी और न्यायप्रिय कहते हैं, किंतु निर्णय करवाने आये प्रार्थियों को समुचित न्याय नहीं दे पाते हैं ।" पहले ब्राह्मण त्रस्त होकर कहा ।

"हम लोगों के सामने नहीं पड़ रहे हैं यह प श्रेष्ठ । अब ये अगले जन्म में प्राणियों से छुपकर रहनेवाले गिरगिट बनें और सहस्रों वर्षों क गड्ढे में पड़े रहें ।" उन्हें दूसरा ब्राह्मण शाप दे चुका था ।

अद्वितीय यम दंड के समान शाप दिया जा का था महाराज को । वे दोनों ब्राह्मण अपनी य का शोक मनाते वापस चले गये ।

शाप की बात राजा के कानों तक पहुंच की थी । विवाद निर्णय न कर पाने के कारण न दोष राजा के मस्तक पर लग चुका था । शाप से भरे राजा क्या करें, क्या न करें इस ध स्थिति में विमूढ़ हो उठे ।... शोकावेग से जीवन का अंतिम क्षण आ पहुंचा था ।

यम के दूत राजा को यमराज के सामने ले



गये । यमराज ने स्वयं उनसे पूछना प्रारंभ किया—"राजन् ! तुमने इतने पुण्यकर्म किये हैं, तुम्हारे दान और तप के तेज के फलस्वरूप तुम्हें वही तेजस्वी लोक मिलेगा, जिसकी आकांक्षा बड़े-बड़े ऋषि-मुनि करते हैं । किंतु अपनी राजसभा में विवाद का निर्णय किसी के भी पक्ष में न करके तुमने जो पाप किया है, उसका फल भी तुम्हें ही भोगना पड़ेगा । तुम्हीं बताओ पहले पाप का फल भोगोगे अथवा पुण्य लाभ करोगे ।"

गंभीर वाणी में अपनी बात कहकर यमराज मौन हो गये थे ।

"भगवन् ! मैंने जो अपराध किया है उसे

तो भोगना ही पड़ेगा, किंतु मैंने जानबूझकर तो कोई पाप नहीं किया ।'' महाराज ने यमराज को उत्तर दिया था ।

''महाराज आप राजा थे, आपके कर्मचारी प्रमाद और झूठी चाटुकारिता में लगे थे । प्रमादवश वे दूसरे की गाय चुरा लाये और उसे आपने दान भी कर दिया । प्रजा के धन की सुरक्षा आपके शासन में न हो सकी । इससे भी बढ़कर, विवाद के समय दोनों पक्षों के प्रति आपने कोई निष्कर्ष भी न दिया । आप केवल सिर हिलाकर रह गये और मौन साधकर चुपचाप चले गये थे । यह पाप कोई छोटा पाप नहीं है, जैसा आप समझ रहे हैं ।''

धर्मभीरु राजा कांप उठे । ...मरकर स्वर्ग भी न मिला । इस अपयश के भागी वे नहीं बनना चाहते थे ।

''ठीक है मैं पहले पाप का फल भोगूंगा... यही मेरा प्रायश्चित हो ।'' राजा ने प्रणत भाव से यमराज का आदेश स्वीकार कर लिया ।

वे दोनों ब्राह्मण कुमार ही तुम्हारे पाप की सजा अपने शाप में निश्चित कर गये हैं । उस समय तुमने उनके सामने गिरगिट की तरह आचरण किया था । दोनों के समक्ष अपना अलग-अलग रूप प्रस्तुत किया, कोई निर्णय न देकर केवल सिर ही हिलाया था । अतः मुझे कोई नया दंड नहीं देना है । तुम तिर्यक योनि में गिरगिट बनकर अंधे कुएं में पड़े रहो । द्वापर युग में जब श्रीकृष्ण वहां पहुंचेंगे, तब तुम्हारी इस अंधकूप से मुक्ति होगी ।'' कहकर यमराज चुप हो गये ।

''फेंको-फेंको इसे नीचे गिराओ .कहते हुए यमदूतों ने उन्हें तत्काल नीचे की ओर गिरा दिया । उस वन प्रांतर में एक बड़ा कुंआ था । उसी में गिरते ही वे गिरगिट बन गये । गिरगिट का विशालकाय शरीर लेकर वर्षों तक वे उसी में पड़े रहे । अपने पूर्व जीवन के उस कृत्य का स्मरण उन्हें यह पीड़ा देता रहा कि जीवन के अंतिम वर्षों में उनकी प्रवृत्ति गिरगिट के समान क्यों हुई ? इसी पीड़ा और पश्चाताप में उन्होंने शाप की अवधि बितायी ।

वह समय आ ही गया जब भगवान कृष्ण उस स्थल पर पहुंचे... । राजा की व्यथा सुनक उपस्थित जनसमूह के सामने श्रीकृष्ण ने राजा कहा, ''अग्नि के समान तेजस्वी, महान पुण्यक भी पराये धन को नहीं पचा सकते । अभिमान राजागण उनके सामने क्या बराबरी कर सकेंगे ।... हलाहल की चिकित्सा तो संभव है किंतु दूसरों की संपत्ति हर कर पचा लेने की सामर्थ्य इस पृथ्वी पर किसी में नहीं है । विष खाने पर केवल खानेवाले के प्राण जाते हैं, कि दूसरों का धन जो हरते हैं, उस पराये धन के कारण जो अग्नि पैदा होती है, उसमें सारा देश सारा कुल, सब कुछ नष्ट हो जाता है । जिसक संपत्ति छीनी जाती है, उनकी आंखों से निकलनेवाले अश्रु बिंदु सारी धरती में समा हैं, और अपहरण करनेवाले तथा उनके वंश को राजा नृग की भांति सैकड़ों वर्षों तक नरक की यातनाएं भोगनी पड़ती हैं ।''

श्रीकृष्ण के दर्शन से राजा नृग के सारे प दूर हो गये । उनके शाप की अवधि भी सम हो चली थी । श्रीकृष्ण द्वारा मंगाये गये विम पर आरूढ़ होकर वे महाराज देवनगर को च गये ।

—प्र

एम. के. पी. पो. ग्रे. क

देहरादून (उ.



• डॉ. सतीश मलिक

पागलों की तरह

सुभाष, जमुना नगर : मैं जब १७ वर्ष का था, तब एक दिन अचानक घबराहट-सी हुई। बात-बात पर दिल घबराने लगा। पी. जी. आई. चंडीगढ़ में परीक्षण करवाये, परंतु कोई रोग नहीं निकला। लेकिन स्वास्थ्य दिन-पर-दिन गिरने लगा। दिल धड़कता रहता, इससे यह बहम रहने लगा कि मैं बचूंगा नहीं। यह हालत आठ-नौ महीने रही। तब मुझे गुरुद्वारा करतारपुर ले जाया गया। इससे सामान्य हो गया। २१ वर्ष की अवस्था में पंद्रह-बीस दिन फिर वही हालत रही। फिर बिना किसी को दिखाये सुधरने लगी। अब मैं ३७ वर्ष का हूं तथा दो बच्चों का पिता भी हूं। पत्नी सुंदर है। उच्च शिक्षा प्राप्त है। परिवार सुख-शांति में है। अच्छे पद पर कार्यरत हूं तथा इज्जत पाता हूं। लेकिन अप्रैल '९६ को ड्यूटी पर अचानक घबराहट हुई और दिल घबराने लगा। फिर हृदय विशेषज्ञ ने जांच-पड़ताल के पश्चात हृदय रोग से पीड़ित नहीं है, ऐसा मुझे बताया। परंतु अब स्थिति यह है कि डर लगा रहता है कि दिल का दौरा न पड़ जाए। मेरा एक मित्र ३६ वर्ष का था, उसके भी सभी परीक्षण सामान्य थे, परंतु हृदय गति रुकने से तीन माह पूर्व मृत्यु हो गयी। वह शराब, मांस आदि का सेवन करता था, लेकिन मैं तो चाय तक नहीं पीता हूं। एक पत्रिका में पढ़ा धर्म, भगवान सब काल्पनिक हैं। मेरी आस्था भगवान शिव में है। मैं उनका उपासक हूं। गीता का मैं नियमित पाठ करता हूं। मेरी आस्था डगमगाने लगी। अब स्थिति पागलों से कम नहीं है। क्या मैं ठीक हो जाऊंगा या जीवनभर मनोचिकित्सक की दवाई खानी पड़ेगी। कृपया कुछ सुझाव दें।

आपके रोग को हम 'पैनिक स्टेट' से जानते हैं। इसमें रोग के रहते दिल के दौरे पड़ने व मृत्यु का भय रहता है। इस बार आपकी स्थिति निरंतर बढ़ती गयी, क्योंकि आपके मित्र की मृत्यु आपके मन पर हावी है तथा भगवान की ओर आस्था डगमगा गयी है। यदि आपको हृदय रोग होता तो १७ वर्ष की आयु में यह कभी पहली बार नहीं होता। गुरुद्वारा जाने या स्वयं ही ठीक भी न होता। ई. सी. जी. परीक्षणों से भी इसके लक्षण सामने आ जाते। इस रोग का आजकल मनोचिकित्सा द्वारा इलाज संभव है। दवा आदि सारी उम्र कभी नहीं खानी पड़ती। पत्रिका में यह मात्र एक लेखक के विचार हैं। आपको भगवान के प्रति अपनी आस्था पूर्णरूप से बनाये रखनी चाहिए। इस प्रकार के उपक्रमों से आपको अवश्य लाभ होगा।

कुछ नहीं कर सकता

अजय ठाकुर जबलपुर : मेरा बच्चा ढाई वर्ष का है, उसे जन्मजात मस्तिष्क रोग है। जिसे डॉक्टर 'सेरिब्रल पाल्सी' कहते हैं। कहा

इस स्तंभ के अंतर्गत अपनी समस्याएं भेजते समय अपने व्यक्तिगत जीवन का पूरा परिचय, आय, पद, आयु एवं पते का उल्लेख कृपया अवश्य करें ।

—संपादक

इलाज कराया पर कोई आराम नहीं हुआ । बालक न तो कोई बात कर सकता है, न चबाता है और न ही चल सकता है । आवाज केवल रोने- चिल्लाने तक ही सीमित है । थोड़ा-बहुत खाना लेटे हुए खा सकता है । कृपया इस बीमारी का उपचार सुझायें ।

आपके बच्चे के लक्षणों से लगता है कि इसका निदान 'सेरब्रल पाल्सी' सही है । इस रोग में बच्चे का मस्तिष्क अविकसित स्थिति में है तथा जितना भी प्रकृति की ओर से विकास संभव होगा, वह हो जाएगा । हां, 'फिजो थेरेपिस्ट' तथा बच्चों के स्नायु विशेषज्ञ के द्वारा बच्चे की देख-रेख जारी रखें । आजकल ऐसे बच्चों के लिए 'सेरीब्रल पाल्सी, संगठन' बने हैं जो बड़े शहरों में सक्रिय हैं तथा वह ऐसे बच्चों के माता-पिता को बच्चे की देख-रेख के बारे में सलाह देते हैं । मेडिकल कॉलेज में स्नायु विभाग के अध्यक्ष द्वारा आपको इनके बारे में जानकारी मिल सकती है । ऐसे बच्चे धीरे-धीरे चलना, बोलना, और मानसिक व शारीरिक विकास की ओर अग्रसर हो सकते हैं । जांच के पश्चात् उनकी क्षमताओं का आंकलन किया जा सकता है ।

मेरी मृत्यु तो नहीं

सरोजनी पांडे, इलाहाबाद : मेरे व मेरे छोटे भाई के गले में टांसिल बताकर बचपन में ऑपरेशन की सलाह दी गयी । पिताजी ने मेरे भाई का ऑपरेशन तो करा दिया, लेकिन मेरा लड़की होने के कारण ऐसा नहीं किया । एक वर्ष बाद पिताजी की मृत्यु हो गयी, मुझे सरदी, जुकाम व गले में कष्ट कभी-कभी हो जाता है । अब समस्या यह है कि मैं तीन बच्चों की मां हूं, परंतु कभी-कभी गले में फंदा जैसा लग जाता है । दम घुटने लगता है । तब मैं कपड़े ढीले करती हूं फिर गैस निकलती है और सारा शरीर पसीने से तर हो जाता है । पति व बच्चों से उस समय पीठ पर मारने को कहती हूं । फिर ऊपर से नीचे मालिश करने पर ठीक हो जाती हूं । क्या यह मेरे टांसिल के कारण है ? मेरी मृत्यु गला घुटने से तो नहीं हो जाएगी ?

आपको जिस समय ऐसा होता है, उस समय छाती की आले द्वारा जांच आवश्यक है । कई बार कुछ लोगों को टौंसिल्स की वजह से 'एलर्जिक ब्रौंकाइटिस' हो जाता है । जांच करने पर एकदम पता चल सकता है । इसके साथ-साथ बहुत अधिक डर की वजह से भी आपको कई लक्षण होने लगे हैं । आमतौर पर इस आयु में टौंसिल्स के ऑपरेशन का महत्त्व नहीं रहता । 'एलर्जिक ब्रौंकाइटिस' व डर दोनों का इलाज आजकल संभव है । आपकी मृत्यु कदापि इस रोग से नहीं हो सकती ।

अन्य क्या सोचते हैं ?

राजकुमार शर्मा, जयपुर : मध्यमवर्गीय परिवार

का २३ वर्षीय नवयुवक हूं । गत दो वर्ष से सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी कर रहा हूं । एम. ए. पास करते ही जीवन में एकाकीपन महसूस करने लगा हूं । साथ ही अपनी शारीरिक बनावट को लेकर हीन भावना से ग्रसित हो गया हूं । धीरे-धीरे घबराहट बढ़ने लगी है । नींद आनी बंद हो गयी । लोगों से मिलने से भी कतराने लगा हूं । किसी भी व्यक्ति से आंख मिलाकर घबराहट शुरू हो जाती है । अपने विचारों को सही ढंग से प्रस्तुत नहीं कर पाता हूं । हमेशा यह सोचता रहता हूं कि अन्य व्यक्ति मेरे बारे में क्या सोचते रहते हैं । घर से बाहर निकलने में कतराता हूं तथा किसी से बातचीत करने पर शीघ्र हड़बड़ा जाता हूं ।

उत्तर : आप अवश्य ही मनोरोग से पीड़ित हैं । केवल मनोचिकित्सक के परीक्षण द्वारा ही हम कह सकते हैं कि किस रोग से पीड़ित है ? आजकल आधुनिक विधि द्वारा ऐसे व्यवहार सही हो सकते हैं । विश्वास रखें अन्य व्यक्तियों को किसी के बारे में भी सोचने का समय व रुचि नहीं होती है । वह केवल स्वयं में ही व्यस्त होते हैं । आपका रोग काफी हद तक एकाकीपन से शुरू हुआ है । सामाजिकता व व्यावहारिकता द्वारा धीरे-धीरे ठीक हो सकता है । हिम्मत न हारें । कुछ समय के लिए दवा का सहारा भी ले सकते हैं ।

ऐसी स्थिति क्यों ?

सुगंधा मिश्रा, मुजफ्फरनगर : मेरी आयु १६ वर्ष है । कक्षा १२ की छात्रा हूं । किसी व्यक्ति से बात करते समय बीच में ही भूल जाती हूं कि किस विषय में बात कर रही हूं ? यह मुझे किसी के बताने पर या खुद ही कुछ मिनट के बाद ध्यान आ जाता है । ऐसा पिछले पांच वर्षों से हो रहा है । कृपया बतायें कि मेरी ऐसी स्थिति क्यों है ?

आपकी आयु १६ वर्ष की है । इस आयु में मन का चंचल होना स्वाभाविक है । यह अनजाने में किन्हीं और बातों पर जैसे आप कैसी लग रही हैं ? दूसरे व्यक्ति पर आपकी बातों का क्या प्रभाव पड़ रहा है ? वह आपकी ओर आकर्षित हो रहा है या वह आपके बारे में क्या सोचता है आदि । अचेतन मन में कई प्रकार के भाव उत्पन्न होने से आप अपनी विचार श्रृंखला नहीं बना पाती हैं । आपकी समस्या अपरिपक्वता से ही जुड़ी है । इसे बहुत गंभीरतापूर्वक न लें, मनोविश्लेषण द्वारा यह देखने की कोशिश करें कि उस समय किस बात के चलते-चलते आपके बोलने में परिवर्तन आया है । तब आप अपने विचारों को समझ पाने पर इस स्थिति से मुक्ति दिला सकती हैं ।

देहस्य पंच दोषा भवन्ति,
काम-क्रोध-नि:श्वास-भय-निद्रा: ।
तन्निरासस्तु
नि:संकल्प-क्षमा-लघ्वाहाराऽप्रमादतातत्त्व-
सेवनम् ॥

(मण्डल ब्राह्मणोपनिषद् १/२)

काम, क्रोध, श्वास, भय और निद्रा—ये शरीर के पांच दोष हैं । संकल्परहितता क्षमा, अल्पाहार, अप्रमत्तता और तत्त्व चिंतन—ये उक्त दोषों को दूर करने के उपाय हैं ।

हिमालय में कुमाऊं (उ. प्र.) के अल्मोड़ा जिले में स्थित पिंडारी ग्लेशियर है। पिंडारी ग्लेशियर से प्रारंभ होनेवाली घाटी को पिंडर घाटी कहा जाता है। पिंडर घाटी के पश्चिमोत्तर दिशा में एक दूसरी अत्यंत मनोरम एवं प्राकृतिक संपदा से भरपूर घाटी है—सुंदर ढुंगा घाटी। अर्थात सुंदर पत्थरों वाली घाटी। पहाड़ी भाषा में ढुंगा पत्थरों को कहा जाता है। इस घाटी के अंत में सुंदर ढुंगा ग्लेशियर है जहां से प्रकृति की अपूर्व छटा देखने का अपना सामान गांव की दुकान में उपलब्ध हो जाता है। हम पहले दिन रास्ते में बस खराब हो जाने के कारण भराड़ी तक ही पहुंच पाये। यहां से अंतिम बस स्टेशन सोंग १४ कि.मी. आगे है व लोहार खेत १७ कि.मी.। हम कुल दस सदस्य, एक पोर्टर व एक कुक थे। भराड़ी में ठहरने का अच्छा प्रबंध है।

दूसरे दिन हम भराड़ी से सीधे लोहार खेत (समुद्रतल से १७५० मी. की ऊंचाई पर है पहुंचें। तीसरे दिन खाती पहुंचे। यह स्थान

हिमालय में

नौ वर्ष का बच्चा : चरस और भांग

● देवेश्वर भट्ट

अलग ही आनंद है।

पहुंचने का मार्ग

सुंदरढुंगा जाने के लिए खाती गांव तक का मार्ग वही है जो पिंडारी ग्लेशियर जाने का है। नैनीताल से सुबह बागेश्वर तक के लिए बसें चलती हैं, यहां से अन्य बस लेकर उसी दिन अंतिम बस स्टेशन सोंग तक पहुंचा जा सकता है। उसी दिन सोंग से तीन कि.मी. पैदल चलकर लोहार खेत पहुंचा जा सकता है। यहां ठहरने का अच्छा प्रबंध है। खाने-पीने का समुद्र की सतह से २२१० मी. की ऊंचाई पर है। यह लोहार खेत से १९ कि.मी. है। बीच में ढाकुरी दर्रा है। सुंदर प्राकृतिक दृश्यों से भरपूर एक ऊंचा स्थान है, जहां से सामने हिमाच्छादित पर्वत श्रेणियां ऐसे प्रतीत होती हैं, जैसे हाथ पसारते ही छू लें।

नदियों के संगम के ऊपर बसा गांव

खाती एक आदर्श गांव कहा जा सकता है। पिंडर व सुंदरढुंगा नदियों के संगम के ऊपर बसा यह गांव अंतिम बस स्टेशन से २२

क.मी. दूर है। यहां आपको आवश्यकता की
लगभग प्रत्येक वस्तु प्राप्त हो जाएगी। हमने
आगे के रास्ते के लिए राशन व अन्य सामान
यहीं से खरीदा। यहां पर ठहरने के लिए
तीन-तीन विश्रामगृह हैं। गांव में एक जूनियर
हाई स्कूल भी है। यहां गांव में लकड़ी की
नक्काशी का काम दर्शनीय है।

खाती से हम अगले दिन जातोली गये।
हां से ७ कि.मी. दूर है दस परिवारों का
छोटा-सा गाव है। जातोली से अगले दिन ७
कि.मी. दूर दुगाई ढोंग गये। यहां नदी के किनारे
अपना कैंप लगाया। दुगई ढोंग से अगले दिन
कठलिया गये जो जातोली से १३ कि.मी. दूर
है।

कठलिया पहुचते ही लगता है जैसे किसी
पतली नाली को एक बडे हौज में खोल दिया
गया हो। यहां पर अचानक पतली घाटी
ग्लेशियर द्वारा काटकर बनाये गये एक विस्तृत
मैदान में बदल जाती है। यही सुदरढुंगा का
संगम स्थल भी है। यहां चारों ओर एकदम
खड़े हुए हिमाच्छादित पर्वत ऐसा अहसास
कराते हैं, जैसे हम ऊंची-ऊंची दीवारोंवाले
किसी चौड़े, विस्तृत कुएं में आ गये हों।
बल्जूरी रेंज, पवाली द्वार, मोइत्कोली व अन्य
चोटियां सिर उठाये खड़ी दिखायी देती हैं।
पश्चिमोत्तर दिशा में ऊंचाई पर एक झरना वहां
की सुंदरता पर चार चांद लगाता है। यहां हमने
बेस कैंप (आधार शिविर) बनाया। एक पोर्टर
व अनावश्यक सामान यहीं छोड़कर हम
अगले दिन बलूनी पहुंचे, जो लगभग ५०००
[illegible]
[illegible]

चोटियां एकदम पास दिखायी देती हैं।
हिमाच्छादित चोटियों के ऊपर स्थान-स्थान पर
छाये टुकड़ों में घने बादल दिखते हैं। उत्तर-पूर्व
से दक्षिण-पूर्व तक फैली बल्जूरी रेंज है। उत्तर
पूर्व में नंदा खाट, पवाली द्वार तथा मोइत्कोली
है। पश्चिम में मृगथूनी व टै?ट पीक और
दक्षिण में बलूनी के ठीक ऊपर दिखायी देती
है—हिमाच्छादित चमचमाती चोटी—ग्रेस
पीक।

बलूनी पहुंचने पर हमने बर्फ के बीच उभरे
हुए एक बर्फ रहित जमीन के टुकड़े पर टेंट
लगाये। फिर खाने का इंतजाम किया। पीने
का पानी भी बर्फ को पिघलाकर प्राप्त किया।
थोड़ा आराम करने के बाद हम आसपास के
इलाके में घूमने निकले। इसे 'रैकी' कहते हैं।
'रैकी' करने के बाद ऊपर चढ़ने के बारे में
स्थिति के अनुसार प्लानिंग की। हम सबने स्वयं
को रोप में बांध लिया था, ताकि फिसलने से
होनेवाली किसी भी दुर्घटना से बचा जा सके।
साथ में बर्फ काटने की कुल्हाड़ियां लीं।

राह के खट्टे-मीठे अनुभव

राह में हमें एक स्थान पर जंगली रास्ते से
गुजरते हुए बाघ द्वारा मारी गयी बकरी का शव
प्राप्त हुआ। बकरी को देखकर लगता था कि
बाघ कुछ देर पहले ही उसे मारकर गया है।
यह रोमांच पैदा करनेवाला अनुभव था। राह में
कई झरनों व छोटे-छोटे नदी-नालों को पार
करना एक [illegible] का काम था जो करने में हम
सभी को बड़ा मजा आया।

बलूनी से सामने बल्जूरी चोटी पर आये
बर्फीले तूफान को देखकर [illegible]



बेस कैंप में दल के सदस्य पृष्ठभूमि में हिमाच्छादित चोटियां

गौरव के विरुद्ध काम किया है ।

यह कहते-कहते वे इतने भावुक हो गये कि बार-बार माफी मांगते रहे । मैं यह देखकर बिलकुल भौचक्का रह गया था । मैंने उन्हें समझाय कि कोई बात नहीं । मैं

को सुनना एक नया अनुभव था । बलूनी में भी इतनी तेज हवा चलती है कि लगता है टेंट अभी उड़ा । परंतु मजबूत टेंट अपनी जगह अडिग था ।

रोचक संस्मरण

अभियान में हमारे साथ कुछ जापानी लोगों का दल भी था । एक स्थान पर हमने कुछ गंदगी पड़ी देखी जो शायद हमसे पहले आनेवाला कोई दल बिना नष्ट किये चला गया था । हमने उसे गड्ढा खोदकर दबाने का निश्चय किया । मैं बर्फ काटने वाली कुल्हाड़ी से गड्ढा खोदने लगा व अन्य साथी पास में बिखरे रैपर व अन्य पदार्थ उठाने लगे । उन्हें कुछ रैपर ऐसे मिले जो जापान के थे । जब मैं गड्ढा ढकने लगा, तब वे बोले कि जरा ठहरो हम इसका फोटो ले लें । मैंने जब फोटो लेने का कारण पूछा, तब वे अत्यधिक शरमिंदा होकर बोले कि इनमें से कुछ रैपर जापान के हैं । हम आपसे अपने उन साथियों की ओर से माफी मांगते है, जिन्होंने ये रैपर यहां ऐसे छोड़े । यह फोटो हम अपने देश ले जाकर दिखाएंगे कि हमारे किन्हीं साथियों ने पूरे राष्ट्र के

भी आम भारतीय की उन लोगों से तुलना करके मन ही मन शरमिंदा हो रहा था ।

रास्ते में एक और घटना घटी, जिसे मैं कभी नहीं भूल सकता ।

हुआ यह कि हम पहले दिन की ट्रैकिंग में जब एक गांव से गुजर रहे थे, तब एक नौ-दस वर्ष का बच्चा हमारे पास आया । कुछ झिझकते हुए उसने कहा, ''चरस लोगे ?'' हम चौंके, क्योंकि हममें से अधिकतर लोग पहाड़ी जन-जीवन से वाकिफ थे । हमने कभी नहीं सोचा था कि इन भोले-भाले लोगों के पास चरस तो क्या भांग भी मिल जाएगी । हमने यह देखने के लिए कि कहीं यह मजाक तो नहीं कर रहा, उससे कहा, ''हम लेंगे । क्या भाव है ?''—तीन रुपये की एक गोली ।''

—दिखाओ गोली कहां है ? जब हमने कहा तो उसने अपनी कमीज के बटन के पास से एक फटे हुए छोटे-से छेद में से एक छोटी-सी गोली निकाली । वह भांग की गोली थी । हमें बच्चे से यह जानकर बड़ा झटका लगा कि कुछ पर्यटक आते-जाते उससे उन गोलियों की मांग करते हैं । अतः उसने हमें भी यही समझकर



जातोली में सूर्योदय

भांग की गोली प्रस्तुत की थी कि हम ले लेंगे । उसे कुछ पैसे मिल जाएंगे । हमने उसे डांटा एवं समझाया कि आज के बाद कभी ऐसा न करना । यह गलत बात है । वह तो गरदन लटकाये शरमिंदा होकर चला गया, परंतु हम सब साथी बहुत देर तक इसी पर बहस करते रहे और अफसोस जाहिर करते रहे ।

—एफ-११ गोविंद भवन,
रुड़की विश्वविद्यालय,
रुड़की-२४७६६७



यह भी है जिंदगी

पवालीद्वार का एक मोहक दृश्य



सभी चित्र : लेखक

राष्ट्रीय बहुरूपिये सम्मेलन का एक दृश्य →





↑ हनुमान का स्वांग धरे एक बहुरूपिया कलाकार

अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त बहुरूपिया कलाकार— जानकी लाल भांड →



सभी चित्र : लेखक

बहुरूपिया कलाकार स्वांग को कई तरह से पेश करता रहता है परंतु, इन स्वांग के लिए वेश-भूषा, बनाव-शृंगार आदि का खर्च आय की अपेक्षा अधिक होता है। राम, कृष्ण, शंकर, हनुमान, भीम, अर्जुन, द्रौपदी, तपस्वी आदि पात्रों का स्वांग रचने के लिए बहुरूपिया कलाकार आर्थिक दृष्टि से इतने समर्थ नहीं रहे कि नित नये स्वांग रचकर दर्शकों का मनोरंजन कर सकें।

अनूठी लोकानुरंजन परंपरा

बहुरूपिया कला

● तरुण कुमार दाधीच

हमारे देश की अनेक गौरवशाली सांस्कृतिक परम्पराओं में से एक है, स्वांग रचने की कला। इस कला को बहुरूपिया कला के नाम से जाना जाता है। एक ही कलाकार द्वारा विभिन्न पात्रों का हू-ब-हू स्वांग रचकर मौलिक भाषा, पात्रानुकूल वेश-भूषा व बोली, स्वाभाविक हाव-भावों को मनोरंजक प्रस्तुतीकरण, बहुरूपिया कला को व्याख्यायित करती है। बहुरूपिया कलाकारों का अभिनय इतना स्वाभाविक होता है कि असल व नकल में भेद कर पाना मुश्किल हो जाता है।

यह कला प्राचीनकाल से चली आ रही है। पौराणिक ग्रंथों में भी इस कला के प्रचलित होने के प्रमाण मिलते हैं। यह भी माना जाता है कि हिंदू राजाओं के अलावा मुगलों ने भी इस कला को उचित प्रश्रय प्रदान किया था। मुगल बादशाह अकबर के समय में इस कला को भरपूर प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। औरंगजेब के समय में भी बहुरूपिया कलाकारों के प्रमाण मिलते हैं।

चीनी यात्री ह्वेन सांग और मुस्लिम इतिहासकार अलबरूनी ने भी बहुरूपिया कलाकारों का वर्णन अपनी पुस्तकों में किया है। बौद्ध और जैन साहित्य में भी इन कलाकारों का उल्लेख मिलता है। इस कला को कई नामों से जाना जाता है जैसे, बहुरूपिया कला, स्वांग-कला आदि। दक्षिण भारत में इस कला से जुड़े कलाकारों को 'भेषिया' कहा जाता है। वहां यह कला धार्मिक आस्था के रूप में प्रचलित है। यहां के अधिकांश कलाकारों ने

पौराणिक पात्रों को अपनाकर इस कला को धार्मिक बनाया हुआ है । देश के विभिन्न अंचलों में लोक-प्रचलन की दृष्टि से इन्हें बहुरूपिया कहा जाता है । पहले सिने-कलाकारों के लिए यह शब्द प्रयुक्त होता था और आज यह संबोधन स्वांगधारियों के लिए ।

स्वतंत्रता-प्राप्ति से पूर्व बहुरूपिया कला को पर्याप्त संरक्षण व प्रोत्साहन प्राप्त था किंतु, मनोरंजन के साधनों में आये परिवर्तनों के कारण यह कला धीरे-धीरे लुप्त होती जा रही है । गांवों व कस्बों में आज भी इस कला के गिने-चुने कलाकार मिल जाते है किंतु, इस कला को चाहनेवालों की संख्या सिमट-सी गयी है । देश के विभिन्न अंचलों में इस कला के तौर-तरीकों व प्रस्तुतीकरण में कुछ भिन्नताएं पायी जाती हैं परंतु इस कला की मूल आत्मा सर्वत्र समान है ।

गाडिया लोहार के वेश में एक बहुरूपिया कलाकार



उपेक्षा का शिकार

वर्तमान परिवेश में बहुरूपिया कला आजीविका का साधन मात्र रह गयी है । इस कला से जुड़े कलाकार हीन-भावना से ग्रसित हैं क्योंकि, उन्हें समुचित संरक्षण व प्रोत्साहन नहीं मिलता । बहुरूपिया कलाकार स्वयं को कई रूपों में पेश करना चाहते हैं परंतु, हर पात्र के लिए वेश-भूषा, बनाव-श्रृंगार आदि का खर्च आय की अपेक्षा अधिक होता है । राम, कृष्ण, शंकर, हनुमान, भीम, अर्जुन, द्रोपदी, शकुनि आदि पात्रों का स्वांग रचने के लिए बहुरूपिया कलाकार आर्थिक दृष्टि से इतने समर्थ नहीं होते कि नित नये स्वांग रचकर दर्शकों का मनोरंजन कर सकें । शंकर-पार्वती, देवर-भौजाई, सीता-राम, गुरु-चेला, अर्द्धनारीश्वर आदि कुछ युगल पात्र भी हैं, जिनके लिए दो कलाकारों की आवश्यक [illegible] आज जब एक कलाकार के लिए जीविकोपार्जन का प्रश्न है वहां दो कलाकार, युगल प्रस्तुतिकरण के बारे में तो सोच भी नहीं सकते ।

बहुरूपिया कलाकार जो 'मेक-अप' करते हैं, उसे 'रंगीरी' कहा जाता है । 'मेक-अप' करने के लिए ये कलाकार स्वयं रंगों का निर्माण करते हैं । प्राकृतिक पदार्थों से रंग बनाना इनकी गोपनीय कला है, जिसके बारे में ये ही जानते हैं । अपनी कला-प्रदर्शन के बाद रंग उतारने के लिए ये एक विशिष्ट प्रकार का 'रिमूवर' बनाते हैं जिसे इनकी भाषा में 'उतरहट' कहते है ।

राजस्थान का योगदान

बहुरूपिया कला को देश-विदेश में प्रसिद्धि दिलाने में राजस्थान के बहुरूपिया कलाकारों ने काफी योग किया है । राजस्थान के जानकीलाल

भांड ने बंदर का स्वांग रच (मंकी मैन) के रूप में लंदन में विशेष ख्याति पायी। लंदन और ग्लासगो नगरों में आयोजित 'इंटरनेशनल फेस्टिवल ऑव स्ट्रीट म्यूजिक' उत्सव में जानकीलाल भांड भारतीय दल के सदस्य थे। वहां पर उन्होंने नित नये स्वांग रचे और विदेशियों का काफी मनोरंजन किया। जानकी लाल की इस कला में दक्षता का इससे बड़ा प्रमाण क्या हो सकता है कि दिल्ली में आयोजित 'अपना उत्सव' समारोह में सुरक्षाकर्मी हतप्रभ रह गये जब फकीर के वेश में उन्होंने जानकीलाल भांड को फकीर समझकर बाहर निकालना चाहा परंतु परिचय-पत्र देखकर भी भ्रम में रहे।

जयपुर के दाउद खान ने भी अनेक बार अपनी जीवंत कला का प्रदर्शन कर अपार ख्याति अर्जित की है। उन्हें राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। एक बार तो उन्हें अपनी इस जीवंत कला के कारण रातभर थाने में बंद रहना पड़ा।

बांदीकुई के शिवराज, भीलवाड़ा के मादूलाल, चूरू के लक्ष्मीनारायण आदि दक्ष बहुरूपिया कलाकार हैं।

प्रोत्साहन की आवश्यकता

बहुरूपिया कलाकारों को प्रचारित, प्रसारित एवं प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से अहमदाबाद के 'ओनललाल तलाटी म्युनिसिपल कम्युनिटी हॉल' में आयोजित 'राष्ट्रीय बहुरूपिया सम्मेलन' अपनी तरह का पहला एवं अनूठा आयोजन था। यह आयोजन गुजरात सरकार व पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, उदयपुर के संयुक्त सौजन्य से किया गया। इस राष्ट्रीय सम्मेलन में देश के विभिन्न अंचलों से आये बहुरूपिया कलाकारों ने अपने क्षेत्र में प्रचलित विशिष्ट स्वांगों को रचकर अपनी उत्कृष्ट कला का प्रदर्शन किया। इसमें देशभर के १०० से भी ज्यादा बहुरूपियों को अपनी बिरादरी व पेशे से संबंधित कलाकारों से मिलने का अवसर तो प्राप्त हुआ ही, विभिन्न प्रांतों में प्रचलित इस कला का वृहद परिवेश में संयुक्त प्रदर्शन भी दर्शकों के लिए रोचक व आनंदित करने वाला अनुभव रहा, इस तरह के सम्मेलनों का आयोजन प्रतिवर्ष होना चाहिए ताकि बहुरूपिया कला लुप्त न हो। ऐसी स्थिति में देश के सांस्कृतिक केंद्रों को चाहिए कि बहुरूपिया कलाकारों के लिए सार्थक पहल करें।


मेकअप करता एक बहुरूपिया कलाकार

—६—स्टेशन रोड,
मावली जंक्शन, उदयपुर ३१३२०३

उपासना घाट है कागेसर



● ज्योतीन्द्र मिश्र

बिहार राज्य के जमुई जिला के अंतर्गत खैरा सोनो मार्ग पर मांगोवंदर गांव के समीप, बरनार नदी के तट पर प्रकृति की नैसर्गिक सुषमा के बीच, कागेसर नामक कस्बा है । यहां गिद्धौर राज्य के प्रथम चंदेल राजा वीर विक्रम के शैव-सुपुत्र शुकदेव वर्मन ने अपने शासन काल (१२९८-१३३९) में १०८ शिवलिंगों एवं दुर्गा की मूर्त्ति शास्त्रोक्त विधि से प्रतिष्ठित की थी । यह स्थान इस शैवोपासक क्षेत्र का महत्त्वपूर्ण धार्मिक स्थल है,जहां निराश पुत्रकामी दंपत्तियों के मनोरथ निश्चित रूप से पूरे होते हैं । इस स्थल से उत्तर दिशा में अवस्थित पहाडी के नीचे दूर-दूर तक नदी की एकांत विस्तृति है, जहां प्रकृति का मौन संगीत सुना जा सकता है । कागेसर का मूल नाम काकेश्वर है । काक भुसुंडि के नाम पर प्रतिष्ठित काकेश्वर, कागेसर हुआ है तथा यह धार्मिक स्थल उपासना घाट माना जाता है ।

रामकथा में काकभुसुंडि का चरित्र अत्यंत आकर्षक, अद्भुत और अनुपम है । प्रमुख पात्र के रूप में इनका जीवन विसंगतियों और विद्रुपताओं से भरा है, जिसमें आध्यात्मिक संघर्ष का स्वाद है एवं श्रम के स्वेद हैं । पक्षि-कुल श्रेष्ठ गरूड़ को उपासना घाट पर आत्म परिचय देते हुए काकभुसुंडि ने स्वीकार किया है कि वे शूद्र शरीर लेकर जन्मे थे । ये परम शैव थे किंतु, अन्य देवताओं के निंदक थे । कई योनियों तक शरीर बदलते हुए शूद्र से ब्राह्मण शरीर धारण करने तक की क्रमिक यात्रा मे वे हरि-निंदक बने रहे किंतु हर-भक्ति नहीं



कागेश्वर का नया शिव मंदिर

छोड़ी, यद्यपि इस कारण उन्हें शिव का कोपभाजन भी होना पड़ा । कालांतर में ब्राह्मण शरीर धारण करने के बावजूद कुतर्क करते रहने की काकचेष्टा के कारण लोमश ऋषि के शाप से कौआ हो जाना पड़ा किंतु, इसी काक-काया में उन्होंने शिव की असीम कृपा से सकल सदेह हरि का विराट दर्शन किया ।

परम शैव शुकदेव वर्मन

तेरहवीं सदी और उसके परवर्ती युग में चंदेलों का राजनीतिक क्रीड़ास्थल उनकी पैतृक भूमि से काफी पूर्व की ओर चला आया । चंदेल शासकों ने भारत के पूर्वी भूभाग में जो राज्य स्थापित किया, उसमें गिद्धौर का [illegible] राज काफी विख्यात है । इस राज्य का यह नाम पुराविश्रुत गृधकूट पर्वत से संबंधित है, क्योंकि मौलिक रूप से इसी पर्वत के अंचल में इस राज्य का विकास और संचालन हुआ । कालंजर के राजा भोजवर्मन के कनिष्ठ भ्राता वीर विक्रम ने इसी गृध्रकूट पर्वत की उपत्यका में चंदेल राज्य की स्थापना की । वंश-परंपरा के अनुसार वीर विक्रम शिव के अनन्य उपासक थे । असीम भक्ति भावना के वशीभूत होकर ही उन्होंने अपने राज्य में शैव-चिह्नों से विभूषित मुद्रा प्रचलित करायी, साथ ही राज्यसीमा के अंतर्गत अद्वितीय शिव मंदिर निर्माण करने का वैचारिक संकल्प भी किया किंतु, काल के क्रूर कर ने इस शुभसंकल्प को उनके हाथों पूरा नहीं होने दिया । अंततः सन् १२९८ में इनका स्वर्गवास हो गया । विक्रम वर्मन के बाद उनका सुपुत्र शुकदेव वर्मन राजगद्दी पर आया ।

शुकदेव वर्मन धर्मनिष्ठ और जनहित कार्य में अनुरक्त रहनेवाला शासक था । पिता द्वारा छोड़े गये संकल्प को उसने पितृ-ऋण के रूप में स्वीकार किया तथा शिव मंदिर की प्रतिष्ठापना के संबंध में सतत सजग और चिंतनरत रहा । सत्ता-प्राप्ति के पश्चात उनके शत्रुओं से साम्राज्य की रक्षा भी की एवं अपने बाहुबल से राज्य को पश्चिम की ओर लगभग १६ मील और बढ़ाया । इसी विस्तृति के क्रम में उसने पितृ-ऋण चुकाने की योजना बनायी और स्थल-चयन हेतु स्वयं घूमने लगा । परिभ्रमण के क्रम में गृद्धकूट पर्वत की उपत्यका में मूर्त्ति-निर्माण योग्य उत्कृष्ट कोटि के काले कसौटी पत्थरों की प्रचुरता देखकर वह दंग रह गया, मानो मन की मुराद मिल गयी हो । [illegible]

जलस्रोतों के कूलों पर छायी हरीतिमा, गहवर-पट से बने निकुंज, अरण्य सुमनों की लताओं एवं कपोतों के कुलेल ने उसे आकृष्ट किया, फलतः नदी के किनारे अपने समस्त सैन्यबल तथा मग ब्राह्मण मंत्री के साथ वहीं रात्रि विश्राम किया एवं मनोकामना पूर्ति हेतु भगवान शंकर की आरात्रिक आराधना की । निशीथकाल में उसी स्थल पर आशुतोष ने स्वप्न में दर्शन देकर हरि-हर भक्त काकभुसुंडि के नाम पर शिव मंदिर निर्माण की आज्ञा दी ।



काकेश्वर मंदिर का खंडित शिवलिंग

काकेश्वर की स्थापना

विक्रम संवत् १९८५ में प्रकाशित विद्यातिलकोपाधिभूषित पंडित गतिनाथ मिश्र कृत 'श्री गृद्धकूटाधिपति वंशावली' नामक अमूल्य पुस्तक के सप्तम सर्ग में गिद्धौर के राजा शुकदेव द्वारा काकेश्वर की प्रतिष्ठापना का रोचक वर्णन मिलता है । इस के अनुसार चैत्रमासकृष्ट [illegible] में काकेश्वर की स्थापना की गयी है ।

काले कसौटी तथा एवं अन्य बेशकीमती पत्थरों से १०८ शिवलिंगों का निर्माण तो हुआ था, साथ ही दुर्गा की मूर्ति भी बनवायी तथा इसे प्रतिष्ठित किया ।

गिद्धौर शब्द के [illegible] के संबंध में म.

केशव चंद्र मिश्र ने नागरी प्रचारिणी सभा, काशी द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'चंदेल और उनका राजत्व काल' में उल्लेख किया है कि गृध्रकूट पर्वत के काकेश्वर में उसने (शुकदेव वर्मन) १०८ शिवलिंग, दुर्गा का मंदिर बनवाया एवं रम्य वाटिका भी लगवायी । इस तथ्य की पुष्टि सुप्रसिद्ध इतिहासकार पी.सी. रायचौधरी ने मुंगेर गजेटियर भी की है ।

मुगलों का आक्रमण

यद्यपि शुकदेव वर्मन के शासन काल में अलाउद्दीन खिजली ने (सन् १२९६-१३१६) गिद्धौर पर आक्रमण किया एवं शुकदेव वर्मन को पराजित भी किया किंतु क्रूर खिलजी ने राजा की वीरता से प्रभावित होकर उसे 'शाह' की उपाधि दी । खिलजी से शाह की उपाधि प्राप्त करनेवाला शुकदेव वर्मन संभवतः पहला हिंदू राजा था । शुकदेव वर्मन के निधन के पश्चात्

इस राजवंश में अनेक वर्षों तक अनेक उत्तराधिकारियों ने कमजोर स्थिति के बावजूद शासन किया । इस राज्य पर शेरशाह, हुमायूं एवं अकबर के भी आक्रमण हुए । मुगल साम्राज्य के सुदृढ़ीकरण के पश्चात गिद्धौर मुगलों का करद हो गया । जहांगीर के काल में सन् १६१२ में बंगाल में उस्मान का विद्रोह हुआ । इसी आराजक स्थिति का लाभ उठाकर गिद्धौर ने अपनी स्वतंत्र सत्ता स्थापित की, किंतु बंगाल से निपट लेने के बाद जहांगीर ने गिद्धौर के विद्रोह को कुचलने के लिए इसलाम खां के नेतृत्व में मुगल सेनाओं को कूच कराया । इसलाम खां ने न केवल पूरण सिंह (सन् १५७२ से १६२५) पर विद्रोह का आरोप लगाया बल्कि, राजकोष से पारसमणि पत्थर के साथ अकूत धन की मांग की । राजा द्वारा अस्वीकार करने पर जहांगीर की सेना ने गृध्रकूट पर्वत को मोर्चा बनाया तथा भीषण आक्रमण किया ।

सेनाओं ने आक्रमण की उसी शैली का अनुसरण किया जो प्रायः तुर्क शासक किया करते थे अर्थात्, सेनाओं ने राजा को छोड़कर उसकी प्रजा एवं धार्मिक स्थलों को अपना लक्ष्य बनाया । मंदिर में छिपे हिंदुओं की फजीहत की एवं उपत्यका में अवस्थित इस विशाल शिवमंदिर को पूरी तरह ध्वस्त कर दिया ।

धर्मस्थल के ध्वंसावशेष

यह मंदिर पूरी तरह ध्वस्त हो जाने के बावजूद ऊंचे टीले के रूप में आज भी विद्यमान है । १०८ शिवलिंगों में से मात्र ४-५ शिवलिंग बचे हैं।कुछ शिवलिंग स्थानीय धर्मनिष्ठों, नव धनाढ़यों द्वारा अपने-अपने गांव में ले जाए गये हैं । मंदिर परिसर में एक विशाल कुंआ है, जिसका निर्माण मंदिर के साथ हुआ प्रतीत होता है । काकेश्वर मंदिर परिसर में काले पत्थर के अलंकरण-उत्कीर्ण शिलाखंड अभी तक मौजूद हैं । सात-आठ छोटे और अधूरे मंदिर हैं, जिनमें शिवलिंग को किसी प्रकार प्रतिष्ठापित कर दिया गया है । एक मंदिर बड़ा है, जिसमें विशेष रूप से पूजा-अर्चना की जाती है । श्रद्धालुओं के स्नानादि के लिए मंदिर के किनारे पहाड़ी नदी है । काकेश्वर से प्राप्त कतिपय भग्नमूर्तियां एवं शिलाखंड जमुई स्थित चंद्रशेखर सिंह संग्रहालय में रख दिये गये हैं, जिनमें उमा-महेश्वर एवं विष्णु की मूर्त्ति भी है ।

इन मूर्त्तियों के अलावा काकेश्वर परिसर तथा संग्रहालय में अलंकृत शिलाखंड, अलंकृत चौखट, भद्रकलश लिये हुए नारी-मूर्त्ति, सिंह-मुख, पार्वती की खंडित मूर्त्ति आदि मौजूद हैं । सारी मूर्तियां अति विशिष्ट कोटि के प्राचीन एवं कीमती पत्थर के बने हैं ।

—३२८/४०० राजवंशी नगर
पटना-८०००२३

> प्रख्यात उपन्यासकार जॉर्ज मूर ने अस्सी वर्ष की आयु में भी इतना स्वस्थ रहने का रहस्य बताते हुए कहा था कि 'मैंने सिगरेट, मदिरा व युवतियों—इनसे कोई संपर्क नहीं रखा—अपने जीवन के शुरू के पंद्रह वर्षों में । बस यही मेरे स्वस्थ रहने का रहस्य है ।'



गिलहरी

चूहों तथा गिलहरी के दांतों और शरीर की बनावट में काफी समानता है किंतु, उन दोनों की लोकप्रियता में बहुत असमानता है । कहा जाता है कि राम ने इसके स्लेटी शरीर पर प्यार से अंगुलियां फेरी थीं और वे तीन धवल धारियां उस प्रेम की अमिट निशानी बन गयीं । इसके आकर्षण में, संकेत करती इसकी बालदार मोटी



पूंछ का काफी योगदान है । कूदते समय संतुलन के अलावा इसकी पूंछ पैराशूट का काम भी करती है । यदि गिलहरी ३० मीटर की ऊंचाई से भी गिर जाए तब भी हमेशा की तरह यह चौकन्नी तथा भागती नजर आएगी । ४५ सें.मी. लंबी गिलहरी की २२ सें.मी. लंबी पूंछ ठंडे देशों में इसके कम्बल का काम भी करती है । ऋतु में आने पर मादा [illegible] के बाद ही तेज दौड़नेवाले स्वस्थ नर का चुनाव करती है ।



सितकंठी जलकाग

इसे आम भाषा में पनकौवा बोलते हैं । इसकी तीन जातियां भारत के जलाशयों, नदियों आदि को आबाद करती हैं । अपने नाम के अनुसार इसका रंग कौए के समान काला होता है किंतु, कद में कौए से थोड़ा बड़ा होता है और रूप तथा बनावट में नितांत भिन्न । प्रजनन काल (जुलाई-सितंबर) में गरदन से एक [illegible] शिखा निकलती है तथा ऊपरी माथे और कनपटियों से कुछ सफेद रेशमी पर निकलते हैं । प्रजनन काल के अलावा इसका ऊपरी कंठ सफेद रहता है ।

यह पानी में गोता लगाकर मछलियों का पीछा कर उनका शिकार करता है । यह मेंढक, [illegible] (मेंढक का शिशु), जलचारी कीड़े आदि भी खाता है । यह जलपक्षियों की कॉलोनियों में रहता है । अपना घोंसला, पानी के किनारे के वृक्षों, चट्टानों आदि पर बनाता है । मादा एक मौसम में ३ से ५ तक अंडे देती है । सभी जलकाग अपने शावकों को जुगाली कर भोजन देते हैं

जलकाग का परिवार विश्व के एक प्राचीनतम परिवारों में से एक है, किंतु जल में बढ़ते प्रदूषण से इन्हें खतरा बढ़ता जा रहा है ।

बासा या वासक

इसकी हलकी घनी शाखाओं वाली सदाबहार झाड़ी १ से २ मीटर ऊंची होती है। इसके पत्ते लगभग ६ सें.मी. भाले के आकार के होते हैं। फूल की सफेद पंखुड़ियों पर गुलाबी या बैंजनी धारियां होती हैं। फूलों के डंठल अपेक्षाकृत मोटे होते हैं तथा इनमें फूलों के नीचे मोटी नसोंवाले सहपत्र भी होते हैं।

बासा की झाड़ी भारत के सभी मैदानी भागों में होती है। बासा के पत्तों से दुर्गंध आती है, इसीलिए इसके नाम बासा या वासक दिये गये हैं। किंतु पत्तों के रस में औषधीय गुण होते हैं। इसके स्वरस, रस या अर्क का उपयोग खांसी, बलगम, दमा, श्वासनली-प्रदाह आदि में लाभदायक होता है। इसके रस में 'वासीसीन' नामक पदार्थ होता है, जो प्रसव संबंधी रोगों में काम आता है, तथा उसमें गर्भपात करने के गुण भी होते हैं।

इसके हरे पत्तों की खाद अच्छी मानी जाती है। इससे पीला रंग भी निकालते हैं। इसके पत्तों का उपयोग फलों इत्यादि को पैक करने में किया जाता है क्योंकि, यह फफूंद तथा कीड़ों से उन्हें बचाते हैं। इसके पत्तों में दुर्गंध होने के कारण जानवर इसे नहीं खाते।



सुलतान चंपा

इस वृक्ष की पत्तियां बहुत ही सुंदर होती हैं, अन्य चंपाओं की पत्तियों से भी अधिक सुंदर — लगभग दस सें.मी. लंबी, अंडाकार, इनकी मुख्य 'नस' से अन्य सीधी 'नसें' समानांतर निकलती हैं। शाखाओं पर ये पत्तियां एक-दूसरे के आमने-सामने रहती हैं। इसी कारण लैटिन में इसकी जाति का नाम 'इनोफाइलम' अर्थात 'सुंदर नसोंवाली' है और इसके वंश का नाम 'कैलोफाइलम' अर्थात 'सुंदर पत्तोंवाली' है। यह वृक्ष भारत के समुद्री तटों पर बहुतायत से देखने को मिलता है। इसकी छाल मोटी तथा चिकनी होती है। इसके फल २ से ३ सें.मी. व्यासवाले हरे होते हैं, जो पकने पर चिकने पीले हो जाते हैं। इसके बीजों से तेल निकलता है, जो जलाने तथा गठिया तथा फोड़ों की दवा बनाने के काम में आता है। इसकी छाल का रस जुलाब का काम करता है। इसकी लकड़ी बहुत मजबूत होती है, जो जहाज बनाने के काम में आती है।



● विश्वम्

कहानी

सिनीवाली का गंगाराम

● अलका पाठक

गंगाराम का पिंजरा खुल गया । एक तो पुराना हो गया था और दूसरा जिस तारीख को पिंजरे का वह नन्हा-सा दरवाजा खुलना तय था, यह ठीक वही दिन था । प्राण-पखेरू उड़ने की तो तिथि विधाता बताते नहीं, पर रिटायर होने की तारीख इन्सान उसी दिन जान जाता है, जिस दिन नौकरी में दाखिल होता है । गंगाराम को यह तारीख पिछले पैंतीस सालों से मालूम थी । पैंतीस साल बीतने में पैंतीस साल ही लगे । गंगाराम साहब सब ऊपर-नीचेवाले जानते थे कि पिंजरा खुलने की तारीख क्या है ।

गंगाराम इस सच को भूले थे या भूलने की कोशिश में थे, यह तो मालूम नहीं । मन में आशा थी कि शायद, साहब मालिक लोग यह पिंजरावास साल दो साल बढ़ा देंगे । आशा कलम से निकली दरख्वास्त हुई । दरख्वास्त साहब के वचनों से सिफारिश हुई, मेज-मेज, कमरे-कमरे की यात्रा पर जा निकली । गली-गली संजोग ढूंढ़ते फिरने के बाद, वायदों और आश्वासनों के बाद भी पिंजरावास की तारीख बढ़ने का परवाना नहीं आया ।

वह जो नये-नये आये थे और अपने-अपने राम के साथ छाया की तरह लगे हुए लछ्मन थे । वह चाहते तो थे कि जाते-जाते वह यह रहस्य बता जाएं कि किस प्रकार अधिकारों का दुरुपयोग किया जा सकता है, कैसे काम से बच-बच कर भी सबकी नजरों में काम का आदमी बना रहा जा सकता है ?

विनय के बाण व्यर्थ गये । गंगाराम ने अपना मुंह नहीं खोला । वह धीरे-धीरे मुसकाने लगता । मुसकाना इसलिए भी धीरे-धीरे होता कि नयी-नयी बात थी, उसे पहले हंसने-मुसकाने का अभ्यास न था । वह आदमियों से फासले से मिलता था । गले मिलने की बात क्या, वह लोगों से हाथ न मिलाता था । यह तो मुल्क ही ऐसे निकम्मे लोगों का है, जो अंगुली पकड़कर पहुंचा



पकड़ना चाहते हैं । कहीं हाथ मिला तो जाने कहां तक जा पहुंचे—हवाले, घोटाले तक । इसलिए वह बचता था । घुलना-मिलना नहीं, मिलना-जुलना भी उसे नापसंद था । वह जानता था कि वह अपने जिस टीले पर बैठा है, उसके ऊपर कुछ नहीं था इसलिए देनेवाला कोई न था । लेनेवाले अनेक थे ।

कहानी में जैसा होता है कि महल में पिंजरा, पिंजरे में तोता और तोते में प्राण । तो पिंजरा था दफ्तर । दफ्तर में कमरा । यह हुआ दूसरा पिंजरा । कमरे में कुरसी तीसरा पिंजरा । यह तो दिखनेवाले पिंजरे थे । ऐसे भी पिंजरे थे, जो दिखते न थे पर देखनेवाले महसूस कर सकते थे । उनसे टकरा जाते थे । अहम्, अभिमान और अहंकार के कई-कई परतोंवाले पिंजरे । अज्ञान के, अक्षमता के, इतने सारे पिंजरों के पीछे गंगाराम था । मन की परतें जैसे धीरे-धीरे खुलती जाती हैं, ऐसे ही बंद भी होती जाती हैं । द्वार बंद था । गलियों से नाता न था । शोर भीतर आ नहीं सकता था और यों हमारा गंगाराम अपने पिंजरे के अंदर एकदम अकेला था । बिलकुल अकेला । निपट अकेला ।

चलिए, अब शुरू से बात करूं । यकीन मानिए, अब कोई चालाकी नहीं । कोई छल नहीं, कोई छद्म नहीं, बिलकुल सच ही कहूं । एकदम सच । सौ पैसे सच । अब यह न पूछिए कि सौ पैसे कब के ? किस कीमत के ? जमाना आज १६ अप्रैल १९९६ का है और सुबह-सुबह मैंने कसम खायी कि आज से झूठ नहीं बोलूंगी, सच बोलते नहीं डरूंगी और वो यों कि मैंने जिंदगी के चवालीस साल डरते-डरते काटे हैं ।

जिस सच की गारंटी है, वह यों है कि हिमालय की पर्वतमालाओं से जल की धारा



निकलती है और होते-होते नदी हो जाती है । गंगोत्री से निकले तो गंगाजी और यमुनोत्री से निकले तो जमनाजी । जमना जल पानी क्यों न हुआ, जल ही क्यों हुआ । इस पर जानकार कहते हैं कि यदि राधाजी के अश्रु न मिलते तो जमना जल भी निरा पानी ही रह जाता । अब गंगा जल की बराबरी जमना जल क्यों नहीं कर पाता, ऐसा गूढ़ सवाल मत कीजिएगा । वो य़ों कि एक तो मुझे जवाब नहीं मालूम और दूसरे कहानी राह भटक जाएगी ।

अब यह तो बात साफ ही है कि यमुना नदी को जमनाजी कहनेवाला दिल्ली का वासी नहीं हो सकता । बेशक, राशन कार्ड, मतदाता पहचान-पत्र वगैरह सब पर दिल्ली के अफसरों के हस्ताक्षर हों । कितना ही रूप-सरूप बदले पर आदमी की बोली और बैठक छुपती नहीं है । गंगाराम भी दिल्ली के न थे । रहे बेशक दिल्ली में । यह दिल्ली हमेशा दिल्ली न थी । कभी तमाम जंगल ही जंगल था और उसी जंगल में जमनाजी बहती थीं, हमेशा से । पांडवों ने पेड़-पौधे काटकर जमीन साफ की और इंद्रप्रस्थ बसा लिया । फिर शेरशाह सूरी, पृथ्वीराज चौहान, सुल्तान, तुगलक, शाहजहां जाने कौन-कौन आये । कुछ आगे आये । कुछ पीछे । शहर बने, किले और महल बने और मकान, दुकान, बाजार बने । नहर बनीं, मीनार बनीं और जगल था कि फिर भी कायम रहा । पहले से भी ज्यादा कंटीला, पहले से भी ज्यादा घना । पेड़ न थे, छाया न थी लेकिन, जंगल था कि बढ़ता ही जाता । कहनेवाले कहते कि जंगल लोहे का, जंगल कंक्रीट का, जंगल आदमियों का । तो जंगल ही जंगल । जंगल के बाघ-भालू से भी ज्यादा हिंसक नरभक्षी मुंह फाड़े घूमते । जंगल कहीं खतम नहीं हुआ । बढ़ता ही गया । मिस्र देश तो देखा नहीं । पिरामिड सुने हैं । पिरामिडों में मय साज-सामान के मुरदे रहते हैं— ऐसा अपनी जानकारी में था । पता नहीं किस खजाने, सोने के लालच में एक पिरामिड में जा घुसी हम सहेलियां ।

पिरामिड ऊंचा । खूब ऊंचा । कई मंजिल ऊंचा । कमरे ही कमरे । कमरों के अंदर कमरे । कमरों के ऊपर कमरे, कमरों के आगे कमरे । पूरी इमारत में गलियारे थे । गलियारे में बंद दरवाजे थे । बंद दरवाजों के पीछे कमरे-कमरे मुरदे बैठे थे । वह हंसते न थे । बोलते न थे । वह जैसे थे, वैसे ही थे ।

"पत्थर हैं," सहेली ने कहा ।

"मुरदे हैं ।" मैंने कहा । होते-होते शर्त लग गयी कि वह मुरदे हैं कि पत्थर । हम जो हंसते-खेलते इनसानों की तरह सिर्फ एक बार पिरामिड को देखने बल्कि, देख आने के लिए दाखिल हुए । इस चुप्पी को देख-सुन हम भी चुप हो गये । गलियारे से निकलने का हमको तो रास्ता न मिला लेकिन, हंसी निकल भागी और यों भागी कि सारे गलियारे, सारे कमरे छान मारे फिर भी उसको न मिलना था । न मिली ।

घूमते-घूमते थककर एक कमरे में बैठ गयीं । सन्नाटे की आवाज सुनायी देने लगी । लोग न बोलते थे । खामोशी बोलती थी और इस तरह बोलती कि शब्दों में वह ताकत न थी । चार दिन बाद लगा कि हम भी भूल जानेवाले हैं । सहेली ने कहा कि मुझे किसी बात की खुशी नहीं होती । मुझे दु:ख न होता

था । मैंने कहा मुझे पथराने की बीमारी हुई है । सहेली का भी हाल यही था । पत्थरों से पूछना चाहिए कि वह पत्थर कैसे हुए थे । पता है कि यह सारे पत्थर पहले, बहुत पहले इनसान थे और पहले मुरदे और फिर पत्थर हो गये ! सहेली स्थितप्रज्ञ कहती, मैं फॉसिल्स । बात एक ही थी ।

इस एक बात को पक्का करने के लिए हमने कमरे में झांका । एक में, दूसरे में और यों एक दिन गंगाराम से मुलाकात हुई । गंगाराम चूंकि औरों की तरह अनेक-अनेक पिंजरों में बंद था, इसलिए सवाल का जवाब न दिया । उस पर रोशनी डाली, उसकी पुतलियां न हिलीं । शिला दरकी ।

"अरे ! यह तो जिंदा है !"

"हिलता है !"

"बोलता है !"

हैरान होनेवाली हम दो सहेलियां ही न थीं । फुसफुसाहट-सी सुनायी दी । धीरे-धीरे आवाज बनने लगीं ।

बस, गंगाराम बोलने लगा । चलने लगा । जब हमने किताब उसे दिखायी तो एक-दो नहीं पूरे साठ दिन बाकी थे । यों समझें कि कोई चालीस बार सूरज उगने और डूबने की देर हुई होगी कि बाहर बाजरा-दाल-दाना फैलाते ही वह बाहर चोंच निकाल लेता । हम कहते

वह जो नये-नये आये थे और अपने-अपने राम के साथ छाया की तरह लगे हुए लछमन थे, वह चाहते तो थे कि जाते-जाते वह यह रहस्य बता जाएं कि किस प्रकार अधिकारों का दुरुपयोग किया जा सकता है, कैसे काम से बच-बच कर भी सबकी नजरों में काम का आदमी बना रहा जा सकता है ?

कंकर मारा । वह नहीं हिला । खूब चिल्लाकर हल्ला किया । उसने देखा नहीं । वह जाने क्या संहिता थी, वह खोलकर हमने गंगाराम के सामने रख दी । ठीक वह पन्ना जिस पर गंगाराम की रिहाई का दिन लिखा था । किताब सामने रखते ही एक चमत्कार हुआ । वह जो पत्थर था और एक प्रकार शिलाखंड की तरह था, एक दिन अचानक यों हिलेगा, ऐसा पता न था । वैसे अनेक अयाचित और अनगिनत अनहोनियां पहले हो चुकी हैं, ठीक वैसे ही वह बोलो, 'गंगाराम, राम-राम, गंगाराम कहता, गंगाराम, गंगाराम !'

"अपने मुंह मियां मिट्ठू बन रहा है !" हम समझ जाते कि बरसों की चुप्पी पिघलने लगी है । तब तक पैंतालीस बार सूरज उगा-डूबा । कोई पचास दिन बीते तो वह जो प्रस्तर शिला-सा गंगाराम था वह फूलों से लदी डालियों-सा लचकने लगा । [illegible] था कि [illegible] विलाप-इतराये, पर [illegible] हिलने लगा । जब एक ऐसा [illegible]

था, जिसकी लहरों को बरसों से कोई कंकर मयस्सर न हुआ था। वह हर कंकर को हसरत से देखता। गिरे तो लहरों में हलचल हो, वृत्त बनें, बनें और बिगड़ें।

वृत्त बने, बढ़े, हसरतें बढ़ीं। वह पूछता, "एक्सटेंशन का क्या बना ?" दूसरे क्षण कहता, "मैं एक्सटेंशन लूंगा नहीं, मैंने अपनी पारी शान से खेली है। मुझे क्या जरूरत ?" बच्चे वैल सेटेल्ड, मेरी कोई इच्छा नहीं है।"

दूसरे क्षण कहता, "एक ही आकर्षण है—फोन ! बिना फोन के लगता है जैसे, दुनिया के साथ कोई संबंध नहीं रह गया है। फोन का भी इतना नहीं, जितना मकान का, सेंट्रल प्लेस है। फिर गंगाराम-गंगाराम, गंगाराम ही गंगाराम। जिस गंगाराम की वह बात कहता था, वह हमने न देखा था। जिसे हम देखते थे। उसको वह न चाहता था। उसका जिस्म तमाम उम्र सिजदे में रहने से दोहरा हो गया था। वह कहता कि गंगाराम इसलिए गंगाराम है क्योंकि, उसने किसी... की कभी चमचागिरी नहीं की।

जो वह था, वह न था। चूंकि वह था ही नहीं, इसलिए वह हमारा गंगाराम था। हमारा। हमारा इसलिए की हमारी भी इच्छा वैसा गंगाराम होने की थी, जैसा वह था नहीं। जैसा वह था, वैसा वह पैंतीस बरस नहीं रह सका। जैसा वह पैंतीस बरस नहीं रह सका था, वैसा होने की उसकी साध थी। वह भूल गया कि यह उसकी साध थी। वह कहता था कि वह वैसा ही था जैसी उसकी साध थी। उसने छोटी चीजों पर झगड़ा न किया और बड़ी चीजों पर कंप्रोमाइज नहीं किया। छोटी चीज थी नीति, अवसर और सिद्धांत। बड़ी चीजें थीं अधिकार। उसने कुरसी, फोन, चपरासी, स्टेशनरी, ब्रीफकेस, गाड़ी, बंगला इत्यादि पर कभी समझौता न किया। सदा वह लिया, जो चाहा। छोटी चीज थी ड्यूटी। जिम्मेदारी मिली तो ठीक। न मिली तो और भी ठीक। और इस तरह एक-एक करके पैंतीस साल पूरे किये। पैंतीस साल से पांच दिन कम। वह मुसकराया।

वह ठहाके लगाकर हंसा, चार दिन कम। उसने कहा, "आज तो घर से सोचकर आया था कि आज न काम करूंगा, न करने दूंगा।" उस दिन तीन दिन शेष थे। तीन दिन वह गंभीर व्यस्त था—मंत्रालय एक, मंत्रालय दो, मंत्रालय तीन। न तुलसीदल, न एक्सटेंशन, न गंगाजल।

गंगाराम का पिंजरा खुला पड़ा था। गंगाराम बाहर न निकला। उसने कहा, "मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि मैं आजाद हो गया हूं।"

उसके विश्वास-अविश्वास की ऊहापोह का न मुझ पर कोई असर हुआ, न सहेली पर। हमने कोई प्रतिक्रिया न की। उसने कहा—यह मुरदों का टीला है !

हमारा गंगाराम ठसक के साथ यह कहता हुआ चला गया कि मैंने भरपूर जीवन जिया है, शान के साथ।

मुझे लगा यह सिनीवाली थी—वह अमावस जिसमें चांद दिखायी दे जाता है।

—योजना अधिकारी
आकाशवाणी महानिदेशालय,
आकाशवाणी भवन,
नयी दिल्ली

संयोग से भी जन्म लेते हैं आविष्कार

• योगेश चंद्र शर्मा

घटना सन् १८१६ की है । उन दिनों फ्रांस की राजधानी पेरिस में एक चिकित्सक थे—लीनेक । सीने से संबधित रोगों में उनकी विशेष रुचि थी, किंतु उस समय तक स्टेथस्कोप—जैसे किसी यंत्र का आविष्कार नहीं हुआ था । इससे लीनेक को सीने के रोगों के बारे में जांच-पड़ताल करने में बड़ी दिक्कत आती, किंतु इस समस्या का उन्हें कोई हल नजर नहीं आता था । एक दिन जब वे इसी समस्या पर विचार करते हुए निरुद्देश्य सड़कों पर घूम रहे थे तो उन्होंने कुछ छोटे बच्चों को खेलते देखा । उनमें से एक बच्चे ने एक पतली-सी लकड़ी का एक सिरा पकड़ा हुआ था और दूसरे बच्चे ने उसके दूसरे सिरे को अपने कान से लगाया हुआ था । पहला बच्चा अपने हाथ की अंगुली से ठक-ठक करता और दूसरा बच्चा लकड़ी से गुजरती हुई उस हलकी आवाज को बड़ी रुचि के साथ सुनता । घटना बहुत साधारण और आम थी, लेकिन उसने लीनेक के वैज्ञानिक मस्तिष्क में एक नयी सूझ पैदा कर दी । वे तत्काल अपने अस्पताल में गये और कई कागजों को मिलाकर एक लंबा डंडा-सा बनाया । उसका एक सिरा उन्होंने एक मरीज के सीने पर रखा और इसका दूसरा सिरा अपने कान पर लगाया । उनके होठों पर तत्काल मुसकान छा गयी । कागज की नली से रोगी के सीने की धड़कन उन्हें सुनायी दे रही थी । बस, इसके बाद तो इसी सूझ को विकसित करके स्टेथस्कोप का रूप दे दिया गया ।

वैज्ञानिक आविष्कारों में सामान्यतया काफी अधिक समय और दिमाग लगाना पड़ता है, किंतु, कभी-कभी मामूली सा संयोग भी किसी बड़े आविष्कार को जन्म दे देता है या उसकी आधारभूमि तैयार कर देता है । उपरोक्त घटना में इसी प्रकार के साधारण से संयोग ने स्टेथस्कोप की विचारधारा को जन्म दे दिया । इस प्रकार की घटना यह अकेली नहीं है । अनेक अवसरों पर इस प्रकार के संयोग हुए हैं ।

चीनी से कई गुना अधिक मीठा पदार्थ सेकरीन भी इसी प्रकार के एक संयोग का परिणाम था । हुआ इस तरह कि फालबर्ग नाम के एक वैज्ञानिक कोलतार से प्राप्त 'टालुइन' नामक कार्बनिक यौगिक पर प्रयोग कर रहे थे । इस कार्य के लिए उन्होंने अनेक रसायनों को काम में लिया । इस बीच भोजन का समय हो गया और उन्हें बुलाया गया । फालबर्ग ने पहले तो भोजन को टालना चाहा, लेकिन जब

बार-बार बुलावट हुई तो उन्हें प्रयोगशाला से हटना पड़ा । भोजन का काम जल्दी निपटाकर पुनः अपने काम में लगने के उद्देश्य से वे तेजी से भोजन-कक्ष की ओर लपके । इस जल्दबाजी में वे अपने हाथ भी ठीक तरह साफ नहीं कर पाये । भोजन शुरू किया तो वह काफी मीठा लगा । फालबर्ग को आश्चर्य हुआ ! भोजन में मीठी लगनेवाली कोई सामग्री थी ही नहीं । तब उन्होंने अपनी अंगुलियों को जीभ पर लगाया । वहां अत्यधिक मीठे का स्वाद आया । फालबर्ग तत्काल समझ गये कि यह किसी रसायन का स्वाद है । सो, अपना भोजन बीच में ही छोड़कर वे वापस प्रयोगशाला की तरफ लपके और उन रसायनों का स्वाद चखा । इस प्रकार संयोगवश सैकरीन का आविष्कार हो गया । आगे चलकर सैकरीन को मधुमेह के रोगियों के लिए विशेष रूप से उपयोगी पाया गया ।

दुर्गंधयुक्त रसायनों के बीच निरंतर काम करते रहने की वैज्ञानिकों की प्रवृत्ति को सामान्यतः उनकी पत्नियां पसंद नहीं करतीं । इस बात पर उनमें [illegible] अनबन भी हो जाती है । इस अनबन ने भी यदा-कदा वैज्ञानिक आविष्कारों के लिए संयोग उत्पन्न किया है । जरमन वैज्ञानिक सी.एफ. सनबेइन के साथ कुछ इसी प्रकार की घटना हुई । उन पर पत्नी ने यह पाबंदी लगायी थी कि वे अपना कोई रसायन लेकर रसोईघर में प्रवेश नहीं करेंगे । उनकी कामचलाऊ प्रयोगशाला रसोईघर के एकदम निकट थी । सो अपना मिश्रण गरम करने के लिए उन्हें कभी-कभी रसोईघर में जाना ही पड़ता था । इस काम के लिए वे ऐसा अवसर ढूंढ़ते, जब उनकी पत्नी घर से या कम-से-कम रसोई से बाहर होती । ऐसे ही एक अवसर पर सी.एफ. सनबेइन जब अपना एक रसायन लेकर रसोई में घुसे तो जल्दबाजी में उस रसायन का कुछ भाग, रसोई में एक तरफ टंगे उनकी पत्नी के गाउन पर गिर गया । सनबेइन को पत्नी की नाराजगी का डर लगा । सो उन्होंने गाउन के गीलेपन को वहीं स्टोव पर सुखाने की कोशिश की और यह देखकर आश्चर्यचकित रह गये कि अग्नि की गरमी पाकर, गाउन का वह भाग अलग कटकर पूरी तरह नष्ट हो गया, जिस पर रसायन गिरा था । इस संयोग से नाइट्रो सैलुलोज नामक विस्फोटक विकसित किया गया ।

कभी-कभी मामूली-सा संयोग भी किसी बड़े आविष्कार को जन्म दे देता है या उसकी आधारभूमि तैयार कर देता है । एक ऐसे ही साधारण से संयोग ने स्टेथस्कोप को जन्म दे दिया । इस प्रकार की घटनाएं अनोखी नहीं हैं ।

पक्के रबड़ के आविष्कार में भी पति-पत्नी के विवाद का पर्याप्त योगदान था । पक्के रबड़ के

आविष्कारक गुड ईयर को अपने इसी आविष्कार के लिए न केवल अपनी संपूर्ण जमा पूंजी गवानी पड़ी, बल्कि कर्ज भी लेना पड़ा और उस कर्ज को न चुका पाने के कारण कई बार जेल की भी हवा खानी पड़ी। फिर भी गुड ईयर थे धुन के पक्के। अपने काम में लगे रहे। जेल में पहुंचकर भी उपलब्ध सामग्री से प्रयोग करते रहे। रबड़ से उन्हें इतना स्नेह हो गया कि न्यूयार्क की सड़कों पर घूमते हुए भी वे हमेशा रबड़ की ही बनी वेशभूषा धारण करते। उनके मकान से तरह-तरह के रसायनों और रबड़ के घोल की बदबू आती रहती। इस पर पड़ोसियों से उनका अकसर विवाद ही बना रहता। प्रयोगों के पीछे अपना सब कुछ लुटा देने के कारण, पत्नी से भी अकसर झगड़ा बना रहता। एक दिन जब गुड ईयर, अपनी पत्नी की अनुपस्थिति में रसोई में घुसकर रबड़ और गंधक के घोलों का अलग-अलग परीक्षण कर रहे थे, तो उन्होंने अचानक ही खिड़की से अपनी पत्नी को लौटते देखा। पत्नी की नाराजगी के डर से और अपनी असफलता पर झल्लाकर गुड ईयर ने अपने हाथ के दोनों घोल आग में उड़ेल दिये। अचानक ही यह देखकर वे आश्चर्य और हर्ष से चौंक उठे कि वे दोनों घोल मिलकर अग्नि की तपन से पक्के रबड़ में बदल गये। गुड ईयर अपनी धुन के इतने पक्के थे और उनका आत्मविश्वास इतना प्रबल था कि जब फ्रांस की एक कंपनी ने उनसे पक्के रबड़ का फार्मूला खरीदना चाहा। तो उन्होंने तत्काल कह दिया—'मैं इससे भी अच्छा फार्मूला तैयार कर रहा हूं, उसे खरीदना।' गुड ईयर ने उस फार्मूले को विकसित किया भी। मगर इस चक्कर में वे काफी ऋणग्रस्त हो गये। सन १८६० में जब उनकी मृत्यु हुई तो उन पर दो लाख डॉलर का कर्ज था।

इसी प्रकार फिलाडेलफिया में प्रसिद्ध वैज्ञानिक एलिहू थामसन जब एक बार अपने छात्रों को विद्युत के बारे में पढ़ा रहे थे तो भूलवश उन्होंने किसी रसायन में लगे तारों को आपस में मिला दिया। कुछ समय बाद जब उन्हें अपनी भूल का पता चला, तो उन्होंने उन तारों को अलग करने की कोशिश की, मगर असफल रहे। इससे सबक हो और संयोगवश ही धातुओं को जोड़ने का फार्मूला भी उनके हाथ आ गया।

—१०/६११ मान सरोवर, जयपुर-३०२०२०

विश्व में सर्वाधिक तथा न्यूनतम वर्षा स्थान

विश्व तथा भारत में सबसे अधिक वर्षा चेरापूंजी (मेघालय) में होती है। १९९० में यहां ११८७.३ सेंटीमीटर वर्षा रिकॉर्ड की गयी थी।

विश्व में सबसे कम वर्षा प्रशांत सागर तटीय देश चिली में, अरीका और अंटोफगास्ता में ०.१ मिलीमीटर से भी कम (०.००४ इंच) रिकॉर्ड की गयी है।

भारत में सबसे कम वर्षा बोडली जैसलमेर (राजस्थान) में होती है, जहां का औसत १.१ सेंटीमीटर वार्षिक है। यहां का न्यूनतम वर्षा का रिकॉर्ड ०.८७ सेंटीमीटर है।

न्यायालय कक्ष दर्शकों से खचाखच भरा था । अभियुक्त के कटघरे में जहां नौ बार का पूर्व सजायाफ़्ता अपराधी खड़ा था, वहीं फरियादी के रूप में स्वयं मैं न्यायालय में हाजिर था ।

मैं, यानी इस समय का प्रथम श्रेणी न्यायिक दंडाधिकारी—टीकमगढ़ । यह भी अजीब इत्तफाक था कि अभियुक्त न केवल मेरे ही निवास-गृह दतिया (म.प्र.) का निवासी था

मुलजिम का आक्रोश

● दिनेश चंद्र दुबे
अतिरिक्त जिला न्यायाधीश

अपितु, उसके पिता का नाम और मेरे पिता क नाम भी एक ही था ।

बात सन् १९७४ की है । वी.वी.एल. अग्रवाल तब टीकमगढ़ के एडीशनल डिस्ट्रि मजिस्ट्रेट ज्यूडिशियल थे । आजकल यह प मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी कहलाता है ।

मेरा बयान पूरा हुआ । भगवान दास ने जि आरंभ की ।

"अच्छा हुजूर, जब पुलिस ने पिछली बार मुझे आपके सामने पेश किया था, तो आपने मुझे, मेरे कई दिनों से भूखा रखे जाने की शिकायत पर खुद तुरंत अपने पैसों से खाना खिलवाया था कि नहीं ?"

मैं उसकी मूर्खता पर मन ही मन खुश हुआ । ऊंह ! ये मुलाजिम जिरह करना क्या जाने ? यह काम को कोई अनुभवी वकील ही कर सकता है । मैंने तुरंत जबाब दिया, "हां ! और पुलिसवालों को डांटा भी था कि सरकारी पैसा लगता है, भूखा रखने की क्या जरूरत थी ? जब तक अपराध सिद्ध न हैं, तब तक वह निर्दोष है । अब नियमानुसार उसे भोजन कराने की प्रक्रिया में तो समय लगेगा और यह भूखा है, यह सोचकर मैंने मिश्रा बाबू को पैसे देकर इसे खाना खिलवाया था ।"

"बस, एक सवाल और हूजूर ! आप भी दतिया के हैं ? आपके पिता का नाम भी भगवान दास है ।"

"हां !"

"और मुझे कुछ नहीं पूछना सरकार ! आप ही सोचिए और फैसला कीजिए कि अपने ही गांव के, अपने लड़के की उम्र के ऐसे दयावान जज को मैं क्यों गाली या धमकी दूंगा ? साहब ने झूठ बयान दिया है कि ... ।"

वह इस बार अग्रवाल साहब की ओर मुखातिब था और मैं हक्का-बक्का था उसकी चालाकी पर । दर्शक उसके अकाट्य तर्क के सामने मुझे इस तरह देख रहे थे जैसे, वास्तव में वह सच कह रहा हो और मैंने स्वयं मजिस्ट्रेट होते हुए भी शपथ लेकर झूठा बयान दिया हो ।

हुआ यह था कि उस नौवें अपराध में उसे

ए गिरफ़ार कर मेरे समक्ष अभियोजित गया था क्योंकि, इस बार उसने मावई 5 पांडे वकील साहब को ही चूना लगाने र चुना था ।

ओरछा से टीकमगढ़ मार्ग पर मावई गांव में दिन भगवान दास शाम को पहुंचा । वहां निर्माण के लिए गिट्टी, तारकोल आदि लाकर जमा किया जा चुका था ।

ाले प्रसन्न हुए कि चलो अब काम शुरू ला है । भगवान दास कुछ समय तक और सामान का जायजा लेता रहा । फिर हो जाने से उसने वहीं रुकना अनिवार्य ताकि कल आनेवाले मजदूरों से वह र होने के नाते सुबह से ही काम शुरू करा लेकिन उसकी दिक्कत यह थी कि वह न लाया था, न खाने-पीने के बर्तन ।

लों ने जब यह समस्या सुनी तो पांडेजी के लोगों ने उसके लिए बर्तनों, कपड़ों, आदि की व्यवस्था कर दी । लेकिन जब वे वहां आये तो भगवान दास सामान नदारद था । पांडेजी गांव से रोज त के लिए टीकमगढ़ और जतारा जाते टीकमगढ़ से मुझे एक दिन जतारा तहसील कला न्यायालय चलाने जाना पड़ता था ।

लौटे तो उन्होंने घटना की रिपोर्ट कर कुछ दिन बाद भगवान दास बर्तन, कंबल सहित पकड़ा गया । अनुसंधान से पता कि वह इसी प्रकार की छोटी-मोटी चोरियों आदी था । सामान बिना शिनाख्त होने से जमानतदार के लिए कोई हिमक न होने से, उन्हें जेल कर काम चलाता और वैसे खत्म ने तक फिर कोई वारदात कर देता ।

मेरे सामने मामला पेश होने पर मुझे लगा कि जब तक सख्त रुख न अपनाया जाएगा, यह सुधरेगा नहीं । क्योंकि, पहले हर बार चोरी गयी वस्तु का मूल्य, उसकी आयु या जमानतदार न होने से जेल में रहने के तथ्य को ध्यान में रखकर दंडाधिकारियों ने उसे या तो प्रताड़ित कर छोड़ दिया या जेल में रहने की अवधि सजा मान ली । कानून की दंड के संबंध में इस नीति को समझकर भगवान दास ऐसे अपराध करने का आदी हो गया था ।

> *मैंने उसकी हथकड़ी खुलवा दी और किवाड़ बंद करके कहा, "अब न मैं मजिस्ट्रेट हूं और न तुम मुलजिम ; अपना अरमान पूरा कर लो ! वचन देता हूं मैं किसी की मदद नहीं लूंगा ।"*

साक्षी गवाही होने तक भगवान दास इस बार भी जमानतदार के अभाव में जेल में रहा । घटना साबित थी । मैंने फलतः उसे अपने अधिकार क्षेत्र की अधिकतम दंडावधि तीन वर्ष कठोर कारावास का दंड सुनाया ।

मुझे सूझा था कि भगवान दास एकदम [illegible], अपने दयनीय बनाये रखे रूप को [illegible], अपराधी रूप में आ गया और भरी

अदालत में ही बोला, "साले, दतिया का, मुहल्ले का ही होकर अपने बाप को इतनी सजा देता है। कभी छूटा तो बताऊंगा। मर्द का बच्चा है तो हथकड़ी खुलवा और उतर नीचे।"

मजिस्ट्रेट के रूप में चयनोपरांत ट्रेनिंग के बाद, युवा उम्र में न्यायालय के न्यायाधीश के रूप में कार्यरत रहते यह मेरा पहला अजीबोगरीब अनुभव था।

मैंने जो समझा, फैसला दिया था। अभियुक्त को अधिकार होता है कि वह फैसले के किसी बिंदु से असंतुष्ट है, तो अपील करे। फिर जेल में रह रहे अपराधी की ओर से तो अपील निःशुल्क होती है। तब यह व्यवहार क्यों ? क्या दतिया का होने से या उसके और मेरे पिता के नाम एक होने से, मुझमें एक भाव पैदा कर, उस किये गये अपराध में दोष-मुक्ति सोचना चाहिए थी उसे ? क्या अपराधियों के इस रुख के समक्ष जज को, उन्हें महसूस करने के लिए कि जज बनते ही आदमी कमजोर, बलहीन हो जाता है, स्वतंत्र रहने देना चाहिए ?

अपमान, क्षोभ से चेंबर में आकर कई प्रश्न के उत्तर न खोज पाने के कारण मैं संतुलन नहीं बना पाया था। मैंने सिपाहियों को बुलाकर हथकड़ी खुलवा दी और चेंबर के किवाड़ बंद कर दिये और उससे कहा, "अब न मैं मजिस्ट्रेट हूं और न तुम मुलजिम। अपना अरमान पूरा कर लो भगवान दास ! मैं वचन देता हूं मैं किसी की मदद नहीं लूंगा।"

मेरी इच्छा थी कि उस समय क्रोध से लाल अंगारे जैसी आखें मेरी तरफ उठाये भगवान दास को खूब पीटूं। लेकिन, तभी शायद गा[illegible] के खबर करते ही जतारा थाना प्रभारी भागे-भागे आये। उन्होंने मुलजिम को ३५३ तथा हि. अपराध में गिरफ्तार कर लिया और जमकर पीटा। बाद में पता चला था कि उसी शाम उसका मेडीकल इस प्रार्थना के साथ कराया गया था कि जज द्वारा सजा देने पर जब मुलजिम हथकड़ी खोलकर भाग तो पुलिस और जनता ने उसका पीछा किया और बमुश्किल बलपूर्वक उसे पकड़ा जा सका।

पूरे शरीर पर पट्टियां और प्लास्टर बांधे, व[illegible] दूसरे दिन फिर मेरे सामने था। मैंने मामले में स्वयं फरियादी होने से मामला अन्य जज द्वारा सुनवाई किये जाने हेतु स्थानांतरित करा दिया था। उस दिन भगवान दास की उपरोक्त जिरह उसी मुकदमे में, मेरे बयानोपरांत हुई थी। श्री अग्रवाल ने भगवान दास को इस घटना के लि[illegible] आठ माह के कठोर कारावास की सजा और सुनायी थी।

मुझे ठीक याद है मैंने फैसले के बाद भगवान दास से केवल इतना पूछा था, "क्यों भई भगवान दास ! कानूनी व्यक्ति और केवल व्यक्ति के रूप में जजों से व्यवहार में तुम में कोई फर्क आया या नहीं ? अपने अनुभव अपने साथियों को भी बताना। आदमी हम भी होते हैं। फर्क केवल अपना-अपना कर्म करने से उत्पन्न शक्ति होती है। हम चुप रहते हैं, तो इसका अर्थ हमारी निर्बलता मत माना करो, तुम लोग।"

—एम.आई.जी.-६८, विनयनगर-[illegible]
ग्वालियर (म.प्र.)

...क ग़ज़ल

...ाने ने हमें यह रंग अब कैसा दिखाया है
...कल था खून, अब उस खून को पानी बनाया है
...त दावे किये जाते रहे इनसान होने के
...र किसने यहां इनसान का रिश्ता निभाया है
...ां भी दर्दे दिल ऐ दोस्तो किससे भला अपना
...हर सीने ने अब दिल की जगह पत्थर छिपाया है
...झ में ही नहीं आता कि आखिर माजरा क्या है
...सी की चाल है या आज बुरा यह वक्त आया है



...कसे समझाएं कोई समझना ही गर न कुछ चाहे
...कलवालों ने सबको अक्ल का दुश्मन बनाया है
...िसी अवतार, पैगंबर, गुरु ने जो सिखाया था
...ताबें रट रहीं उसको, मगर हमने भुलाया है
...हां तक लिपटते जाएं, किन्हीं परछाइयों से हम
...क जब अपना ही साया आज तो बिलकुल पराया

...ुदा को या मुकद्दर को भला हम किसलिए कोसें
...क अपने हाथ से जब चमन अपना जलाया है
...ही अब बेहयाई से अक्ल हमको सिखाते हैं
...न्हें [illegible] सिखाया है
...ीं [illegible]
...[illegible] है।

—डॉ. मदन लाल मधु

C/O WRITERS UNION OF RUSSIA
52, VOROVSK STREET
MOSCOW-[illegible]

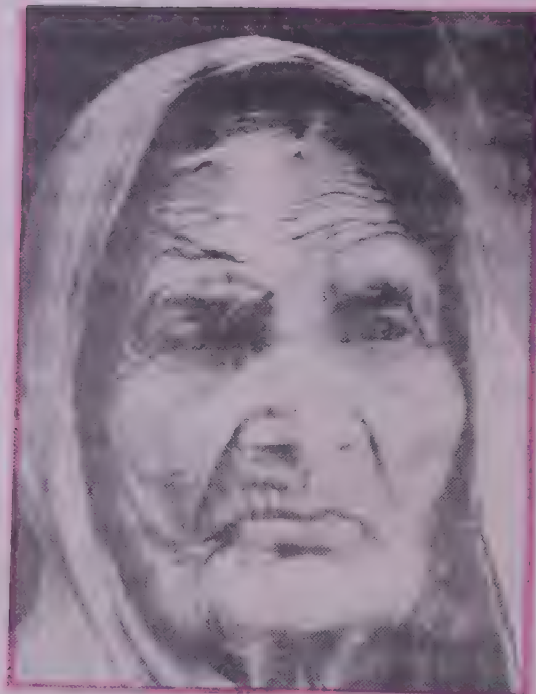


शिखर से मंजिल तक

पिरामिड के
जिस बिंदु पर
आकर
रुकी हूं
वहां
मोह प्रलोभनों
की चढ़ाई
पूरी होती है
अब
वापसी की
तैयारी है
जिस मार्ग से आयी
वहां वही
मोह प्रलोभनों की
फिसलन है
दूसरी राह
अपनाती हूं
शायद वही
शांति संतोष
से
मुझे
मेरी
मंजिल से
मिलवाये

—डॉ. सुनीता शर्मा

सी-७/२३०, सै.-७
रोहिणी, दिल्ली-८५



आखिर, वृद्धजनों का दर्द कौन समझेगा ?

● संगमलाल मालवीय

तकरीबन दो दशक से अधिक समय बीत चुका है, जब विश्व स्वास्थ्य संगठन ने एक नया नारा दिया था- 'बुढ़ापे को जीवंत बनायें'। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने तब पहली बार अनिवार्य एवं उपेक्षित वृद्ध जीवन की गंभी समस्याओं की ओर दुनिया का ध्यान आक किया था। वृद्धजनों के हित में दिये गये [illegible] मानव हितकारी नारे के चलते विश्व में वृ [illegible] भौतिक-मानसिक स्थितियों में विशेष परि

तो नहीं आया है, लेकिन इतना जरूर हुआ कि विश्व के तमाम देशों में जीवंत चेतना एक लहर दिखायी दी और समय के थपे साथ शून्य में ओझल हो गयी। वैसे, वृद्ध का आदर प्रायः हर देश में किया जाता है कम-से-कम यह बात सिद्धांत रूप में स स्वीकार करते हैं कि वृद्धजनों का आदर कि जाना चाहिए।

अफ्रीका में वृद्धजनों को आदर के स

नियर सिटीजन' कहा जाता है। पूर्व वियत संघ में भी बुजुर्गों का पर्याप्त आदर ने की परंपरा थी। वृद्धजनों को वहां अनेक ह के संवैधानिक अधिकार प्राप्त थे। बुजुर्गों र अशक्त जनों के लिए सस्ते दर पर पौष्टिक हार, मुफ्त चिकित्सा व्यवस्था, बाजार में सस्ती एं, रहने योग्य व्यवस्थित आवास, पर्यटन लों पर बेहतर आरामगाह, जीवनयापन के ए तमाम तरह की आर्थिक सहायता, जरूरत अनुसार विशेष तरह के राजकीय संरक्षण

बुरी तरह टूटने के बावजूद वृद्धजनों का आदर करना, उनके बतलाये रास्ते पर चलना, जरूरत पड़ने पर उनका सक्रिय सहयोग लेना और उनके अनुभव से फायदा उठाना-हम नहीं भूलते। कड़वा पक्ष यह भी है कि हम अपने वृद्धजनों के प्रति दिनोंदिन उदासीन होते जा रहे हैं। कई बार तो हम उन्हें मन से सम्मान न देकर सम्मान देने की रस्मो-अदायगी भर करते हैं। अकसर संयुक्त परिवारों के टूटने पर बाबा, दादी, माता-पिता तक का बंटवारा कर दिया

ऋषि-मुनियों के देश भारत में वृद्धजनों का आदर-सम्मान करने की सुदीर्घ परंपरा आदिकाल से चली आ रही है। माता-पिता को देवतुल्य सम्मान देने की भावना भारतीय चिंतकों की मौलिक सूझ का परिचायक रहा है। शायद, यही वजह है कि हमारे यहां संयुक्त परिवारों के बुरी तरह टूटने के बावजूद वृद्धजनों का आदर करना, उनके बतलाये रास्ते पर चलना, जरूरत पड़ने पर उनका सक्रिय सहयोग लेना और उनके अनुभव से फायदा उठाना हम नहीं भूलते।

ौर विभिन्न रियायतें आदि की सुविधाएं ... ी संवैधानिक सीमाओं में दीर्घकाल से सुरक्षित हैं।

मातृ-पितृ देव

ऋषि-मुनियों के देश भारत में वृद्धजनों का ादर-सम्मान करने की सुदीर्घ परंपरा ादिकाल से चली आ रही है। माता-पिता को ेवतुल्य सम्मान देने की भावना भारतीय चिंतकों की मौलिक सूझ का परिचायक रहा है। शायद, ही वजह है कि हमारे यहां संयुक्त परिवारों के

जाता है। ऐसे में उपेक्षित विधुर और विधवाएं ... कहीं ज्यादा दयनीय बन जाते हैं। वृद्धजनों की परवरिश और उनकी छोटी-छोटी जरूरतों को लेकर अकसर कलह हो जाती है। 'मातृ देवो भव, पितृ देवो भव' की भावनावाले देश में ही बुढ़ापा बेहतर जिंदगी को तरस जाता है। परिवार के अंदर जब तक उनका शरीर चलता है, वे भार नहीं होते। जिंदगी से थकने, बीमार पड़ने या धनाभाव में इन्हें भार मान लिया जाता है।

मुंबई, कलकत्ता, मद्रास, अहमदाबाद या लखनऊ के सरकारी और गैर-सरकारी वृद्ध सदनों (हाउस फॉर ओल्ड पीपुल्स) को अंगुलियों पर गिना जा सकता है, लेकिन वहां भी वास्तविक जरूरतमंद नहीं पहुंच पाते। गैर सरकारी वृद्ध सदनों में पारसियों, ईसाइयों या सिंधियों के वृद्ध सदन भी देखने में आते हैं, जहां वृद्धजनों को मुफ्त भोजन, आवास या कपड़े—जैसी सुविधाएं दी जाती हैं। मिशनरियों के वृद्ध सदन कहीं ज्यादा साफ-सुथरे और सुविधाओं से संपन्न हैं। कतिपय समृद्ध सामाजिक संस्थाएं भी अपने होम (सदन) चला रही हैं। लेकिन ये वृद्ध सदन शहरी लोगों तक ही सीमित हैं। देश के पांच लाख गांवों में असहाय, अशक्त वृद्धजनों को बसाने का खयाल अभी सपना है। सच यह है कि हमारी सरकार और समाज ने वृद्धजनों की समस्याओं को कभी गंभीर समस्या के रूप में नहीं स्वीकारा है। यही कारण है कि अपने देश में वृद्धजनों की सामाजिक—आर्थिक स्थिति के आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं।

श्रम का महत्व

बुढ़ापे को जीवंत और उपयोगी बनाने के लिए श्रम का महत्व स्वीकारना ही होगा। पाश्चात्य देशों में तमाम सरकारी सुविधाओं के बावजूद लोग ज्यादा-से-ज्यादा सक्रिय रहने की कोशिश करते हैं। उन्हें दीर्घ जीवन के लिए श्रम की अहमियत का अहसास है।

पूर्व सोवियत संघ के संविधान में नागरिकों को वृद्धावस्था में उचित रख-रखाव की गारंटी रही है। लेकिन वहां वृद्धजन राजकीय सेवा से मुक्त होने के बाद भी औद्योगिक संस्थानों, खेतों या पशुपालन फार्मों में काम जारी रखते हैं। वृद्ध सदन में रहनेवाले पार्ट टाइम काम भी करते हैं। क्योंकि वृद्धजनों में अकेलेपन और उदासीनता की भावना पनपने लगती है और यह भावना आयु को प्रभावित करती है।

चीन में वृद्धजनों को कम्यून (विशेष तरह के सामूहिक-आवास) में रखा जाता है। उन्हें पांच तरह की मौलिक गारंटी दी जाती है। पर्याप्त भोजन, वस्त्र, ईंधन, मृत्यु के बाद सम्मानप्रद अंतिम संस्कार और बच्चों की शिक्षा। उन्हें कम मेहनतवाले काम दिये जाते हैं। वृद्ध औरतें सामूहिक भोजन-कक्ष, रसोई का निरीक्षण या छोटे बच्चों की देखभाल करती हैं।

अमरीका, पश्चिम जरमनी, ब्रिटेन, फ्रांस, कनाडा आदि देशों की सरकारें वृद्धजनों की समस्याओं की ओर जागरूक हैं। अमरीकी वृद्धों को आज 'सीनियर सिटीजन' कहा जाता है। लेकिन यह सम्मान प्राप्त करने के लिए अमरीकी वृद्धजनों ने सक्रिय संघर्ष किये हैं। 'ग्रे पैंथर' —जैसी मजबूत संस्थाओं ने उनके साथ सहयोग कर लड़ाइयां लड़ी हैं। ग्रे पैंथर का नारा है : 'जीने के लिए लड़ना सीखो।'

अमरीकी सुश्रूषागृहों (सरकारी आवासों) में रहनेवाले वृद्धजन भावनात्मक स्तर पर कहीं ज्यादा विपन्न हैं। घरों में भी अच्छी स्थिति नहीं है। लारी मोर्स का कहना है कि हमारे बुजुर्ग अपने घरों में अकेलेपन और खामोशी का जाम पीकर जीते हैं। मोर्स अपनी रिपोर्ट में लिखते है—'अमरीकी सुश्रूषागृहों में ये अमरीकी वृद्धजन हफ्तों अपनों का इंतजार करते हैं, अपने

स्वजन बंधुओं की याद करते हैं, अतीत की तमाम कहानियां सुनाते नजर आते हैं, पर कोई उनसे मिलने, उनका हाल पूछने नहीं आता। इन बूढ़ों से मिलने और उनके लिए उपहार लेकर आनेवालों की संख्या बहुत कम है। [illegible] सरकारी कुछ सुविधाएं देने के बाद भी [illegible] और उनकी [illegible] जरूरतें पूरी नहीं होती।



वृद्धावस्था का एकाकीपन

कुछ वर्ष पहले न्यूयॉर्क में दो दिन के पैदल [illegible] अमरीकी वृद्धजनों ने एक विशाल प्रदर्शन करके अपनी समस्याओं की ओर ध्यान आकर्षित कराया था। वे चाहते थे सरकार के [illegible] की सुविधा [illegible], उन्हीं बूढ़ों के लिए [illegible] में रियायत, [illegible], [illegible] को [illegible] में भारी छूट, [illegible] की दुकानों में [illegible] पर छूट, [illegible] काम [illegible]—जैसी कई सुविधाएं हैं। [illegible] [illegible] के बावजूद अमरीकी वृद्ध अपनी [illegible] और [illegible] का [illegible] है। [illegible] [illegible] है कि अब यहां बूढ़ों की देखभाल का [illegible] [illegible] हो रहा है।

भारत—जैसे [illegible] देश में कई तरह की समस्याएं हैं। पश्चिमी देशों से हम जिनकी तुलना नहीं कर सकते। [illegible] [illegible] [illegible], [illegible], [illegible] की ओर से [illegible], अपनों की दूरी या [illegible], छोटी-छोटी बातों पर [illegible] [illegible], [illegible], [illegible]—जैसी समस्याएं, वृद्धावस्था को [illegible] बना देती हैं। [illegible] की स्थिति ज्यादा [illegible] है। [illegible] से [illegible] [illegible] [illegible] है और [illegible] [illegible] हो जाता है।

वृद्धजन समाज के लिए [illegible] नहीं है। वे देश की [illegible] शक्ति हैं। [illegible] वृद्ध नागरिकों को [illegible] [illegible] [illegible] की [illegible] का [illegible] [illegible] [illegible] का हक नहीं [illegible]। [illegible] [illegible] और [illegible] से [illegible] [illegible]।

—[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] रोड, [illegible]

व्यंग्य

हंसी अनंत हंसी कथा अनंता

● विजय अग्रवाल

कुछ लोग ऐसे होते हैं, जो बेबात पर तो हंसते हैं, लेकिन बात पर नहीं हंसते। बहुत से लोग ऐसे होते हैं, जो बात पर हंसते हैं, बेबात पर गुमसुम रहते हैं। थोड़े से लोग ऐसे भी होते हैं, जो न तो बात पर हंसते हैं, और न ही बेबात पर। के.के. सिंह यानि कि कृष्ण कुमार सिंह हंसने के मामले में इन सभी चरणों से गुजर कर अंततः मौन अवस्था को प्राप्त हुए थे।

के.के. के ज्ञात हंसने की शुरुआत बात-बेबात दोनों पर हंसने से हुई थी, जो उनकी दादी रामदेई को बिलकुल पसंद नहीं थी। एक बार दादी के.के. की बहन गंगोत्री से कह रही थी—"क्या कृष्ण की तरह बेहाया—जैसी हमेशा हर बात पर खिलखिलाती रहती है। किसी दिन धोखा खाएगी, धोखा। देख लेना।"

के.के. ने अपनी बहन को दी जानेवाली सीख गलती से सुन ली। इसका परिणाम यह हुआ कि गंगोत्री तो पूर्ववत् खिलखिलाती रही, लेकिन के.के. ने खिलखिलाना बंद कर दिया। उसे इस प्रकार हंसी-विहीन देखकर दादी ने जहां उसे 'अत्यंत समझदार' लड़का करार दिया, वहीं दादा चिंतित हो उठे। उन्हें लगा कि कहीं ऐसा तो नहीं कि के.के. को अपने स्वर्गीय माता और पिता की याद आने लगी हो, जिसके कारण वह गंभीर हो उठा है। उन्होंने के.के. को बुलाया और बोले—"बेटे, हंसो, खूब हंसो। हंसने का मतलब होता है—शरीर का गुलाब फूल बन जाना।"

इस नसीहत के बाद के.के. ने धीरे-धीरे फिर से खिलना शुरू किया। अब वह बेबात पर चुप रहता और केवल बात पर ही हंसता। दादी को भी उस स्थिति पर कोई आपत्ति नहीं थी। यानि कि के.के. अब ठीक हो गया था। लेकिन हंसी संबंधी चिंतन उसके बहुत गहरे बैठा हुआ था; इतने अधिक गहरे कि कभी-कभी वह हंसने के पहले यह सोचने लगता कि उसे हंसना चाहिए या नहीं। और जब तक वह इस बारे में निर्णय ले पाता, तब तक या तो सब हंस चुके होते, या फिर सबके चुप रहने के बाद भी वह बाद में अनायास अचानक हंसने लगता। हालांकि, इसके कारण कई बार मीटिंगों में वह बड़ी विचित्र एवं हास्यास्पद स्थिति का जन्मदाता बन जाता था, लेकिन वह मजबूर था। इसलिए वह यही कोशिश करता कि उसे अपने किसी

सीनियर की मीटिंग में न जाना पड़े, भले ही उसके एवज में वह अपने जूनियरों की दुगनी मीटिंग ले लिया करेगा। वस्तुतः जूनियरों की मीटिंग में उसे सबसे बड़ी सुविधा यह थी कि जब वह हंसता था, तो पूरी मीटिंग हंसती थी और जब वह गंभीर रहता था, तो पूरी मीटिंग गंभीर रहती थी।

दादा और दादी के हंसी संबंधी विपरीत चिंतन ने के.के. के व्यक्तित्व को सामान्य से असामान्य तथा पुनः असामान्य से सामान्य बनने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यहां तक कि के.के. कभी-कभी जोश में आकर फ्रायड के काम कुंठा का तीव्रता से खंडन करते हुए यह स्थापित करने लगता कि व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण और उसके व्यवहार का संचालन काम कुंठा से नहीं बल्कि, हंसी से होता है। हंसी की इंटेंसिटी, हंसी के दौरान बनने वाली मुख-मुद्राओं, ठहाके की तीव्रता तथा हंसी के जन्म के कारण के आधार पर उस व्यक्ति के व्यक्तित्व का टू-दी-प्वाइंट विश्लेषण किया जा सकता है। इस सिद्धांत के प्रतिपादन के लिए उसने कुछ विशेष किस्म की घटनाओं को अपनी डायरी में दर्ज कर लिया था। नमूने के लिए प्रस्तुत है उसकी गुप्त डायरी के कुछ पृष्ठ—

हवाई यात्रा
१ अप्रैल, १९९४

अपने जीवन की इस [illegible] हवाई यात्रा में मुझे [illegible] दादी के [illegible] [illegible] [illegible] कि [illegible] [illegible] [illegible] थीं। [illegible]

और चुपड़े चेहरोंवाली एयर होस्टेस हैं, वे सबकी सब हमेशा मुस्कराती ही रहती हैं। उनकी इस मुस्कान से कभी-कभी प्रेम के आमंत्रण का भ्रम भी होने लगता है। इस तरह के भ्रम का शिकार होकर मैंने जब प्रत्युत्तर देने का दुस्साहस किया, तो मुस्कान की चासनी में चिपचिपाये हुए उसके नेत्र अचानक धधकते हुए तंदूरों में तब्दील हो गये। इसके बावजूद वह एक बार फिर से मेरी ओर मुस्कराई, और चली गयी। मुझे लग रहा है कि मेरा दिल अब हमेशा के लिए उसकी आंखों की ज्वाला और उसकी मुस्कान की ठंडक का मरीज हो गया है। सर्वथा विपरीत स्थायी भावों को उद्दीप्त करनेवाली उसकी मुद्राओं से मुझे बेहद घबड़ाहट होने लगी। जब मैंने दूसरी एयर होस्टेस को अपने इस चिंताजनक घबड़ाहटपूर्ण स्वास्थ्य के बारे में बताया, तो चिंतित होने के



के.के. ने अपनी [illegible] गलती से सुन ली । इसका परिणाम यह हुआ कि [illegible] तो पूर्ववत् खिलखिलाती रही, लेकिन के.के. ने खिलखिलाना बंद कर दिया । उसे इस प्रकार हंसी-विहीन देखकर दादी ने जहां उसे 'अत्यंत समझदार' लड़का बता दिया, वहीं दादा चिंतित हो उठे ।

बजाय वह भी मुस्कराई, और मेरे हाथ में एक गोली थमा गयी । मुस्कराहट का यह चरित्र मेरे लिए पहेली बन गया है, जिसे मैं भविष्य में सुलझाने का प्रयास करुंगा ।

होली-डे-इन
६ सितम्बर, ९४

एक अंतरराष्ट्रीय कांफ्रेंस में भ्राग लेने के लिए मैं जैसे ही इस फाइव स्टार होटल में दाखिल हुआ कि मुझे रिसेप्शन पर बैठी एक सुंदरी नियमित रूप से मुस्कराती नजर आयी । मैंने उससे पूछ ही लिया कि कहीं वह इससे पहले एयर होस्टेस तो नहीं थी । क्योंकि, मुझे दोनों की हंसी में अद्भुत समानता दिखाई पड़ रही थी । उसने 'नो, नो' कहा और फिर खिलखिलाकर हंस पड़ी । उसकी खिलखिलाहट से मेरे दिल के अंदर कई घंटियां बज उठीं । मैंने इन घंटियों को बजते रहने देने का तात्कालिक संकल्प ले लिया । लेकिन मेरा यह संकल्प उस समय थोड़ा डगमगाने लगा, जब अन्य कई मुस्करानेवाली मिलीं । फिर भी मैंने पहली मुस्कराहट को ही अपने जीवन की पहली रोमानी मुस्कान मानकर उसका प्रत्युत्तर देने का निर्णय लिया । देखते हैं कि अब आगे होता है क्या ?

मयूर विहार
३० जनवरी, ९५

मेरा मयूर-जैसा स्वतंत्र विहार का स्थल इतनी जल्दी तिहाड़ जेल में तब्दील हो जाएगा, मैंने कभी सोचा भी नहीं था । भले ही आज देश आजाद हुआ हो, लेकिन मैं तो निरंतर परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ता जा रहा हूं । अब तो बस, मैं रूबी के चेहरे पर ५ सितम्बर वाली मुस्कान देखने के लिए ही जी रहा हूं । ऐसा नहीं है कि रूबी के चेहरे पर वह मुस्कान आती ही नहीं । वह आती है, लेकिन तब आती है, जब मेरे अतिरिक्त कोई अन्य उसके सामने आता है ।

के.के. की डायरी में इस तरह के अनेक अपने तथा दूसरों के अनुभव दर्ज हैं । इन दर्ज तथ्यों के आधार पर उसने सलाह के तौर पर जो सुझाव देने शुरू किये हैं, उनमें से कुछ अनुकरणीय सुझाव इस प्रकार हैं –

- लड़कियों को कभी भी किसी दूसरे लड़के या मर्द के सामने नहीं हंसना चाहिए ।
- लड़कों को आगाह किया जाता है कि यदि कभी बात-बेबात पर हंसने वाली लड़की से साबका पड़ जाए, तो उसे न तो स्वयं घास

डालना चाहिए और न ही उसके द्वारा डाले गये चुग्गों को चुगना चाहिए ।

● विवाह मंडप में बैठी भावी पत्नी को भूलकर भी हंसना तो दूर, मुस्कराना भी नहीं चाहिए, अन्यथा उसके लिए सार्वजनिक बदनामी का भय पैदा जाएगा ।

● कार्यालय में अपने जूनियरों के सामने हंसने से दबदबा कम होता है, तथा सीनियरों के सामने हंसने से बदतमीजी होती है । सही अर्थों में समकक्ष कोई होता नहीं । अतः कार्यालय में हंसना नहीं चाहिए ।

● यदि आपका बड़ा अफसर हंसे, तो आपको भी हंसना चाहिए । लेकिन यदि आपसे छोटा अफसर हंसे, तो आपको गंभीर बने रहना चाहिए । इससे आपकी अफसरी बनी रहेगी ।

● एक जोकर की हंसी अर्थरहित हंसी होती है । अतः यदि आप चाहें, तो उसके साथ हंस सकते हैं । लेकिन एक राजनेता की हंसी को कभी भी जोकर की हंसी की तरह अर्थरहित मानने की भूल न करें । उनकी हंसी में अपनी हंसी मिलाने से पहले भली-भांति सोच-विचार लें ।

● बच्चे की हंसी हालांकि, होती तो है निर्दोष, लेकिन उसमें मूर्खता का पर्याप्त पुट रहता है । अतः यह आपके ऊपर है कि आप क्या निर्णय लेते हैं ।

● जब ऑफिस या दुकान से लौटें और आपकी घरवाली यदि हंसकर आपका स्वागत करे, तो सतर्क हो जाएं । इस दुर्घटना के लिए महीने की पहली तारीख को अपवाद मानें ।

● बात चाहे कितनी भी मजेदार क्यों न हो, ठहाका मारकर हंसने को बेहूदगी समझें ।



● यदि कोई महिला पी.ए. अपने बॉस को देखकर मुस्कराए, और बदले में बॉस भी मुस्करा दे, तो इसे 'दाल में कुछ काला' होने का संकेत समझें ।

● डॉक्टर, डाकिया, शिक्षक, हलवाई आदि के मुस्कान को शुभ समझें । जबकि नर्स, दरोगा, महाजन, पुजारी, मैकेनिक, दलाल आदि की मुस्कान को अशुभ के आगमन का सूचक समझें ।

के.के. ने अभी हंसी के कुल ग्यारह-सार ही तैयार किये हैं । उनका यह शोध कार्य जारी है । जब एक लेख लायक शोध-सामग्री और एकत्रित हो जाएगी, तब वे मुझे स्वयं ही खड़खड़ाकर सूचित करेंगे, ताकि मैं उसे आप लोगों तक पहुंचा सकूं । कृपया, तब तक के लिए प्रतीक्षा करें ।

—टाइप-५/२४—ए, राष्ट्रपति एस्टेट,
नयी दिल्ली-११०००४



पोस्टकार्ड याचिका

अशोक कुमार श्रीवास्तव, भकुरहर (बिहार) : मैंने सुना है कि न्याय को सुलभ बनाने के लिए ऐसी व्यवस्था है कि यदि कोई व्यक्ति याचिका दायर करने का खर्च वहन न कर सकता हो, तो वह न्यायालय को एक पोस्टकार्ड या पत्र भेज दे, तो उसे भी न्यायालय में एक याचिका मानकर स्वीकृत कर लिया जाता है । मैं जानना चाहता हूं कि पोस्टकार्ड द्वारा किस तरह न्यायालय में याचिका दायर की जा सकती है ? उसकी सुनवाई में यदि वादी न्यायालय में उपस्थित होने की स्थिति में न हो, तो उसकी दलील कौन रखता है ? सर्वोच्च न्यायालय और पटना न्यायालय, जहां पोस्टकार्ड द्वारा याचिका दायर की जा सकती है, पता बताने की कृपा करें ।

पोस्टकार्ड को समादेश याचिका के रूप में स्वीकृत किये जाने की बात सही है । उच्च न्यायालय या सर्वोच्च न्यायालय जनहित में, जहां उचित समझें, पोस्टकार्ड, पत्र या किसी भी रूप में न्यायालय को प्राप्त शिकायत या आवेदन को समादेश याचिका के रूप में विचारार्थ स्वीकार कर लेते हैं । ऐसी स्थिति में याचिका देने के अन्य नियमों या उपनियमों को न्यायालय आधार नहीं बनाते । याचिका की सुनवाई के आवश्यक पत्रों को न्यायालय आदेश देकर मंगा लेते हैं । याचिका संबंधित न्यायालय के मान्य मुख्य न्यायाधीश को भेजी जा सकती है ।

संस्था बनानी है

पंकज मिश्रा, शाहजहांपुर (उ. प्र.) : मैं हिंदी के प्रचार एवं सेवा के लिए एक संस्था बनाना चाहता हूं । इसके लिए क्या कोई समिति बनाना जरूरी है और उसका रजिस्ट्रेशन कराना भी जरूरी है ? यदि जरूरी है तो कृपया, बताएं कि समिति किस प्रकार बनायी जाती है और उत्तर प्रदेश में रजिस्ट्रेशन कहां होता है ?

समाज या साहित्य सेवा का कोई भी कार्य करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति स्वतंत्र है । यह काम वह व्यक्तिगत रूप से या अनेक व्यक्तियों का संगठन बनाकर कर सकता है । संस्था या संगठन के पंजीकृत होने पर उसे मान्यता प्राप्त हो जाती है और अनेक लाभ भी रहते हैं । इसके लिए समिति, आवश्यक ज्ञापन, नियम-उपनियम आदि बनाकर पंजीकरण अधिनियम के अंतर्गत संस्था का पंजीकरण कराया जा सकता है ।

उपभोक्ता संरक्षण

कैलास नाथ, वाराणसी : मेरे पुत्र ने बनारस के एक विक्रेता से एक इलैक्ट्रानिक टाइपराइटर खरीदा । वह टाइपराइटर शुरू से ही ठीक ढंग से काम नहीं कर रहा था, यदा-कदा खराब हो

जाता था। पिछली साल जून में उसने बिलकुल ही काम करना बंद कर दिया। टाइपराइटर बनानेवाली कंपनी के कारीगर भी उसे ठीक नहीं कर पा रहे। क्या उपभोक्ता संरक्षण में जाने से हमें लाभ मिल सकता है या कोई अन्य मार्ग है, जिससे टाइपराइटर की खरीद पर खर्च किया साठ हजार रुपया वसूल हो सके ?

टाइपराइटर का ठीक ढंग से काम न करना सेवा में कमी माना जाएगा। सेवा में कमी के लिए उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम के अंतर्गत स्थापित जिला फोरम में शिकायत की जा सकती है। उपभोक्ता को ठीक सेवा देना टाइपराइटर विक्रेता तथा उत्पादक दोनों का उत्तरदायित्व है। अतः दोनों के विरुद्ध कार्यवाही हो सकती है।

टाइपराइटर के मूल्य के साथ-साथ उसके ठीक प्रकार से कार्य न करने के कारण हुई हानि की क्षतिपूर्ति की मांग भी की जा सकती है इसके लिए आप दीवानी न्यायालय में भी जा सकते हैं।

मेरा हिस्सा

एक बहन, बुलंदशहर : मैं साठ वर्षीया वृद्धा हूं। मेरे पति सरकारी नौकरी से रिटायर हैं और उन्होंने अपने पैसों से मकान बना लिया है। अब वह अन्य लोगों के प्रति आकर्षित होकर मेरे साथ विश्वासघात कर रहे हैं। मुझे मारते-पीटते हैं, खर्चा नहीं देते तथा मुझे मकान से निकालने व मकान बेचने की धमकी देते हैं। क्या मुझे अपने गुजारे के लिए उनकी पेंशन और मकान में हिस्सा मिल सकता है ?

आपको अपने पति के साथ रहने का अधिकार है। वह आपको मकान से, जिसमें वह स्वयं रहते हैं, निकाल नहीं सकते। क्योंकि, मकान का स्वामित्व आपके पति का है इसलिए वह चाहें तो मकान को बेच सकते हैं। मकान बेचने के बाद वह जिस स्थान पर रहेंगे, आप भी वहीं उनके साथ रह सकती हैं। आपको अपने पति से जीवन-यापन के साधन प्राप्त करने का भी अधिकार है।

आपको मारने-पीटने का कानूनन कोई अधिकार आपके पति को नहीं है। हां, मकान में हिस्सा मांगने का आपका अधिकार कानून स्वीकार नहीं करता।

विधि-विधान स्तंभ के अंतर्गत कानून-संबंधी विविध कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं। प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ —रामप्रकाश गुप्त

भाभी की भांजी

यतेंद्र सिंह, ग्वालियर : मैं अपनी भाभी की भांजी यानी बहन की लड़की से शादी करना चाहता हूं। क्या हिंदू विधि-विधान के अनुसार उससे शादी कर सकता हूं या नहीं ?

हिंदू विवाह अधिनियम में उन संबंधों का उल्लेख है, जिन संबंधोंवाले व्यक्तियों का आपस में विवाह निषिद्ध है। भाभी की भांजी उक्त परिधि में नहीं आती। इसलिए इस शादी-संबंध में हिंदू विधि-विधान आड़े नहीं आता।

वारिसों का दायित्व

सौदामिनी पांडेय, इलाहाबाद : मेरे पति के एक घनिष्ठ मित्र ने अपने पुत्र के विवाह के लिए पत्र

लिखकर हमसे पचास हजार रुपया उधार मांगा। उनके फंड का पांच-छह लाख रुपया झमेले में पड़ा हुआ था, जिसके मिलते ही उन्होंने उधार लौटा देने का वायदा लिखा था। मेरे पति ने उन्हें दस हजार रुपया बैंक ड्राफ्ट द्वारा रजिस्टर्ड ए.डी. पत्र से भेज दिया। उनके हस्ताक्षर से ए.डी. रसीद भी आ गयी। कुछ दिन बाद उनका निधन हो गया। हमने संवेदना संदेश व दो-चार पत्र भेजे लेकिन, हमने उधार दिये रुपयों का जिक्र करना ऐसी स्थिति में उचित नहीं समझा। हमारे इन सामान्य पत्रों का भी कोई जवाब नहीं आया।

बाद में पता चला कि उनकी पत्नी को फंड का रुपया मिल गया। उन्होंने पुत्र की शादी कर दी और शादी के पांच-छह दिन बाद उनकी भी आकस्मिक मृत्यु हो गयी।

हमने मित्र की पुत्री, जो घर की कर्ताधर्ता थी, को कई रजिस्टर्ड पत्र भेजकर रुपयों की वापसी की मांग की, लेकिन कोई जवाब नहीं आया।
हमें क्या करना चाहिए ? हमारे पास मित्र का लिखा पत्र, बैंक ड्राफ्ट का नंबर, उसकी पावती की ए.डी. रसीद वगैरह सभी हैं।

आपके पति ने रकम बैंक ड्राफ्ट द्वारा भेजी, जिसे उनके मित्र ने अपने बैंक द्वारा प्राप्त किया। इसलिए यह प्रमाणित करना आसान है कि आपने मित्र को रुपया दिया। साथ ही उनका वह पत्र जिसमें उन्होंने पुत्र के विवाह के लिए रुपया उधार मांगा और उसे लौटाने का वायदा किया, आपके लिए अत्यंत उपयोगी है।

अब मित्र की मृत्यु के बाद कुछ मामला उलझ गया है, फिर भी मित्र जो भी संपत्ति छोड़ गये हों, उसमें से आप अपनी रकम वसूल कर सकती हैं। उनके वारिस उसी हद तक उनकी देनदारी चुकाने के उत्तरदायी हैं, जितनी मूल्य की संपत्ति उन्हें विरासत में प्राप्त हुई हो।

विकलांगता

वीरेश कुमार, दतिया : मैं पैर से एक विकलांग छात्र हूं, मेरी विकलांगता का प्रतिशत साठ है। मैं अभी इंदिरा गांधी मुक्त विश्वविद्यालय से स्नातक की परीक्षा दे रहा हूं। मैं यह जानना चाहता हूं की सिविल सर्विसेज में मैं आवेदन कर सकता हूं या मेरी विकलांगता कानूनी रूप से बाधक होगी ?

हमारे देश में विकलांगों को समानाधिकार ही नहीं बल्कि नौकरी आदि में विशेष आरक्षण दिया गया है। विकलांगों को समानाधिकार देने के उद्देश्य से भारत सरकार ने विकलांगता वाले व्यक्ति (समान अवसर) अधिकार संरक्षण एवं पूर्ण भागीदारी अधिनियम १९९५ पारित किया और उसे भारत के राजपत्र में १ जनवरी १९९६ को प्रकाशित किया। १९९३-२००२ का दशक हमारे देश में ही नहीं पूरे एशिया महाद्वीप में विकलांग व्यक्तियों के दशक के रूप में माना जा रहा है। अतः आपको अपने मन से यह बात निकाल देनी चाहिए कि आपकी विकलांगता साधारणतयः किसी सेवा में आपकी बाधक बनेगी। आप पूरी शैक्षणिक योग्यता प्राप्त करने के बाद सिविल सेवा के लिए आवेदन करें। ●



अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये प्रश्नों के उत्तर खोजिए । उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जाएंगे । यदि आप सभी प्रश्नों के उत्तर दे सकें, तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प

— संपादक

१. क. ''आर्य जाति कहीं बाहर से नहीं आयी । यह मूल भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का हिस्सा थी ।'' यह किस विदेशी मानव-विज्ञानवेत्ता तथा पुरातत्ववेत्ता का मत है ?

ख. हड़प्पाकालीन सभ्यता के संबंध में उसके अन्य क्या निष्कर्ष हैं ?

२. क. हिमालय की लंबाई-चौड़ाई कितनी है ?

ख. भारत का क्षेत्रफल कितना है ?

३. क. उत्तरी ध्रुव पर पहला भारतीय कौन और कब पहुंचा था ?

ख. उसने यह करतब कैसे किया ?

ग. उस समय वहां कैसा वातावरण था ?

४. विश्व में सबसे अधिक लोगों की मृत्यु किन चार कारणों से होती है ?

५. क. अब तक कितने लोग एवरेस्ट पर चढ़ने में सफल हुए हैं ?

ख. एवरेस्ट पर चढ़ने के अभियान में कितने लोगों की मृत्यु हो गयी ?

६. नीचे लिखी हुई उपधातुएं किन धातुओं के योग से बनी हैं ? क. पीतल, ख. स्टेनलेस स्टील ।

७. भारत का प्रथम नागरिक कौन होता है ?

८. निम्नलिखित पुरस्कार व सम्मान किन्हें मिले हैं ?—

क. १९९४ का जवाहरलाल नेहरू पुर., ख. 'ग्लोबल रोल ऑव ऑनर' पर्यावरण पुर. ग. १९९५ का चमेली देवी पुर. ।

९. गत जून में हुए फ्रेंच ओपन टेनिस के (क) महिला एकल खिताब, (ख) पुरुष एकल खिताब किसने जीते हैं ?

१०. नीचे दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और बताइए यह क्या है —



कहानी

नदी

• डॉ. किरण सूद



उफनते लावे की तरह उसका क्रोध उफक-उफककर बढ़ रहा था। कसी हुई मुट्ठियों में रक्त की उष्णता से वह स्वयं भी तप रही थी। कृत्रिम लालिमा से रंगी गालों पर बढ़ती लाली-जैसे उसके गोरे रंग को चीर रही थी। वह तेजी से अंदर-बाहर घूम रही थी। दूर-दूर तक फैले मैदान में कहीं कोई आहट नहीं थी।

बहुत नजदीक है— उसकी मां का घर। इस समय वह 'संध्या' कर रहीं होंगी। वृद्धावस्था कैसे एक-एक शक्ति को निगल जाती है— आजकल वह करीब से देख रही है। जब वह सुबह मां को चाय देने जाती है— एक अजीब-सा भय घिरा होता है। 'ठीक हो मां' का जप करते हुए— वह ताला खोलती है। इन दिनों मां को चिटखनी लगाने के लिए मना किया है उसने। उनकी सेवा करनेवाली नौकरानी भी तो अब बूढ़ी हो गयी है। घंटों लगा देती है. दरवाजे तक आने में। इसलिए रात को, मां के घर का ताला वह स्वयं बंद करके जाती है— बाहर से। और सुबह अपने घर से ही चाय बनाकर लाती है। स्वयं उसी झोलवाली कुरसी पर बैठकर चाय पीती है जिस पर बैठकर उसने यौवन की देहरी पर कदम र[...] था।

बैठे-बैठे वह प्रायः मां के बारे में सोचती गठरी-सी बनकर सो रही यह विदुषी महिला साधना करते-करते तपस्विनी हो गयी है। उसे सहसा स्मरण हो आता— उनका प्रार्थना में गूंजता स्वर, जो पांच सौ लड़कियों में सन्नाटा भर देता था। और अब... वह 'संध्या' करती तो कमरे में भी स्पष्ट सुनायी नहीं देता है। उस तक आवाज पहुंचने का तो सवाल ही नहीं है इसलिए वह सोच रही है— मां ने 'संध्या' क[र] ली होगी या नहीं। 'संध्या' के बाद ही खाना खाती हैं वह। खाने के बाद नियम से 'शत कदम' की दिनचर्या पूरी करती हैं और फिर बिस्तर में दुबक जाती हैं।... शाश्वती ने घड़ी [की] ओर देखा। अभी छह नहीं बजे हैं। फिर पेड़ों की फुनगियों पर चमकती धूप की ओर देखा।



सूर्यास्त का समय सुंदर होता है । किंतु उसे एकाकीपन का एहसास बढ़ जाता है, इस समय ।

अपने ही निर्णय से तो अकेली है वह । वरना चाहती तो, इस वक्त होती— कनाडा में । अपने पति को एक के बाद एक 'पैग' पीते हुए देखती रहती । उसके लिए 'स्नैक्स सर्व' करती, जबर्दस्ती मुसकराती । बंद खिडकियों में कब सूरज ढल जाता था, पता भी नहीं चलता था ।

बीस बरस पहले संस्कारवान मां से विद्रोह करके उसने इंद्रेश के प्रति अपने बढ़ते प्रेम को अबाध बढ़ने दिया । इंद्रेश उसके ही कॉलेज में विज्ञान का छात्र था, वह स्वयं इतिहास पढ़ रही थी । उसे विज्ञान कक्ष एक अजूबा-सा लगता था । बंद खिड़कियोंवाला बड़ा-सा कमरा, अल्मारियों से ठसा-ठस भरा, वह उत्सुकतावश अंदर झांककर देखा करती थी । अपनी सहेलियों के साथ । एक दिन इंद्रेश से आंख मिली तो जिंदगी ही बदल गयी । उछाले भरती । उसकी उम्र रसमयी हो गयी— और वह कविता लिखने लगी । संस्कृत साहित्य की विदुषी मां को शाश्वती की यह कविताएं एक आंख नहीं अच्छी लगीं । 'शाकुंतल' पढ़ाना एक बात है और अपने ही घर में उग आयी 'शकुंतला' को समेटना दूसरी बात ।

डांट-डपट, नाराजगी, रोक-टोक, पहरेदारी— सब आग में हवा का काम कर रहे थे । आखिर मां को घुटने टेकने पड़े और उन्होंने कहा— वह— होटल कोहीनूर में इंद्रेश को अकेली मिलेगी ।

एक सप्ताह के भीतर बड़े लोगों के हस्तक्षेप से बातचीत हुई और सगाई कर दी गयी । इंद्रेश और शाश्वती की. . । प्रयास करके इंद्रेश को विदेश भेजा गया और वहीं शाश्वती की बुआ ने दोनों को 'शादी' की रस्म में बांध दिया ।

सपनीले नयनोंवाली शाश्वती को एक वर्ष के भीतर ही पहला पुत्र-रत्न प्राप्त हुआ । भावुक शाश्वती वात्सल्य में डूब गयी और इंद्रेश धन सुविधाएं जुटाने की दौड़ में शामिल हो गया । एक के बाद एक— तीन पुत्र हो गये— शाश्वती के पास, व्यस्त रहने के लिए । बाद उसने 'म्यूजियम' में नौकरी भी कर ली । घर, बाहर, बाजार, नौकरी, बच्चे [illegible]

समेटती वह इंद्रेश के दो मीठे बोलों को तरसती रही। शिकायत करने का भी वक्त नहीं मिलता था। हृदय का कोई कोना टीसता रहता था। शाश्वती घावों पर सितार से मलहम लगाने की कोशिश करते हुए जीती रही कि अचानक सौरभ आ गया उसके जीवन में। वह किसी तरह कनाडा पहुंचा था, इस इच्छा के साथ कि शादी करके वहीं बस जाएगा। अपने लिए साथी तलाशती उसकी आंखें शाश्वती की उदास शामों को भरने लगीं। शाश्वती के भीतर भरा असंतोष संवेदना का स्वर पाते ही फूट पड़ा और इंद्रेश के साथ उबाऊ जीवन के घेरे को तोड़ने के बारे में सोचने लगी वह।

इससे पहले कि विस्फोट होता— एक दिन सौरभ ने उसे अपनी शादी का 'कार्ड' थमा दिया। चुप रह गयी शाश्वती। मां से बात-बात में उलझनेवाली, पुरुषों के सामने चुप्पा क्यों हो जाती है। इंद्रेश के इंद्रजाल से भ्रमित वह, सौरभ के डंक से आहत थी। किंतु इस बार तो आंसू भी नहीं टपका। सिसकी भी नहीं फूटी। इंद्रेश के साथ जीवन फिर चलने लगा था। घिसटते-घिसटते जी रही थी वह...।

शीशा देखती तो, अपने कपोलों को छू लेती। भरा-भरा चेहरा अब भी उसे वैसा ही लगता है। आंखों में काजल की रेखा खींचती तो अपने से ही पूछती— वह हिरणी-सी चपलता अब भी है क्या ? कत्थक में सीखी सारी मुद्राएं दोहरा लेती वह— कमर में लचक अब भी है— और सोचते-सोचते अपने पर झुंझला जाती थी। वह बूढ़ी जल्दी क्यों नहीं हो जाती। सारी इच्छाएं स्वाहा हो जाएं एक पल में, तो सुखी हो जाए वह। कभी-कभी वह पागलों की तरह गाड़ी 'ड्राइव' करती वह— दुर्घटना हो जाए कोई तो भला।

किंतु कुछ नहीं हुआ— ऐसा-वैसा। वह तो जिंदगी के उसी मोड़ पर ठिठकी खड़ी है जहां से इंद्रेश के साथ गृहस्थी बसाने की बात सोची थी उसने। गृहस्थी पूरी जमी नहीं। प्रेम के आधे-अधूरे क्षण उसमें जिज्ञासा जगा गये।

खोजते-खोजते एक दिन उसने निर्णय लिया, भारत लौटने का। उसे लगता था, अपनी माटी की गंध उसके प्यासे मन को तृप्ति देगी। अपने महाविद्यालय का सन्नाटा उसके भीतर उग आये शोर को शांत कर देगा। पेड़ों से झरता बौर उसके सूनेपन को भर देगा। ठंडी बयार उसकी दहकती देह को शीतलता देगी।

सोचते-सोचते— भारत पहुंच गयी वह, मां ने आधे मन से स्वागत किया। अलग घर दिया रहने को। 'ब्याह अपनों से दूर कर देता है'— उसने सोचा। वह अपना घर सजाने-संवारने में लग गयी। इंद्रेश के साथ रहते जो वह नहीं कर सकी थी, वह सब करने की दुगुनी ललक से भरी थी वह। एक-एक परदा खुद सिला उसने। फर्नीचर बनवाया, खुर्जा जाकर। 'प्लांटर्स' लाये गये। और भी न जाने क्या-क्या ? घर न हुआ, जीता-जागता म्यूजियम नजर आने लगा। अब इतने सजे-संवरे घर में वह किसी की प्रतीक्षा करने लगी। अंतःकरण के भीतर से हूक उठती— 'काश ! इंद्रेश आ जाए। फिर अगले ही क्षण मुरझा जाती। आ भी जाए इंद्रेश तो वह तो आते ही ढूंढ़ेगा, अपनी 'बार'। उसे इन किताबों से क्या मतलब ? क्यों सराहेगा वह इन 'ब्रौंज' के बुतों को और क्यों सहलाएगा उसके रोपे

पौधों को ?'

कुछ दिन बाद, मां के परिचितों ने सलाह दी— शाश्वती से कहो— यहां स्थानीय कॉलेज में नौकरी कर ले । मां के समझाने पर उसने जीवन में पहली बार मां की बात मान ली और अब वह रोज कॉलेज जाने लगी ।

शाश्वती में जीवन की उमंग फिर से आने लगी । इन्हीं दिनों एक प्रवक्ता ने उसे कवि-गोष्ठी का निमंत्रण दिया । अपनी पुरानी किताब-कॉपी निकालकर वह— पहुंच गयी— क्लब । रात को वह भले मानस शाश्वती को पहुंचाने के लिए घर आये । शाश्वती इस वक्त वह अपनी नौकरानी को क्या जगाये— सो, स्वयं ही चली गयी— रसोई घर में । जल्दी ही कॉफी लेकर वापस पहुंची वह । किंतु उन महोदय को तो कोई जल्दी थी नहीं । वह लगे अपने गुणों का बखान करने । शाश्वती ने दो बार कहा— 'काफी देर हो गयी है, अब आप जाएं । आपकी पत्नी प्रतीक्षा कर रही होंगी । बहुत मुश्किल से वह जाने को उद्यत हुए । किंतु 'मोटा पेट' उस 'सैटी' से उठे तो उठे कैसे ?

आखिर मजबूर होकर शाश्वती ने उनको सहारा देकर उठाने के लिए अपना हाथ दिया

> शाश्वती ने अभाव का जीवन जिया है किंतु वह संस्कारी जीव है । अपने मूल्यों को तिलांजलि नहीं दे सकती वह । बौद्धिक स्तर पर मैत्री करना एक बात है, इस तरह कुत्सित दलदल में फंसना दूसरी बात । शाश्वती इस गंदगी को बर्दाश्त नहीं कर सकती है । प्रेम और वासना के अंतर की लीक मिटाकर वह जीना नहीं चाहती ।

ने लाख मना किया कि उसके साथ ड्राइवर है, वह नहीं माने । और अपने खटारानुमा मोटर-साइकिल से पीछा करते आ पहुंचे— उसके घर ।

शाश्वती धन्यवाद की औपचारिकता निभाकर दरवाजे की ओट में हो रही थी कि उन महाशय ने कॉफी के प्याले की फरमाइश की ।

शाश्वती कुछ कहती, इससे पहले ही अपने भारी-भरकम वजन को वह एक जमीन से लगी 'सैटी' पर रख चुके थे । शाश्वती ने सोचा कि कि वह तो उतर आये अपनी बदतमीजी पर । शाश्वती ने किसी तरह धक्का देकर दहलीज से बाहर किया उस जानवरनुमा प्रोफेसर को । और कई दिन कॉलेज नहीं गयी । घृणा भाव से भर गयी थी वह । ऐसे 'अनकल्चर्ड' व्यक्ति के प्रति आसक्ति तो दूर— वह तो उन्हें दोबारा कभी देखने को तैयार नहीं थी ।

शाश्वती की कॉलेज से अनुपस्थिति का फायदा उठाया, इस तथाकथित बुद्धिवादी प्रोफेसर ने । आज शाश्वती जब कॉलेज गयी तो भौचक रह गयी वह । कैसी-कैसी बेहूदा बातें

फैला दीं थीं प्रोफेसर साहब ने ।

शाश्वती पर सब आरोप मढ़ते हुए उसने अपनी पत्नी तक को घसीट लिया, इस घिनौने खेल में । शाश्वती की ओर से पोस्ट कार्ड पहुंचा तारकेश्वरी देवी के पास— 'तुम खुश नहीं रखती हो इसलिए तुम्हारा पति मेरे पास आता है ।' या खुदा— मर्द का यह दिमाग— एक ही धुरी पर चूकता है । स्त्री के लिए प्रेम माधुर्य है— पुरुष के लिए क्षणिक खुशी का



'मेकेनिकल एक्ट' ।' शाश्वती का दिमाग घूम रहा था— इस गंदी सोच से ।

सांझ को शाश्वती ने अपने भाई से बात की तो ज्ञात हुआ कि वह पुरुष अपनी अनपढ़ बीवी से पीछा छुड़वाना चाहते थे, इसलिए उन्होंने तरह-तरह की बातें फैला दी थीं, शाश्वती के साथ संबंध के बारे में । वह तारकेश्वरी देवी से तीन पोस्ट कार्ड भी ले आये थे ।

शाश्वती ने देखा— उन खतों को— तो हैरान रह गयी । भागी भीतर 'बेडरूम' पार करते हुए 'स्टडी' की ओर । जल्दी से वह फाइल खोली जो उसे चंद्रप्रभाजी ने दी थी— उसमें उनके कला संबंधी लेख थे, जिन पर शाश्वती ने 'एडिटिंग' करते हुए लंबी टिप्पणियां लिखी थी । पोस्टकार्ड पर शाश्वती का नहीं, चंद्रप्रभा का लेख था । पीछे से आये भाई ने इस सत्य को जोर से कहा ।

शाश्वती की मुट्ठियां और कसने लगीं । भयावह-सा वह इनसान, कैसे सोच सकता है कि शाश्वती उसके पीछे भाग सकती है ?

शाश्वती ने अभाव का जीवन जिया है किंतु वह संस्कारी जीव है । अपने मूल्यों को तिलांजलि नहीं दे सकती वह । बौद्धिक स्तर पर मैत्री करना एक बात है, इस तरह कुत्सित दलदल में फंसना दूसरी बात । शाश्वती इस गंदगी को बर्दाश्त नहीं कर सकती है । प्रेम और वासना के अंतर की लीक मिटाकर वह जीना नहीं चाहती । और प्रबुद्ध और गणमान्य नागरिकों में स्थान प्राप्त मां के नाम पर कोई आंच नहीं आनी चाहिए उसके कारण— यह उसका दृढ़ निश्चय है । इस बार चुप नहीं रहेगी वह । पुरुष के घिनौने व्यवहार के सामने । वह नदी की स्वच्छ धारा है, दलदलनुमा द्वीप नहीं उगने देगी अपने चहुं ओर ।

शाश्वती— समय की प्रतीक्षा कर रही थी । मां को सुलाकर वह वकील के पास जाएगी अपने भाई के साथ । मानहानि का मुकदमा दायर करेगी, प्रो. सुधाकर और उनकी कहानीकार मित्र चंद्रप्रभा के विरुद्ध...

— पोस्ट बॉक्स—१६०
देहरादून

वैद्य की सलाह

—कविराज वेदव्रत शर्मा

संदीप कुमार, कलानौर

प्रश्न : उम्र २७ साल है । लगभग तीन वर्षों से सुबह के समय छींकें आती हैं । गले में खराश रहती है । नाक बंद हो जाती है । कभी-कभी नाक से पानी बहता है । अंगरेजी दवा से कुछ समय तक लाभ मिलता है ।

उत्तर : व्योशादि वटी एक-एक सुबह-शाम गरम पानी से लें । साथ ही लक्ष्मी विलास रस एक-एक वटी दोपहर-रात पानी से लें ।

के. जुनेजा, मेरठ

प्रश्न : पत्नी की उम्र ३२ वर्ष है । दो ऑपरेशन कराये, एक पथरी का दूसरा बच्चे होने का । अब आंखों के नीचे कालापन व गड्ढे बने हैं । कमजोरी बहुत है ।

उत्तर : चंद्रप्रभावटी एक-एक सुबह-रात दूध से लें । रोहितकारिष्ट दो चम्मच, द्राक्षारिष्ट दो चम्मच लेकर समभाग पानी मिलाकर भोजन के बाद दोनों समय लें ।

देवेश, चंपारन

प्रश्न : तेज धूप के कारण त्वचा भूरी और बदरंग हो जाती है । कई प्रकार की दवा व क्रीम का प्रयोग किया, इससे कोई विशेष लाभ नहीं हुआ ।

उत्तर : आरोग्यवर्धनी वटी एक-एक सुबह-शाम पानी से लें ।
सारिवाद्यासव दो-दो चम्मच भोजन के बाद लें ।

राधा बाई, तालुका बिसोली

प्रश्न : उम्र ५७ साल है । हाथ-पैर में जलन बहुत रहती है । खुजली भी होती है । ठंड के दिनों में हाथ-पैर ठंडे रहते हैं । पिछले बीस वर्षों से परेशान हूं ।

उत्तर : कैशोर गूगल एक-एक वटी सुबह-शाम पानी से लें ।
चंद्रप्रभावटी रात दूध से लें । साथ ही सारिवाद्यासव दो-दो चम्मच भोजन के बाद लें ।

चित्रा देवी, बोकारो

प्रश्न : उम्र ३१ साल है । चार साल से हृदय में धड़कन बढ़ जाती है । सभी तरह की जांच हो गयी है । धड़कन के समय नाड़ी की गति १०० से १२० रहती है । स्वास्थ्य गिर रहा है । कृपया कोई उपाय बतायें ।

उत्तर : नागार्जुनाभ्ररस दस ग्राम, प्रवालपिष्टी दस ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें । अर्जुनारिष्ट दो-दो चम्मच भोजन के बाद लें । ब्रह्मरसायन एक-एक चम्मच रात दूध से लें ।

डिगेश्वर महतो, पुरबडीह

प्रश्न : भाभी की उम्र ३१ साल है । सात-आठ महीने से थूक में रक्त आ रहा है । वैसे स्वास्थ्य

है । लेकिन परेशान बहुत है ।

उत्तर : सितोपलादि चूर्ण साठ ग्राम, मुक्ताशुक्तिपिष्टी दस ग्राम, स्फटिक भस्म दस ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें । उशीरासव दो-दो चम्मच भोजन के बाद लें ।

वासावलेह एक-एक चम्मच रात दूध से लें ।

शैलेन्द्र, फतहनगर

प्रश्न : पेट में हर समय जलन रहती है । अनेक इलाज कराये पर लाभ नहीं हुआ ।

उत्तर : अविपत्तिकर चूर्ण एक-एक चम्मच सुबह-दोपहर-रात पानी से लें ।

राजाराम वर्मा, गोला गोकर्णनाथ

प्रश्न : उम्र ७५ साल है । सन् १९९२ में पेशाब बंद की शिकायत हुई । अंग्रेजी दवा से लाभ हुआ । सन् १९९३ में ऑपरेशन कराया । डॉक्टर के अनुसार पुनः प्रोस्टेट बढ़ गयी है । कृपया लाभकारी दवा बतायें ।

उत्तर : गोक्षुरादि गुग्गल एक वटी और चंद्रप्रभावटी एक सुबह-शाम पानी से छह माह सेवन करें ।

समीर कुमार, बिरसिंहपुर पाली

प्रश्न : उम्र २२ साल है । कुछ समय से पेट बढ़ने लगा है । किसी भी प्रकार से सामान्य नहीं रहता । बहुत दुःखी हूं ।

उत्तर : आरोग्यवर्धनी वटी दो-दो पानी से लें । साथ ही कांकायन वटी दो-दो भोजन के बाद पानी से लें ।

मित्र दुबे, फूटेली

प्रश्न : उम्र १३ वर्ष है । टाइफायड से गंभीर रूप से बीमार हूं । मेरे बाल बुरी तरह गिर रहे हैं । दोनों पैरों व घुटनों में दर्द रहता है । कमजोरी बहुत है ।

उत्तर : सितोपलादि चूर्ण साठ ग्राम, मुक्ताशुक्ति भस्म दस ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें । अश्वगंधारिष्ट व द्राक्षारिष्ट एक-एक चम्मच भोजन के बाद लें ।

श्रीमती सीता, मनईपुर

प्रश्न : उम्र ३५ वर्ष है । श्वेत प्रदर बहुत था । डॉक्टर की सलाह पर ऑपरेशन से ओवरी निकाल दी गयी । अब मासिक बंद है । शरीर में दर्द— रीढ़ की हड्डी के नीचे बहुत भयंकर दर्द, लेटने पर उठना या करवट बदलना मुश्किल हो जाता है ।

उत्तर : त्रयोदशांगगुग्गल तीस ग्राम, महायोग गुग्गल पंद्रह ग्राम और असगंधचूर्ण साठ ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-रात दूध से लें । दशमूलारिष्ट दो चम्मच और अश्वगंधारिष्ट दो चम्मच भोजन के बाद लें ।

सुषमा देवी, अहमदाबाद

प्रश्न : पैंतीस वर्षीया विवाहिता हूं । हाथ, पैर और अंगुली के नाखूनों में इंफैक्शन है । वर्षा ऋतु में प्रभाव बढ़ जाता है । ऐलोपैथी और होम्योपैथी चिकित्सा से स्थायी लाभ नहीं हुआ । अब स्वास्थ्य भी गिर रहा है ।

उत्तर : रसमाणिक्य दस ग्राम, गिलोयसत्व दस ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें । आरोग्यवर्धनी वटी एक-एक भोजन के

बाद पानी से लें ।

सुधीर कुमार मिश्र, बावुटोला

प्रश्न : उम्र ३२ वर्ष है । उच्च रक्तचाप से पीड़ित हूं । अंग्रेजी दवा लेता रहता हूं । कृपया कोई सस्ती दवा लिखें ।

उत्तर : प्रवाल पिष्टी दस ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम आधा-आधा आंवले के मुरब्बे से लें । सर्पगंधा वटी एक-एक दोपहर और रात पानी से लें ।

आशा देवी, बांका

प्रश्न : तीस वर्षीया विवाहिता हूं । सर्दी बराबर बनी रहती है । सिर दर्द व कानों में कम सुनायी देता है । ऐलोपैथी से लाभ नहीं हुआ ।

उत्तर : संजीवनी वटी दो-दो सुबह-शाम गरम पानी से लें । सारिवादि एक और लक्ष्मीविलासरस एक वटी दोपहर-रात पानी से लें ।

सुभाषचंद्र श्रीवास्तव, डामा सेमर

प्रश्न : उम्र १८ वर्ष है । गले में टांसिल काफी बढ़ गया है । कमर में भयंकर दर्द रहता है । अच्छी दवा लिखें । इलाज कराकर निराश हो गया हूं ।

उत्तर : तालीशादि चूर्ण साठ ग्राम, चंद्रामृत रस दस ग्राम, टंकण भस्म दस ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें । कांचनार गुग्गुल एक-एक वटी दोपहर-रात गरम पानी से लें ।

आर.एस. मेहरा, दोसा

प्रश्न : उम्र चालीस साल है । अचानक दो माह से शारीरिक क्षमता कम हो गयी । काम भावना प्रायः समाप्त हो गयी है । पत्नी व्यंग कसती है । रात में नींद नहीं आती । बहुत परेशान हूं ।

उत्तर : चंद्रप्रभावटी एक, बृहत्पूर्ण चंद्ररस एक वटी और मकरध्वज वटी एक लेकर सुबह-रात दूध से लें । अश्वगंधारिष्ट दो-दो चम्मच भोजन के बाद लें ।

पीर पराई जाणे रे

सन् १९३९ के गरमी के दिन थे । सेवाग्राम (वर्धा) में तो गरमी बहुत पड़ती है । दोपहर का समय था । बापू खाना खाने के बाद नियमानुसार लेटे-लेटे चिट्ठियां पढ़ रहे थे । बापू पास अमतुस्सलाम बहन बापू को पंखे से हवा कर रही थी । बापू को नींद आ गयी । बापू गहरी नींद में सो गये । १५-२० मिनट के बाद उस महिला को भी नींद आने लगी, तो जरा झुककर तकिये के सहारे बैठे-बैठे वह हवा करने लगी । थोड़ी देर में उसको भी नींद आ गयी । हाथ से पंखा छूट गया और बापू पर जा गिरा । पंखा गिरने से बापू की नींद खुल गयी । देखा कि उस महिला को भी नींद आ गयी है । बापू ने गिरा हुआ पंखा अपने हाथ में ले लिया और उस महिला को हवा करने लगे । ठंडी हवा लगने से उस बहन को नींद ज्यादा आ गयी । थोड़ी देर के बाद जब उसकी नींद खुली तो वह देखती क्या है कि बापू पंखा कर रहे हैं ।

● लाल बहादुर श्रीवास्तव

कहानी



मनौती

• कुंदा जोगलेकर

सुबह का धुंधलका-जैसे छटा, दूरी पर रमिया का घर दिखायी देने लगा । बाहर फैले रेत मिट्टी के ढ़ेर पर कुछ बच्चों के साथ उसकी बच्ची अपनी फ्राक झाड़ती, नाक पोंछती इधर-उधर घूम रही थी । अस्पताल जाने का वक्त हो गया था । रमिया के हिस्से का काम करने पर देर होना स्वाभाविक भी था । सब कुछ निपटाकर अभी रमिया के हाल पूछने भी जाना था । रमिया पिछले ढाई-तीन साल से मेरे यहां काम करती थी । सुबह की झाड़ू से लेकर रात बिस्तर लगाने तक का सारा काम बिना किसी चिकचिक-झिकझिक के करती थी । कभी डांटने-डपटने की आवश्यकता भी नहीं पड़ती थी मुझे । मम्मी को तो उसके बिना बिलकुल भी अच्छा नहीं लगता था, इसलिए उसके प्रति मेरा भी प्रेम होना स्वाभाविक था ।

सोचते-सोचते अचानक ध्यान बंटा, तो सामने देखा, रमिया सिर धोकर, गीले बाल पीठ पर फैलाये एक हाथ में पूजा की सामग्री की थाली कंधों पर टिकाये पास की पगडंडी से गुजर रही थी... ''राम-राम''... उसने एक हाथ से नीचे से ही मेरा अभिवादन किया...

''कहां जा रही हो देवीजी... ?''

''महादेवजी की पूजा करने बाई साहब... आज सोमवार है ना, इसलिए... ज्यादा दूर थोड़ेऽऽ..ई... यहीं पासवाले पेड़ के नीचे मंदिर में... अभी लौटते में आऊंगी...''

''ऊंह.. बेवकूफ कहीं की'' यूं ही मुंह में बुदबुदाकर मैंने अपनी भड़ास निकालने की कोशिश की । मेरी आवाज सुनकर मम्मी भी बाहर गैलरी में आ गयी थी...

''क्या बात है नीमा ? किससे बात कर रही हो... कौन बेवकूफ है... ?''

''अरे वो अपनी रमिया है, मम्मी... अभी एक दिन पहले एक सौ चार डिग्री बुखार था न... और आज देखो... आज ये पार्वतीजी सिर धोकर, गीले बाल फैलाकर महादेवजी की पूजा करने जा रही है...''

''अरे हां नीमा, आज सोमवार है ना, ठीक ही तो है... पूजा करने जा रही होगी, जाने दो ना उसे... अपने महादेव को प्रसन्न करने की कोशिश करती है बेचारी...'' मम्मी उसका पक्ष लेती बोली थी...

''मरेगी और क्या''... मैं फिर झल्लायी थी । मम्मी मेरी खीझ पर चुप ही रह गयी थी और मैं भुनभुनाती हुई रमिया के लौटने का इंतजार करती रही ।

बारह वर्ष की छोटी-सी उम्र में रमिया की शादी हो गयी थी । पढ़ी-लिखी तो थी नहीं ।



पति तांगा चलाता था । छोटे-से व्यवसाय और हलके माहौल में भी वह शराब, जुआ तथा कई छोटी-बड़ी गंदी आदतों का शिकार था । अक्सर वह शराब पीकर रमिया को मारता-पीटता और कई यातनाएं देता । चारों ओर से निराश रमिया फिर भी इस माहौल में पलती रही... अपने आप को ढालने की असफल कोशिश करती रही ।

आखिर एक बार ऐसे ही कई यातनाएं सहकर पति की सताई रमिया जिंदगी की भीख मांगने मेरे पास आयी । अपनी कोख में पल-रहे शिशु के जीवन की दुहाई देते हुए उसने शरण मांगी । मैं चूंकि एक डॉक्टर थी, उसकी बेबसी पर बेइंतहा तरस आया था मुझे... तभी से रमिया मेरे पास रहकर काम करती थी । बड़े प्रेम से मैंने उसका इलाज किया था ।

बच्ची होने के एक वर्ष बाद एक बार वह पति के पास लौटी भी थी, लेकिन प्रताड़ित होकर फिर वापस लौट आयी । मैंने फिर कभी न लौटने के लिए उसको बहुत समझाया । दिखाने को तो वह मेरी बात मान गयी पर पति को पाने के उसके सारे धार्मिक इलाज पूर्ववत् चलते रहे ।

"...क्यों रे रमिया... ये बता... क्या महादेवजी की पूजा करना इतना जरूरी था, कि तुमने अपनी बीमारी का भी खयाल नहीं किया...? अरे, अपना न सही, कम से कम उस बच्ची का तो खयाल कर लिया करो... समझ में नहीं आता... बुखार में उठकर, सिर धोकर शंकरजी की पूजा करने जाने की क्या तुक है ?"

"बच्ची की खातिर ही तो सब कर रही हूं... डाक्टरनी बाई... । स्यात शंकरजी की पूजा पाठ में कोई गलती हो गयी हो तो शंकर भगवान मुझे माफ करके मेरा घर फिर बसा देंगे... मेरा

आदमी लौट आएगा तो मेरी चिंता भी सारी दूर हो जाएगी... मुझे कुछ हो जाए तो इस बच्ची को कौन संभालेगा... ? ? ...'' कहती वह पल्लू से आंसू पोंछने लगी थी...

उसके आंसुओं पर मेरा दिल पसीज गया... ऐसा अक्सर ही होता था । फिर अपने लहजे को नरम बनाकर मैंने उसे समझाया भी...

''देख रमिया...तेरी पूजा पाठ की गलती तो मैं नहीं जानती... लेकिन गलती तो तुम इस तरह अपने आपको कष्ट देकर भी कर रही हो । आदमी का क्या भरोसा... ? ... जिस आदमी ने तुम्हारे साथ हमेशा ही इतना बुरा सलूक किया है, यहां तक कि तुम्हारे उन दिनों में जब तुम्हें सहारे की कितनी जरूरत थी... तुम्हें अकेला छोड़ दिया, वो तुम्हारे बाद तुम्हारी बच्ची के साथ अच्छा सलूक़ करेगा... ? ...उसे सम्हालेगा... ? ...ये कैसे सोच लेती हो तुम... ?''

''वो खुद खराब नाहीं हैं... दिल के भी इतने बुरे नाहीं हैं बाई साहब... पर वो चुड़ैल है ना .. बो कुतिया नाहीं होती ना डाक्टरनी बाई... तो सच मानो मेरा घर फिर बस जाता...

''कौन चुड़ैल... ? अब चौंकने की बारी थी मेरी...''

''बोऽई... और कौन... ?'' ...कहकर उसने बुरा-सा मुंह बनाया... ''जिसको बियाह के लाये हैं...''

''क्या... ?... ?...'' मैं हत्प्रभ रह गयी थी । इसका मतलब उसका शराबी पति दूसरी शादी भी कर चुका था । धन्य रे विश्वास... इजी चेयर के हत्थे पर रखा हाथ अनजाने ही माथे से जा लगा... तो पति दूसरी शादी कर चुका है...

और रमिया शंकर भगवान से आस लगाये बैठी थी कि कि वो उसका पति लौटाएंगे... । तभी उसकी तेज आवाज से चौंककर मैंने उसकी ओर सिर उठाया...

''बो चुड़ैल जा दिन भी मरेगी... असली घी के दिये जलाऊंगी... संकरजी के आगे... देख लेना डाक्टरनी बाई... संकर भगवान एक दिन जरूर मेरी सुनेंगे...'' सौतिया डाह में जलती...उबलती रमिया बोले ही चली जा रही थी... ''आप देखेंगी ना सब... तो आप भी करने लगोगी संकरजी की पूजा...हां...''

''ओ...फ्..फ...छि :...बस कर रमिया...बस कर...बहुत हो गया अब... मुझे नहीं सुननी तेरी फिजूल बकवास... मैं लगभग भडभडाकर आक्रोश से उठ खड़ी हो गयी...''

''मेरी बात मान ले... देख, अभी तेरी उम्र कुछ भी ज्यादा नहीं है... तू काम भी बहुत मन लगाकर करती है, सीखने-पढ़ने में भी तेरी रुचि है, मैं पढ़ाऊंगी तुझे... और फिर अपने अस्पताल में नौकरी भी लगा दूंगी... तेरा और तेरी इस बच्ची का खर्च आराम से चल जाएगा । मेरी तरह आराम से कमा और शांति, चैन की जिंदगी बसर कर रमिया... आखिर क्यों फालतू में तू उस शराबी-जुआरी पति के लौटने की उम्मीदें किये बैठी है... ?''

फिर कुछ दिन यूं ही गुजर गये । ...एक दिन अचानक ही आकर उसने बहुत खुशी-खुशी चहकते हुए बताया कि उसका पति उसे लेने घर आ गया था । बहुत सारे कपड़े—बच्ची के लिए खिलौने वगैरह भी लाया था । बहुत ही खुश थी रमिया उस दिन... उसकी मन की मुराद जो पूरी हो गयी थी...

"आखिर...को संकर भगवान ने मेरी सुन ही ली ना बाई साहब... अब तो सराब और जुए की लत भी छोड़ दई है... ले जाने की कह रहे थे... पर मैं तो अब वहां नहीं जाने की... यही ठीक है ना डाक्टरनी बाई... आप लोग की छतर-छाया में हम यहीं रहेंगे...", "सब संकर भगवान की किरपा है" ...कहकर उसने बड़े मनोभाव से आंख बंदकर हाथ जोड़ दिये... खुशी के आंसुओं की हलकी-सी परत को हौले-से पोंछा था रमिया ने...

"लेकिन उसकी दूसरी बीवी का क्या हुआ रमिया... ? भौचक्की-सी हो मैंने पूछा...मुझे पता नहीं क्यों उसकी दूसरी बीवी की चिंता हो आयी थी...

"वो तो भाग गयी... पांच किलास पढ़ी थी, तो अपने आप को सहर की कलट्टर समझती थी ...मेरा आदमी बता रहा था वो तो काम-धाम भी नाहीं करती थी और है ना, लड़ाई-झगड़ा भी बहुत करती थी... सो बस्... मेरे आदमी ने मार-मार के भगा दिया उसे... मेरा आदमी बहुत जोर की मारता है... कसम... से डाक्टरनी बाई... सो भाग गयी... कहते हुए उसने चुटकी बजायी... उसके चेहरे पर निश्चितता के भाव उभरे, फिर एकदम बुरा-सा मुंह बनाकर थूक दिया... —जैसे कुछ कड़वा निगल लिया हो...

इसके बाद एक-डेढ़ महीने तक सब ठीक-ठाक चलता रहा । एक-दो बार छुटपुट नोंकझोंक भी हुई । पर एक बार लगातार दो-तीन दिन जब रमिया काम पर नहीं आयी तो उसे देखने मुझे फिर उसके घर जाना पड़ा । अंदर जाकर देखा तो भौचक्की रह गयी थी मैं ...रमिया की हालत बहुत बुरी थी । [illegible] किसी झाड़ी की चिंपियों का पड़ा [illegible] हाथ-पांवों पर लंबे-लंबे लाल-नीले [illegible] थे, ...आंखें सूजी हुई थीं और तात [illegible] कराह रही थी । मुझे आया देखकर [illegible] बच्चे [illegible] के पायताने [illegible] खड़ी-खड़ी मेरी ओर देखने लगी—

रमिया का ये हाल देखकर मैं घबरा गयी थी । हाथ लगाकर देखा वह बुरी तरह तप रही थी...

मैंने फौरन थर्मामीटर लगा दिया । हाथों का स्पर्श पाकर रमिया ने अपनी उनींदी आंखो को खोला... और पथरायी नजर से मुझे देखने की, पहचानने की, कोशिश करने लगी...

[illegible]
चुनौती दे दी—
"[illegible]..."

"क्या बात है रमिया... क्या हो गया ये सब... ?"

"कु...कुछ नहीं डाक्टरनी बाई... बस थोड़ा बुखार है..."

"बुखार कितना है वो तो मैं देख लूंगी... लेकिन ये चोटों के निशान... ? ... क्या है ये सब... ?"

और फिर... उसने जो कुछ बताया... सुनकर कलेजा कांप उठा था मेरा... शराब पीकर उसके पति ने फिर उसे खूब मारा-पीटा था। घर में सारी जमा पूंजी जो पिछले दो-तीन सालों में जोड़ी थी रमिया ने... लेकर भाग गया। शराब के लिये और पैसे न देने का फल था ये... बताते-बताते बुखार में तपती रमिया फूट-फूटकर रो पड़ी। उसे रोते देख बच्ची भी उससे लिपटकर रोने लगी...

"देख रमिया... अब कभी मत सोचना उस कमीन आदमी के बारे में, मेरे पास ही रहना...नौकरी करना... चैन से रहना... खूब इज्जत मिलेगी तुमको... पैसा भी मिलेगा... जब अपने पास कोई कमी नहीं होती, सब लोग पूछने लगते हैं...

"छि... जिस आदमी में जरा-सी भी दया नहीं, ममता नहीं... वो भी कोई इनसान है... ? जानवर है... बिलकुल जानवर... शैतान कहीं का..."

वह कुछ नहीं बोली ... इत्मीनान की झलक -सी चेहरे पर देखकर अचानक कुछ याद आया-सा कह दिया मैंने—

"अब की बार आये ना फौरन बतलाना मुझे... मैं उसे पुलिस के हवाले कर दूंगी... फिर देखना रमिया... ऐसी मार पड़ेगी... सारा नशा काफूर हो जाएगा... पुलिस की मार पड़ेगी ना तब पता चल जाएगा बच्चू को...कैसे मारा ज... है... सारी अक्ल ठिकाने लग जाएगी तीन दि... में ही...

"नाही...नाही डाक्टरनी बाई... हमारी क... है... ऐसा नाही करना" ... कहती वह घबरायी-सी एकदम टेबल से उतरकर उठ ख... हो गयी...

..."उनका का दोस है... सारा दोस तो हमारी किसमत का है... हमारी ही किसमत खोटी... है। हमने-जैसी बोली थी संकरजी ... मनौती पूरी नाही की... जासे,... जासे तो ये दि... दिखाये उनने" ..."आप तो अपने अस्पताल ... नौकरी लगा देना ... अपनी बच्ची को पढ़ा-लिखाकर आपकी-जैसी बहुत बड़ी डाक... बनाऊंगी। संकर भगवान हमें माफ कर देंगे, और किरपा करेंगे तो बच्ची की किसमत से ह... वो फिर वापस आ जाएंगे... और मेरा घर फि... ब..स...

और... आंखों से टपके आंसू बड़े झटके ... पोंछकर बिना मुझे बोलने का अवसर दिये फटाफट सीढ़ियां उतरकर चली गयी...

और एक हाथ में रोल की हुई पट्टी और ए... हाथ में कैंची लिये मेरे हाथ, उसकी जाती हुई छवि के लिए अनजाने ही जुड़ गये... दूसरे ही क्षण शंकर भगवान की मूर्ति को याद कर मैंने मन ही मन उन्हें चुनौती दे दी—

"एक न एक दिन तुम्हें जरूर हारना पड़ेगा... शंकर भगवान,... तुम रमिया से नहीं जीत पाओगे..."

— एच-३०, पी-ब्लाक थाटीपु...
कॉलोनी थाटीपुर, ग्वालियर

जब भारत का संविधान बन रहा था, अपन गुल्ली डंडा खेल रहे थे। जब वह स्कूल कॉलेज में पढ़ाया गया तब तक हमें कक्षा गोल करने की लत लग चुकी थी। इम्तहान के संविधान बाबत सवालों का जवाब हमने पासवाले की नकल, अपनी अकल और सामान्य ज्ञान से दिया। लिहाजा हमारी संविधान की जानकारी आधी-अधूरी है। अपनी समझ में इतना आया है। हम भारत के किसी नगर में रहते हैं इसीलिए भारतीय नागरिक कहलाते हैं। गांव में रहनेवालों को इसी वजह से गंवार कहा जाता है। वैसे अपने हिसाब से उनका संबोधन गांवरिक होना चाहिए। यह ज्यादा तर्कसंगत है। यों गधे को घोड़ा और घोड़े को खच्चर कहने से फर्क ही क्या पड़ता है। यह सिर्फ हमारे ज्ञानी-विज्ञानियों का कमाल है कि वह एक गधे को दूसरे गधे-सा नहीं मानते हैं। गधे-गधे में अंतर बताते हैं और इन्सान-इन्सान में।

कल हमने सड़क पर आदतन पीक की तो उससे एक सज्जन का पाजामा रंग गया। वह खामखां लाल-पीले होने लगे। उन्होंने हमें सलाह दी—"एक नागरिक के नाते आपका कर्त्तव्य है कि आप इस शहर को साफ रखें।" हमने गौर से बकवास के इस स्रोत का निरीक्षण किया। रूखे बाल, मोटा चश्मा और पिलपिली काया के मालिक हमारे प्रति अपना कर्त्तव्य निभाकर अपने पाजामे के छींटे गिन रहे थे। ऐसे नसूड़िये किस्म के पैदाइशी सलाहकार अकसर बुद्धिजीवी ही होते हैं।

वह बमुश्किल अपने पाजामे के दागों से ऊपर उठे और बोले—"इस तरह पान खाकर पीक करना किसी शरीफ आदमी को शोभा नहीं देता है।" हम अपनी शराफत को दी गयी चुनौती कैसे बर्दाश्त करते? हमने पान के

हास्य-व्यंग्य

अपने अपने अधिकार

• गोपाल चतुर्वेदी



रसमय आकर्षण को वक्त के पहले निगला और उन्हें डांट पिलायी—"यह सार्वजनिक सड़क है। किसी के बाप की जायदाद नहीं है। जब सड़क को शिकायत नहीं है तो आप शिकायत करनेवाले कौन होते हैं ? सड़क की सफाई म्युनिसिपैलिटी का काम है। आप चाहें तो झाड़ू-पोंछा लेकर उसकी मदद कर सकते हैं।" उनकी बोलती बंद कर हमने अपना रास्ता नापा।

एक बार कूड़ा-दान के पात्र ने हमसे शिकायत की हिमाकत की—"आप मेरे दरवाजे के सामने वह ढेर देख रहे हैं", हमने उनकी इंगित दिशा में नजर डाली। वहां पड़ा कचरा टीले की शक्ल अख्तियार कर रहा था। मौहल्ले के कुत्ते वहां एकत्र थे। जैसे वह टीला टीला न होकर कुत्तों का अखाड़ा हो। कुछ हट्टे-कट्टे कुत्ते पंजों से खुदाई कर व्यायाम कर रहे थे और कुछ विश्राम।

"एक कूड़े का टीला पहाड़ बनने का प्रयास कर रहा है। अगर आपने हीला हवाला नहीं किया तो शायद बन भी जाए", हमने उन्हें प्रोत्साहित किया।

हमारा शहर कोई हिल स्टेशन तो है नहीं। अगर हम ऐसे ही पहाड उगाते रहे, तो क्या पता हमें भी पर्वतों के बीच रहने का सौभाग्य मिले। ढेर से सैलानी आयें और हम उन्हें ठगें।

पर हमारे नीचेवाले कुछ नाराज लगे, "यह सब आपकी घरवाली की करतूत है। मेरी पत्नी ने भी उनसे यह हरकत बंद करने की कई बार मिन्नत की पर उन्होंने एक न सुनी। उल्टे उन्होंने नसीहत दी कि वह हरित भारत आंदोलन चला रही हैं। वह इसी तरह खाद देती रहेंगी, पेड़-पौधे लगाना हमारा काम है।"

हमने पारिवारिक कूड़ा अभियान का खुलासा कर उनके आक्रोश पर पानी डालने की कोशिश की—"हरा-भरा भारत तो सबके हित में है। हम फ्री की खाद सप्लाई कर रहे हैं। आप पौधे लगाकर उन्हें सींचें। इससे बेहतर काम का बंटवारा हो ही नहीं सकता है।"

हमारी नरमी से उनकी गरमी कुछ और बढ़ी, "देखिए, आप सीधी तरह यह वाहियात हरकतें बंद करवा दें वरना..."।

"वरना क्या", हमने भी बांहें चढ़ायीं।

हिंदुस्तान मुफ्त के तमाशबीनों का मुल्क है। हो-हल्ला सुनकर आस-पास के लोग जमा हो गये। हमारे अधिकार और नीचेवाले के कर्त्तव्य का फैसला होते-होते रह गया। ऐसे हमारे अधिकार का प्रतीक कूड़े का ढेर दिनों दिन तरक्की पर है। इससे यह भी जग जाहिर है कि यह सिर्फ नीचेवाले हैं जो भारत में हरित क्रांति लाने में अड़ंगा लगा रहे हैं।

अकसर यह भी देखने में आया है कि भारतीय अपना कर्त्तव्य निभाने से कतराते हैं। पुलिस को ही लीजिए। यह एक ऐसा अनूठा जनसेवी महकमा है जो रात-दिन एक कर जनता की सेवा करता है। चोरी-जेबकतरी से लेकर हत्या तक में वसूली का उसका एकाधिकार है। इसी पारस्परिक लेन-देन से देश की कानून-व्यवस्था बरकरार रहती है। कुछ मूर्ख यह नहीं समझते हैं। वह अपने कर्त्तव्य से मुकरते हैं। इससे मारपीट, डकैती, अपहरण—जैसे हादसों में वृद्धि होती है। पता चला कि पुलिसवाले ने वरदी उतारी। चोला बदला और पिटाई कर गया। कहीं रात को

अपना हिस्सा वसूला और कहीं दिन दिहाड़े।

हमें पुलसियों से हमदर्दी है। लोग उनका हक मारें तो वह क्यों हाथ पर हाथ धरे बैठे रहें। हमारे पुलसिये शरीफ हैं। वह कोई चोर उचक्के तो हैं नहीं कि लोगों से उलझने से कतरायें। हमने तो देखा है। एक बार अधिकार का हिस्सा मिला नहीं कि छोटे से छोटे खोमचेवाले से भी पुलसिये प्यार से पेश आते हैं। अपने तो आजतक पल्ले नहीं पड़ा है। क्यों नहीं लोग बिना चूं चपड़ किये खुशी-खुशी पुलसिये को उसका हक सौंप देते हैं। अपनी रामराज्य की एक ही कल्पना है।

> **हमारे रामराज्य के आने में एक ही दिक्कत है। हिंदुस्तानियों को मोल-तोल की घटिया बीमारी है। पुलिस का अधिकार कोई बहस-मुबाहिसे का विषय नहीं है। वसूली कुरसी का अधिकार है। इंसाफ का तकाजा है। समय की दरकार है। अपना भारतीय भाई थानेवाले से ऐसे गिड़गिड़ाता है—जैसे सब्जी-भाजी की दुकान पर आलू-प्याज की कीमत में रियायत मांगे।**

कहीं कोई वारदात हुई तो करनेवाला और सहनेवाला दोनों हाथ जोड़कर सिपाहीजी से गुजारिश करें कि "सरकार। आपने मामले का आंखों देखा हाल सुना। इसकी नजाकत को देखकर आप ही फरमायें कि इसमें आप का कितना हक बनता है।" जितना उन्होंने बताया, उन्हें सौंप दिया। मामला रफा-दफा हुआ। कोर्ट-कचहरी के चक्कर से छुट्टी मिली। अगली वारदात का मौका नसीब हुआ। अपनों से पुलसिये तक रियायती दर कबूल कर लेते हैं।

हमारे रामराज्य के आने में एक ही दिक्कत है। हिंदुस्तानियों को मोल-तोल की घटिया बीमारी है। पुलिस का अधिकार कोई बहस-मुबाहिसे का विषय नहीं है। वसूली कुरसी का अधिकार है। इंसाफ का तकाजा है। समय की दरकार है। अपना भारतीय भाई थानेवाले से ऐसे गिड़गिड़ाता है—जैसे सब्जी-भाजी की दुकान पर आलू-प्याज की कीमत में रियायत मांगे। थाना थाना है। कोई परचून पंसारी की दुकान तो है नहीं। थाने में घुसते ही हुकूमत और सत्ता की सड़ांध आती है। जाने क्यों फिर भी हिंदुस्तानी भाई को गलतफहमी है कि आती ही नहीं है।

अगर थानेवाला इस मगजपच्ची से तंग आकर किसी को [illegible] लगा दे या उल्टा टांग दे, नहीं तो हाथ-पांव तोड़ दे तो इसमें गलत ही क्या है। यह सब उसके अधिकार के दायरे में है। इस सब के बावजूद उफ न करना बेगुनाहों का कर्तव्य है। किसी पुलसिये के लिए मार-पीट उतनी ही स्वाभाविक है जितनी किसी सर्जन के लिए रोगी के शरीर की कांट-छांट। अपने-अपने अधिकार की बात है।

पुलिस या सर्जन दोनों के ऑपरेशन के दौरान मरीज या बेगुनाह स्वर्ग भी सिधार सकता है। अपनी-अपनी किस्मत है। हिंदुस्तान वाकई एक अजीब देश है। इस भाग्यवादी मुल्क में लोग ऐसे हादसों पर हो-हल्ला मचाते हैं। कमजोर को वसूली के हक में टालमटोल करने का कोई हक नहीं है। चुपचाप अपना हिस्सा चुकाना उसका कर्तव्य है। कौन उसे बताए कि ऊपरवाले से शिकायत करेगा तो खुद ही ऊपर जाएगा।

विद्वानों की मान्यता है कि कमजोरों के सिर्फ कर्त्तव्य होने चाहिए। वह तो इस मुल्क के जनतांत्रिक स्वामियों की कृपा है कि उन्होंने ढेर सारे अधिकार भी कमजोरों को बख्श दिये। अब आम आदमी के पास नागरिक अधिकारों की ऐसी इफरात है कि उसे समझ ही नहीं आता है कि वह उनका क्या करें। उन्हें ओढ़ें कि बिछायें। खायें कि पहनें। मसलन हर नागरिक को आजीविका का मौलिक अधिकार है। स्कूल कॉलेज का नौसिखिया इस संवैधानिक अधिकार के बारे में पढ़ता है और उसकी बांछें खिल जाती हैं। इधर साहबजादे ने बी. ए., एम. ए. किया और उधर साहबजादी ने। बस फिर क्या है। रोजगार दफ्तर से नौकरी पाएंगे और मंदिर या मजिस्ट्रेट के पास जाकर शादी रचाएंगे। ऐन मौके पर जरा-सी मुश्किल पेश आती है। आजीविका का अधिकार तो है पर वह एक सपना है। कल्पना है। उसे साकार करने के लिए नौकरी नहीं है। रोजी का हक देनेवालों का काम आसान था। नौकरी देनेवालों का काम कठिन है। कहीं पद आरक्षित हैं, कहीं भेंट चढ़ाने के बिना वर्जित हैं। यही दिक्कत शादी की है। मां-बाप बिना दहेज लिये कैसे पुत्र को विदा करें। दहेज लेना मां-बाप का मौलिक अधिकार है और दहेज देना लड़कीवालों का पुनीत कर्त्तव्य।

जाहिर है कि अधिकारों के भी वर्ग हैं। बड़े अधिकारवाले के सामने छोटा नतमस्तक हो जाता है। किसी भी सामान्य पुलसिये से भारत का आदमी थर-थर कांपता है। वही पुलिसवाला किसी भी भूतपूर्व अपराधी और वर्तमान सांसद के चरणों में बिछा नजर आता है। दूर क्यों जाएं ? अपने चुने हुए सांसद का ही उदाहरण लीजिए। जनता ने उन्हें अपने प्रतिनिधित्व का अधिकार दिया नहीं कि वह ईद के चांद हुए नहीं। पहले वह वोटर तलाशते, मुसकी छांटते, हाथ जोड़ते आते थे। अब बारी वोटर की है। वह पूजा, बाथरूम, मीटिंग और राजधानी में ऐसे गुम हैं कि वोटर क्या अपने क्षेत्र से ही गायब हैं।

उनके बड़े अधिकार हैं। काम भी बड़े हैं। कहीं छोटे अधिकारवाले को रौब जमाने के लिए थप्पड़, कभी मुसाफिरों को प्रभावित करने के लिए ट्रेन को रोकना-चलाना, कहीं पुरानी स्मृतियां ताजी करने के लिए नियम-कानून को ताख पर रख जेल में आना-जाना—जैसे ढेरों काम हैं उनके पास। अपनी राय में इच्छानुसार रेल रोकना-चलाना एक सराहनीय कदम है। भारतीय रेल जनता की सवारी है। जनता याने हम सांसद इंतजार में खड़े हैं और गाड़ी है कि सीटी बजाती हुई नजरों के सामने से गुजर गयी। कैसी गुस्ताखी है यह। उसका हाल्ट यहां हो या न हो। अपना हाल्ट तो यहीं है। हमें प्रतीक्षारत छोड़कर जाने की जुर्रत कैसे की



ट्रेन ने । यह जनता का अपमान है । संसद की 'इंसल्ट' है । मनुवादी व्यवस्था का नमूना है ।

हम वाकई अपने सांसद को नमन करते हैं । इसने जनता को उसके एक भूले हुए हक की याद दिला दी । अभी तक पैसेंजर ट्रेन का इस्तेमाल सार्वजनिक गुस्से की अभिव्यक्ति, बेटिकट सफर और दूध, भैंस, साइकिल आदि ढोने के लिए होता है । अब यही हाल फास्ट, सुपर फास्ट का भी होगा । कैसी नाइंसाफी है कि रेल में अब तक भेदभाव का जमाना है । कोई गाड़ी तेज चलती है, कोई धीमे । कोई हर स्टेशन पर रुकती है, कोई कहीं नहीं । क्या चेतन, क्या जड़, हम इस ब्राह्मणवाद को सब जगह खतम कर ही दम लेंगे । हम जाति-विहीन समाज की स्थापना के लिए कटिबद्ध हैं । भारतीय रेल हमारे लिए एक प्रयोगशाला है । उसमें हम रेलों की समान बिरादरी बनाएंगे । धीमी रफ्तार की ट्रेन का तेज चलना मुश्किल है । पर तेज चालवाली गाड़ी को तो हम स्टेशन और सिगनल-सिगनल रोक-रोककर पहली के बराबर कर सकते हैं ।

कभी-कभी हमें देखकर दुःख होता है कि पत्रकारों के निर्बाध कीचड़ उछालने के अधिकार पर भी लोग इधर अंगुली उठाने लगे हैं । प्रजातंत्र को पुख्ता करने के लिए जरूरी है कि पत्रकारों को छुट्टा छोड़ दिया जाए । क्या पता ! जब वह जी भरकर कीचड़ उछाल लें तो उसमें एकाध कमल भी नजर आ जाए । हम सबका कर्तव्य है कि हम हक अदा करने में पत्रकारों की मदद करें । उन्हें सूचना, सुरा और वक्त-बेवक्त भेंट आदि देते रहें ।

कुछ बड़े लोग—जैसे मंत्री, मुख्यमंत्री आदि अपना कर्तव्य बखूबी निभाते हैं और पत्रकारों को जमीन का प्लाट, बना बनाया मकान आदि सरकारी तौर पर 'गिफ्ट' करते रहते हैं । इस तरह का पिंडदान उसके अतीत और वर्तमान के 'भूतों' को शांत रखता है । उन्हें निजी यादों के कब्रिस्तान से अखबार की सुर्खी तक नहीं जाने देता है । यह कर्त्तव्य और अधिकारों के समन्वय का एक आदर्श उदाहरण है । पत्रकार अपने अधिकार पर लगाम लगाते हैं । नेता दान-दक्षिणा का अपना कर्तव्य निभाते हैं । प्रजातंत्र का कारोबार इसी आपसी सहयोग से बिना रोक-टोक आराम से चलता है ।

ऐसी समझदारी और हक और फर्ज के प्रति मुलायम नजरिया हमें जीवन के हर क्षेत्र में विकसित करना है । इससे जनता को मुगालता बना रहता है । पत्रकार अपनी पतलून में (याने कर्तव्य प्रदत्त घर में) और नेता अपनी इमेज (अर्थात दिखाने के हाथी दांत में) के बीच सही सलामत रहते हैं । अपनी तो एक ही तमन्ना है । हमारे नीचेवाले को प्रभु सद्बुद्धि दे । उसे जल्दी समझ आ जाए कि अपना कूड़ा दूसरों पर फेंकना हमारा अधिकार है और इसे हंसी-खुशी बर्दाश्त करना उसका कर्त्तव्य ।

—डी-११/१९८, विनय मार्ग,
चाणक्यपुरी, नयी दिल्ली-२१

भीतर के कमरे का शोर सुन मीना दौड़कर कमरे में पहुंची तो देखा ज्योति अपने खिलौने उठा-उठाकर बालकनी से नीचे सड़क पर फेंक रही है और छोटा भाई तरुण जमीन पर औंधे मुंह पड़ा रो रहा है। एक नजर तरुण को देख मीना ने चिल्लाकर ज्योति को रोकने की कोशिश की और न मानने पर आगे बढ़ मीना ने ज्योति का हाथ थाम उसे रोकने का एक असफल प्रयास किया किंतु उसके जुनून के आगे मीना की पकड़ ढीली पड़ गयी। आनन-फानन में ज्योति सीढ़ियां उतर नीचे सडक की ओर भागी। एक क्षण के लिए मीना कुछ न समझ सकी, इस बीच तरुण का रुदन और तेज हो गया। मीना ने उसे गोद में उठा बालकनी से नीचे देखा तो पाया ज्योति टूटी हुई ईंट से खिलौने पीट रही थी। "मैं किसी को नहीं छोड़ूंगी, सबको मार डालूंगी इसको भी, इसको भी"— कहते-कहते वह एक खिलौना उठाती और ईंट से चूर कर डालती। धीरे-धीरे ज्योति की उत्तेजना बढ़ रही थी, मीना समझ गयी कि जल्दी ही ज्योति को नहीं रोका गया तो वह पागलों की तरह अपने टूटे खिलौने और पत्थर इधर-उधर फेंकना शुरू कर देगी। तरुण

कहानी

ज्योति

● सुनयना नारद



ने भी एक नजर नीचे ज्योति पर डाली और मीना की गोद से छिटक गया । भीतर कमरे में पहुंची तो तरुण अलमारी के पीछे स्वयं को छिपाने का प्रयास कर रहा था । तरुण को अनदेखा कर मीना लपकती हुई ज्योति के पास नीचे पहुंची और हाथ पकड़कर उसे घर की ओर खींचने का प्रयास किया किंतु ज्योति मीना को एक ओर ठेलकर पुनः ईंट से खिलौने तोड़ने लगी । हताश हो मीना एकबारगी मुंह ढांपकर रोने को हुई तो दूसरे ही क्षण स्वयं को संभाल लिया । शोर सुन आस-पास के कुछ लोग वहां जमा हो गये । पड़ौस के सिंह साहब भी वहां खड़े थे, मीना ने उन्हीं से मनुहार की— "भाईसाहब आप ही मेरी मदद कीजिए न, अब तक तो अच्छी भली थी किंतु अभी कमरे में बैठे-बैठे अचानक जाने क्या हुआ..." सिंह साहब ने पलटकर कुछ कहना चाहा किंतु भीड़ देखकर चुप रहे और ज्योति को समझाते हुए हाथ पकड़ मीना के पीछे ऊपर घर तक पहुंचा आये । मीना ने सिंह साहब की मदद से ज्योति को नींद की दवा खिलायी और कमरे को बाहर से बंद कर दिया । तत्पश्चात दूसरे कमरे में झांककर देखा तो तरुण तकिए में मुंह छिपाकर रो रहा था । मीना को देखते ही वह और जोर से रोने लगा । अब तक डर से उसका चेहरा पीला पड़ चुका था. मीना उससे क्या कहती, वह तो स्वयं अपनी रुलाई रोक नहीं पा रही थी । अतः तरुण को अपनी ओर खींच स्वयं भी रो पड़ी । "क्यों लिये थे तूने दीदी के खिलौने ? देख, कितना गुस्सा किया उसने । तुझे कितनी बार मना किया है । दीदी बीमार है, उसे तंग मत किया कर, फिर ?" मीना का कथन पूरा होते ही तरुण की सिसकियां बंध गयीं । थोड़ी देर उसी प्रकार रोते-रोते तरुण सो गया । उसे पलंग पर लिटा मीना ने ज्योति के कमरे में झांका तो ज्योति बेसुध पड़ी थी । मीना ने राहत की सांस ली और सोफे पर जा बैठी । कुछ देर उसी तरह बैठे रहने के बाद किसी तरह रवि को फोन मिलाया किंतु रवि दफ़्तर में नहीं था । रिसेप्शनिस्ट से आते ही रवि से घर पर फोन करवाने के लिए कहकर मीना ने फोन रखा और पुनः ज्योति के कमरे में झांकने के बाद तरुण के साथ पलकें मूंदकर लेट गयी । पिछले आधे घंटे में मीना ने एकबारगी स्वयं को अत्यधिक असहाय और



विवश अनुभव किया । कितनी बार वह रवि से कह चुकी है कि ज्योति अब बड़ी हो चुकी है और इस मानसिक बीमारी में वह उसे संभाल नहीं पाती । किंतु रवि ने तो उसे मानो ज्योति और घर के बीच कैद कर छोड़ा है । कितने प्रयासों के बाद भी वह अपनी समस्या रवि को समझा नहीं पाती । जबकि रवि ने इसी के प्रयासे दो वर्ष पूर्व ज्योति का दाखिला पास के एक अच्छे अंग्रेजी स्कूल में करवा दिया । किंतु कितनी ही बार 'प्रिंसिपल' ज्योति का 'स्कूल' बदलने का आग्रह कर चुके थे— "ज्योति अपने साथ की सहेलियों से बड़ी तो दिखती ही है, फिर उसकी बोलने [illegible]

हरकतें देख साथ की सभी लड़कियां उससे डरती भी हैं। मगर रवि के आगे कोई कुछ नहीं कहता। क्योंकि यह सब तो मीना नाम की नर्स की जिम्मेदारी है न! हां, आज यही तो रह गया है वह— एक 'गवर्नेस', एक 'नर्स', या फिर एक 'केयरटेकर'। छह वर्ष पूर्व रवि के प्रेम में अभिभूत हो जब मीना ने ज्योति की जिम्मेदारी संभाली, उस वक्त ज्योति मात्र तेरह बरस की बच्ची थी। रवि से पहली भेंट भैया के क्लिनिक पर ही हुई थी। भैया कई बार रवि का जिक्र कर चुके थे। दो-तीन भेंट के पश्चात् ही मीना ने रवि से विवाह का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया था हालांकि यह रवि का दूसरा विवाह था। अतः घर में सभी ने इस विवाह का विरोध किया। उम्र में भी रवि मुझसे बड़े हैं। पापा ने तो नाराजगी में एक वर्ष तक बात ही नहीं की। किंतु मीना रवि के साथ रहने का निर्णय ले चुकी थी। विवाह के पश्चात रवि ने मीना को हरसंभव प्रसन्न रखने का प्रयास भी किया। कभी कोई कमी नहीं आने दी किंतु ज्योति के मामले में वह हर बार चुप्पी साध जाते हैं। बचपन से मानसिक रूप से अपरिपक्व ज्योति के जन्मते ही ज्योति की मां नीति 'पैरालिसिस' के अटैक के कारण चल बसी थी। बिन मां की 'पागल ज्योति' को तेरह वर्ष तक रवि ने अकेले ही पाला था। प्रयास कर थोड़ा-बहुत पढ़ाया भी। किंतु अभी तक वह केवल अक्षर ही जोड़ पाती थी। हां, सामान्य बच्चों के बीच उठने-बैठने से उसके तौर-तरीके और बोलचाल में अब पहले से काफी अंतर आ गया था, फिर भी वह पूरी तरह सामान्य अभी भी नहीं है और अब तो मीना स्वयं को ज्योति के समक्ष शिथिल अनुभव करने लगी है। भैया बराबर ज्योति का 'चेकअप' कर हिदायत दे जाते। उनकी रिपोर्ट के अनुसार ज्योति की बीमारी अब पहले से ठीक है और इसका संपूर्ण श्रेय वह मीना को दे, रवि के सम्मुख स्वयं को गौरवान्वित भी अनुभव करते। किंतु आज ज्योति की उन्नीस वर्षीय देह; वह चाहकर भी संभाल नहीं पाती।

रवि शाम को घर लौटा तो मीना ने सारी घटना एक ही सांस में कह सुनायी और साथ ही अपना निर्णय भी सुना दिया कि इस बार छुट्टियों से पहले ही वह ज्योति को किसी 'एकल प्रवास' अथवा 'हास्टल' में भिजवा दे। अन्यथा वह स्वयं यहां रह नहीं सकेगी। ज्योति की वजह से वह अपना और अपने घर को तमाशा नहीं बनने देगी। ज्योति का मस्तिष्क चाहे विकसित न हुआ हो किंतु उसका शरीर... कहते-कहते मीना रो पड़ी, किंतु रवि पर कोई असर न हुआ, आज फिर उसने भैया की रिपोर्ट का हवाला दे दिया कि ज्योति पहले से ठीक है; अब यदि उसका वातावरण बदला गया तो वह पुनः अपनी बीमारी की पूर्वावस्था में पहुंच जाएगी और इतने वर्षों से उसके मानसिक रोग को समाप्त करने के लिए किये गये सभी प्रयास व्यर्थ हो जाएंगे। मीना की विवशता वह आज भी समझ नहीं पाया और मीना रवि के तर्कों के सम्मुख एक बार फिर मौन हो गयी। फिर भी मीना के बार-बार आग्रह करने पर अगले ही दिन भैया को घर बुला ज्योति के लिए सलाह का आश्वासन दे, रवि कुंठा और क्रोध से उपजी खीझ को अपने अंतर्मन में ही छिपाये मीना को एक बार फिर 'डाइनिंग टेबल' पर एकाकी छोड़, अपने शयनकक्ष में चला गया। सब सो चुके

थे। अकेली मीना ही कुरसी पर उसी तरह बैठे रहने के बाद कब उठी और तरुण की बगल में जाकर सो गयी, उसे खुद नहीं पता था।

एक दिन प्रतिदिन की भांति ज्योति विद्यालय गयी। ज्योति की बीमारी देख उसे कुछ दिन के लिए तरुण की कक्षा में ही बिठा दिया गया था। गणित का पीरियड शुरू होते ही अध्यापिका कक्षा में आयी और छात्रों के लिए 'श्याम पटल' पर कुछ सवाल लिख दिये। सहसा 'गुपचुप-सी हलचल' ने अध्यापिका को विद्यार्थियों की तरफ पलटने के लिए विवश कर दिया। खोजने पर अध्यापिका को दूसरी पंक्ति के कोने पर बैठी रुचि कुछ परेशान दिखायी दी। वह अपने से तीन 'बेंच' आगे बैठे तरुण से कुछ आग्रह कर रही थी। अध्यापिका ने रुचि से कारण पूछा तो उसने बताया कि ज्योति उसकी कापी उठाकर ले गयी थी और इस तरह वह तरुण से वही कापी ज्योति से लेने का आग्रह कर रही थी और तरुण बार-बार यही उत्तर दे रहा था कि वह अपनी दीदी से कुछ नहीं कहेगा। अध्यापिका से अनुमति ले रुचि स्वय ज्योति की 'सीट' पर गयी और अपनी कापी उठा लायी। कुछ ही देर में रुचि की सिसकियों की आवाज धीमे-धीमे कक्षा में गूंजने लगी तो अध्यापिका ने रुचि को खड़ाकर उससे रोने का कारण जानना चाहा तो वह और जोर से रोने लगी और उसी प्रकार रोते-रोते बोली— 'मैडम ! ज्योति ने मेरी सारी कापी ब्लेड से काट डाली है।' सहसा सभी छात्रों की दृष्टि ज्योति की ओर गयी और उसके बाद तो एक के बाद एक ज्योति की शिकायतों का क्रम ही आरंभ हो गया। बहुत मुश्किल से छात्र-छात्राओं को शांत कर अध्यापिका ने 'ज्योति' और 'रुचि' दोनों को 'क्लास' के बाद मिलने को कहा। गणित के 'पीरियड' के बाद 'लंच ब्रेक' था; सो घंटी बजते ही सभी छात्र-छात्राएं कक्षा से बाहर चले गये। मात्र ज्योति, रुचि और तरुण वहीं रह गये। तरुण पुनः भयभीत दिखायी दिया। ज्योति भी भय से स्वयं को अजीब तरीके से छिपाने का प्रयास कर रही थी। रुचि ने अपनी 'कापी' अध्यापिका के समक्ष रख दी। अब भी वह निरंतर रो रही थी। अध्यापिका ने कुछ कठोर स्वर में ज्योति को निकट आने के लिए कहा तो ज्योति ने स्वयं को डेस्क के नीचे छिपा लिया और कसकर 'मेज' को जकड़ लिया। किंतु अध्यापिका के कहने पर दो अन्य छात्राओं के साथ मिलकर ज्योति को उस मेज से छुड़ा अध्यापिका तक खींच लाया गया। इससे पहले कि अध्यापिका कुछ कहें, ज्योति सभी को एक ओर धकेल विद्युत गति से कमरे के बाहर

> ***रुचि और ज्योति की दोस्ती गहराती चली गयी। देखते-ही-देखते कुछ ही महीनों में ज्योति एक बार फिर स्वस्थ दिखायी देने लगी। मानो उसे रुचि— जैसी एक मित्र की प्रतीक्षा थी, अपने स्वस्थ जीवन की शुरुआत के लिए।***

निकली और पलक झपकते ही वहां से ओझल हो गयी। परिस्थिति का आनंद लेती कुछ और छात्राएं भी उसके पीछे दौड़ीं तो यह देखकर वे दंग रह गयीं कि ज्योति बिन मुंडेर की छत की सीढ़ियां चढ़ रही थी। जबकि मुख्याध्यापिका ने उस ओर जाने के लिए सख्ती से मना किया हुआ था। कुछ छात्राओं ने लपककर 'स्टाफ रूम' में 'कक्षा अध्यापिका' को सूचित किया और एक ने मुख्याध्यापिका को। बड़ी कक्षा की छात्राएं एक बड़ी दरी को थामकर छत के आगे खड़ी हो गयीं। देखते ही देखते सारे स्कूल में 'पागल ज्योति' के छत पर चढ़ने की खबर फैल गयी और सारा स्कूल छत के चारों ओर घेराबंदी कर जमा हो गया। कुछ छात्राएं ज्योति को ऊपर जाने से रोकने के लिए, "ज्योति रुक जा, ज्योति रुक जा" चिल्लाने लगीं। किन्तु—जैसे ही वे छात्राएं उसे रोकने को आगे बढ़तीं, तो ज्योति और आगे दौड़ स्वयं को कभी दीवार के पीछे तो कभी रेलिंग में, तो कभी अपने ही शरीर में स्वयं को छिपाने का प्रयास करने लगती। धीरे-धीरे छत के दरवाजे पर पहुंच ज्योति वहां रखे टूटे-फूटे फर्नीचर के बीच घुसने का प्रयास करने लगी। 'ज्योति मत जाओ— ज्योति मत जाओ', मैडम मारेंगी— जैसी आवाजें उसे और भयभीत कर रही थीं। अब तक गणित की अध्यापिका वहां पहुंच चुकी थी। पीछे रुचि और तरुण भी अवाक् देख रहे थे। एकाएक ज्योति सभी को अत्यधिक डरावनी लग रही थी। भय और क्रोध में दौड़ते उसका सारा शरीर पसीने में नहा चुका था। टूटे फर्नीचर की सारी धूल उसके कपड़ों और शरीर पर लिपटती जा रही थी। अध्यापिका के आते ही छात्राओं का शोर सहसा बंद हो गया और ज्योति अध्यापिका को भूखी शेरनी-सी घूर रही थी।

"नीचे आओ ज्योति। जमीन पर लेटना अच्छी बात नहीं है।"— किसी अध्यापिका ने भी ज्योति को नीचे बुलाने का प्रयास किया और अपनी बात मनवाने के लिए अध्यापिका ज्योति की ओर आगे बढ़ी, ज्योति ने पास ही टूटे डेस्क से लोहे की रॉड खींच ली और तानकर इधर-उधर पूरी ताकत से पटकने लगी। 'रॉड' की चोट से पुरानी अलमारियों के शीशे छिटककर दूर तक बिखर गये। सभी छात्र-छात्राएं शोर करते भयभीत से देख रहे थे कि तभी रामदीन चपरासी भी ज्योति को रोकने के लिए आगे बढ़ने को हुआ तो रामदीन को देख ज्योति ने तेजी से छत का दरवाजा खोला और बाहर पहुंच गयी। छात्राओं की 'हा... ? माई गॉड' की भयमिश्रित आवाज के साथ ही वातावरण में दहशत और गहरा गयी।

अध्यापिका भी क्षणभर कुछ न समझ सकी. सब एकटक छत की ओर देख रहे थे कि कहीं ज्योति नीचे न कूद पड़े। अध्यापिका ने एक बार फिर आहिस्ता से छत की ओर बढ़ना चाहा तो रुचि अध्यापिका के बाजू थाम पीछे खींचने लगी, "नहीं मैडम ! आप वहां न जाइए, नहीं तो ज्योति डर से नीचे कूद जाएगी।" तरुण भी अध्यापिका के पैर से लिपट गिड़गिड़ाने लगा। रोते-रोते ज्योति और तरुण की सिसकियां बंध चुकी थीं। ज्योति अभी भी इधर-उधर रॉड पटक सबको भयभीत कर अपने पास आने से रोके हुई थी। रह-रहकर वातावरण में 'हा...' की ध्वनि गूंज उठती। कुछ सोच क्षणभर में रुचि अध्यापिका को छोड़ पीछे अपनी कक्षा की

और लपकी और भागकर बस्ते से वही 'गणित की कापी' उठा लायी और बिना किसी से कुछ कहे 'कापी' ले छत पर पहुंच गयी । तरुण भी पीछे जा खड़ा हुआ । ज्योति ने एक बार रुचि को देखा, फिर रोने लगी... 'मैंने तुम्हारी कापी फाड़ दी न, मैं बहुत गंदी हूं, सबको तंग करती हूं, मम्मी को भी मारती हूं, अब टीचर को भी मारूंगी' — कहते-कहते वह पुनः रॉड पटकने लगी । रुचि ने साहस कर स्वयं को ज्योति के आगे आने का साहस किया और समझाने लगी, "नहीं ज्योति तुम तो बहुत अच्छी लड़की हो, इस डंडे को फेंक दो, नहीं तो यह तुम्हें लग जाएगा ।" रुचि ने ज्योति के आगे दौड़ते हुए समझाना चाहा । वह किसी प्रकार ज्योति से 'रॉड' छुड़ाना चाहती थी । रुचि की सहानुभूति पा, ज्योति एक क्षण को रुक गयी । किंतु पीछे अध्यापिका पर नजर पड़ते ही पुनः बिफर पड़ी तो रुचि ने कापी ज्योति के आगे बढ़ा दी ।

"देखो ज्योति हम दोनों की लड़ाई इस 'कापी' से ही शुरू हुई थी न, आओ इसे फाड़ देते हैं, फिर एक नयी कापी लेंगे और उसमें हम दोनों एक साथ सवाल लिखेंगे और हल करेंगे । मगर तुम यह 'डंडा' फेंक दो । नहीं तो हम सबको तुमसे डर लगेगा । हम सब दोस्ती कर लेंगे तो मैडम भी कुछ नहीं कहेंगी" —रुचि लगातार चीख-चीखकर ज्योति के आगे मनुहार करने लगी । रुचि की चीख-पुकार से 'ज्योति' कुछ क्षण के लिए रुक गयी । अत्यधिक थकान और कमजोरी से बोलते हुए ज्योति का चेहरा बार-बार बिगड़ जाता... 'हैं... ? मैडम नहीं मारेंगी मुझे ? तुम शिकायत नहीं करोगी ?" कहते-कहते ज्योति का चेहरा फिर विकृत हो



गया । 'नहीं दीदी, तुम्हें कोई कुछ नहीं कहेगा' — कहते-कहते तरुण फिर रो पड़ा । 'सारा झगड़ा तो इस कापी का था न —' कहते-कहते रुचि ने कापी के टुकड़े-टुकड़े कर दिये, "बस झगड़ा खतम !" सभी एकटक तीनों को देख रहे थे । "देखो न दीदी ! रुचि भी तुमसे दोस्ती करेगी, हम सब मिलके रहेंगे, कोई तुमसे लड़ाई नहीं करेगा ।" तरुण के यह कहते ही एकाएक चारों ओर कुछ देर के लिए चुप्पी छा गयी । चारों ओर शंकित दृष्टि दौड़ा ज्योति ने 'ख न न...' की आवाज के साथ रॉड छोड़ दी । रॉड हाथ से छूटते ही रुचि और तरुण ज्योति से लिपट गये और मनोचिकित्सीय कक्ष की ओर उसे खींच ले गये । तत्पश्चात रुचि और ज्योति की दोस्ती गहराती चली गयी ।

देखते-ही-देखते कुछ ही महीनों में ज्योति एक बार फिर स्वस्थ दिखायी देने लगी । मानो उसे रुचि— जैसी एक मित्र की प्रतीक्षा थी, अपने स्वस्थ जीवन की शुरुआत के लिए ।

— डी-७७७, पेशवा रोड,
गोल मार्केट,
नयी दिल्ली-११०००१

व्यंग्य

दामाद, ''अजी कमाल है ! आप मुझे दहेज में शतरंज क्यों दे रहे हैं ?''

ससुर, ''क्योंकि मैंने आपके पिताजी से वायदा किया था कि मैं अपनी बेटी की विदाई हाथी-घोड़ों के साथ करूंगा ।''

●

मेहमान, ''आपका नौकर लगातार सीटी बजाये जा रहा है उसे कुछ शिष्टाचार सिखाइए ।''

कंजूस, ''यह मेरा ही हुक्म है । इससे मैं एकदम निश्चिंत रहता हूं कि वह रसोई में कुछ खा नहीं रहा है ।''

● सावित्री चौधरी



एक महिला ने दुकानदार से कहा, ''कोई ऐसी साड़ी दिखाइए, जिसे देखकर मेरी पड़ौसन जल-भुन कर खाक हो जाए ।''

दुकानदार, ''माफ करना बहिनजी ऐसी साड़ी अभी-अभी आप की पड़ौसन ले गयी हैं ।''

●

मिल मालिक ने साक्षात्कार के दौरान एक युवक से पूछा, ''हमारी मिल का कपड़ा बड़े पैमाने पर आप बेच सकेंगे ? इतना सामर्थ्य है आप में ?''

''यह तो आप के अधिकार देने पर निर्भर है । आप अगर पूरे अधिकार दें तो कपड़ा तो क्या मैं आपकी मिल भी बेच कर दिखा सकता हूं ।''

●

कर्मचारी बड़े अधिकारी से, ''इतने कम वेतन में तो मैं जिंदगी भर शादी नहीं कर पाऊंगा ।''

''जानता हूं'', बड़े अधिकारी ने जवाब दिया और सुनो जिंदगी भर मेरा अहसान मानोगे ।''

● राधा रानी मिश्रा

●

अध्यापक (परीक्षा भवन में), ''क्यों बच्चो, लगता है, सवाल तुम्हें बहुत परेशान कर रहे हैं ?''



एक छात्र, ''सवाल तो बिलकुल साफ हैं मास्टर जी, परेशान तो इनके जवाब कर रहे हैं ।''

●

पति जब पूरी रात बाहर बिता कर सुबह घर लौटा तो पत्नी ने गुस्से में कहा, ''सुबह छह बजे क्यों लौटे ?''

पति ने बड़ी सादगी से उत्तर दिया, ''नाश्ते के लिए ।''

● शैलेन्द्र चतुर्वेदी

तरंग

उनकी
नाक कटी तो
उनके प्रपंच का
बुरा हाल था
वह उनकी
नाक का
बाल था ।

उनके ऊपर
सिर है
और नीचे
पैर बरकरार हैं
मगर
बिना सिर पैर के
उनके विचार हैं ।

● मिश्रीलाल जायसवाल

हमें वे किस कदर
उल्लू बना गये
आश्वासनों को पूरा करने का
आश्वासन थमा गये ।

● आशीष चितलांगिया





पति बेचारा
मायूस होकर बोला
मांग भरने की सजा
कुछ इस तरह पा रहा हूं
मांग पूरी करते करते ही
मैं मरा जा रहा हूं ।

सरकार की—
अल्पकालिक परिस्थितियों का
एक मात्र केंद्र
जिसके खाली होने पर
सारे सिद्धांत टूट जाते हैं ।

सांसद के ठहाके की—
एक ऐसी क्रिया
जो [illegible] के निकट को—
झुठलाती है
इसकी कोई प्रतिक्रिया
नहीं आती है ।

● डॉ. अजीत शर्मा 'प्रीत'

जासूसी लेखकों ने बहुतेरे ऐसे काल्पनिक स्थानों का वर्णन किया है, जिनका अस्तित्व यदि सचमुच वास्तविक होता तो कमाल हो जाता ! किंतु लोग बाग जासूसी लेखकों की कल्पनाओं से पैदा हुई रचनाओं को न सिर्फ पढ़ते हैं, बल्कि काफी समय के लिए उस संसार में अपने आपको प्लावित होते हुए भी देखते हैं ।

जहां कुछ भी सच नहीं है !

हमारे विशेष संवाददाता द्वारा

यह अलग बात है कि उन काल्पनिक स्थानों का यथार्थ से कोई रिश्ता नहीं होता । पर, जरा सोचिए, यदि कोई ऐसी ही जगह आपके निजी जीवन में रहने के लिए उपलब्ध हो जाए, तो आपको कैसा लगेगा ? निश्चित तौर पर आप रोमांचित हो उठेंगे । आइए ! हम आपको एक ऐसे शहर में ले चलते हैं जहां कुछ भी वास्तविक नहीं है । पांच सौ एकड़ में बसा है यह शहर... जहां यदि किसी ने आपकी घड़ी छीन ली, तो आश्चर्य नहीं । जहां आप चलते-चलते किसी हादसे के शिकार हो गये तो आपको कोई बचाने नहीं आएगा जबकि आपको हर जगह मिलेंगे झुंड-के-झुंड लोग... पुलिस... समाज सेवी और न जाने क्या-क्या... आस-पास कहीं मंदिर की घंटी भी बज रही होगी, मसजिद से अजान की आवाज भी आ रही होगी ।फेरीवाले भी यत्र-तत्र घूम रहे होंगे । ताज्जुब नहीं कि कई चेहरे ऐसे भी मिलें आपसे, जिन्हें देखकर आपके मुंह से अचानक निकल पड़े, "अरे ! यह तो अमिताभ बच्चन है या आज की बहुचर्चित अभिनेत्री माधुरी दीक्षित है ।" लेकिन नहीं । संभव है ये चेहरे वो नहीं हों जो आप सोच रहे हैं । या हो भी सकते हैं । फिर तो आप नहीं कहेंगे न ! कि ऊपर जिस शहर या सिटी की बात की गयी है, वह कुछ और नहीं बल्कि मुंबई है ।

नहीं... नहीं..., मुंबई नहीं । बल्कि मुंबई में ही बसा एक और शहर, एक और सिटी जिसे लोग 'फिल्म सिटी' के नाम से जानते हैं ।

फिल्म सिटी की वास्तविकता

जी हां, इस फिल्म सिटी में कुछ भी वास्तविक नहीं है । लेकिन लगता सब कुछ वास्तविक-जैसा ही है । ५०० एकड़ में फैली इस सिटी में जहां कहीं भी आप जाएंगे, आपको मिलेंगे बड़े-बड़े स्टूडियो । कहीं किसी के खून करने का दृश्य फिल्माया जा रहा है, तो कहीं मंदिर में अचानक श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ते दिखेगी, परिसर में घूमते हुए आपको ऐसा

लगेगा — जैसे आप किसी दूसरी दुनिया में आ गये हैं। आपको लगेगा कि आपका अतीत लौट आया है। आप फिर अपने महाविद्यालय के दिनों में लौट आये हैं, या आपका बचपन ही आपके सामने उछालें मार-मारकर आपको चिढ़ा रहा है। स्पष्ट है, आपको यह सब इसलिए लगेगा, क्योंकि आप उन दृश्यों से गुजर रहे होंगे।

ऐसा भी नहीं है कि घूमते हुए आपको अपने सुखद अतीत की ही स्मृति हो आएगी। सच कहें तो यह निर्भर करता है कि आप फिल्म सिटी की किस पगडंडी से गुजर रहे हैं।

प्रवेश वर्जित है जहां

लेकिन इन सारे दृश्यों और परिदृश्यों से आपका परिचय आखिर तभी तो हो सकेगा जब आपको फिल्म सिटी में अंदर जाने का अवसर मिल सकेगा। क्योंकि इस शहर में न तो बाहरी लोगों को आने दिया जाता है और न ही इसे पर्यटन विशेष के लिए स्थापित किया गया है। यदि कोई ऐसा व्यक्ति या पर्यटक जो बिना अनुमति दाखिल होने के बाद पकड़ लिया जाता है तो उसे जबरन बाहर निकाल दिया जाता है। यह तो उस व्यक्ति या पर्यटक के लिए गनीमत की घड़ी ही होती है कि उसे बाहर निकाल दिया जाता है, अन्यथा ऐसे व्यक्ति के लिए कारावास तक का प्रावधान है। सुरक्षा की दृष्टि से यह शहर काफी सावधानी बरतता है। स्वयं यहां के मुख्य सुरक्षा प्रबंधक का कहना है कि हम तो चाहते हैं कि पूरे के पूरे फिल्म सिटी को बाहर से सुरक्षा गार्डों से घिरवा लिया जाए।

"संभवतः सुरक्षा की इतनी सख्त व्यवस्था के कारण ही ज्यादा से ज्यादा फिल्म निर्माता अपनी फिल्मों का निर्माण यहां करना चाहते हैं।" यह मानना है महाराष्ट्र फिल्म, मंच और संस्कृति विकास निगम के अधिशासी प्रबंधक गोविंद स्वरूप का। इतने अच्छे स्थान को यदि पर्यटन केंद्र बना दिया जाए तो कितना अच्छा होगा? यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से ही मस्तिष्क



फिल्म सिटी का 'लव ट्री' : यहां लता मंगेशकर के गाये हुए तेरह से अधिक गानों का फिल्मांकन किया गया

में कौंधता है जिसका उत्तर देते हुए श्री स्वरूप कहते हैं, "प्रश्न, इसे पर्यटन केंद्र बनाने का नहीं है। प्रश्न है पर्यटन केंद्र बनाने के बाद इसकी सुरक्षा का। क्योंकि जब कोई पर्यटक पैसा खर्च कर प्रवेश प्राप्त करता है तो वह जाने-अनजाने चीजों को स्पर्श करने और परखने का अधिकार भी प्राप्त कर लेता है। दूसरी बात, चूंकि यह

किसी-न-किसी फिल्म की शूटिंग चलती रहती है। इसलिए यहां आनेवाला हर पर्यटक अपने मनपसंद सितारों से हाथ मिलाना चाहेगा या फिर ऑटोग्राफ लेना चाहेगा। ऐसे में काम में तो व्यवधान होगा ही, पूरे फिल्म सिटी का माहौल भी तब्दील होने लगेगा।"

बहरहाल, इस फिल्म सिटी का निर्माण सन् १९७७ में महाराष्ट्र सरकार द्वारा फिल्म उद्योग को सहायता देने के लिए किया गया था।

अंतरराष्ट्रीय निर्माताओं के लिए यह भी महत्त्वपूर्ण है कि भारत टीवी-वीडियो मनोरंजन व्यवसाय का सबसे बड़ा केंद्र बनता जा रहा है। और मुंबई मनोरंजन के लिहाज से भारत का केंद्र है। क्योंकि लगभग सभी सेटेलाइट चैनल मुंबई से ही संचालित होते हैं।

कहना न होगा कि महाराष्ट्र सरकार प्रारंभ से ही यह बात मानती रही है कि सही अर्थों में भारतीय सिनेमा का जन्म मुंबई में ही हुआ था। इसलिए सरकार यह सोचती थी कि यदि मुंबई फिल्म उद्योग को सरकारी मदद नहीं दी गयी तो या तो यह उद्योग स्वयं ही शिथिल हो जाएगा या फिर इस उद्योग से जुड़े लोग मुंबई के अतिरिक्त अन्य शहरों में पलायन करने लगेंगे और इन दोनों ही स्थितियों में महाराष्ट्र सरकार को उपेक्षित होना पड़ेगा, क्योंकि महाराष्ट्र में फिल्म उद्योग की बदौलत चार से पांच लाख लोगों को रोजगार उपलब्ध होता है।

फिल्म सिटी की आवश्यकता

फिर यदि किसी स्थान विशेष को सिर्फ इसलिए किराये पर लेना पड़ता है, क्योंकि वहां फिल्म के दृश्यों को शूट करना है, तो इससे बेहतर तो यही है कि कुछ ऐसी वैकल्पिक व्यवस्था ही क्यों न तैयार कर दी जाए कि किराये से राहत मिल सके। और यही कारण है कि महाराष्ट्र सरकार ने फिल्म सिटी का निर्माण कराते हुए 'इंडोर' 'आउटडोर' दोनों ही तरह के स्टूडियो की व्यवस्था की। साथ ही कुछ ऐसे सेट्स, उदाहरणस्वरूप, मंदिर, झील, झोंपड़ी, रेकॉर्डिंग और डबिंग थियेटर, संपादन आदि के लिए स्थायी व्यवस्था भी उपलब्ध करा दी ताकि फिल्म निर्माताओं को यत्र-तत्र भागना नहीं पड़े।

फिल्म सिटी में अपनी भव्यता के लिए खड़े मंदिर में किसी भी भगवान की मूर्ति स्थापित नहीं है। जब जिस भगवान पर दृश्य फिल्माया जाना होता है, उन्हीं की मूर्ति वहां लगा दी जाती है और आज इस मंदिर में इतनी शूटिंग हो चुकी है कि कुछ लोग तो इसे देखते ही बता देते हैं कि यह फिल्म सिटी का मंदिर है। इसलिए अब ज्यादातर निर्देशक ऐसा करते हैं कि मंदिर के बाहरी परिवेश की शूटिंग बाहर कहीं कर लेते हैं। और भीतर के दृश्यों को शूट करने के लिए फिल्म सिटीवाले मंदिर का सहारा ले लिया जाता है।

कुछ ऐसे ही फिल्म सिटी में उपलब्ध हेली पैड के सहारे हेलीकाप्टर पर फिल्माये जानेवाले दृश्यों को कैमरे में उतार लिया जाता है। जाहिर

है आज सन् १९७७ के मुकाबले फिल्म सिटी में सुविधाओं की प्रचुरता कहीं अधिक है । जब पहली बार इस सिटी की शुरुआत हुई थी तो इसमें सिर्फ दो इंडोर स्टूडियो थे । क्योंकि सिटी के पास जगह की कमी थी । किंतु जैसे-जैसे स्टूडियो की मांग बढ़ती गयी, इनकी संख्या भी बढ़ती गयी । आज फिल्म सिटी में चौदह इंडोर स्टूडियो हैं । बहुत दिन हुए जब फिल्म सिटी में तमाम सुविधाओं के होते हुए भी आधिकारिक घाटों की पूर्ति नहीं हो पाती थी । किंतु विगत दो-तीन वर्षों से यह सिटी मुनाफे में चल रही है । दरअसल, फिल्म सिटी प्रारंभ में भी घाटे का सौदा नहीं होता । पर, महाराष्ट्र सरकार ने मराठी फिल्मों के निर्माण को प्रोत्साहन देने के लिए फिल्म सिटी में उपलब्ध सुविधाओं के उपयोग में पचास प्रतिशत तक की छूट दे दी । इसके साथ ही अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में बननेवाली फिल्मों के लिए पचीस प्रतिशत तक की छूट दी गयी । परिणामस्वरूप फिल्म से जुड़े दो ही ऐसे क्षेत्र बॉलीवुड और टेलीविजन बचे जिन्हें फिल्म सिटी के उपयोग के लिए पूरा पैसा देना पड़ता था । स्पष्ट है इन्हीं कारणों से फिल्म सिटी में घाटे का पर्यावरण बना रहा ।

घाटे के इस आलम की वजह से अफवाहें तो यहां तक फैलीं कि सरकार फिल्म सिटी को निजी हाथों में सौंप देना चाहती है । पर श्री स्वरूप इस बात से सहमत नहीं हैं । उनका कहना है कि महाराष्ट्र सरकार इस सिटी को निसंदेह अतिरिक्त सुविधाओं से परिपूर्ण कर सकती है, किंतु बेच नहीं सकती । श्री स्वरूप बताते हैं कि आनेवाले समय में फिल्म सिटी में कई और वातानुकूलित स्टूडियो का निर्माण किया जाएगा और शूटिंग के लिए उन तमाम उपकरणों को भी उपलब्ध कराया जाएगा जिनके लिए एक फिल्म निर्माण को विदेशों की खाक छाननी पड़ती है ।

सुख-सुविधाओं से परिपूर्ण

वर्तमान समय में फिल्म सिटी में कई रिटायरिंग रूम (आराम कक्ष) हैं जहां शूटिंग के बाद अवकाश के क्षणों में आराम किया जा सकता है । कई पुराने स्टूडियो ऐसे हैं जिनमें आराम गृहों की व्यवस्था है । इन आराम गृहों



को हर आधुनिक सुख-सुविधा से परिपूर्ण बनाया गया है । हालांकि अभी तक देखने में यही आता है कि इस सिटी में ज्यादा-से-ज्यादा बॉलीवुड की फिल्में ही शूट होती हैं । लेकिन श्री स्वरूप का मानना है कि वह दिन अधिक दूर नहीं है जब हॉलीवुड के निर्माता भी यहां अपनी फिल्में बनाने के लिए आने लगेंगे । पर प्रश्न यह भी है कि हॉलीवुड के निर्माता यहां क्यों आएंगे, जबकि उनके पास भी इस फिल्म सिटी की तरह कई फिल्म सिटी हैं ?

इस प्रश्न के उत्तर में श्री स्वरूप कहते हैं, ''हमारी बात अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चल रही है ।

कोई कारण नहीं है कि लोग हमें नापसंद करें। हमारे लेबर अन्य जगहों की अपेक्षा सस्ते हैं। निर्माण लागत भी हमारे यहां अपेक्षाकृत कम ही आती है। फिर हमारे तकनीकी विशेषज्ञ भी ऐसे नहीं हैं जिन्हें किसी भी मामले में कम स्तरीय समझा जा सके।" दूसरी बात, अंतरराष्ट्रीय निर्माताओं के लिए यह भी महत्त्वपूर्ण है कि भारत धीरे-धीरे मनोरंजन व्यवसाय का सबसे बड़ा केंद्र बनता जा रहा है। और मुंबई मनोरंजन के लिहाज से भारत का केंद्र है।



क्योंकि लगभग सभी सेटेलाइट चैनल मुंबई से ही संचालित होते हैं।

ऐसा भी नहीं है कि फिल्म सिटी की बढ़ोत्तरी भी नहीं हो रही है। बल्कि यथार्थ तो यह है कि कई बार ऐसा होता है कि किसी निर्माता को आवश्यकतानुसार कई अलग ढंग के सेट्स का भी निर्माण करना पड़ता है। इसका परिणाम यह होता है कि फिल्म सिटी का भी निर्माण होता चला जाता है। उदाहरण के लिए नितीश भारद्वाज के 'गीता रहस्य' को ही लीजिए। इसके निर्माण के लिए नितीश को फिल्म सिटी के भीतर एक नयी सिटी ही बनवानी पड़ी। 'महाभारत' धारावाहिक में भी कई नये सेट्स तैयार किये गये जिन्हें बाद में जस का तस छोड़ दिया गया। कुछ ऐसे ही, अभिनेत्री से निर्मात्री बनी हेमामालिनी ने जब अपना धारावाहिक 'झांसी की रानी' का प्रारंभ किया तो फिल्म सिटी में उन्होंने बाकायदा कई युद्ध-शिविरों का निर्माण करवा डाला। इन सबके साथ 'चाणक्य', 'भारत एक खोज', 'शांति', 'कानून', 'स्वाभिमान', 'एक से बढ़कर एक' आदि धारावाहिकों के निर्माण के समय नये-नये सेट्स की आवश्यकता पड़ती गयी और ये सारे सेट्स आज फिल्म सिटी की अमानत बन गये हैं।

जहां तक फिल्म सिटी में सेट्स के उपयोग के लिए किराये की बात है तो यह बहुत अधिक नहीं है। इंडोर लोकेशन के उपयोग के लिए चार से पंद्रह हजार रुपये का प्रावधान रखा गया है जो लोकेशन (शूटिंग स्थान) की विविधता पर निर्भर करता है। अलबत्ता कठिनाई सेट्स या लोकेशन की उपलब्धता में अवश्य होती है क्योंकि इन स्थानों पर शूटिंग के लिए 'डेट' मिलने में कभी-कभी छह महीने से साल भर लग जाते हैं। यदि कोई श्री स्वरूप के कार्यालय का उपयोग शूटिंग के लिए करना चाहता है तो उसे प्रति शिफ्ट पांच हजार रुपये का भुगतान करना पड़ता है।

रही बात फिल्म सिटी के आउटडोर लोकेशन के उपयोग की तो यहां भी प्रति शिफ्ट चार से पंद्रह हजार रुपये तक का ही प्रावधान है। गरमी के महीनों को छोड़कर वैसे तो फिल्म सिटी में बीस से तीस फिल्मों की शूटिंग प्रतिदिन चलती रहती है, लेकिन गरमी में ज्यादातर

फिल्म सिटी का मंदिर : [illegible]



निर्माता फिल्म सिटी को वरीयता न देकर स्विट्जरलैंड चले जाते हैं, हालांकि ऐसा भी नहीं है कि गरमी के दिनों में फिल्म सिटी वीरान और निर्जन हो जाती हो, किंतु जाड़े की अपेक्षा गरमियों में चहल-पहल कुछ कम तो हो ही जाती है। ●

'एक फूल तीन कांटे' फिल्म की शूटिंग के दौरान रिहर्सल का दृश्य







शाम के समय का एक दृश्य ↑

← रिसोर्ट की अनोखी साज-सज्जा

जयसमंद की सुबह ↓



चित्र : अनवर

राजस्थान की सुरम्य अरावली श्रृंखलाओं की प्राकृतिक गोद में स्थित, झीलों की अनुपम नगरी उदयपुर से ५५ कि.मी. सुदूर दक्षिण पूर्व में शहर कोलाहल प्रदूषण से विलग, शांत एकांत स्थल, नैसर्गिक ताने-बाने से बुना परिवेश तथा एशिया की प्रथम मानव निर्मित जयसमंद नामक झील की अथाह जलराशि के मध्य तैरते टापुओं में से एक 'बाबा का मगरा' नामक टापू पर खड़ी सौंदर्यमयी श्वेतधवल चार मंजिली अट्टालिका आज जन-जन को आकृष्ट कर रही है।

रूठी रानी महल, महाराणा प्रताप समाधि स्थल, प्राचीन मेवाड़ की राजधानी चावण्ड के धरोहर, शिव मंदिर आदि अनेक धार्मिक, ऐतिहासिक दर्शनीय स्थल प्राचीन स्थापत्य कला का सौंदर्य बोध कराते हैं। प्राचीन राजाओं का प्रसिद्ध शिकारगाह और उससे जुड़े सघन अभयारण्य में विचरते पशु-पक्षी विविध वन्य जीव अपनी सजीवता का प्रमाण देते हैं।

लगभग ४० एकड़ क्षेत्र में फैले 'बाबा का मगरा' नामक टापू पर निर्मित पानी के बीच जिस फंतासी ने जन्म लिया है उसका नाम है

केसरिया बालम पधारो म्हारो देश

● कमलेश माथुर

मेवाड़ के तत्कालीन शासक महाराणा जयसिंह द्वारा निर्मित ३०० वर्ष प्राचीन, ८८ कि.मी. के दायरे में फैली प्रथम मानव निर्मित यह ऐतिहासिक झील १४ कि.मी. लंबी, ९ कि.मी. चौड़ी व १०० फीट गहरी है, वहीं एशिया की इस प्रथम ऐतिहासिक झील पर बंधी पाल ३३६ मी. (१२०२ फीट) लंबी तथा ३५ मी. (११६ फीट) ऊंची है तथा पाल पर बनी छतरियां, हाथी व आसपास १०वीं शताब्दी के जगत मंदिर ऋषभदेव जैन मंदिर, हवा महल,

'जयसमंद रिसोर्ट'। दो करोड़ रुपये की लागत से बने इस रिसोर्ट के निर्माण के प्रथम चरण में अत्याधुनिक सुख सुविधायुक्त फिलहाल १० कमरे परम्परागत एवं अत्याधुनिक स्थापत्य कला से सुसज्जित हैं जिनकी विशेषता यह है कि उनके हर दरवाजे खिड़की खोलते ही प्रकृति के सौंदर्य दर्शन का भरपूर आनंद लिया जा सकता है। भारतीय होटल व्यवसायी संघ की कार्यकारिणी के सदस्य एवं जयसमंद आयलैंड रिसोर्ट के प्रवर्तक प्रताप भदानी ने भावी विकास योजना

के बारे में बताया कि रिसोर्ट की जनवरी १९९३ में तैयार परिकल्पना के अनुरूप रिसोर्ट निर्माण का पहला चरण समाप्त हुआ है तथा २० कमरों का और निर्माण कार्य शुरू होने जा रहा है, जिसमें राजस्थानी संस्कृति, कला की परंपराओं से पहचान बनाने हेतु यहां एक सांस्कृतिक केंद्र की स्थापना की जाएगी, वहीं स्वीमिंगपूल, शिकारगाह, नौकायन, साहसिक पर्वतारोहण, ऊंट सवारी तथा अन्य मनोरंजन खेलों की संपूर्ण व्यवस्था की जा रही है। भंडारी के अनुसार रिसोर्ट की परिकल्पना को साकार करने में उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा,

श्रमिकों द्वारा करवाकर उनकी बेरोजगारी की समस्या भी मिटायी।

रिसोर्ट में उपलब्ध सभी प्रकार के स्वादिष्ट भोजन तैयार करने में निपुण एवं मेवाड़ी पोशाक में सजे-धजे यहां के खिदमतगार वेटर-हैल्पर अपनी सेवाएं समर्पित करने में तत्पर रहते हैं एवं भोजन कराते समय उतने ही मनुहार कर भोजन खिलाते हैं।

जयसमंद पाल से आइलैंड तक ३ कि.मी. की दूरी नौका द्वारा लगभग १५ मिनट में तय की जाती है। छोटी-सी यह जल यात्रा पर्यटक

रिसोर्ट में उपलब्ध सभी प्रकार के स्वादिष्ट भोजन तैयार करने में निपुण एवं मेवाड़ी पोशाक में सजे-धजे यहां के खिदमतगार वेटर-हैल्पर अपनी सेवाएं समर्पित करने में तत्पर रहते हैं एवं भोजन कराते समय उतना ही मनुहार कर भोजन खिलाते हैं।

बिजली के अभाव के अलावा श्रमिकों को नावों के जरिए वहां तक समीपस्थ गांव से लाना-ले-जाना पड़ता था, वहीं निर्माण में प्रयुक्त सभी सामग्री भी नाव से ही पहुंचायी गयी, यहां तक कि कैमल सफारी के लिए ऊंट को भी नाव द्वारा ही पहुंचाया गया। पर्यावरण को पूर्णतया सुरक्षित रखने के दृष्टिकोण से पहाड़ों को काटने-तोड़ने का काम मशीनों के बजाय मानव-श्रम द्वारा ही करवाया गया अन्यथा प्रदूषण के अलावा वन्य जीवों पर भी विपरीत प्रभाव पड़ने की शंका थी। अतएव नींव से लेकर छत तक सभी काम स्थानीय 'ओड'

के मानस पटल पर अविस्मरणीय अनूठी छाप छोड़ती है। रोमांचकारी इस जलयात्रा में जहां एक तरफ १०० फीट गहरी झील की निर्मल अथाह जलराशि की हरी मखमली चादर पर बेतरतीब बनती-सिमटती लहरें मन-मस्तिष्क को पल-पल रोमांचित करती हैं, वहीं झील के चारों ओर फैला प्राकृतिक परिदृश्य बार-बार मन को आहलादित करता है। रिसोर्ट के विशाल उद्यान की पहली सीढ़ी पर समाप्त होती है— नौका यात्रा, और नाव किनारे लगते ही विशाल उद्यान की मनमोहक संरचना मन को सुकून देती हैं वहीं बड़ौदा उद्यान विज्ञानी के सौजन्य से प्राप्त अनेक दुर्लभ पुष्पों की प्रजातियां मेहमान को



मेवाड़ के तत्कालीन शासक महाराणा जयसिंह द्वारा निर्मित ३०० वर्ष पुरानी, ८८ कि.मी. के दायरे में फैली प्रथम मानव निर्मित यह ऐतिहासिक झील १४ कि.मी. लम्बी, ८ कि.मी. चौड़ी व १०० फीट गहरी है. जहाँ सलिला की इस प्रथम ऐतिहासिक झील पर बंधी पाल [illegible] मी. (१२०० फीट) लंबी तथा ३५ मी. ([illegible] फीट) ऊंची है।

अपनी भीनी सुगंध से सराबोर करती हैं।

अल्का ग्रुप ऑव होटल्स एंड रिसोर्ट की ओर से विकसित चार मंजिल की इस श्वेत भव्य अट्टालिका के अंदर प्रवेश करते ही हर दिशा से आनेवाले मेहमान का ठेठ पारंपरिक मेवाड़ी शैली में स्वागत सत्कार शुरू हो जाता है और पर्यटकों को यहां आकर अनूठे स्थापत्य, कला साज-सज्जा और संस्कृति से साक्षात होता है।

पर्यटकों की वर्तमान पर्यटन संस्कृति शृंखला से जुड़ी नितांत अनूठी यह कड़ी, राजस्थानी संस्कृति के अछूते नियंत्रण "केसरिया बालम पधारो म्हारो देस" के अहसास को आत्मसात करती है, वहीं इस सुरम्य-स्थली में सम्मोहन के नये क्षितिजों का विस्तार मिलता है।

निश्चय ही पर्यटकों का आकर्षण केंद्र बना यह रिसोर्ट राजस्थान पर्यटन मानचित्र में अपना विशिष्ट स्थान बनाते हुए प्रदेश को आकर्षक पर्यटन संस्कृति को गौरवान्वित करेगा।

—जी, ११, जनपथ, श्याम नगर, जयपुर

जन्मशती वर्ष मौन क्यों?

रिश्ता नारियल बाजार और जयशंकर प्रसाद का

☐ यज्ञ प्रसाद तिवारी

काशी... काशी... काशी... । डिब्बे में बैठा हर कोई कह रहा है । अपना सामान समेटते हुए हमने जब बाहर देखा, तो सारनाथ एक्सप्रेस बनारस स्टेशन पर धीरे-धीरे विराम ले रही थी । स्टेशन के बाहर टेंपो, टैक्सी, रिक्शे, तांगों की चिल्लपों को चीरती कीर्तन-मंडली की तीव्र-ध्वनि भौतिक सुखों पर अध्यात्म की विजय की जयनाद-सी लहरा रही थी । सड़क... भीड़... चलते, बचते हर कोई भागा जा रहा है, किसी खास प्रयोजन के पीछे । अचानक हमें याद आते हैं 'कबीर' जिन्होंने इसी भाग-दौड़ पर कभी लिखा होगा— **'लोगों केरि अस्थाइया, मत कोई पैठो धाय । एकै खेत चरत हैं बाघ गधारा गाय ।'**

'लहरतारा' यहीं से थोड़ी दूर पर है जहां कबीर जनमे थे और पास ही 'कबीर-चौरा' में उनका वह बीजक-मंदिर है, जिसकी 'चेतन चौकी' पर बैठकर संतों को वे बीजक सुनाया करते थे । रिक्शा भागा जा रहा है । हमारी भावना की 'गंगा' पर विचारों के 'घाट' बनने लगे । याद आने लगे 'तथागत' जिन्होंने आज से ढाई हजार वर्ष पहले यहीं अपनी दिव्य आभा से सारनाथ का कोना-कोना जगमगा दिया था । याद आने लगे 'तुलसी' जिनके मानस में राम के चरित्र का प्रेरणा कमल सुगबुगाया था पहली बार यहीं । याद आने लगी भारतेंदु हरिश्चन्द्र की 'अन्धेर नगरी', हरिऔध की 'राधा', प्रसाद की 'चम्पा', 'ममता', 'मधुलिका', प्रेमचन्द की 'सुखदा', 'सोफिया', 'धनिया' तथा होरी, हल्कू, गोबर के गांव । रामचन्द्र शुक्ल के 'निबन्ध' हजारी प्रसाद द्विवेदी के बाणभट्ट आदि न जाने कितने सिलसिले बनने बिगड़ने लगे । संस्कृति, शिक्षा और साहित्य की गंगोत्री है भी तो यह काशी । इतिहास की रचना और सृष्टि का पुष्प है यह काशी पंडित मदन मोहन मालवीय की साकार कल्पना है यह काशी... । रोको.. रोको... अरे रिक्शा रोको, यहीं उतरना है, हमें । डॉक्टर राजेन्द्र नारायण शर्मा के भारतीय होम्योहॉल को देखते ही मैं बोल पड़ा । रिक्शे से उतर पड़ता हूं, जयशंकर 'प्रसाद' के सराय गोवर्धन में ।

आज से एक सौ वर्ष पहले माघ शुक्ला दशमी विक्रम संवत् १९४६ में काशी के सुंघनी

साहू घराने में जनमे कवि, नाटककार, कथाकार, प्रसाद ने जमाने की नब्ज को टटोलकर ही साहित्य को नयी दिशा और गति देने का सार्थक अभियान प्रारंभ किया था। हां, वह एक अभियान ही तो था न, जब चारों तरफ '**केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए, उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।**' का डंका पीटा जा रहा था और सुंघनी साहू का यह छोकरा इन सबसे अलग रास्ते चलने का नया पथ तलाश रहा था 'इंदु' की प्रस्तावना में उसका यह कहना — 'साहित्य का कोई लक्ष्य विशेष नहीं होता है और उसके लिए कोई विधि का निबंधन नहीं है क्योंकि साहित्य स्वतंत्र प्रकृति, सर्वतोगामी प्रतिभा के प्रकाशन का परिणाम है।' युग के मठाधीशों को रास कैसे आता ? 'मर्यादा' जब सड़ी-गली परंपरा मात्र का प्रतिनिधित्व करने लगती है, या करने की ओर मुड़ती दिखने लगती है तब स्वतंत्रता' का दीपक खुद-ब-खुद जल उठता है। यह समय का तकाजा ही था कि साहित्य के देवता पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी ने उसी युग में यदि मैथिलीशरण गुप्त को अभीष्ट अनुशासन के पालन का इशारा सिखाया, तो हिंदी के पतंजलि आचार्य केशव प्रसाद मिश्र ने अपने प्रिय प्रतिभा संपन्न सहचर जयशंकर 'प्रसाद' को लाक्षणिक शैली का मुहावरा तथा ध्वनि-विज्ञान के प्रभाव से परिनित होने का मार्ग सुझाया।

कामायनी के अंतिम छंद

रत्नशंकर प्रसाद से यह मेरी दूसरी मुलाकात हुई थी। पहली अप्रत्याशित अगस्त में हुई थी। दूसरी योजनाबद्ध तरीके से आज दिसंबर में। प्रसाद मंदिर के सामने का वह विशाल



मृत्युंजय जयशंकर प्रसाद

प्रांगण अतीत की तरह आंखें पसारे किसी 'तपस्वी के विराग के प्यार' सदृश्य देख रहा है, सब कुछ उसी अनुराग-दृष्टि से। मेरे मन के किसी कोने में छिपी लहर की ये पंक्तियां अज्ञात किरन-सी उतरने लगीं—

छिन्न पात्र ले कंपित कर में, मधु भिक्षा की रटन अधर में,

इस अनजाने निकट नगर में आ पहुंचा था एक अकिंचन

प्रांगण के एक कोने में महेश्वर के मानदंड-सा उसी तेवर में वह शिवालय खड़ा है, जिसके मंडप में बैठकर कवि ने 'कामायनी' के अनगिनत छंद रचे। अपने प्रिय आराधक की याद में डूबा आज भी 'शक्तिशाली हो विजयी बनो, विश्व में गूंज रहा जयगान' का संदेश दे रहा है वह। महाशंकर प्रसाद बताते हैं—

'इसके इन्हीं आगे के मध्य के दो खंभों के बीच बैठकर दादाजी ने 'कामायनी' के अंतिम छंद लिखे थे, ये साहित्य के गौरव और इतिहास-स्तंभ हैं।

श्री रत्नशंकर प्रसाद आ चुके हैं। हम उनसे

बात करने लगते हैं । बात की शुरुआत होती है 'प्रसाद की दृष्टि में धर्म और संस्कृति' के संदर्भ से । वे बताते हैं— 'देखिए समाज का आधार ही तो संस्कृति है और संस्कृति ही धर्म है । इसलिए इन सबको अन्योन्याश्रित मानते थे पिताजी । उनकी यही दृष्टि उपन्यासों में मिलेगी, नाटकों में मिलेगी और 'कामायनी' में मिलेगी ।

'उनकी किसी आदत का उल्लेख करेंगे आप ?' हमने सिलसिला जारी रखने की गरज से कहा— 'पिताजी ने कभी किसी व्यक्ति से अपने पथ पर चलने का आग्रह नहीं किया, क्योंकि उनका मानना था कि यदि हम किसी को अपने पथ पर लाना चाहेंगे तो उसे अपने पथ पर लाने के लिए पहले अपना चलना रोकना पड़ेगा । यात्रा लंबी है, और जीवन थोड़ा है उन्होंने कभी किसी से कोई अपेक्षा नहीं की । उनसे जो बनता था कर देते थे । संस्कृति की गरिमा और राष्ट्र के उत्कर्ष की चिंता उन्हें हमेशा रही । सामाजिक दृष्टि से भी वे पूर्णतः निरपेक्ष भाव रखते रहे । उनकी रचनाओं में धर्म और समाज की बदलती परिस्थितियों के प्रति यही निरपेक्षता परिव्यक्त हुई है । सब कुछ साक्षी भाव से देखते थे वे ।'

प्रसाद जी के पड़ोस में ही रहते रहे हैं डॉक्टर राजेंद्र नारायण शर्मा । वही भौगोलिक स्थिति आज भी है उनके निवास की । सौम्य, भव्य चेहरा । आंखों में दिव्य चमक । हम देख रहे हैं डाक्टर शर्मा की स्फूर्ति, अनुसंधान दृष्टि, कुछ कहने की ललक... । शर्माजी को प्रसाद जी के साहित्यिक उत्तराधिकारी के रूप में जाना-माना जाता है काशी में । 'काशी पंडित सभा' ने उन्हें अमृत पुत्र' की उपाधि से विभूषित किया तो दिल्ली विश्वविद्यालय के सनातन धर्म कॉलेज ने 'प्रसाद के मानस पुत्र' सम्मान से अलंकृत किया । अब तक शर्मा जी की नन्हीं कलिका-सी चुलबुली नातिन श्रग्धरा खास किस्म की बनारसी मिठाई लेकर आ जाती है । प्रफुल्लित, सुरभित वातावरण के मध्य बात शुरू होती है । शर्मा जी उस उज्जवल अतीत की गाथा कहने लगते हैं— 'हमारा परिचय कहीं-कहीं इसी रूप में कराया जाता है कि जिन लोगों ने प्रसाद जी को नहीं देखा है, उन्हें डॉक्टर साहब को देख लेना चाहिए । उनके व्यक्तित्व की ९० प्रतिशत अनुकृति विद्यमान है, इनमें । वस्तुतः यह गौरव तो मिला ही है कि हम प्रसादजी की अंतरंगता के हकदार बने रहे हमेशा । मृत्यु पूर्व तक उनका पूरा-पूरा विश्वास मिला रहा, हमें । हमें याद है जब उन्हें आलोक पथ पर जाने, उर्ध्वलोक में अपने अभियान की प्रतिपत्ति होने लगी तो उन्होंने इस वेदना को पेंसल से कागज के टुकड़े पर अभिव्यक्त कर दिया । इसे ही उनका अंतिम छंद मानना चाहिए ।

मेरे जीवन के ध्रुवतारा ।
मेरी करुणा छायी हो बन नभ का श्याम पसारा ।
चंचल ग्रह नापें सूना पथ मचले जलनिधि खारा ।
मेरी तरी तिरे पाकर तब मधुर ज्योति की धारा ।

मृत्यु के कुछ क्षण पहले उन्होंने अपनी पत्नी श्रीमती कमला देवी को बुलाकर भोजपुरी में कहा— 'तनी दो ठो बरफी लावा । चांदी की तस्तरी में ।' वे लेने अंदर चली गयीं । थोड़ी देर में जब बरफी लेकर आयीं तो उन्होंने कहा— 'इन्हैं खियाय द्या । अब ओका रख द्या । एके सर पे अपना अंचरा रखा । तनी सुना, एक

काम तोहरे जिम्मे हवो । अब से इसमें औ रत्नशंकर मा भेद न करलू ।'

'गुरु' कहलाने में सर्वाधिक अरुचि

श्रीमती कमला देवी ने निभाया भी इसे । इसीलिए प्रसादजी का वत्स मानता हूं मैं स्वयं को, शिष्य या और कुछ नहीं । एक घटना और बताता हूं— 'सन् १९३४ में एक बार प्रसादजी से मिलने कानपुर के एक सज्जन आये । उन्होंने प्रसादजी को बिना देखे ही अपना 'मानस-गुरु' मान लिया था । जब उन्होंने बताया कि मैंने तो 'एकलव्य' की तरह आपको बिना दर्शन के ही अपना गुरु बना लिया है और आपके आशीर्वाद से कुछ लिखता पढ़ता रहता हूं तो प्रसादजी ने कहा— 'मेरी रुचि पूछनेवाले तमाम लोग हैं, किंतु अरुचि किन-किन चीजों से है, यह पूछनेवाला कोई नहीं मिला अभी तक । बात आ ही गयी तो बता देता हूं कि मुझे सर्वाधिक अरुचि गुरु कहलाने से है ।'

यह थी उनकी महानता । कभी किसी से बड़ा होने की कल्पना जन्मी नहीं उनमें, इसीलिए मौनता ही उनकी मुखरता बनी रही । उनका मौन इतना प्रभावशाली होता था कि बड़े-बड़े वक्ता खुद धराशायी हो जाते थे । उनके सामने टिक नहीं सकते थे । इसका एक मजेदार किस्सा सुनाता हूं आपको— 'सेंट्रल हिंदू स्कूल वाराणसी' में हिंदी के उन्नायक नागरी प्रचारिणी सभा के निर्माता, संस्थापक पंडित रामनारायण मिश्र ने प्रसादजी को 'अंत्याक्षरी बाल-सभा' की अध्यक्षता के लिए बुला लिया । बच्चों का कार्यक्रम था, प्रसादजी चले गये । पुरस्कार वितरण भी किया । अंततः उन्हें भाषण देने को कह ही दिया गया । भाषण कभी देते नहीं थे । पांच मिनट तक मौन खड़े रहे । कुछ नहीं बोले ।

प्रसादजी से मिलने कानपुर के एक सज्जन आये । उन्होंने प्रसादजी को बिना देखे ही अपना 'मानस-गुरु' मान लिया था । जब उन्होंने बताया कि मैंने तो 'एकलव्य' की तरह आपको बिना दर्शन के ही अपना गुरु बना लिया है, तो प्रसादजी ने कहा—'बात आ ही गयी तो बता देता हूं कि मुझे सर्वाधिक अरुचि गुरु कहलाने से है ।'

पर उनका वह मौन स्वर जिस दिव्य स्वर का-सा प्रभाव छोड़ता था, वह क्या किसी के लंबे भाषण में होगा । इस सौंदर्य को जगह-जगह उन्होंने रुपायित भी किया—

'छोटे-से जीवन की कैसे बड़ी कथाएं आज कहूं, क्या यह अच्छा नहीं कि औरों की सुनता मैं मौन रहूं ।' 'वस्तु रूप में क्या उनसे कोई ऐसी चीज भी मिली आपको जिसे देखने भर से आज भी आपको प्रेरणा मिलती हो ?' मैंने पूछा तो उन्होंने बताया— 'मृत्यु के पूर्व उन्होंने चार चीजें मुझे दीं । (१) दो कविताएं— एक पूरी और एक अधूरी । पूरी मैंने आपको पहले ही

बता दिया, अधूरी अभी बता दूंगा । (२) शयनकक्ष से उतारकर उन्होंने अपना चित्र दिया जो मेरे दवाखाने में टंगा है और आप अभी देखकर आ रहे हैं । उसी फोटो से 'निगेटिब' बना करके प्रसाद जन्मशती के लिए रत्नशंकर प्रसाद प्रिंट तैयार करवा रहे हैं क्योंकि वह प्रसादजी का दुर्लभ अंतिम चित्र है । (३) दवाखाने में ही टंगा 'हर गौरी' का कलात्मक चित्र, जिसे प्रसिद्ध चित्रकार उपेन्द्र महारथी ने बनाया था और जिसकी मूल प्रति 'भारत कला भवन', काशी हिंदू विश्वविद्यालय में आज भी सुरक्षित है । अपने कमरे से उतारकर उन्होंने मुझे यह चित्र सौंपा था । इस चित्र के साथ 'कामायनी' की जो पंक्ति अंकित है, वह उनके शिव-व्यक्तित्व का परिचय दे देती है— 'अखिल विश्व का विष पीते हो, सृष्टि जियेगी फिर से ।' प्रसाद की इस अधूरी कविता में ही उनका मृत्युबोध समाविष्ट हो गया है—

'आज जीवन में तरल सुख
विश्व मदिरा-सा भरा है प्राण मादन वह मधुर मुख :

(४) कामायनी छपकर आयी तो पहले उसकी पांच प्रतियां ही लीडर प्रेस इलाहाबाद से आयी थीं । उनमें से एक प्रति उन्होंने मुझे यह लिखकर भेंट किया— 'श्री राजेन्द्र नारायण शर्मा को सस्नेह— जयशंकर प्रसाद ।' अन्य चारों प्रतियां उन्होंने ऐसे ही बांट दीं । प्रमाण, देखिए हमने आपके लिए निकालकर रख दिया है । इसे पढ़िए ।' यह कहते हुए शर्माजी ने कामायनी की वह प्रति और अपनी कुछ कविताएं जिस पर प्रसादजी ने पेंसिल से सुधार किया था, हमारे समक्ष रख दिया ।

प्रसाद के मानस-पुत्र रत्नशंकर प्रसाद



आंसू में प्रसादजी ने जिस आराध्य का उल्लेख किया है उसकी लौकिकता और अलौकिकता संबंधी विवाद पर आपने कभी कोई स्पष्टीकरण देने की बात सोची या नहीं ? यही नहीं एक सज्जन ने तो हमें यह भी बताया कि नरियल बाजार में एक बार प्रसादजी को किसी नर्तकी के घर से बुरका पहनकर भागना पड़ा था । 'अरे राम राम यह क्या कहते हैं आप' उन्होंने कुछ खीझभरे स्वर में कहा— 'पहली बात तो यह कि उस महिमा-मंडित व्यक्ति की ऊंचाई तक कोई महिमा-मंडित व्यक्ति ही पहुंच सकता है । फिर इस तरह की बात करने वाला सज्जन तो नहीं ही हो सकता है । उनके समय में इस तरह विवाद होते रहते थे और कभी-कभी प्रसादजी के पास तक लोग विवाद के निपटारे के लिए पहुंच जाते थे । श्यामसुन्दर दास, हरिऔध जी, शुक्लजी, लाला भगवानदीन आदि विद्वान आंसू के आराध्य को लेकर लड़ते-झगड़ते रहे काशी हिंदू विश्वविद्यालय में । आचार्य केशव प्रसाद मिश्र इनके प्रबल समर्थक थे, इसलिए उन्हें ही इन सबका सामना रोज-रोज करना पड़ता था । खींचतान बनी रहे विभाग में । एक बार डॉ. जगन्नाथ प्रसाद शर्मा प्रसादजी के घर आये और उन्होंने पूछा कि आंसू का आराध्य कौन है ?

उस समय मैं भी बैठा था और मेरे हाथ में प्रसादजी की दी हुई आंसू की प्रति थी। प्रसादजी ने शर्माजी से प्रश्न किया— 'आराध्य का मतलब क्या है ?' शर्माजी ने उत्तर दिया— 'कोई प्रेयसी को कहता है, कोई भगवान को।' प्रसादजी ने मुस्करा कर कहा— 'इसमें आराध्य न तो पुल्लिंग है, न स्त्रीलिंग, उसका आराध्य प्रेम है, जिसका कोई लिंग नहीं होता। उन्होंने मेरी प्रति ले ली और तत्काल उस पर लिख दिया—

'ओ मेरे प्रेम विहंसते, तू स्त्री है या कि पुरुष है
दोनों ही पूछ रहे हैं कोमल है या कि परुष है
उनको कैसे समझाऊं तेरे रहस्य की बातें
जो तुझको समझ चुके हैं अपने विलास की घातें'

वेद में 'प्रेम' के लिए 'काम'

मेरी आंसू की यह प्रति भी 'कला भवन' में है। वेद में 'प्रेम' के लिए 'काम' शब्द प्रयुक्त है न कि प्रेम। न तो वह स्त्रीलिंग है और पुल्लिंग, न ही नपुंसक लिंग— 'नैव स्त्री न पुमानेषन चैवायम नपुंसकः' यही नहीं आंसू के पहले, दूसरे, संस्करण के बाद जो अंतिम संस्करण निकला था उसमें अंत में जोड़े गये कुछ छंदों में इस बात को इतनी स्पष्टता से कह डाला गया है कि भ्रम के लिए कोई स्थान नहीं रह जाता है

नारियल बाजार में जहां वे दिनभर रहते थे वहां ऊपर कोठों पर गायिकाएं रहती थीं, जिनसे उनका पड़ोसियों—जैसे व्यवहार था। हंसी-मजाक होना भी स्वाभाविक है। उन गायिकाओं को जजमानी थी इनके यहां। प्रदोष पूजन काल में 'नेगजोग' रोज होता था। यह परंपरा उनके पिताजी के समय से चली आ रही थी। ये नर्तकियां इसी मंदिर में नृत्य करतीं थीं,



शिवालय : जहां बैठकर कामायनी के अंतिम छंद लिखे गये

गाती थीं। न्यौछावर पाती थीं। पूजन, आरती, भजन के बाद नृत्य होता था। प्रसादजी के चचेरे भाई भोलानाथ तो नाचते भी थे। एक बार छमाछम बजाते नाचते-नाचते इसी गली में गिर पड़े थे। नृत्य, गान, नटराज शिव की पूजा का प्रधान अंग था। कवि चक्रवर्ती देवी प्रसाद तक इस सरगम में शरीक होते थे। उस समय बनारस में बम्बई की केसर बाई, जौहराबाई-जैसी गायिकाएं और पैगम्बर खां जैसे संगीतज्ञ आया करते थे, जिनसे राजकृष्ण दास और प्रसादजी बहुत प्रभावित थे। उस समय कौन ऐसा साहित्यकार, दिग्गज विद्वान, संस्कृत साहित्य का उद्भट पंडित और संगीत कला का महा मार्तंड था जो इनके यहां आता न रहा हो। इनके परिवार सुंघनी साहू की महिमा इतनी थी काशी में कि लोग घर पर ही शिक्षा देने में गौरव समझते थे। इसीलिए प्रसादजी को कहीं किसी

विद्यालय में शिक्षा लेने नहीं जाना पड़ा। संगीत, संस्कृत साहित्य लोगों ने उनके घर पर ही उन्हें पढ़ाया। जिस तरह कृष्ण ने गीता कही नहीं, बल्कि आचरणों में अभिव्यक्त किया उसी प्रकार प्रसादजी ने साहित्य रचा नहीं, अपितु आचरणों में अभिव्यक्त किया। इसीलिए वही उनका जीवन दर्शन बन गया है। बचपन से ही वे पूजा करने लगे थे। गीता का संपूर्ण पारायण करने के बाद ही भोजन पर बैठते थे। वे कहते भी थे— 'पाठ से कुछ हल होने को नहीं। जानना अच्छा है, जीवन में धारण करना उससे भी अच्छा है।' जिस तरह कृष्ण के संबंध में उनकी महिमा को न्यून करनेवाली बातें कही जाती रहीं हैं, किंतु कृष्ण उन लीलाओं के कारण 'च्युत' नहीं हुए, 'अच्युत' बने रहे, उसी प्रकार जिसे वासना विलास को छोड़कर नर-नारी के अन्य किसी पवित्र और महिमामय सौंदर्य को देखने की आंख नहीं है, और न दिव्य सौंदर्य की कल्पना करने की सामर्थ्य है, उन लोगों ने यदि अनाप-शनाप लांछनकारी आक्षेप उनके चरित्र और व्यक्तित्व पर किया भी तो वह सूर्य के ऊपर थूकने के समान ही है। उनकी गंभीर प्रकृति को प्रमाणित करनेवाला एक और वाकया सुनाता हूं— एक बार लक्ष्मी नारायण मिश्र आये। उस समय हम भी बैठे थे। मिश्रजी ने प्रसाद के नाटकों की कटु आलोचना प्रारंभ कर दी— '...चंद्रगुप्त, स्कन्दगुप्त क्या थे ? आप क्या समझेंगे... ? राजे, महाराजे सामंतों के चरित्र को उत्कर्ष प्रदान कर रहे हैं आप। ये सब जनता के शोषक थे। गड़े-मुरदे उखाड़कर आप साहित्य का भला नहीं कर सकेंगे।' आदि न जाने कितनी बातें कह डालीं उन्होंने। प्रसादजी एक शब्द नहीं बोले उल्टे उन्होंने स[illegible] नौकर को बुलाकर मगदल (बनारसी मिठाई) और दूध मंगवाया। मिश्र जी को बैटाया, खिला-पिलाकर विदा किया। अंत में मिश्रज[illegible] जब जाने लगे तो कहने लगे— 'देख भाई, तो बड़का भाय न हुआ। हम जौन कुछ कह[illegible] गइली ओकर ध्यान मत करया।' प्रसादजी संकोची थे। अकेले किसी के यहां जाते नह[illegible] थे।

एक बार जयंती के अवसर पर मुझे भाष[illegible] देने के लिए बुलाया गया। तमाम दिग्गज बै[illegible] थे। कोई उन्हें महाकवि सिद्ध करने पर तुला था, कोई नाटककार तो कोई कथाकार। मैं बैठे-बैठे सोचता रहा। सब तो कह डाला ग[illegible] पर बात बन नहीं पायी है अभी। क्या कहूं कि[illegible] बात बन जाए। वहीं बैठे-बैठे मैंने ये पंक्तियां रच डालीं और भाषण की जगह पढ़ दिया—

'कोई उन्हें महाकवि कहता, कोई कहता नाटकक[illegible]
कोई कुशल प्रबंध रचयिता, कोई सिद्ध कहानीक[illegible]
हम कहते वे नहीं और कुछ, थे अगेय के सुंदर गायक
एक साथ जिनकी जिह्वा पर, बैठे वाणी और विनायक'

डॉ. साहब को डिस्पेंसरी जाना है। हम अपनी कॉपी समेटने लगे हैं। कबीर के 'घूंघट के पट' की तरह काशी के घरों पर संध्या नील[illegible] किरणों से बुने हुए वरदान सदृश्य अपना अंच[illegible] पसारने लगी है। श्रग्धरा फिर आ गयी है चा[illegible] लेकर...। हम सोचने लगे हैं, ऐसे महाकवि [illegible] जन्मशती वर्ष मौन क्यों है... ?

—'शब्दशिल[illegible]

अनूपपुर, जिला—शहडोल (म.प्र.) ४८४२[illegible]

वाल्मीकि का 'रामायण' मां सीता की साक्ष्यगत् आख्या है। तुलसी का 'रामचरितमानस' संत हृदय का सच्चा प्रतिबिंब है। इसके अतिरिक्त देश-देशांतर में अनेक भाषाओं में राम कथा को संजोया गया है। साहित्य का सर्वथा नवीन वर्गीकरण भी हो सकता है— लिखित तथा श्रव्य। 'लोकगीत' श्रव्य-साहित्य की एक प्रमुख विधा है। लोकगीतों का अपना एक वैशिष्ट्य होता है। इससे माटी की गंध निकलती है, निजत्व प्रस्फुटित होता है, जनमानस का अपनत्व जुड़ा होता है। साथ ही होती है, सामान्य जन की सरस रचनाधर्मिता। अवध प्रांत, अवधी भाषा, अयोध्या तथा इस पुण्य क्षेत्र के तमाम अनाम लोक कवि लगता है, राम कथा के सरित्सागर में स्वयं को धन्य कर लेते हों। लोक कवि भी जन्मना रचनाकार होता है। सभ्य समाज के भाषागत संसार से दूर वह अपने गांव की भाषा में अपने अंदर के राम को सबके श्रीमुख करता है। साहित्य छद्म से दूर लोक-कवियों ने भी श्रीराम कथा का बखूबी चित्रण किया है। ऐसे जैसे इनके दशरथ के राजकुंवर न होकर उनके कुटिया के श्रीकुमार हों। लोकगीतों में राजा दशरथ के पुत्र जन्म को लोक कवि ने इस प्रकार चित्रित किया है—

''एक दिन राम जन्म लीन्हें धरती अनंद भइलीं हो बाजिनी बाजै लागे अवध बधइया उठन लागे सोहर हो''

लोक कवि को समय की क्या महत्ता— वह सीधे कहता है कि एक दिन राम के पैदा होते ही धरती आनंद से परिपूर्ण हो गयी। अवधपुरी की नारियां बधाई के बाजे और सोहर से यह शुभ संदेश पाती हैं। उनके अंदर भी ऐसा उल्लास है।

शुभ-संदेश सोहर द्वारा

जिला आजमगढ़ (उ.प्र.) के लोक कवि भगवती मिश्र जी कितनी सहजता से अपनी बात कहते हैं—

**''कौशल्या के जन्म श्रीराम सुमित्रा के बबुआ लछिमन हो
कैकई के भरत भुआल तीनों घरे सोहर हो''**

अवधी लोकगीतों में : राम कथा

मोरे सैंया जी उतरेंगे पार

• डॉ. [illegible] मिश्र

धीरे-धीरे चारों राजकुंवर— राम, भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न किलकारियां लेने लगते हैं। इससे पूर्व का एक अत्यंत सुंदर चित्रण है।

खीर से पुत्र

महाराज दशरथ की रानियों के खीर से पुत्र होने की कथा चिर-परिचित है। लेकिन एक लोकगीत में इस प्रकरण में अत्यंत सुंदर कथा है। कहते हैं कि एक दिन सोने की खड़ाऊं पहने राजा दशरथ ने एक लता के नीचे खड़े

होकर पूछा— 'हे लता ! तुम्हारा पत्ता तो सोने-जैसा है, पर तुममें फल क्यों नहीं है ?'

इस पर लता ने कहा—

''भल बउरानेउ राजा दशरथ ! किन बउरावा हो
राजा तोहरे रनिया कौशल्या उनही से पूंछउ हो''

अर्थात् हे राजा दशरथ ! तुम्हारी मति मारी गयी है क्या ? तुम्हारे घर कौशल्या रानी है, उनसे क्यों नहीं पूछते हो ? लता ने कहां से कहां चोट किया । तब राजा दशरथ सोने की खड़ाऊं पहने वेदी पर आकर खड़े होते हैं और अपनी रानी से पूछते हैं— ''हे रानी ! तुम्हारा मुंह उदास क्यों है ? हृदय-कमल विकसित क्यों नहीं है ?'' राजा-रानी का संवाद, वृंदावन में पुत्र के लिए तपस्या, राम का जन्म और अंत में, कौशल्या माता का उस लता को दूध से सिंचवाने का अत्यंत सुंदरता से चित्रण इस लोकगीत में किया गया है—

''भल बउराने राजा दसरथ किन बउरावा हो
राजा बिनु रे संतति कुलहीन कंवल कैसे हुलसइ हो

* * * *

सोनवा तो मोरे लेखे राखि बा चंदिया तो माटी बा हो
राजा बरहा भवन के अजोध्या तो मोरे लेखे जरिगै हो

* * * *

आठ महीना नौ लगतै श्रीरामजी जनम लीन्हें हो
हे हो ! बाजै लागी आनंद बधैया, उठन लागे सोहर हो

* * * *

मचिये बइठीं कौशल्या रानी सुनो राजा दसरथ हो
मोरे राजा, दुधवन बेलि सिंचइबै त जिन मौका बुधि दिये हो

इधर राजा दशरथ का राजपरिवार आनंद मग्न है उधर जनकपुर में जनक सुता जन्म लेती हैं । इतना ही नहीं, चंदन पान का साम्य सीता और राम के पारस्परिक दांपत्य तक जिस सहजता से लोकगीत में निभाया गया है कि बस देखते बनता है—

''कहवां ही उपजेला अगर चंदनवां कहवां ही पान-पुरान ?
कहवां ही जन्मेली सीता रनियवां कहवां जन्में भगवान ?
वनवा दी उपजेला अगर चंदनवा भिटवा ही पान पुरान ।
जनकपुर जन्मेली सीता रनियवां अजोध्या जन्में भगवान ।
सिखा लगावे के उपजेला अगर चंदनवा खाये का पान पुरान ।
विहंसय के जन्मेली सीता रनियवां वेलसय के जन्मे भगवान ।''

तत्कालीन दहेज समस्या

लोकगीतों में तत्कालीन परिस्थितियों में भी आज की दहेज समस्या को उभारा गया है । राजकुंवर हंसराज घोड़ा मांगते हैं और शेष भाई धेनु गाय मांगते हैं । इस पर सीता बेटी कहतीं हैं कि इससे सारी गरीब घर की पुत्रियां कुंआरी ही रह जाएंगी । चित्रण यों है—

''खोजत-खोजत हम गइली मोरी बेटी हो राजा दसरथ के द्वार,
सांवर वर मांगे हंसराज घोड़वा अवरु सब मांगे धेनु गाय ।
एतनी बचनि अब सुनेली सिया सुंदर बाबा से अरज हमार,
जेकरे नाही रही बाबा हंसराज घोड़वा अवरु न रही धेनु गाय
तेकरि बेटी बाबा यहीं रहि जइहैं जिनगी भै बारी कुंआरि ।''

राजा जनक को दहेज की क्या चिंता ? राम कथा आगे बढ़ती है । धनुष यज्ञ से पूर्व सीताजी अपनी सखियों के साथ बाग में फूल

चुनने पहुंचती हैं, तो कुंवर राम से उनका प्रथम साक्षात्कार होता है। कितना सुंदर नयनाभिराम वर्णन लोकगीत में हुआ है—

''राजा जनक एक बगिया लगावले
बगिया फुलेला कचनार।
फुलवा लोढ़े चलैली बेटी सीता देई
हथवा डलरिया मुख पान।
फुलवा लोढ़ी-लोढ़ी धइलीं डलरिया
वहीं बइठीं गाछेली हार।
पिछवा उलटि जब चितवै सीतल देई
देखैं कुंवर एक ठाढ़।।''



जीवन में संस्कारों का अत्यंत महत्त्व है। प्रत्येक संस्कार के लिए अलग-अलग लोकगीत हैं, यथा जन्मोत्सव पर सोहर गाये जाते हैं, विवाह के अवसर पर विवाह गीतों की धूम मचती है, कोहबर का अपना अलग प्रेमपगा रस है। जनकपुर में सारी सखियां रामजी से क्या पूछती हैं, जरा सुनें—

''जनकपुर की सब पूछैं गुजरिया।
कोहबर मा पूछैं राम लला से, हंसि-हंसि करै मसकरिया,
दसरथ भी गोरे कौशल्या भी गोरी तू काहे हो गइला करिया।''

धनुष-यज्ञ से लेकर विवाह के अनेक सुअवसरों यथा द्वारचार, परिणय, कोहबर आदि के मांगलिक सुअवसरों के लिए बहुत ही सुंदर-सुंदर रचनाएं लिखी गयी हैं। पर, बेटी की विदाई का अत्यंत करुण दृश्य लोकगीतों में ऐसे पिरोया गया है कि थोड़ा-सा भी संवेदनशील इनसान उन लोकगीतों को पढ़-सुनकर भाव-विह्वल हो जाए। चित्रण देखें—

''बसवा की जरिया करील एक उपजय बाढ़ि के लागेला अकास,
माई की कोखिया सुंदरि एक जन्मीं बाढ़ि के भइलीं सयान,
तवनी ही बेटी चऊक चढ़ि बइठे माना दुअरिया में ठाढ़,
आजू की रतिया बेटी हमरे मड़ऊआ बिहने रहबू दूर देस,
अम्मा के मुंहवा सुखाई गइले बेटी नयन ढुरले बहु आसु,
जब मोही जनती हो धिया कोखी होइ है देती मरीचिया झगार,
मीरची के झरिया हो धीया मरि जाती मिटि जाते मन के संताप।''

मन के संताप

बेटी की विदाई पर मां इतनी भाव-विह्वल हो जाती है कि जन्म से पूर्व उसके मरने की बात सोचने लगती है। खैर, जनकसुता महारानी कौशल्या की गोद में सुरक्षित होने अयोध्या अपनी तीनों बहनों — मांडवी, श्रुतकीर्ति, उर्मिला के साथ पहुंचती हैं।

अयोध्या राजवंश की अपनी विडंबना। आगे कुंवर राम के वनवास से लेकर चक्रवर्ती राजा दशरथ के मरण तक का सारा कथानक लोकगीतों में भरा पड़ा है। चित्रण देखिए—

''राम केकई की बतिया से वन को गये
छोड़ि के अपने वतन को गये न ।
छोड़ि अजोध्या का राज, शीशमुकुट दिये त्याग ।
राम राम कहि हरि के शरण को गये ।।
गयी हर्ष दुलारी, संग सिया सुकुमारी ।
भइया राम जी के संग लछिमन भी गये ।।
हुए दशरथ अधीर, छोड़े अपना शरीर ।
राम राम कहि कौनी डगर को गये ।।

एक जगह पर बकलम खुद ने भी साताजी की मनमानी का वर्णन एक लोकगीत में किया है । राम को सीताजी जवाब देती हैं कि जिस अयोध्या के कारण आपको बनवास हुआ है, वह मुझे नरक के समान लगती है, सो मैं आपके साथ ही वन चलूंगी । बानगी लें—

''यह रे अजोधिया वन की कारन लागे नरक समान
चौदह बरस की कठिन तपस्या चौदह दिनन समान
रखिहौं पलकिन भीतर तुम्हरी श्याम ज्योति निष्काम''

राम-सीता-लखन लाल चल पड़े । माता-पिता का आदेश शिरोधार्य । सुरसरि के किनारे पहुंचे । हिंदुस्तान का महान संत पुरोधा एवं लोकगीत में कितना सुंदर संवाद लिखता है । 'बावला' जी ने लिखा है—

''केवट बोलल रामचन्द्र से हाथ जोरि अस बानी
ऐ बाबू ! राउर मरम हम जानी ।
पाथर से नारी तू कइला, हमरो घाट दया कर अइला ।
एकै विनती वाटै बाबू, नइया बहुत पुरानी ।।
पहिले राउर चरन पखरबे, फिर नदिया के पार उतरबे ।
अगर मने भावे त बोला, घर कठवत जग आनी ।।
अगर न चरन धोवावै चाहा, बेसी न बतिआवै चाहा ।
जा आगे कुछ दूर निकरि जा, बाटै थोरि कै पानी ।।

कितनी सहजता और सुंदरता से बात लिखी गयी है । लोक रचना में खास आदमी को आम आदमी से जोड़कर बात पूरी की जाती है पुरानी नाव में केवट से सशर्त पांव धुलवाने के बाद ही तीनों नाव में बैठ पाते हैं ।

प्रजातंत्र का उदाहरण

प्रजातंत्र का कितना सुंदर माहात्म— केवट राजकुमार से रंचमात्र भयभीत नहीं है, वह अपनी बात निःसंकोच कहता है और उतना ही सुंदर प्रतिफल भी उसे मिलता है । थोड़ा आगे बढ़ते हैं । गंगा मैया भी अधीर हो उठती हैं, वे भी पांव पखारना चाहती हैं । थोड़ा उफान बढ़ता है मां सीता घबरा उठती हैं । संकट के क्षणों में मां सीता को केवट समझाता है । जरा मेरे एक लोकगीत की कुछेक पंक्तियां देखें—

''मोरे सैंयाजी उतरेंगे पार केवट तनी धीरे चलो
मैया राम जी हैं जग के आधार तनिक मन धीर धरो
कैसेक छोड़ती इन्हें सुनु मैया ! ऐ मेरे प्रान आधार
पांव पखारन चहत गंगा मैया दे देव चरन रजधार ।

कथा आगे बढ़ती है । रक्षराज दशानन मां सीता को चुरा ले जाता है । गिद्धराज जटायु से संघर्ष होता है । हां, यहां एक बात स्पष्ट कर लेनी चाहिए कि लोकगीतों का जन्म माटी से होता है । इसके सूत्रधार माटी के पात्र होते हैं । राम कथा में जहां-जहां जनमानस को पात्र के रूप में रखा गया है, वहीं लोक कवियों ने भी, लेखनी तो क्या, वाणी उचारी है । ऐसे प्रसंगों में सेबरी, जटायु, हनुमान, सुग्रीव, गिलहरी के संवाद राम कथा में लोकगीतों में खूब चित्रित किये गये हैं । सीताजी की खोज करते-करते सेबरी तक राम पहुंचते हैं । सेबरी-राम का यह मिठासपूर्ण भक्ति भाव से भरा लोक चित्रण

लोक कवि भी जन्मना रचनाकार होता है । सभ्य समाज के भाषागत संसार से दूर वह अपने गांव की भाषा में अपने अंदर के राम को सबके श्रीमुख करता है । साहित्य छद्म से दूर लोक-कवियों ने भी श्रीराम कथा का बखूबी चित्रण किया है ।

देखते बनता है—

''मगन भई हो सेबरी पा के खबरिया ।
कुश की चटइया सेबरी झारिकै बिछवली,
जोहली अपने राम की डगरिया ।
मीठा-मीठा फल सेबरी जंगल से लावे
रख ली अपनी कोठरिया ।
करती रही सेबरी संतों की सेवा
मुनिवर ने खोला नजरिया ।''

सीताजी की खोज को कितने संक्षेप में सहजता से लोक कवि ने शब्दों का रूप दिया है—

''सीता की लेने खबरिया चले कपि लंका नगरिया ।
ढूढत-ढूढत प्रभु लंका में पहुंचे बैठे अशोक वृक्ष डग्यिा ।।
सीता जी बैठीं रहीं मन मार तब हनुमत गिराये पुदग्यिा ।
पुदरी गिरी सीता झट से उठायी बिकल भई देखकर नजरिया ।''

सावन मास विरह वर्णन के लिए जाना जाता है । सीताजी दूर हैं । आकाश में घने बादल हैं । राम लक्ष्मण से कहते हैं—

''लछिमन कहां जानकी होइहैं ऐसी विकट अंधरिया न
भूखि लगे कहां भोजन पइहैं कच्ची भउरिया न
हमरे सीता यस दुलारी भोजन केका करै हैं न
बादर गरजै बिजुरी चमकै घटा घिरी घनघोर
लछिमन कहां.... ।''

कथा आगे पढ़ती है । राम अपने छोटे भाई लखनलाल जी के साथ लंका पहुंच जाते हैं । राम-रावण युद्ध से पूर्व दशानन की पत्नी मदोदरी अपने पति से बैर न करने तथा सीता को लौटाने की बात समझाती है । सीता के पति की महिमा को लोककथा में इस प्रकार जोड़ा गया है—

''मति करा सिया के पिया से दुश्मनियां
होइहैं गरद जवनियां न ।
रामादल से बानर अइहैं, फूंकि दिहैं रजधनिया न,
मति ●... ।
एक सौ पूत सवा सौ नाती, एकौ न रहिहैं पनिया का,
मति ●... ।
कहति मंदोदरी मत करा स्वामी, मत करा राम से लड़ैया न,
मति ●... ।

धन्य है अवध की धरती में जन्मे लोक-कवि जिन्होंने राम कथा के नाते अपने लोक-गीतों में जन्म-जन्मांतर तक अमर कर दिया । वर्तमान से यह अनुरोध-अपेक्षा है कि वे 'लोक' से जुड़ें और स्वयं को भी धन्य करें । इति लालित्यम् ।

—रीडर एवं विभागाध्यक्ष, मनोविज्ञान
राजकीय स्ना. महाविद्यालय
हल्द्वानी, नैनीताल (उ.प्र.)

यह महीना और आपका भविष्य

• पंडित शिवप्रसाद पाठक

मेष : नवीन योजना में व्यस्तता बढ़ेगी । यात्रा की अधिकता होगी । दिनचर्या की अनियमितता से अस्वस्थता का उदय होगा । पारिवारिक वातावरण में मनोनुकूल सुधार होगा । सामाजिक अथवा धार्मिक कार्यों में नेतृत्व मिलेगा । न्यायालयीन कार्यों में सफलता मिलेगी ।

वृषभ : आर्थिक संसाधनों की वृद्धि होगी । आजीविका संबंधित अपेक्षित परिवर्तन से प्रसन्नता होगी । उच्चाधिकारियों अथवा राजनेता की अनुकंपा से लाभ मिलेगा । पारिवारिक विषमता से भावनात्मक पीड़ा होगी । स्वास्थ्य-संबंधी अस्थिरता रहेगी । उदर तथा रक्त-विकारों से पीड़ा होगी ।

मिथुन : मासारंभ में व्यर्थ विरोधाभास तथा पारिवारिक पीड़ा होगी । रचनात्मक एवं सामाजिक कार्यों में सफ़लता मिलेगी । यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी । उच्चाधिकारियों से संतुलित संभाषण करें । शत्रुपक्ष से सावधानी हितकर होगी । साझेदारी अथवा जोखिमपूर्ण कार्यों से हानि होगी । न्यायालयीन कार्यों में विलंब हितकर होगा ।

कर्क : पारिवारिक दायित्वों में वृद्धि होगा । निकटजनों से व्यर्थ विरोधाभास बढ़ेंगे । आध्यात्मिक सत्संग अथवा प्रवास का अवस मिलेगा । आर्थिक परिवर्तनों में अकारण अवरोध उपस्थित होगा । सामाजिक अथवा रचनात्मक कार्यों में क्रियाशीलता बढ़ेगी । बु कौशल तथा चातुर्य से शत्रुपक्ष का शमन होगा । नवीन कार्यों में जोखिम लेना लाभदा होगा ।

सिंह : आत्मविश्वास तथा साहस से लंबित कार्यों में सफलता मिलेगी । स्वजनों के सहयो से संपत्ति अथवा वाहनादि का सुख मिलेगा । नवीन मित्रों का समागम उत्साहदायी होगा । नवीन योजनाओं में तीव्रगामी प्रगति होगी । परिवार में धार्मिक अथवा मांगलिक कार्य पू से प्रसन्नता होगी । शत्रुपक्ष से सुलह के अव होंगे ।

कन्या : पारिवारिक कार्यों में व्ययों की अधिकता होगी । प्रियजन की अस्वस्थता चिंतनीय होगी । लंबित योजना की पूर्ति से आर्थिक संसाधन में वृद्धि होगी । उच्चाधिकारियों की अनुकंपा से शत्रुपक्ष का शमन होगा । नवीन तथा जोखिमपूर्ण कार्यों क

ग्रहस्थिति : सूर्य १६ सितंबर से कन्या में, मंगल कर्क में, बुध १८ से सिंह, गुरु धनु में, शुक्र १ से कर्क में, २८ से सिंह में, शनि मीन में, राहु कन्या में, केतु मीन में, हर्षल नेपच्यून मकर में, प्लेटो वृश्चिक राशि में भ्रमण करेंगे ।

टालना हितकर होगा । संभाषण की अधिकता से पीड़ा होगी ।

तुला : मास उत्साहदायी तथा उपलब्धिपूर्ण होगा । न्यायालयीन कार्यों में आकस्मिक सफलता मिलेगी । आजीविका की दिशा में पदोन्नति तथा इच्छित पद मिलेगा । नवीन वाहन अथवा संपत्ति कार्य में सफलता मिलेगी । विवादास्पद कार्यों में सुलह, समाधान होगा । शत्रुपक्ष के प्रयास विफल होंगे ।

वृश्चिक : पारिवारिक कार्यों में धन व्यय होगा । आर्थिक दायित्वों में वृद्धि होगी । आजीविका संबंधी वांछित परिवर्तन होंगे । कार्यों की अधिकता से दिनचर्या अव्यवस्थित होगी । नवीन मित्रों का समागम होगा । मास मध्य में स्वास्थ्य संबंधी विकारों का सामना करना होगा । शत्रुपक्ष की क्रियाशीलता से सावधानी रखें ।

धनु : आर्थिक दिशा में वांछित सफलता मिलेगी । लंबित योजनाओं की पूर्ति होगी । प्रवास में व्यर्थ पीड़ा अथवा अस्वस्थता का सामना करना होगा । विलासितादायी वस्तुओं पर धन व्यय होगा । न्यायालयीन कार्यों में विजय मिलेगी । आमोद-प्रमोद की अधिकता होगी ।

मकर : आत्मविश्वास तथा साहसिक प्रयासों से कठिनतम कार्यों में सफलता मिलेगी । नवीन योजनाओं के क्रियान्वयन से प्रसन्नता होगी । अति उत्साह पीड़ादायी होगा । परोपकारी कार्यों में सावधानी रखें । सामाजिक अथवा रचनात्मक कार्यों में नेतृत्व का अवसर मिलेगा । जीवनसाथी अथवा उनके संबंधियों के कारण भावनात्मक पीड़ा होगी ।

कुंभ : आजीविका की दिशा में उत्तरोत्तर सुधार होगा । नवीन अनुबंध से आर्थिक तथा सामाजिक प्रभाव वृद्धि होगी । धार्मिक कार्यों में व्यस्तता बढ़ेगी । लेखन, सृजन अथवा रचनात्मक कार्यों से यशवृद्धि होगी । स्वजनों के सहयोग से शत्रुपक्ष से सुलह होगी । नवीन कार्यों के लिए प्रवास, दौड़धूप तथा व्यर्थ व्यय होगा ।

मीन : व्यावसायिक कार्यों में अनपेक्षित लाभ होगा । संपत्ति कार्यों में अकारण विलंब होगा । लेखन, सृजन अथवा रचनात्मक कार्यों में सफलता मिलेगी । प्रियजनों के सहयोग से विवादास्पद कार्यों में सफलता मिलेगी । उच्चाधिकारियों से संतुलित संभाषण करें । पारिवारिक अस्वस्थता से चिंता बढ़ेगी ।

पर्व और त्यौहार

२ [illegible] बहुला चौथ, ४ श्री कृष्ण जन्माष्टमी (स्मार्त), ५ श्री कृष्ण जन्माष्टमी (वैष्णव) शिक्षक दिवस, ८ अजा एकादशी, १० भौम प्रदोष, १२ स्नानदान, श्राद्धादि की [illegible] अमावस्या, १५ हरितालिका, १६ वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी, १७ ऋषि पंचमी [illegible] [illegible], १८ लोलार्क षष्ठी (लोलार्क छठ), १९ संतान सप्तमी, २० महालक्ष्मी व्रतारंभ, २१ अदुःख नवमी, २३ पद्मा एकादशी डोल ग्यारस, २४ भौम प्रदोष, २६ अनंत चतुर्दशी, [illegible] २७ भाद्रपदी पूर्णिमा, ३० संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी ।

एनीमिया : कारण, निदान एवं चिकित्सा

• डॉ. प्रेमचंद्र स्वर्णकार

आज भी रक्त की कमी अथवा रक्ताल्पता एक विश्वव्यापी समस्या बनी हुई है । भारत-जैसे विकासशील देश के लिए तो यह समस्या और अधिक विकराल है, क्योंकि ६० से ८० प्रतिशत तक पांच वर्ष से कम उम्र के बच्चे तथा २५ से ३० प्रतिशत स्त्रियां और लगभग ५० प्रतिशत गर्भवती महिलाएं खून की कमी से पीड़ित हैं और गर्भवती स्त्रियों की २० से ४० प्रतिशत मौतों का कारण रक्ताल्पता ही है । युवा पुरुष और वृद्ध भी इस रोग से ग्रसित पाये जाते हैं ।

थोड़ी-सी भी खून की कमी व्यक्ति की कार्यक्षमता पर उल्लेखनीय प्रभाव डालती है और जितनी गंभीर रोग की स्थिति होती है उसी अनुपात में रोगी की कार्यक्षमता भी घट जाती है । प्रयोगों द्वारा यह पता चला है कि रक्त में केवल १.५ ग्राम हीमोग्लोबिन कम हो जाने से रोगी की शारीरिक श्रम करने की शक्ति काफी घट जाती हैं ।

इस तरह हम देखें तो सामान्य तौर पर पाया जानेवाला यह रोग अप्रत्यक्ष रूप से देश की आर्थिक स्थिति को भी प्रभावित करता है क्योंकि इसके कारण श्रमिकों अथवा कर्मचारियों की कार्यशक्ति घट जाती है जिससे कार्य की उत्पादकता पर बुरा असर पड़ता है ।

कार्यक्षमता में कमी

खून की कमी जिसे अंगरेजी में एनीमिया कहते हैं, रक्त में लाल रक्त कणिकाओं की कमी के कारण होती है । इन कणिकाओं के एक महत्त्वपूर्ण घटक हीमोग्लोबिन की मात्रा भी इस स्थिति में कम हो जाती है । हीमोग्लोबिन लौह तत्त्व को मिलाकर बना एक जटिल यौगिक होता है और इसी के कारण रक्त और रक्त कणिकाओं का रंग लाल रहता है । हीमोग्लोबिन रक्त द्वारा शरीर के विभिन्न अंगों को ऑक्सीजन पहुंचाने का प्रमुख कार्य करता है, लेकिन रक्त में जब इसकी मात्रा कम हो जाती है तो शरीर की विभिन्न कोशाओं को ऑक्सीजन भी कम मिलती है । इस कारण जैविक ऑक्सीकरण की क्रिया घट जाने से ऊर्जा भी कम उत्पन्न हो पाती है और यही वजह है कि रोगी की शारीरिक श्रम करने की क्षमता घट जाती है और वह जरा सा शारीरिक श्रम करने के पश्चात हांफने लगता है ।

रक्ताल्पता और कुपोषण

वैसे तो रक्ताल्पता कई प्रकार की होती है— जैसे : आनुवांशिक रोगों के कारण होनेवाली

खून की कमी या बवासीर अथवा दुर्घटनावश रक्त-स्राव से होनेवाली रक्ताल्पता। आंतों द्वारा भोजन को अवशोषित करने की शक्ति की कमी से भी रक्त की कमी हो जाती है परंतु हमारे देश में रक्त की कमी का प्रमुख कारण कुपोषण अथवा अल्प पोषण है। कुपोषण के कारण ही शरीर को पर्याप्त मात्रा में लौह तत्त्व अथवा विटामिन बी-१२ और फॉलिक एसिड की मात्रा नहीं मिल पाती और वह खून की कमी का शिकार हो जाता है। हमारे यहां लौह तत्त्व की कमी के कारण होनेवाली रक्ताल्पता सामान्य है। सर्वेक्षणों के अनुसार ५६.८ प्रतिशत गर्भवती स्त्रियों और ३५.६ प्रतिशत अन्य युवा स्त्रियों के शरीर में लौह तत्त्व की मात्रा कम होने के कारण खून की कमी पायी गयी है। भारत में २० से ५० प्रतिशत स्त्रियों में फॉलिक एसिड की कमी भी पायी जाती है। रक्ताल्पता का यह भी एक प्रमुख कारण है।

रक्ताल्पता के कारण

रक्त की कमी के कुछ अन्य कारण भी होते हैं— जैसे : मलेरिया, पेट में कृमियों की शिकायत होना इत्यादि। इस तरह की रक्ताल्पता बीमारी दूर होने पर स्वयं ठीक हो जाती है। कुछ दवाइयां— जैसे : क्लोरेफिनीकाल इत्यादि को बगैर चिकित्सक के उचित परामर्श के लंबे समय तक लेने से भी रक्ताल्पता की स्थिति बन सकती है।

देश में गरीबी और अज्ञानतावश भी लोग पोषक आहार की ओर ध्यान नहीं दे पाते। विशेषकर घरेलू स्त्रियां कुछ भी रुखा-सूखा खाकर पेट भर लेती हैं। प्रोटीन, विटामिन और खनिज लवणों युक्त आहार— जैसे : दूध, अंडे, हरी सब्जियां एवं फलों का पर्याप्त मात्रा में भोजन में शामिल करने की प्रवृत्ति हमारे यहां न होने से शरीर रक्त की कमी और अन्य कुपोषणजन्य बीमारियों का शिकार आसानी से हो जाता है।

रक्त की कमी के कारण शरीर पर बहुत-से दुष्प्रभाव पड़ते हैं। जैसा कि पूर्व में कहा जा चुका है कि रक्ताल्पता व्यक्ति की कार्यक्षमता कम कर देती है, व्यक्ति जल्दी ही थक जाता है। थोड़ा भी श्रम करने या सीढ़ियां चढ़ने पर सांस फूलती है। श्रीलंका में चाय बागानों के श्रमिकों पर किये गये एक अध्ययन में पाया गया कि रक्त में हीमोग्लोबिन कम होने के कारण जो श्रमिक कम कार्य कर पाते थे, उन्हें जब

> थोड़ी-सी भी खून की कमी व्यक्ति की कार्यक्षमता पर उल्लेखनीय प्रभाव डालती है और जितनी गंभीर रोग की स्थिति होती है उसी अनुपात में रोगी की कार्यक्षमता भी घट जाती है। प्रयोगों द्वारा पता लगाया गया है कि रक्त में केवल १.५ ग्राम हीमोग्लोबिन कम हो जाये तो रोगी की शारीरिक काम करने की शक्ति आधी रह जाती है।

पर्याप्त लौह तत्त्व की मात्रा दी गयी तो उनके कार्य करने की क्षमता भी पहले की अपेक्षा काफी बढ़ गयी ।

दुष्प्रभाव

रक्त की कमी का दुष्प्रभाव मानसिक दशा पर भी होता है । रोगी रक्ताल्पता के कारण मानसिक अवसादग्रस्त या चिड़चिड़ा हो सकता है । उसे सिरदर्द की भी शिकायत रहती है । कभी-कभी सीने में दर्द और हलका बुखार भी रह सकता है । अन्य लक्षण— जैसे : नाखूनों, हथेलियों और चेहरे का सफेद होना एवं आंखों के निचले पलक के अंदरूनी भाग की लालिमा घट जाना, इत्यादि भी मिलते हैं ।

रक्ताल्पता के सही निदान के लिए इन लक्षणों के दिखने पर रोगी को तुरंत चिकित्सक से संपर्क कर जांच करवानी चाहिए । आमतौर पर रक्त की जांचों में लाल रक्त कणिकाओं की खून में संख्या और हीमोग्लोबिन की मात्रा का पता करते हैं । एक स्वस्थ पुरुष में हीमोग्लोबिन की मात्रा १३.५ ग्राम से १८ ग्राम प्रति डेसीलीटर और एक स्वस्थ स्त्री में १२ ग्राम से १६ ग्राम प्रति डेसीलीटर होती है । हीमोग्लोबिन की मात्रा १० ग्राम के आसपास होने पर उसे साधारण रक्ताल्पता की श्रेणी में रखते हैं और जब हीमोग्लोबिन ७ ग्राम प्रति डेसीलीटर के आसपास हो जाता है तो इसे गंभीर रक्ताल्पता की स्थिति माना जाता है ।

यहां एक बात का उल्लेख करना आवश्यक है कि कई बार रक्त की कमी शरीर में बगैर कोई लक्षण या परेशानी उत्पन्न किये भी हो जाती है, तब इसकी पहचान केवल प्रयोगशाला में ही संभव हो पाती है लेकिन सामान्य तौर पर मिलनेवाले लक्षणों— जैसेः थोड़े-से श्रम में थकान अथवा सांस फूलना, सिरदर्द इत्यादि होने पर शीघ्र ही व्यक्ति को किसी अच्छे चिकित्सक को दिखलाना चाहिए । गर्भवती माताओं एवं श्रमिकों को तो जरा-सी शिकायत होने पर अपने रक्त में हीमोग्लोबिन की जांच, चिकित्सक की सलाह पर करवा लेना चाहिए । याद रखें, रक्त की कमी का निदान जितनी शीघ्रता से होगा उसका इलाज भी उतना ही सरल होगा ।

निदान

अब प्रश्न उठता है रक्त की कमी अथवा एनीमिया रोग की समस्या को कैसे कम किया जाए, तो इससे निपटनें का एक प्रमुख तरीका तो यह है कि लोग अपने खान-पान की आदतें बदलें और संतुलित आहार की ओर पर्याप्त ध्यान दें । वे प्रोटीन, विटामिन और आयरन युक्त आहार— जैसेः दूध, अंडे, सोयाबीन, गुड़, पालक की भाजी एवं अन्य हरी सब्जियां तथा फल पर्याप्त रूप से खायें ।

पेट में कृमियों की शिकायत होने पर बच्चों को चिकित्सक के परामर्श पर शीघ्र दवाइयां दें । रक्ताल्पता उत्पन्न करनेवाली बीमारियों— जैसे : मलेरिया इत्यादि का इलाज भी अतिशीघ्र करवाएं ।

गर्भवती महिलाएं लौह तथा फॉलिक एसिड युक्त गोलियां तब तक लेती रहें जब तक उसके रक्त में हीमोग्लोबिन की मात्रा पर्याप्त न हो जाए । खून की कमी से ग्रसित बच्चों को भी यही दवाइयां चिकित्सक की सलाह पर कम मात्रा में देनी चाहिए ।

— **पो.—हटा, जिला—दमोह**
पिन-४७०७७५

यहां रिश्ते मौसम की तरह बदलते हैं

• अर्चना कौशिल्य

लैला मंजनूं, हीर-राझा की कहानिया सुनती आयी हूं । लेकिन कभी देखा नहीं, बस देखा है यही कि लोग अपने घरों का चिराग जलाने के लिए दूसरों के घरों के चिराग को बुझा देते हैं । यह संसार है, जहां रिश्ते मौसम क्या, दिन व रात की तरह बदलते हैं । अरस्तु ने कहा है— 'मानव स्वभाव से स्वार्थी होता है और यही अक्षरशः सच लगता है, भले ही वह कोई भी रिश्ता क्यों न हो अपनों से या परायों से ।'

हर आदमी किसी दूसरे से तभी तक प्यार, मुहब्बत या इनसानी जज्बात निभाता है, जब तक कि दूसरा उसकी बनायी हुई कसौटी में सही उतरे, परंतु जिस वक्त दूसरा व्यक्ति अपने अस्तित्व को बनाकर अपनी पहचान बनाने की कोशिश करे, तो वही व्यक्ति दूसरों के लिए आसाध्य ही नहीं अपितु शत्रु हो जाता हैं ।

कल तक प्यार : आज दुश्मन

एक परिवार से मिली मैं, जहां भाई व भाभी ने देवर को सहारा तो वर्षों दिया परंतु देवर जिंदगीभर तो भाई की कमाई पर रह नहीं सकता और ना ही भाभी के स्नेह के साथ जिंदगी निभा सकता था । देवर खुद को एक बोझ समझ, भाई व भाभी के बीच दीवार समझने लगा क्योंकि हालात भी वही थे, लेकिन जिस दिन उसने हजारों दुःख सहते हुए दो वक्त की रोटी का इंतजाम कर लिया, उसी दिन से स्नेह की देवी, ममतामयी मां समान भाभी उसको द्वेषी हो गयी । अश्रुपूर्ण आंखों से देवर ने बताया— मैं क्या करता— मेरी वजह से उनके बीच आर्थिक व मानसिक तनाव बना रहता था— जिंदगी जीने के लिए मैंने कुछ गलत तो नहीं किया, मगर आज सभी मुझे अहसानफरामोश, खुदगर्ज व बदचलन होने का नाम देते हैं । क्या यही संसार है ? यही दुनिया है ? कल तक जो जितना प्यारा था, आज वही मेरा दुश्मन हो बैठा है— आज वही मेरे पर हुए खर्चों का हिसाब मांगते हैं, लेकिन जब तक मैं उनकी खैरात पर जिंदा था तो सब कुछ सही था । क्या संसार की लीला है ? रिश्ते कैसे बिखरते हैं, कल तक जो जितना अजीज था, पता नहीं उसी के लिए अब आंखें तरस जाएंगी ।

इनसान ने जज्बात पैदा तो किये परंतु उसे अपने अनुसार फायदे के लिए इस्तेमाल किया, जिसका रूप उसकी खुशी व दुःख के अनुसार बदलता व बिगड़ता है । कोई युवक किसी युवती से प्यार करता है, परंतु अगर वह उसे नहीं मिले, तो वह उसे मारने पर मजबूर भी क्यों हो जाता है । क्या प्यार का पर्याय प्रतिशोध है

या झूठा अहं।

मेरा मिलना हुआ एक अत्यंत संवेदनशील युवक से, जिसने अपनी प्रेमिका को पाने हेतु उसे शाप ही नहीं दिया, अपितु उसकी शादी में अनेको अड़चनें भी पैदा कर दीं, लेकिन वह पुरुष खुद भी बढ़कर, उसका हाथ नहीं थाम सका, क्योंकि अपनी खुद की उसकी परेशानियां थीं— मैं समझ नहीं पायी— क्या इसे ही लोग प्यार व इनसानी जज्बात कहते हैं।

भावना से परे हटकर अपने आस-पास के संबंधों पर एक दृष्टि डालिए, मन उचाट हो जाएगा इस संसार से, इस भावनात्मक कही जानेवाली जिंदगी से जिसमें भावना नहीं, परंतु भावना व ममत्व के नाम पर सिर्फ ढोलें पीटी जाती हैं। आज जिंदगी एक मजबूरी का नाम है। दूसरों के जरिये अपने उल्लू साधने का नाम है, जिसे भावना व सशक्तता का नाम देकर लोगों को गुमराह किया जाता है।

प्यार भी मजबूरी की वजह से

एक परिवार की आर्थिक परेशानियों ने अपनी १५ वर्षीया पुत्री को पैंतालिस वर्षीय २ बच्चों के पिता के साथ जीवन की गांठ जोड़ दी। कुछ सहायता पाने की उम्मीद में—मां की ममता भी व्यावसायिक हो गयी, तो पुत्री ने भी व्यावसायिकता अपना ली। ससुरालवालों ने बेटी के घरवालों का खर्च दूसरी पुत्रियों की नीलामी देकर करवा लिया, किस रिश्ते को सही माना जाए— मां-पिता का पुत्री हेतु या पुत्री हेतु अपने माता-पिता के लिए।

दिल्ली के एक हॉस्टल में रहनेवाली एक अठारह वर्षीय लड़की ने बताया— यह सच है, मैं अपने साथ में रहनेवाली को मानती हूं, परंतु यह प्यार भी आया है मजबूरी की वजह से— घर की आर्थिक तंगी के बावजूद, मेरी आगे पढ़ने की चाह को मैं रोक नहीं पायी— समयानुसार इनसे मदद भी मिलती है— मैं जिस परिवेश से आयी हूं, वहां मेरी प्रगति कभी नहीं हो सकती, अतः मैंने इसका साथ चुना, क्योंकि मुझे आगे बढ़ाने में यह बहुत सहायक हो सकती है। मानसिक उन्नति, शिक्षा व उच्चतर लोगों का साथ और इसके लिए कुछ प्यार व महुब्बत देना भी पड़े तो कुछ ज्यादा नहीं— क्या दूसरे को इसकी भनक नहीं— हां है, लेकिन एक दुःख के साथ, तकलीफ के साथ, क्योंकि वह उसके प्यार पर एक हथौड़ा है।

हर आदमी किसी दूसरे से तभी तक प्यार, मुहब्बत या इनसानी जज्बात निभाता है, जब तक कि दूसरा उसकी बनायी हुई कसौटी में सही उतरे, परंतु जिस वक्त दूसरा व्यक्ति अपने अस्तित्व को बनाकर अपनी पहचान बनाने की कोशिश करे, तो वही व्यक्ति दूसरों के लिए आसाध्य ही नहीं अपितु शत्रु हो जाता है।

प्यार पति और पत्नी से असंभव

एक दंपति ने बताया— प्यार और पति और पत्नी से। असंभव, विवाह तो एक समझौता है, जिसे हम लोग निपाते हैं, हम दोनों

को एक-दूसरे के खोने का डर है, अतः साथ चल रहे हैं, प्यार तो हम अपनी पांच महीने की अबोध बच्ची से करते हैं।

सुनते-सुनते मैं भावना शून्य होती चली गयी। क्या कोई भी ऐसा रिश्ता है, जो भावना, जज्बात पर टिका हो। पति-पत्नी का संबंध, मां-बेटे का संबंध, भाई-देवर-भाभी, बहनोई—साली, सभी संबंधों में छल-प्रपंच धोखाधड़ी है, तो फिर परायों के संबंधों में क्यों न हो ?

एक सज्जन ऐसे मिले जो चार साल से अपनी पत्नी के साथ एक छत के नीचे रहते हैं, परंतु, पति-पत्नी का क्या संबंध, मानवता का भी संबंध नहीं रहा— औरत जिसे भगवान ने ममतामयी वात्सल्य व प्रेम की प्रतिमा का नाम दिया है खुद उस नारी के स्वरूप को देख लें, तो लज्जित हो जाएं। पति के खर्च पर पलने व ऐश करनेवाली, धर्मपत्नी, अर्द्धांगिनी की संज्ञा समाज के सामने सात फेरों की साक्षी लेने वाली वह नारी पत्नी का फर्ज क्या, एक दुश्मन का रूप भी अदा नहीं कर पा रही है। सुबह ७ बजे घर से निकलकर वह पुरुष सारे दिन भूख व प्यास से तड़पते आफिस में काम करता है, परंतु रात के आठ बजे जब वह घर लौटता है, तो पत्नी खुद खाकर बरतनों को धोकर सो चुकी होती है और फ्रिज में पड़ी कच्ची सब्जियां खाकर वह भूख मिटा लेता है, अन्यथा सुबह का इंतजार करता है, जब बगल के ढाबे से वह दो टुकड़े ब्रेड के ले आएगा।

पिता के मरने का इंतजार

मेरी उम्र कम है, मैंने दुनिया अभी पूरी नहीं देखी, लेकिन जो भी देखा है, काफी विषाक्त ही देखा है, बेटे व बहू इंतजार करते हैं, पिता के मरने का, जब पेंशन व ग्रेच्युटी उन्हें मिल जाएगी। पति को कोर्ट में ले जानेवाली औरतें पति को मारना चाहती हैं, बेटियों के माध्यम से, ससुरालवालों से पैसा ऐंठा जाता है, तो कहीं बहुएं जलायी भी जाती हैं। समझ नहीं आता, इसी थोड़ी जिंदगी में हम इनसान इतना घृणित कुकर्म क्यों कर बैठते हैं— किसके लिए ? किसकी खातिर और आखिर क्यों ?

लोग बातें करते हैं मंत्रीगण, प्रजातंत्र भ्रष्ट है, भ्रष्टाचार व्यापक है, तो फिर हम और आप अपने रिश्तों में यह क्या कर रहे हैं ? मैं किसी राजनीतिक दल या राजनीतिक नेताओं को नहीं मानती, क्योंकि उनके अत्याचारों का एक सबूत मैं भी हूं, परंतु मैं भी आपकी ही तरह 'अपनों' के साथ जीना चाहती हूं। क्या मेरे अपने मुझे जीने देंगे ? इसका जवाब मुझे मेरे अपने नहीं, अपितु आप मुझे देंगे कि क्या आप अपनों के साथ जीना चाहते हैं ? उनकी भावना जज्बात को आत्मसात करना चाहते हैं। जिंदगी बहुत छोटी है, पता नहीं कल कब किससे बिछुड़ जाएं, परिस्थिति की मार कब किसे रुला दे, कल-कब किसके लिए आंखें तड़प जाएं, आज वक्त आजाद है उसे खोकर आप उम्रभर तरसते मत रहिए। जिंदगी के कुछ पल अपनों के साथ निःस्वार्थ बिता दें, क्योंकि एक पल की जिंदगी में दूसरों का साथ तो 'मात्र पल' का ही होगा। बेहतर है, चढ़ने दें अपने आप पर मुहब्बत, जज्बात, इनसानी रिश्तों का जुनून।

—द्वारा डॉ. शालिनी
के-१० माडल टाउन
नयी दिल्ली

ज्योतिष : समस्या और समाधान



● **अजय भाम्बी**

डॉ. रागिनी अवस्थी, राजगढ़ (लखीमपुर-खीरी)
प्रश्न : सरकारी नौकरी कब तक ? आर्थिक लाभ हेतु उपाय ?
उत्तर : अच्छी नौकरी प्राप्त होने का योग चल रहा है । धन लाभ के लिए नीलम धारण करें ।

एस.के. सिन्हा, पटना
प्रश्न : लेखन-कार्य में आर्थिक सफलता/प्रसिद्धि ?
उत्तर : १४-२-१९९७ के बाद ।

जेठमल बूडर, चुरू
प्रश्न : निलंबन से बहाली कब तक ?
उत्तर : अगले वर्ष ।

डॉ. रुद्रदत्त चतुर्वेदी, चरखारी (महोबा)
प्रश्न : चयन वेतनमान कब मिलेगा ?
उत्तर : जल्दी मिलने की संभावना है ।

बी. राम, शामली
प्रश्न : स्वास्थ्य लाभ पूर्णरूप से कब तक ? अस्वस्थता क्यों ?
उत्तर : अस्वस्थता का कारण लग्न में क्रूर ग्रह की उपस्थिति और लग्नेश प्रताड़ित । स्वास्थ्य लाभ १९९८ में ।

मधुर वाजपेयी, लखनऊ
प्रश्न : लखनऊ स्थानांतरण कब ? उपाय सुझाएं ?
उत्तर : प्रयास करने से जल्द सफलता प्राप्त हो सकती है ।

दीप्ति मिश्रा, वाराणसी
प्रश्न : शादी कब तक होगी ?
उत्तर : अक्तूबर '९७ से पूर्व ।

मिथुन मित्तल, कोटा
प्रश्न : एम.बी.बी.एस. में प्रवेश कब तक ?
उत्तर : १९९८ तक ।

अबु असगर, मोतिहारी
प्रश्न : विदेश में नौकरी का योग कब ?
उत्तर : मार्च '९७ से पूर्व कार्य बनने की संभावना है ।

कल्पना पांडे, नैनीताल
प्रश्न : मुझे नौकरी कब तक प्राप्त होगी ।
उत्तर : अगले वर्ष ।

लेखराज शर्मा, धाला (सोलन), (हि.प्र.)
प्रश्न : लेक्चररशिप का मुकदमा विचाराधीन, क्या विजय मिलेगी ?
उत्तर : संभावना कम है ।

सतीश कुमार, हापुड़
प्रश्न : संतान कब तक ? रत्न बतलाएं ?
उत्तर : नीलम धारण करें और सूर्य की पूजा करें । ऐसा करने से संतान अगले ढाई वर्ष में प्राप्त होगी ।

नी.क्रो. भीलवाड़ा (राज.)
प्रश्न : तलाक होगा या समझौता, व कब ? उपाय बतायें ?
उत्तर : समझौते की संभावना अधिक है । पुखराज धारण करें ।

भारत एवं पाकिस्तान में रहनेवाले मुसलमान ये समझने लगे कि 'उर्दू' भी 'कुरान' की तरह सिर्फ उन्हीं की भाषा है । और यह सोचकर उर्दू को अरबी, फारसी से ओत-प्रोत कर उसका रूप रंग ही बदल दिया । दूसरा और ज्यादा हानिकारक परिणाम यह हुआ कि भारत में हिंदुओं ने भी इसे पढ़ना लिखना ही छोड़ दिया । हालांकि कुछ लोगों ने इसे धर्म के आधार पर तो नहीं वरन् रोजी रोटी की खातिर इसका शोषण अवश्य किया ।

कश्मीर में धर्म के आधार पर उर्दू को राजभाषा का दरजा दिया गया है, हालांकि वहां मातृ भाषाएं कश्मीरी, डोगरी व लद्दाखी में ही लोग बोलते हैं । अरबी या फारसी लिपि में लिखे जानेवाली उर्दू को पढ़ना नयी पीढ़ी के लिए कठिन हो गया ।

भाषा के आधार पर बनाये गये प्रांतों में, कश्मीर को छोड़कर किसी भारतीय प्रांत की भाषा उर्दू नहीं है । इन्हीं कारणों से भारत में उर्दू की जड़ें लगभग उखड़ चुकी है ।

पाकिस्तान में उर्दू डगमगायी

उर्दू के कदम पाकिस्तान में भी डगमगा रहे हैं । यह भाषा पाकिस्तान को संगठित नहीं रख सकी और इसीलिए १९७१ में पाकिस्तान का पुनः विभाजन हुआ । इस तरह इसी उर्दू के कारण 'बंगला देश' बना । इसकी वजह यह थी कि वहां के लोगों की मातृ भाषा बंगाली है, और इस सच्चाई का आदर न करते हुए, कायदेआजम जिन्ना ने उर्दू को पूर्वी व पश्चिमी पाकिस्तान की सरकारी जबान बना दिया, क्योंकि पाकिस्तान के निर्माताओं को पाकिस्तान की किसी भी क्षेत्रीय भाषा का ज्ञान नहीं था । उर्दू भाषा न कभी पाकिस्तान के किसी प्रांत एवं भाग की मातृ भाषा थी और न आज है । ऐसा इसलिए है, क्योंकि वहां के मूल निवासी 'पंजाबी' 'सिरायकी' 'सिंधी', 'पश्तो' 'बल्लोची' अपनी मातृ-भाषाओं से अधिक प्यार करते हैं । और उर्दू को तो वो एक विदेशी भाषा समझते हैं और अपनी मातृभाषा में ही बोलते हैं । कुछ हद तक ये सच भी है कि उर्दू भाषा किसी की भी मातृभाषा नहीं है । केवल ७ प्रतिशत मुहाजरों को छोड़कर (जो १९४७ में पाकिस्तान के निर्माता थे और भारत को छोड़कर वहां बसे थे ।

वे लोग भी बिहारी, हरियाणवी, पंजाबी, बृज, दकनी एवं अवधी भाषी हैं और साथ-साथ उर्दू भी बोलते हैं । राज दरबार में

भारत में जालंधर तथा सूरतगढ़ से आकाशवाणी में भी 'सिरायकी' भाषा में प्रसारण होता है और सबसे खुशी की बात यह है कि दिल्ली प्रदेश की सरकार ने तो 'सिंधी' अकादमी भी बनायी है, जो सिरायकी, सिंधी दोनों भाषाओं का प्रचार विस्तार एवं प्रसार कर रही है । दिल्ली में लगभग २० लाख सिरायकी भाषी लोग रहते हैं ।

अधिकतर इनकी चलती है, इसलिए 'उर्दू' को सरकारी भाषा घोषित कर वहां की मूल भाषाओं का निरादर कर रहे हैं । इसी कारण वहां मुहाजरों तथा मूलवासियों में तनाव बढ़ता चला जा रहा है ।

''किराची के दंगे-फसाद और सिंधु देश तथा 'सिरायकस्तान' की मांगें भी इसी उर्दू की देन हैं । ऐसा लगता है कि पाकिस्तान की 'अशोक वाटिका' में पड़ी उर्दू भी 'सीता' की तरह बड़ी बेचैनी से वापस अपने देश लौटने का इंतजार कर रही है ।''



यदि पाकिस्तान की सरकार ने वहां की मूल भाषाओं को उर्दू के समान अधिकार नहीं दिये, और 'सिरायकी' बल्लोची पंजाबी, पशतो, कश्मीरी आदि के प्रचार और विस्तार के लिए पूरे कदम न उठाये तो उर्दू फिर पाकिस्तान को तोड़ने में सहायक होगी, और 'रावण की सोने की लंका की तरह' पाकिस्तान भी नष्ट एवं खंडित हो सकता है । यह मानव अधिकारों की अवहेलना भी है और पाकिस्तान के संविधान के खिलाफ भी ।

इतिहास के पत्रों को यदि ध्यान से पढ़ा जाए, तो ज्ञात होता है कि जब-जब किसी भाषा को राजनीति या धर्म से जोड़ा गया है, तब-तब उसका विस्तार नहीं वरन विनाश हुआ है । संस्कृत को 'हिंदुओं की भाषा' बनाने मात्र से इसका विस्तार बंद हो गया । 'पाली' को बौद्ध-धर्म के अनुयायियों की भाषा बनाने के बाद, उसका भी विनाश हुआ । जब राजनीति के लोगों ने हिंदी को भी दक्षिण भारत पर थोपने की कोशिश की, तो उसका विरोध हुआ, जिससे हिंदी का विकास रुक गया ।

सिरायकी कहां नहीं है ?

यदि पाकिस्तान व भारत, उर्दू को धर्म व राजनीति से अलग कर दें, तो उर्दू फिर से अपने पुराने इलाके यानि कि दिल्ली के गली कूचों में हंसती-खेलती नजर आएगी । पाकिस्तान के अधिकतर लोग सिंध से लेकर कश्मीर तक 'सिरायकी' भाषी हैं । सिरायकी किसी विशेष धर्म के लोगों की भाषा नहीं, यह सिंधु वादी से जुड़ी है । इसका केंद्र बिंदु मुलतान के इर्द-गिर्द रहा है, इसलिए इसे मुलतानी या लेहंदा के नाम से भी जानते हैं । यह संतों, पीरों, फकीरों की भाषा भी है, तथा संस्कृत के समय से भी पूर्व यह भाषा इस क्षेत्र के लोगों की रही है, और आज भी है । यदि 'सिरायकी' भाषा को पाकिस्तान की राष्ट्रभाषा बना दिया जाए, तो भारत और पाकिस्तान के बीच यह एक बहुत बड़ा 'सांस्कृतिक सेतु' का काम कर सकती है । इससे इस क्षेत्र में धर्म के नाम पर कूटनीति का दौर खतम हो जाएगा और भारत एवं पाकिस्तान के लोग सुख और शांति से रह सकेंगे ।

एक करोड़ से अधिक के करीब सिरायकी भाषी लोग भारत में भी रहते हैं, जिन्हें १९४७ में धर्म के कारण ही अपना इलाका छोड़ना

पड़ा । आज भी वे लोग अपनी सभ्यता और भाषा से उतना प्यार करते हैं, जितना पाकिस्तान में रहनेवाले सिरायकी भाषी लोग करते हैं । इनका आपस में मेलजोल दिन-प्रतिदिन बढ़ रहा है और दोनों मुल्कों में सिरायकी संगत, सिरायकी साहित्य संगम जैसी—संस्थाएं तथा सिरायकी इंटरनेशनल 'झोंक सिरायकी', 'सिरायकी अदब', 'सिरायकी शोभा', 'सिरायकी दुनिया'—जैसे दैनिक, मासिक, द्वमासिक, त्रिमासिक पत्र-पत्रिकाएं इन दोनों मुल्कों के लोगों के दिलों को फिर से जोड़ रही हैं । भारत में जालंधर तथा सूरतगढ़ से आकाशवाणी में भी 'सिरायकी' भाषा में प्रसारण होता है और सबसे खुशी की बात यह है कि दिल्ली प्रदेश की सरकार ने तो 'सिंधी' अकादमी भी बनायी है, जो सिरायकी, सिंधी दोनों भाषाओं का प्रचार विस्तार एवं प्रसार कर रही है । दिल्ली में लगभग २० लाख सिरायकी भाषी लोग रहते हैं ।

उर्दू के उर्दूभाषी लोग एवं उर्दू से प्यार करनेवाले लोगों का ध्यान मैं इस बात की ओर भी दिलाना चाहता हूं कि यदि वे चाहते हैं कि उर्दू इस देश तथा पाकिस्तान में जीवित रहे और फले-फूले, तो, उर्दू की लिपि फारसी या अरबी के बजाय देवनागरी अथवा भारत पाकिस्तान की किसी भी क्षेत्रीय भाषा की लिपि का प्रयोग करें । इसका परिणाम यह होगा कि हर स्कूल में हर बच्चा तथा छोटा-बड़ा, बूढ़ा-जवान, मर्द-औरत इस मीठी भाषा को बड़े शौक से पढ़ेगा, चाहे वो किसी भी धर्म या संप्रदाय का हो ।

—जी-१०९, साकेत,
नयी दिल्ली ११००१९

सघन घन आंगन तक आये

सघन घन आंगन तक आये
श्याम चांदनी-सी अंधियारी
आभा की छिप गयी किनारी
दिशा-दिशा पछुआ की मारी
झर-झर-झर मोती की लड़ियां
क्षण-क्षण बरसाये ।

एक सजल कंपन तृण-तृण में
मंद-मंद गर्जन वन-वन में
उतरा मानो व्योम भुवन में
क्षितिज भाल पर सांझ सांवली
मेघ राग गाये

मृदु रिमझिम बूंदों का नर्तन
चपला चमक छू गयी आंगन
आलोकित अचला का आनन
दर्पण में मुख देख-देख
हरियाली मुसकाये

सर में नील कमल-दल फूले
बार-बार सरिता पथ भूले
डाल-डाल यौवन के झूले
इंद्रधनुष की विभा झूलती
अंचल लहराये

पतझर से पावस हो जीवन,
यही चाहता है मानव-मन
किंतु नियति के अड़े आवरण
कौन कुसुम जो कभी खिले पर
कभी न मुरझाये

—डॉ. चंद्रप्रकाश वर्मा

ई-२/२३३, अरेरा कॉलोनी
भोपाल—४६२०१६

प्रवेश

गजल

अगर बस मांगनेभर से,
मुरादें दिल की मिल जाएं ।
मुझे फिर क्या पड़ी है जो,
कहूं कलियों से खिल जाएं ।
घटाओं की तमन्ना क्यों,
कहूं मैं क्यों बहारों से,
उठे अरमान जब दिल में,
तो सावन भी बरस जाए ।
खिजाओं के भी ये मंजर,
फिजाओं से संवर जाएं,
नजर के एक इशारे पर,
गगन में चांद खिल जाए ।
सुना है दिल से मांगो तो,
मुरादें मन की मिलती हैं,
खुदा से कुछ न चाहूं मैं,
अगर मांगूं तू मिल जाए ।

—कमला शंकर दूबे

शिक्षा : यांत्रिकी इंजी. में डिप्लोमा
आत्मकथ्य : भीड़ से अलग होकर जब अपनी पहचान करता हूं तो हाथ में स्वतः ही कंपन होता है । सुनसान अंधेरे में कर्मों का ब्यौरा करके जब दीपक जलाता हूं, तो कभी गीत, गजल और कविता बन जाती है ।
पता : बी-५९, डी.डी.ए. फ्लैट कालकाजी, नयी दिल्ली-१९



तुम्हारा प्यार

पलकों की आहट से
सांसों की गरमाहट से
दिल में उतर आया है
तुम्हारा प्यार

सपनों की बेल पर
टेसू के फूल-सा
खिलने लगा है
तुम्हारा प्यार

यौवन की बेला में
मीठी अंगड़ाई बन
कसकने लगा है
तुम्हारा प्यार

तन की तरुणाई में
मन की गहराई में
मचलने लगा है
तुम्हारा प्यार

—लीना सिन्हा

शिक्षा : स्नातक (दर्शनशास्त्र)
आत्मकथ्य : मेरी कविता मेरी अनुभूतियों और भावनाओं का प्रतिबिंब है । मेरे लिए कविता अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है ।
पता : जे-७४८, मंदिर मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१



विडंबना

कुरुक्षेत्र वह स्थान,
जहां पायी थी विजय,
अर्जुन ने मोह पर,
दिया ज्ञान कृष्ण ने,
बनकर युगसृष्टा,
कृष्ण के नेतृत्व में,
वह द्वापर-युगीन अर्जुन,
जीत गया उस युद्ध को,
लेकिन,
निरंतर चल रहा है,
अभी भी एक युद्ध,
लड़ रहे हैं सभी
अपने अहं से,
मगर,
यह कैसी विडंबना है,
देने ज्ञान का प्रकाश,
कृष्ण-जैसा युगसृष्टा,
बनकर कोई सामने
नहीं आता है

—अतिमां भागचंदानी

शिक्षा : बी काम द्वितीय वर्ष

आत्मकथ्य : "भावनाओं की सरल अभिव्यक्ति है कविता।"

पता : ११७, सैनिक कॉलोनी, सागोद रोड रतलाम (म.प्र.)-४५७००१





प्रतीक

आज भी जब कभी
मैं देखता हूं
उस अधूरी दीवार को
बरबस याद है आ जाती
आत्मविश्वास से भरी
उसकी वो झलकती आकृति
जो अब नहीं रही
इस दुनिया में—
फिर उसके जाने के बाद
वह दीवार बढ़ती क्या ?
दिन-ब-दिन
घटती ही जा रही है
शायद कुछ दिनों के बाद
वह भी नहीं रहेगी
इस दुनिया में !

—उल्लास कुमार

शिक्षा : एम ए (अंगरेजी), अध्ययनरत

आत्मकथ्य : विभिन्न स्थितियों व परिस्थितियों में मानवीय भावना के उद्‌गारों को सामने लाने का प्रयास करती हैं मेरी कविताएं।

पता : ग्राम+पोस्ट- बेलाराही, वाया-झंझारपुर, जिला मधुबनी (बिहार), पिन : ८४७४०४





ठूंठ

वह जो सामने ठूंठ
खड़ा है
सबसे उपेक्षित, तिरस्कृत-सा
पड़ा है
कभी वह भी हरा था,
फल-फूल से लदा था
अहिल्या-सा शापित, राम की
प्रतीक्षा में
जीवनदान की अभिलाषा में
कि कभी तो
कोई आएगा, उसे अपनाएगा
उस पर नीड़/घर बना
उसका ठूंठ/सूना जीवन
सार्थक कर जाएगा

—ज्योति मिश्र

शिक्षा : एम.ए. (हिंदी)

आत्मकथ्य : जब बीता हुआ कल यादों की निर्झरणी बन आंखों से निकलना चाहता है, तब मन का 'धीरज' उसे संभाल शब्दों के रूप में कागज पर उतार देता है। मैं इसे ही 'कविता' का नाम देती हूं।

पता : ५६२/१ एस के. बिल्डिंग, रेल बाजार, कानपुर कैंट, पिन कोड-२०८००४

नवअंकुर

नरम-हरे पत्तों में पलतीं
बनकर इक दिन फूल मचलतीं
पर यह सब कुछ होता नश्वर
और इन्हें जाना होता झर
किंतु बीज फिर भी रह जाते
धरती मां की गोदी पाते
उन पर रिमझिम मेघ बरसते
फिर अंकुर नव आते हंसते
बनते पेड़ लिये हरियाली
खिलतीं फिर कलियां अति प्यारी
जो बनते हैं, सब ढहते हैं
सभी कालक्रम में बहते हैं
लेकिन हर पौधा कहता है
पुनर्जनम होता रहता है।

—अभिरंजन कुमा

आत्मकथ्य : हृदय के आंसू कभी ढुलककर, भा से मानस के मित्र, नेत्र के रंग-बिरंगे चित्र, कलम में आकर सब कह जाएं। सृजन करती हैं कविताएं।

पता : सभापति भवन, नरिया, काशी हिंदू वि.वि., वाराणसी-२२१







जिन्ना न पाकिस्तान के न हिंदुस्तान के

● नवीन पंत

मोहम्मद अली जिन्ना भारतीय राजनीति के सबसे जटिल और रहस्यपूर्ण व्यक्ति थे। उनके कई चेहरे थे। किसी समय वह हिंदू-मुसलिम एकता के प्रबल पक्षधर थे। उन्हें 'हिंदू-मुसलिम एकता का राजदूत' कहा जाता था। वह मुल्ला-मौलवियों से दूर रहते थे। शराब और सूअर के मांस की सेंडविच से उन्हें परहेज नहीं था। फिर उन्होंने ऐसा पलटा खाया कि वह मुसलमानों को एक अलग राष्ट्र कहने लगे, शेरवानी पहनने लगे, उर्दू में तकरीर करने का अभ्यास करने लगे। उन्होंने न केवल पाकिस्तान का नारा दिया, बल्कि उसके पहले गवर्नर जनरल बने।

जिन्ना ने अपनी पसंद की एक पारसी लडकी से विवाह किया। लेकिन उन्होंने अपनी पुत्री दीना को अपनी पसन्द के एक पारसी युवक से विवाह करने की इजाजत नहीं दी। जिन्ना ने पाकिस्तान का निर्माण तो किया, लेकिन वह उसके निर्माण से खुश न थे। पाकिस्तान में वह अकेले पड़ गये थे। उनका कोई वंशज पाकिस्तान नहीं गया। स्वयं जिन्ना मुंबई लौटने को तड़पते रहे। पेश हैं जिन्ना के जीवन की कुछ अंतरंग झांकियां।

छू दिया गया तो वह टूट जाएगी

जिन्ना १९१६ में लोकप्रियता के शिखर पर थे, उन्होंने मोतीलाल नेहरू के साथ मिलकर 'लखनऊ पैक्ट' या स्वतंत्रता के पैक्ट का मसौदा तैयार किया था। उस समय मोतीलाल नेहरू की राय में, "जिन्ना एक महान राष्ट्रवादी हैं और मुसलमानों को हिंदू-मुसलिम एकता की राह पर ले जा रहे हैं।"

लखनऊ पैक्ट को अंतिम रूप देने के बाद जिन्ना अपने मुवक्किल सर दिनशा मानोकजी पेटिट के दार्जिलिंग स्थित बंगले में छुट्टी मनाने चले गये। मानोकजी मुंबई के पारसियों के नेता, प्रमुख उद्योगपति और सरकार के कृपापात्र थे। उनके पिता पहले भारतीय सर थे। मानोकजी को भी सरकार ने सर के खिताब से सम्मानित किया था। सन् १९०१ में बड़े दिनशा की मृत्यु के बाद उनके पुत्र सर दिनशा मानोकजी पेटिट उनकी विशाल संपत्ति और पारसी समुदाय के नेता पद के उत्तराधिकारी बने।

सर दिनशा की एकमात्र पुत्री रतनबाई का

जन्म २० फरवरी, १९०० को हुआ था । वह अद्‌भुत, आकर्षक और बुद्धिमान बालिका थी । प्रत्येक कला में पारंगत । आयु बढ़ने के साथ उसके सौंदर्य में अभिवृद्धि हुई । वह परी-समान लगती थी । अत्यधिक कोमल और मनोहारी । इतनी कोमल कि लगता था कि अगर उसे छू दिया गया, तो वह टूट जाएगी ।

जिन्ना चालीस के : रती सोलह की

उस वर्ष गरमियों में छुट्टी मनाने रतन बाई भी दार्जीलिंग गयी । हिमालय के हिमाच्छादित पर्वत शिखरों के सामने देवदार और चीड़ के विशाल वृक्षों की छाया में और चारों ओर 'बगराये वसंत' के फूलों की सुगंध में जिन्ना और रती मिले । जिन्ना ४० के थे और रती १६ की । जिन्ना रती के सौंदर्य और बुद्धि से और रती जिन्ना के सुदर्शन व्यक्तित्व, पैने तर्कों और बौद्धिकता से आकृष्ट हुई । दोनों दिनशा पेटिट के विशाल बंगले में रहते कब एक-दूसरे के हो गये, पता भी नहीं चला ।

सरोजनी नायडू और जिन्ना

जिन्ना का पहला विवाह कानून की पढ़ाई के लिए इंगलैंड जाने से पहले सन् १८९२ में हुआ था । उस समय वह १६ वर्ष के और उनकी पत्नी एमी बाई १४ वर्ष की थी । जिन्ना के स्वदेश लौटने से पहले एमी बाई का निधन हो गया ।

कवयित्री सरोजनी नायडू जिन्ना की प्रशंसक और अंतरंग मित्र थीं । उनकी जिन्ना से पहली भेंट कलकत्ता कांग्रेस के दौरान हुई थी । उन दिनों उदीयमान वकील और राजनीतिज्ञ के रूप में सर्वत्र उनकी चर्चा थी । वह 'ओजस्वी देशप्रेम' की भावना से अनुप्राणित थे । सरोजनी नायडू उनके विलक्षण स्वरूप और 'दुर्लभ और जटिल मिजाज' पर तत्काल मोहित हो गयीं ।

'प्रेम धर्म' में आसक्त जिन्ना

जिन्ना देश के प्रतिष्ठित नेता और चोटी के वकील थे । उनकी फीस १५०० रु. रोज थी । वह और रती (रतन बाई) अलग-अलग धर्मों को मानते थे । लेकिन प्रेम धर्म की ऊंची दीवारों को गिरा देता है । उन्होंने रती के पिता सर दिनशा से एक सैद्धांतिक प्रश्न पूछा । "विभिन्न धर्मावलंबियों के बीच विवाहों पर आपकी क्या राय है ?" रती के पिता ने उत्तर दिया, "इससे राष्ट्रीय एकता की स्थापना में मदद मिलेगी और अंततः सांप्रदायिक विरोध की समाप्ति होगी ।" सर दिनशा का उत्तर सुनने के बाद जिन्ना ने उनसे रती का हाथ मांगा । जिन्ना की बात सुन सर दिनशा को जबरदस्त झटका लगा । उन्हें यह पता नहीं था कि उनके उत्तर से उन्हें ही घेरने का प्रयास किया जाएगा । उन्होंने इस प्रस्ताव पर विचार करने से इनकार कर दिया और इसे 'मूर्खतापूर्ण और ऊंट-पटांग' कहा ।

जिन्ना ने सर दिनशा को समझाना चाहा । उनसे बहस की, लेकिन दिनशा टस से मस नहीं हुए । उन्होंने रती को आदेश दिया कि वह कभी भी जिन्ना से न मिले । फिर उन्होंने अदालत से रती के बालिग होने तक विवाह को रोकने की आज्ञा प्राप्त कर ली । सर दिनशा को आशा थी कि कुछ समय बाद रती का मोह समाप्त हो जाएगा ।

जिन्ना से न मिलने के अपने पिता के आदेश से रती के प्रेम में कोई कमी नहीं आयी । बल्कि दोनों प्रेमियों का इरादा और पक्का हो गया । वे शांति से रती के बालिग होने का इंतजार करने

लगे ।

रती ने १८ वर्ष पूरे करते ही अपना घर छोड़ दिया । फिर उसने इसलाम कबूल कर लिया । जिन्ना और रती शुक्रवार १९ अप्रैल, १९१८ को विवाह सूत्र में बंध गये । रती के विवाह में उसके माता-पिता और कोई संबंधी शामिल नहीं हुए । उन्होंने उसे मरा मान लिया । नव दंपत्ति हनीमून के लिए नैनीताल गये ।

रती और जिन्ना का वैवाहिक जीवन लगभग एक दशक तक बढ़िया चला । इस बीच उन्होंने भारत में अनेक स्थानों और विश्व के अनेक देशों की यात्रा की । वे कुछ समय तक इंगलैंड में भी रहे, जहां रती ने अपनी एकमात्र पुत्री दीना को जन्म दिया । फिर उनके प्रेम की ऊष्मा शांत होने लगी ।

रती और जिन्ना का वैवाहिक जीवन लगभग एक दशक तक बढ़िया चला । इस बीच उन्होंने भारत में अनेक स्थानों और विश्व के अनेक देशों की यात्रा की । वे कुछ समय तक इंगलैंड में भी रहे, जहां रती ने अपनी एकमात्र पुत्री दीना को जन्म दिया । फिर उनके प्रेम की ऊष्मा शांत होने लगी ।

रती और दीना : एक-सी गति

रती सुख-शांति के लिए रहस्यवाद की ओर मुड़ी । वह दिवंगत आत्माओं, पितृ पूजन और विचार अंतरण में रुचि लेने लगी ।

रती २५ वर्ष की हो गयी थी । दीना छह वर्ष की थी । जिन्ना की व्यस्तता बढ़ती जा रही थी । दीना का अधिकांश समय स्कूल में और अपने मित्रों के साथ बीतता था । रती कुत्ते-बिल्लियों के साथ अपना समय गुजारती थी । रती को लगा उसका विवाह विफल हो गया है और वह जिन्ना से अलग हो गयी ।

रती ने बंबई के ताजमहल होटल में एक सूट किराये पर ले लिया । १० अप्रैल, १९२८ को वह अपनी मां के साथ पेरिस को रवाना हुई । लगभग इसी समय जिन्ना भी इंगलैंड के लिए रवाना हुए । पेरिस में रती गंभीर रूप से बीमार हो गयी । जब जिन्ना को, जो आयरलैंड में थे, इस बात का पता लगा, वह फौरन पेरिस गये । वहां उन्होंने रती के इलाज की सर्वोत्तम व्यवस्था की । रती ठीक हो गयी, लेकिन दोनों के बीच की दूरी कम नहीं हुई । वह अपने पति के साथ रहने नहीं गयी, बल्कि अपनी मां के साथ स्वदेश लौट गयी ।

ताजमहल होटल में अकेली रती

अगले वर्ष के शुरू में रती फिर गंभीर रूप से बीमार हो गयी । वह ताजमहल होटल के अपने सूट में शैया पर पड़ी रहती थी । जिन्ना रोज शाम को उनसे मिलने जाते थे । दोनों पुराने दिनों की तरह बातें करते । मित्रों को लगा उनके बीच की दूरी कम हो रही है ।

जिन्ना को केंद्रीय धारा सभा के अधिवेशन में भाग लेने के लिए दिल्ली जाना पड़ा । इस

बीच रती की हालत और बिगड़ गयी । एक दिन जिन्ना को अपने ससुर सर दिनशा का फोन मिला—रती के विवाह के बाद पहला—कि रती गंभीर रूप से बीमार है । वह दूसरे दिन सुबह की गाड़ी से बंबई को रवाना हो गये । उनके बंबई पहुंचने से पहले २० फरवरी, १९२९ को रती का स्वर्गवास हो गया ।

कब्रिस्तान में भावुक जिन्ना

बंबई पहुंचने पर जिन्ना को सीधे कब्रिस्तान ले जाया गया । जब रती के पार्थिव शरीर को कब्र में उतारने के बाद जिन्ना ने उस पर सबसे पहले मिट्टी डाली, तो वह बच्चों की तरह फूट-फूटकर रोने लगे । जिन्ना के सहायक मोहम्मद करीम चागला (बाद में केंद्रीय शिक्षा मंत्री) का कहना है कि मैंने केवल उस बार जिन्ना को मानवीय कमजोरियां प्रकट करते देखा ।

दीना का विद्रोह : दीना वाडिया बनी

जिन्ना की एकमात्र पुत्री दीना अपनी मां की तरह सुंदर और स्वतंत्र स्वभाव की थी । जब दीना ने एक पारसी से ईसाई हुए, नेविल वाडिया से विवाह करने का निश्चय किया, जिन्ना ने इस विवाह को रोकने की पूरी कोशिश की, ठीक उसी तरह जैसे सर दिनशा मानोकजी ने रती का विवाह रोकने की की थी ।

जिन्ना ने अपनी सामान्य रोबदार शैली में अपनी पुत्री से कहा, ''भारत में लाखों मुसलमान लड़के हैं और तुम उनमें से किसी को चुन सकती हो ।'' लेकिन जिन्ना की लड़की दीना उत्तर देने में अपने पिता से कम नहीं थी । उसने जिन्ना से पूछा, ''पिताजी, भारत में लाखों मुसलमान लड़कियां थीं । आपने उनमें से किसी के साथ विवाह क्यों नहीं किया ?''

जिन्ना ने विवाह के बाद कभी भी अपनी पुत्री से बात नहीं की । पिता-पुत्री में पत्र व्यवहार होता था, लेकिन जिन्ना दीना को सदैव श्रीमती वाडिया कहकर संबोधित करते थे । वे अपने मित्रों से कभी उसकी चर्चा नहीं करते थे । वह सदैव इस बात पर जोर देते थे कि उनके कोई ''पुत्री नहीं है ।''

दीना और नेविल वाडिया ने बंबई में अपनी गृहस्थी जमायी । उनके दो बच्चे हुए—एक पुत्र और एक पुत्री । इसके बाद उनका तलाक हो गया ।

नेविल वाडिया अब बांबे डाइंग नाम से प्रसिद्ध उद्योग समूह के अध्यक्ष थे । उन्होंने अपना कारोबार अपने पुत्र नुसली को सौंप दिया, जो अब वाडिया उद्योग समूह के प्रमुख हैं । जिन्ना के पौत्र नुसली वाडिया के दो पुत्र हैं नेविल की पुत्री अमरीका में मैनहैटन में रहती थी । जिन्ना का कोई प्रत्यक्ष वंशज पाकिस्तान में नहीं रहता । दीना केवल एक बार जिन्ना के अंतिम संस्कार में भाग लेने के लिए पाकिस्तान गयी थी ।

पाकिस्तान जाने के बाद भी जिन्ना का मन मुंबई और वहां स्थित अपने मकान के आसपास मंडराता रहता था । पाकिस्तान में भारत के उच्चायुक्त श्री प्रकाश से उन्होंने कहा था कि मेरा मुंबई का मकान मेरे दिल का टुकड़ा है । मैं नहीं चाहता हूं कि उसमें कोई ऐरा-गैरा आदमी रहे । उसे ठीक ढंग से रखा जाए । मैं किसी दिन वहां लौटना चाहता हूं ।

—२२ मैत्री एपार्टमेंट्स
ए/३ पश्चिम विहार
नयी दिल्ली

किसी बड़े रचनाकार को सबसे पहले उसे अपने समाज-देश में जाना जाता है। टॉलस्टाय तुर्गनेव, दॉस्तोयेवस्की, चेखोव, गोर्की, शेक्सपीयर, चार्ल्स डिकिन्स को कौन नहीं जानता। यह किसी से छिपा नहीं कि इनके अपने समाज-देश में इनकी कितनी गौरवपूर्ण स्थिति है। इन सब साहित्यकारों के स्मारक और संग्रहालय तो हैं ही, महत्तवपूर्ण चौराहों पर एवं नगरों की केंद्रीय जगहों पर मूर्तियां भी हैं। क्रांति के पूर्व एवं पश्चात भी रूसी समाज ने अपने साहित्यकारों की स्मृतियों को बहुत

साहित्यकार हैं कौन ? किस जगत के प्राणी !

● भानु प्रकाश पाठक

उत्साहपूर्वक सजोये रखा है। इस कार्य में वहां की जनता तन-मन-धन से लगी हुई है। यहा की सरकारें भी इस संबंध में बहुत जागरूक हैं और अपने देश में जन्मे लेखकों, कवियों एवं दार्शनिकों के विचारों का प्रचार-प्रसार संपूर्ण विश्व में करने के लिए निरंतर प्रयत्नशील हैं। दिल्ली में रवींद्र भवन के बाहरवाले हिस्से में रूसी कवि पुश्किन की एक सुंदर मूर्ति लगी हुई है। जब भी फिरोजशाह मार्ग से जाना होता है, तो यह मूर्ति ध्यान आकर्षित करती है। कुछ वर्षों पहले जब पुश्किन की द्वि-शतवार्षिकी मनायी जाती थी, तब यह मूर्ति रूस से मंगवायी गयी थी। पुश्किन, टॉलस्टाय, चेखोव, गोर्की आदि विश्वविख्यात साहित्यकार हैं। ये साहित्यकार रूस के तो हैं ही संपूर्ण विश्व के भी हैं।

ये बातें यहां इसलिए याद आयी हैं कि कुछ वर्षों से ये समाचार प्रकाशित होते रहे हैं कि भारतेंदु, प्रेमचंद, प्रसाद, द्विवेदी और निराला, अज्ञेय— जैसे उत्कृष्ट साहित्यकारों के स्मारक एवं मूर्तियां दयनीय स्थित में है। कहीं इनके मकान खंडहर होते जा रहे हैं, कहीं इनके स्मारकों की खोज-खबर लेनेवाला कोई नहीं है, कहीं मूर्ति लगाने का शिलान्यास किया जा चुका है, परंतु मूर्ति नहीं लगी है, कहीं मूर्ति लग भी गयी है, तो इसके रख-रखाव की चिंता किसी को नहीं है।

निराला का पता कहां है ?

सर्वप्रथम निराला के गांव गढ़ाकोला (उन्नाव) को चर्चा का विषय बनाया जाए। जब हम लोग (परिवार के लोग) ७२ के आसपास गढ़ाकोला गये थे, तब यह देखकर मन दुःख से भर उठा कि निराला की स्मृति को स्वयं उनके गांव में ही जीवित रखने के जो सरकारी या गैर-सरकारी प्रयास शुरू हुए थे, वे सभी आधे-अधूरे पड़े थे। बाद के सालों में क्या हुआ, इसकी जानकारी नहीं है। पर हां, ऐसा कुछ नहीं हुआ कि गढ़ाकोला साहित्य प्रेमियों के एक तीर्थ के रूप में विकसित हो

सके । उन्नाव-रायबरेली विकास के पथ पर भले ही अग्रसर हों पर इस दिशा में लगता नहीं कि कुछ विशेष हुआ है । अगर हुआ होता, तो कुछ तो पता चलता ही । इलाहाबाद में निराला की प्रतिमा भी उदासीनता का प्रमाण है ।

प्रेमचंद का गांव कैसा है ?

कलम के सिपाही मुंशी प्रेमचंद की जन्मभूमि ग्राम लमही (वाराणसी) भी अपनी दुर्दशा पर आसू बहा रहा है । वहां न कायदे का कोई पुस्तकालय है और न कोई संग्रहालय, जहां प्रेमचंद के द्वारा लिखित एवं उनके ऊपर लिखी गयी सामग्री उपलब्ध हो सके ।

जयशंकर प्रसाद —जैसी विभूति का जन्म स्थान घोर उपेक्षा का शिकार हो रहा है । तंबाकू का पुश्तैनी व्यवसाय करने के कारण इनका परिवार सुंघनी साहू के परिवार के रूप में प्रसिद्ध था, क्योंकि तंबाकू का एक नाम सुंघनी भी है । साहित्य प्रेमी पिता श्री देवी प्रसाद की प्रेरणा से जयशंकर प्रसाद ने ९ वर्ष की आयु में अपनी पहली कविता लिखी । प्रसादजी सदैव विपत्तियों से संघर्ष करते रहे । माता-पिता, भाई, पत्नी और पुत्रियों की मृत्यु के अलावा व्यवसाय में घाटे ने जैसे प्रसादजी को भीतर तक तोड़कर रख दिया, पर इस कालजयी साहित्यकार ने

प्रसादजी का स्मारक बनाने की योजनाएं सिर्फ फाइलों और आश्वासनों तक ही सीमित हैं । प्रसादजी ने जिस घर में जन्म लिया था, वह घर धीरे-धीरे खंडहर होता जा रहा है । इस महत्त्वपूर्ण घर को बचाने के लिए कुछ भी नहीं किया जा रहा है । प्रसादजी ने अपने संघर्षों से उपजी पीड़ा को एक सृजन का रूप देकर उसे अमूल्य कृतियों के तौर पर सुरक्षित कर दिया, पर एक हम हैं कि उनकी स्मृतियों को सुरक्षित करने के लिए कुछ नहीं कर रहे हैं ।

वाराणसी में गोवर्धन सराय महल्ले में सन् १८८९ में जन्मे महाकवि जयशंकर प्रसाद के संबंध में सरकारी तंत्र तो उदासीन है ही, लेखक समुदाय मौन साधे हुए है । क्या उनके बारे में यह कहने की जरूरत होनी चाहिए कि जयशंकर प्रसाद हिंदी साहित्य के इतिहास पुरुष हैं और उनके जन्म स्थान की अस्मिता को बचाये रखने की जरूरत है । खेद तो यही है कि काशी, हिंदी साहित्य और भारत के गौरव महाकवि जयशंकर प्रसाद का जन्म स्थान ध्वस्त हो रहा है । प्रसाद के जन्म स्थान से संबंधित सभी योजनाएं और आश्वासन धूल चाट रहे हैं । यह हिंदी के प्रति हमारी उदासीनता का ही परिचायक है कि

बहुत-सी कविताओं, नाटकों, कहानियों, उपन्यासों और निबंधों का सृजन किया । 'कामायनी' —जैसे विश्व प्रसिद्ध महाकाव्य को भी प्रसादजी ने इसी संघर्षकाल में लिखा । काशी के लिए यह गौरव की बात है कि जयशंकर प्रसाद —जैसे महान रचनाकार ने यहां जन्म लिया । लेकिन इनकी स्मृति के लिए जो कुछ होना चाहिए था, उसका दसवां हिस्सा भी नहीं किया गया । प्रसादजी के इकलौते पुत्र रत्नशंकर प्रसाद भी अपने विद्वान पिता की घोर उपेक्षा से मर्माहत हैं । रत्नशंकर प्रसाद के छह पुत्रों में से सबसे छोटे पुत्र महाशंकर प्रसाद यह बताते हुए रोने लगे कि उनके दादा जयशंकर

प्रसाद की स्मृतियों को सुरक्षित रखने की सारी योजनाएं राजनीति की शिकार होकर रह गयी हैं । रत्नशंकर प्रसाद के सभी पुत्र आज भी तंबाकू का व्यवसाय कर रहे हैं ।

जयशंकर प्रसाद.... दूकान अब भी चलती है क्या ?

जयशंकर प्रसाद के जन्म स्थान के उद्धार के लिए प्रयास न हुए हों, ऐसी बात भी नहीं है । इसके लिए बहुत पहले एक न्यास बना था । पिछले दस वर्षों में कई योजनाएं बनीं, परंतु सब फाइलों में दबकर रह गयीं । दस वर्ष पहले जब श्री नारायण दत्त तिवारी उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री थे, तब शासन के पास 'प्रसाद स्मारक' की योजना भेजी गयी थी । नारायण दत्त तिवारी जब दूसरी बार प्रदेश के मुख्यमंत्री बने, तब पुनः उन्हें प्रसाद स्मारक की याद दिलाते हुए फिर से योजना का प्रारूप शासन के पास भेजा गया परंतु इस संबंध में क्या हुआ, आज तक पता नहीं चला । गोवर्धन सराय में जहां प्रसादजी का जन्म हुआ था, आज भी पौन एकड़ भूमि खाली पड़ी है । इस भूमि को 'प्रसाद स्मारक' के लिए ही खाली रखा है । प्रस्तावित प्रसाद स्मारक में प्रसादजी की मूर्ति, एक सभागार, पुस्तकाल्य और अतिथि गृह का निर्माण करने की योजना है । रत्नशंकरजी कहते हैं कि केवल मूर्ति स्थापित कर देने से ही स्मारक का उद्देश्य पूरा नहीं होगा, बल्कि ऐसा कुछ कार्य होना चाहिए, जिससे भावी पीढ़ियों का भी भला हो सके । आठ वर्ष पूर्व वाराणसी के जिलाधिकारी ने प्रदेश के मुख्यमंत्री को लिखा था कि प्रसादजी के जन्म स्थान के निर्माण की आवश्यकता है, पर उस सुझाव का भी आज तक पता न चल सका । उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान ने भी इसके लिए प्रयास किये हैं । बहुत पहले इस संस्थान द्वारा एक लाख बीस हजार रुपये की मूर्ति बनाने का आदेश दिया गया था, परंतु वह मूर्ति कौन बना रहा है, आज तक पता नहीं चला । वाराणसी के तत्कालीन आयुक्त राजीव रंजन ने घोषणा की कि 'प्रसाद प्रासाद' का निर्माण होगा ।

प्रसादजी का स्मारक बनाने की योजनाएं सिर्फ फाइलों और आश्वासनों तक ही सीमित हैं । प्रसादजी ने जिस घर में जन्म लिया था, वह घर धीरे-धीरे खंडहर होता जा रहा है । इस महत्त्वपूर्ण घर को बचाने के लिए कुछ भी नहीं किया जा रहा है । प्रसादजी ने अपने संघर्षों से उपजी पीड़ा को एक सृजन का रूप देकर उसे अमूल्य कृतियों के तौर पर सुरक्षित कर दिया, पर एक हम हैं कि उनकी स्मृतियों को सुरक्षित करने के लिए कुछ नहीं कर रहे हैं । काशी और देश के अन्य हिस्सों के हिंदी साहित्यकारों की भी चुप्पी चिंताजनक है ।

अब लगता है यह सारी दुर्दशा हमारी सामाजिक- राजनीतिक- सांस्कृतिक सोच की स्वाभाविक परिणति है । हम हर क्षेत्र में आज विदेशियों की नकल कर रहे हैं । पर क्या विदेशों में जो सम्मान दिया जाता है, उनकी स्मृति को सुरक्षित रखने के जो प्रयास किये जाते हैं, उनकी भी नकल कर सकेंगे ? ध्यान देनेवाली बात यह भी है कि किसी साहित्यकार की स्मृति में हम ऐसा कोई केंद्र या स्मारक नहीं बना सके, जिसकी कोई साहित्यिक-सामाजिक उपादेयता हो । अब प्रश्न यह उठता है कि हम स्मारक क्यों बनाना चाहते हैं ?

राजनेता जब जीवित रहते अपने स्मारक बनवा रहे हैं, तो साहित्यकार हैं कौन ? किस जगत के प्राणी ?

— ६८-६९, लकड़ी हट्टा, देवरिया, (उ.प्र.)-२७४००१

चित्रकूट के घाट पर

• जगदीश प्रसाद साहनी



चित्रकूट के पहले इस क्षेत्र का नाम ब्रह्मपुरी जाना जाता था । सृष्टि के पूर्व ब्रह्मा ने इस भूखंड को स्वर्ग खंड के रूप में प्रतिष्ठित किया था, इससे इसका नाम ब्रह्मपुरी कहा गया । महाकवि कालिदास ने चित्रकूट को रामगिरि कहा है । सन् ५२५ ई० में यह क्षेत्र गुप्त साम्राज्य के अधीन रहा । सम्राट् हर्षवर्द्धन ने अपने शासनकाल में इस क्षेत्र में धार्मिक विकास किया । इसके बाद चंदेल राजाओं ने चित्रकूट को अपने राज्य में शामिल कर लिया । तेरहवीं शताब्दी में यह क्षेत्र बघेलों के अधीनस्थ हो गया । रीवां के राजा ने १५५९ ई० में अकबर की दासता स्वीकार कर ली , तब से यह क्षेत्र बादशाह औरंगजेब के शासनकाल तक मुगल साम्राज्य में रहा ।

धार्मिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण

चित्रकूट धार्मिक दृष्टि से काफी महत्त्वपूर्ण है । वनवास के समय यहां भगवान रामचंद्र ने

लक्ष्मण एवं सीता सहित गुप्त गोदावरी गुफा में अपना वासस्थल बनाया था । कहा जाता है कि भगवान राम के ठहरने हेतु विश्वकर्मा ने गुप्त गोदावरी गुफा बनायी थी । गुफा की बनावट आश्चर्यजनक है । गुंबद की तरह उठा हुआ पहाड़ बिना किसी आधार के रुका है । बीच में एक पत्थर की शिला लटक रही है । दूसरी ओर सकरी गुफा, जो काफी लंबी है, उसमें लगभग तीन फुट गहरे पानी से होकर गुजरना पड़ता है । यह पानी गुप्त गोदावरी नदी की गुप्त धारा के रूप में प्रवाहित माना जाता है । महाकवि तुलसीदास ने कहा है कि भगवान श्रीराम चित्रकूट में सदैव वास करते हैं :—

चित्रकूट सब दिन बसत, प्रभु सिय लखन समेत ।
राम नाम जप जापकहिं, तुलसी अभिमत देत ।।

मंदाकिनी के तट पर बसे चित्रकूट ने भगवान राम एवं भरत का मिलाप देखा है । यहीं पर वह कूप है, जहां भरत ने अपने बड़े भाई राम के राज्याभिषेक के लिए सभी तीर्थों का जल एकत्र किया था, उसे भरत कूप के नाम से जाना जाता है । रामचरितमानस में उस कूप का उल्लेख इस प्रकार मिलता है :

अत्रि कहेउ तब भरत सन, सैल समीप सुकूप ।
रखिये तीरथ तोय तहं, अति पावन अमल अनूप ।।
भरत कूप अब कहिहहिं लोगा, अति पावन तीरथ जल जोगा ।
प्रेम सनेम निमज्जत प्रानी, होइहंहि विमल करम मन बानी ।।

चित्रकूट में महर्षि बाल्मीकि ने तपो साधना की । उन्होंने रामायण में चित्रकूट का वर्णन बहुत ही व्यापक किया है ।

चित्रकूट के पहले इस क्षेत्र का नाम ब्रह्मपुरी जाना जाता था । सृष्टि के पूर्व ब्रह्मा ने इस भूखंड को स्वर्ग खंड के रूप में प्रतिष्ठित किया था, इससे इसका नाम ब्रह्मपुरी कहा गया । महाकवि कालिदास ने चित्रकूट को रामगिरि कहा है ।

पापों को धोनेवाली नदी

मैंने देखा है कि मंदाकिनी गंगा की धारा में लोग ज्योतिदीप प्रवाहित कर रहे हैं । पापों को धोनेवाली मंदाकिनी नदी के चित्रकूट घाट पर कभी महाकवि तुलसीदास राम चर्चा व सत्संग करते थे । कहा भी है :

चित्रकूट के घाट पर भई, संतन की भीर ।
तुलसीदास चंदन घिसैं, तिलक देत रघुबीर ।।

बालाजी मंदिर का भोग औरंगजेब के शाही कोष से लगता था

चित्रकूट में ही एक मंदिर बालाजी का है । ऐतिहासिक दृष्टि से यह मंदिर चर्चा का विषय अवश्य है । इस मंदिर के महंत नारायण दास से मैंने मुलाकात की । उस समय मेरे साथ कई और लोग भी थे । मंदिर के महंत ने बताया कि

बालाजी मंदिर का निर्माण औरंगजेब ने करवाया था तथा मंदिर के भोग के लिए एक रुपया प्रति दिन के हिसाब से शाही कोष से मिलता था । मंदिर व्यवस्था के लिए ३३० बीघा जमान तथा आठ गांव दिये जाने संबंधी शाही फरमान जारी किया गया था । जिसकी प्रति अब भी महंत के पास है ।

महंत का कहना है कि सन् १६८३ ई० में औरंगजेब ने चित्रकूट की यात्रा की थी । यात्रा के दौरान साथ के लोगों द्वारा अनेक प्रतिमाएं खंडित की गयीं । जब लश्कर के लोगों ने बालाजी की मूर्ति तोड़नी चाही, तभी दैवी चमत्कार यह हुआ कि बिजली चमकी जिससे बादशाह सहित अन्य लोग मूर्च्छित हो गये । आलमगीर औरंगजेब को जब होश आया, तब उसने बालाजी की मूर्ति की पूरी जानकारी ली । उस मूर्ति को बाबा बालक दास तिरुपति से लाये थे, जिसे चित्रकूट में बरगद वृक्ष के नीचे रखकर वह तपस्या करने लगे थे । लोगों ने उस मूर्ति-स्थल पर एक छोटा-सा मंदिर बनवा दिया था ।

आलमगीर ने बाबा बालकदास से भेंट कर उनके आध्यात्मिक प्रभाव से प्रसन्न होकर बालाजी मंदिर के लिए ८ गांव एवं ३३० बीघा भूमि दी । मैंने उस मंदिर को देखा है । मंदिर काफी खूबसूरत और विशाल है, जिससे सहज ही अंदाज लग जाता है कि यह मंदिर साधारण व्यक्ति द्वारा निर्मित नहीं है, लेकिन शाही फरमान में आलमगीर औरंगजेब द्वारा मंदिर निर्माण करने संबंधी उल्लेख नहीं है । वर्तमान महंत नारायण दास ने शाही फरमान होने की बात कही, जिसमें बालाजी मंदिर से संबंधित अभिलेख हैं ।

मंदिर की भूमि पर अब मुकदमे

औरंगजेब के समकालीन बुंदेला नरेश महाराजा छत्रसाल ने सन् १६८८ ई० में पन्ना (म.प्र.) अपनी राजधानी बनायी, तब उनका ध्यान चित्रकूट की ओर गया । उन्होंने एक ताम्रपत्र पर बालाजी मंदिर को औरंगजेब द्वारा दी गयी सुविधाओं को अंकित कराकर अपनी सहमति व्यक्त की थी । अंगरेजों के समय में भी बालाजी मंदिर को दी गयी ३३० बीघा जमीन का अभिलेख राजस्व आंकड़े में अंकित किया गया तथा वे अभिलेख मंदिर के महंत के नाम रहे, लेकिन आजादी के बाद जमींदारी उन्मूलन के तहत वह सभी भूमि जब्त कर ली गयी, जो बालाजी मंदिर के महंत को औरंगजेब ने मंदिर व्यवस्था के लिए दी थी ।

महंत नारायण दास ने बताया कि मंदिर के नाम जो अन्य भूमि है, उस पर भी मुकदमे चल रहे हैं । नारायणदास इस समय मंदिर के ग्यारहवें महंत हैं । चित्रकूट से कामदगिरि तक महाराजा छत्रसाल की महारानी चन्द्र कुंवरि ने पक्का मार्ग बनवाया था । छत्रसाल द्वारा बनवाये गये अनेक मंदिर एवं मठ आज भी हैं । चित्रकूट, उत्तर प्रदेश तथा मध्य प्रदेश दोनों में सम्मिलित होने से इसका कुछ भाग जिला सतना (म.प्र.) और कुछ भाग जिला बांदा (उत्तर प्रदेश) में सम्मिलित है । यहां के दर्शनीय स्थल हैं— रामघाट, कामद गिरि पर्वत, रामशैय्या, हनुमान धारा, गणेशबाग, कोटितीर्थ तथा बाल्मीक आश्रम ।

—साहनी निकेतन, मलिहाबाद
लखनऊ (उ.प्र.)

राजनीति के चाक पर बैठी हर मक्खी महान है !

• रतन लाल जोशी

धरती मोटी होती जा रही है और चांद दुबला होता जा रहा है । एक दिन ऐसा आनेवाला है, जब चांद इसी प्रकार कण-कण बिखर कर समाप्त हो जाएगा । तब सवाल धरती का आएगा कि चांद का बोझ वह सह सकेगी या नहीं ? यदि वह न सह सकी, तो वह भी कहीं गिरेगी ? पता नहीं कौन-सा ग्रह उसके बोझ को अपने ऊपर ढो सकेगा और अगर वह सूरज पर जाकर गिरी तो फिर न तो सूरज की खैर है और न धरती की ही । यदि ऐसी अशुभ घड़ी आ गयी, तो आस्तिकों को अपने ईश्वर को परखने का मौका मिल जाएगा और नास्तिकों को शायद अपने लिए ईश्वर के निर्माण करने का ।

पेरिस की एक पत्रिका में इस किस्म की खबर छपी है । खबर वैज्ञानिक अन्वेषणों के आधार पर है और रिपोर्टर ने उसे साहित्यिक रमात्मकता देकर पाठकों के हृदय को छूने की कोशिश की है । फ्रांस के ही एक प्रख्यात कवि पाल जिम्तो की एक कविता है — धरती और चांद को लेकर । उसमें राजनीति का खासा चित्रण है ।

राजनीति और राजनेताओं की चर्चा इस सदी में जितने माध्यमों से हुई है उतने माध्यमों से पहले कभी नहीं हुई । इमर्सन कहता है कि राजनेता एक ऐसा वृक्ष है, जो लोभ में दूसरों के द्वारा सींचा जाता है कि वह फलवान होने पर उन्हें फल देगा । आखिर, होता यह है कि वह तो गगनचुम्बी हो जाता है, लेकिन फल के लिए मीठे इंतजार के सिवाय लोगों को कुछ नहीं मिलता ।

डाग हैमरशोल्ड ने लिखा है कि राजनीति नजर तो आती है, अपनी हिलोरों में इठलाती और लाखों की प्यास बुझाने का विश्वास दिलाती विशाल नदी, किंतु जिसने उस पर आशा लगायी या कोई अपेक्षा रखी, उसे अंत में मृग-मरीचिका ही नसीब हुई है ।

हैनरिख हाइने ने अपनी मातृभूमि (जरमन) के वैभव को राजनीति की वेदी पर बलि चढ़ते देखकर आहत हृदय से कहा था— 'नदी के भ्रम में हम अपनी प्यास मृग-मरीचिका के किनारे बुझाने की मूर्खता करने जा रहे हैं ।'

महाकवि 'मीर' ने भी प्रपंचपूर्ण प्रवृत्तियों से लबालब जगत के लिए इसी प्रकार के विचार व्यक्त किये हैं—

कुछ नहीं बहरे जहां की, मौज पर मत भूल 'मीर',
दूर से दरिया नजर आता है, लेकिन है सराब ।

— रे भोले मीर, तू इस संसार-रूपी नदी के भ्रम में मत पड़ । यह तो मृग-मरीचिका है । इसमें तुझे जो लहरें उठती नजर आ रही हैं, वह

तू पास से जब देखेगा, तो तुझे अपनी भूल का ज्ञान होगा । वहां पानी कहां है ? चारों तरफ रेत और धूल ही है ।

कुम्हार चाक पर

राजनीति और राजनेता के समय को राजगोपालाचारी ने कुम्हार के चाक और इस पर बैठी मक्खी के संबंध के रूप में इस प्रकार कहा है कि विधातारूपी कुम्हार अपने कई चाक चलाता है, उसमें एक चाक राजनीति का भी है । जमीन से उड़कर एक मक्खी उस चाक पर बैठ जाती है । चाक चलता है । मक्खी गर्व से फूली नहीं समाती कि कितनी ताकत है उसमें, जो चाक भी उसकी स्फूर्ति से घूम रहा है । राजनीति के चाक पर यही स्थिति राजनेता की होती है । मक्खियां आती और बैठती जाती हैं, चाक अपनी गति से चलता रहता है । राजनेता अपने को धन्य समझता है कि दुनिया का चक्र उसके ही चलाने पर चल रहा है । राजनीति ही क्यों, दुनिया के हर चाक पर बैठी मक्खी के बारे में भ्रम की यही कहानी है ।

राजनेता की शपथों और संकल्पों की रंगीनियों में फंसने के बाद हम अपनी बौखलाहट को काबू में नहीं रख सकते । उर्दू कवि 'नसीम' ने भी सौंदर्य के आकर्षण में फंसे व्यक्ति के भ्रम पर लिखा है—

'थे महवे जुल्फ दीद-ए-तर-दिल भी आ फंसा,
मछली को क्या खबर थी कि पानी में शिस्त है'

— अपनी प्रियतम की अलकें आंखों को तर करनेवाली थीं, मगर आंख के साथ दिल भी उनके जाल में जा फंसा । आखिर, हालत उस मछली-जैसी ही हुई, जिसने कांटे में लगे मांस के लोभ में अपने को भी कांटे के हवाले कर दिया ।

संस्कृत में भी कहा है कि जिसने कामना को जीत लिया, विशेष रूप से काम को जीत लिया और जीभ रस जीत लिया, उसने संसार में सब कुछ जीत लिया—

'कामे जिते जितं सर्व, जितं सर्व जिते रसे'

जरमनी के भूतपूर्व चांसलर एडनावर ने अपनी राजनीतिक जीवनी लिखी है । राजनीतिक जीवन में जो यश मिलता है, उसे वह उस यश के सामने कतई व्यर्थ मानते हैं, जो मानवीय आचरण के फलस्वरूप लोगों को प्राप्त होता है । वह कहते हैं कि राजनीतिक जीवन के रस को अगर मानव-सौहार्द के रस में नहीं ढालेंगे, तो यह मुलम्मा ज्यादा दिन चलने का नहीं और साथ ही जब कलई खुलेगी, तो तुम्हारे खाते में जो मानव-सौहार्द की जमापूंजी होगी,

राजनीति और राजनेताओं की चर्चा इस सदी में जितने माध्यमों से हुई है उतने माध्यमों से पहले कभी नहीं हुई । इमर्सन कहता है कि राजनेता एक ऐसा वृष है, जो लोभ में दूसरों के द्वारा सींचा जाता है कि वह फलवान होने पर उन्हें फल देगा । आखिर, होता यह है कि वह तो गगनचुम्बी हो जाता है, लेकिन फल के लिए मीठे इंतजार के सिवाय लोगों को कुछ नहीं मिलता ।

वह भी बट्टे खाते चली जाएगी ।

यश भी भटक जाता है

फ्रांस के भूतपूर्व राष्ट्रपति द गाल की धारणा भी इसी प्रकार की है । वह कहते हैं कि यश भी भटक जाता है । कभी कभी मानवीय प्रतिष्ठा के प्रसंग नजर नहीं आते, तो यश कूटनीतिज्ञों-राजनीतिज्ञों के माथे पर जाकर बैठ जाता है । बस, दुनिया उन्हें पूजने को दौड़ पड़ती है ।

पंडित नेहरू ने भी कहा है कि प्रतिष्ठारूपी पक्षी अकसर गलत डाल पर जाकर बैठ जाता है, लेकिन हो सकता है कि वह चारों तरफ से ग्लानि ग्रस्त होकर बैठता हो या उचित 'रैनबसेरा' नहीं मिलने पर अथवा कोई भारी मानसिक चोट खाने पर जिंदगी उसे बोझ मालूम पड़ने लगी हो ।

इन हीरों में तोलने योग्य मनन-कणों के सामीप्य को पाकर भला पंडितराज जगन्नाथ की रसभरी अन्योक्तियों का स्मरण कैसे रोका जा सकता है, पंडितराज की एक अन्योक्ति है :

किंशुक मा कुरु गर्वं तव शिरसि भ्रमरोपवेशनेन,
अमल कमल विप्रयोगादन— लधिया त्वयि
मज्जति— द्विरेफ :

— हे टेसू के फूल, तू यह सोचकर मत इतरा कि तेरे ऊपर भंवरा आकर मंडराने लगा है । सच बात तो यह है कि जब भंवरे को कमल नहीं मिले, तो वियोग के दुःख से दुःखी वह अपने को जलाने के लिए आग के भ्रम से तेरे ऊपर बैठने आ रहा है । तेरा रंग आग की तरह लाल जो है न ।

प्यास किसे सताती है !

लाओत्जे कहता है कि कामना की माया हमें बहुरूपिया की तरह नचाती है, मगर क्या इस नाच में हमें आनंद नहीं आता ? रही बात निराशा की, तो पानी में भी मछलियां रहती है । 'नसीम' का भी एक शेर है, जो ऐसे ही एक रहस्योद्घाटन की तरफ इंगित करता है :

सदफ-ओ-अब्रे-गुहरबार, को देखा तो खुला;
आलमे आब में भी, होते हैं प्यासे पैदा !

— पानी में पैदा हुई सीपियों को देखा, तो मेरे मानस-नेत्रों के सामने यह रहस्य खुला कि भरपूर 'पानी' में रहनेवालों को भी प्यास सताती है । प्रसिद्ध है कि स्वातिनक्षत्र के जल के बिना सीपियों में मोती नहीं पड़ते ।

— १२, फिरोज गांधी मार्ग,
लाजपत नगर-३, नयी दिल्ली-११००२४

अनोखा बैंक

यदि आपसे किसी ऐसे बैंक का जिक्र किया जाए, जहां से अस्थि-मज्जा (बोन मेरो) प्राप्त किया जा सके, तो आप चौंकिए नहीं । यह अनोखा बैंक लंदन में खोला गया है । अस्थि-मज्जा की मांग करते ही आवश्यक मेडिकल परीक्षण कर, उसे मांगनेवालों को तुरंत उपलब्ध करा दिया जाएगा । इससे कैंसर पीड़ितों को तथा खासकर ब्लड कैंसर के मरीजों को सबसे ज्यादा फायदा मिलेगा । लंदन में खुलनेवाले इस अस्थि-मज्जा बैंक का फायदा दूसरे देशों को भी मिलनेवाला है । क्योंकि ब्रिटेन का 'ल्यूकेमिया रिसर्च फाउंडेशन फंड' अब ऐसे ही ६० बैंक विकासशील तथा अविकसित देशों में खोलने जा रहा है ।

● अनुराधा श्रीवास्तव

भटक गया मेघ



मैं सदियों से
घोषित मरुस्थल हूं,
प्रीति के सरोवर में
डूबा आकंठ—
भटक गया कैसे
यह मेघ !

यह
रस में डूबा
टुकड़ा बादल का
कैसे
इस मरुस्थल में
आ गया,
आते ही
आखिर कैसे यह
मेरे मन के—
आसमान पर
पूरा छा गया !

मैं सदियों से
सोयी हलचल हूं,
गीत के सरोवर में
डूबा आकंठ—
भटक गया कैसे
यह मेघ !

कितने ही युग से
खामोश पड़ा हूं,
चहल-पहल
मुझमें
होती नहीं,

प्राणों की धरती
उर्वर है—
लेकिन,
प्रकृति—
बीज मुझमें
बोती नहीं !

मैं तो
सदियों से अस्ताचल हूं,
जीत के सरोवर में
डूबा आकंठ—
भटक गया
कैसे यह मेघ !

— उद्भ्रांत
उपनिदेशक,
दूरदर्शन केंद्र (दिल्ली)
आकाशवाणी भवन
संसद मार्ग, नयी दिल्ली

मेरा देश

● किम यांग शिक

मेरे देश
तुम एक गांठ हो लहसुन की
बढ़ाती हुई मजा, चटपटा, मेरी आत्मा का,
मेरा जंगली प्याज ।
मेरे देश
तुम हो लाल मिर्चें भी
बिछीं
चटाई पर ।
मेरे देश
तुम सोया हो
अदृश्य होते नमक के साथ—
पीढ़ियों से सुरक्षित
एक मिट्टी के बरतन में ।
ओह ! मेरे देश
तुम धरती हो ।
मिल जाएंगी मेरी अस्थियां
तुम्हारी मिट्टी में ।

अनुवाद : दिविक रमेश
भारतीय राजदूतावास 'सिओल, दक्षिण कोरिया, द्वारा
डिप्लोमेटिक बैग, विदेश मंत्रालय, साउथ ब्लॉक,
नयी दिल्ली-११००११

गीत

फिर आयी बरसात रे !

रिमझिम-रिमझिम बूंदा बरसै
घन-घन-घन-घन मेघा गरजै
फिर आयी बरसात रे !

किसी के दिल से उठै आंधी
किसी के दिल पे गाजै बिजली
फिर आयी बरसात रे !

हरियाला सावन जब आवै
क्यारी-क्यारी झूम के गावै
सखी-सखी से करै ठिठोली
बरसै गीतों की फुहार रे !

साजन बिन सब लागै सूना
पाती को तरसे दो नैना
तड़प उठै आकुल-व्याकुल मन
जब कोई गाये मल्हार रे !

पायल की रुनझुन पे नाचै
हाथ-हाथ मेंहदी से राचै
सजनी के जूड़े में आवै
फूलों की बहार रे !

धड़क-धड़क दिल उसका धड़के
ज्यूं-ज्यूं आंचल अंग से सरके
अंग-अंग में मस्ती जागै
जब आवे मधुमास रे !

—पुरुषोत्तम 'प्रशांत'
१४-७-२६२, चूड़ी बाजार,
हैदराबाद-५०००१२



[illegible]

न फूलों की चाहत है न शूलों से मुहब्बत है
मैं तो साजिंदा हूं गमों की वसूलों से उलफत है

ऊंचाई मिले इतनी कि छू लें बादलों की परत है
नील नभ प्रकृति का चूमे होंठ यही शिफ़्त है
उतार के अंतस में अपनेपन की राहत है
हमारे बागवां ने न बोये कोई बीज नफरत है
न फूलों की चाहत है न शूलों से मुहब्बत है

विष पीकर अमृत बांटने की हसरत है
कैक्टस पर गुलाब उगाने की चाहत है
जीवन सत्यं-शिवं-सुंदरं की अमानत है
नील कंठ करते नहीं विषघट से अदावत है
न फूलों की चाहत है न शूलों से मुहब्बत है

फरेबी फरेब सच से भेदने की आदत है
विश्वास के काफिले में चलने की हालत है
चौराहों पर बंजारों के बुत की इबादत है
हर सन्नाटे पर एक शोर की मध्यम आहट है
मैं तो साजिंदा हूं गमों की वसूलों से उलफत है

—डॉ. अहिल्या मिश्र
९३/सी. राज सदन
वेंगलराव नगर, हैदराबाद



सार-संक्षेप

विश्व बाहु परशुराम

● डॉ. विश्वम्भरनाथ उपाध्याय

'विश्व बाहु परशुराम' उपन्यास का आरंभ, नर्मदा तट पर जमदग्नि आश्रम के एक ब्रह्मचारी या शिष्य मेधावी के साथ होता है, जिसकी बहन कुमारी चन्द्रकलावती का अपहरण, कार्त्तवीर्य अर्जुन ने कराया था। वहां नर्मदा तट पर अपनी बहन के अपमान से क्षुब्ध मेधावी आत्महत्या के सिवा कोई विकल्प न पाकर दुःखदग्ध घूम रहा था। वहीं उसकी भेंट ऋषि प्रचेता से होती है। (उपन्यास, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली से शीघ्र प्रकाश्य)।

प्रचेता, मेधावी को समझा-बुझाकर माहिष्मती ले जाते हैं और चन्द्रकला की मुक्ति के लिए राजा अर्जुन के कुलपुरोहित दिव्यधर के भ्राता आचार्य चक्रधर से मिलवाते हैं । चक्रधर चन्द्रकला की मुक्ति के लिए प्रयत्नरत होते हैं ।

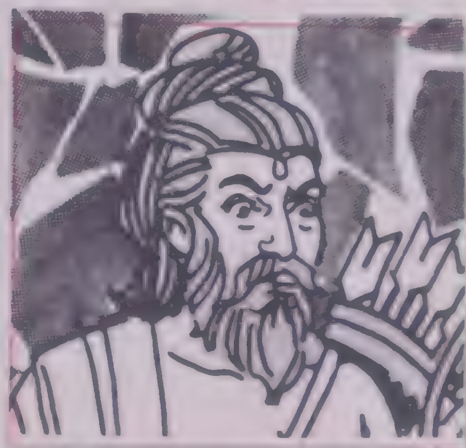
उधर राजा सहस्त्रबाहु अर्जुन श्रीलंका के राक्षसराज को युद्ध में पराजित करता है । पराजित श्रीलंका का राजा, अपने सचिव, विद्याधर को माहिष्मती भेजता है, ताकि वह राजा अर्जुन की मति भ्रष्ट कर उसे कुमार्ग पर चलाये । विद्याधर के प्रभाव में राजा अर्जुन अत्याचारी और व्यभिचारी हो जाता है ।

प्रजा पीड़न के अतिरिक्त अर्जुन नगरों और ग्रामों से सुंदर किशोरियों का अपहरण कराता है और विलास में डूब जाता है । पुनः उन कन्याओं को मार कर वह श्मशान में गड़वा देता है ।

उधर जमदग्नि आश्रम में रेणुका पर उसके पति जमदग्नि कुपित होकर उसके वध की आज्ञा देते हैं, किंतु परशुराम के चार बड़े भाई, रूमण्ववान्, सुषेण, वसु और विश्वावसु माता को मात्र संदेह के आधार पर मारने से मना कर देते हैं । तब परशुराम को वह मातृवध की आज्ञा देते हैं । परशुराम मारने का दिखावा करते हैं, तो पिता प्रसन्न होकर राम को वरदान देते हैं ।

उधर माहिष्मती में चन्द्रकला राजा अर्जुन के बलात्कार से बचने के लिए आत्महत्या का प्रयत्न करती है । अतः उसे चिकित्सा के लिए राजवैद्य के यहां भेजा जाता है, जहां से आचार्य चक्रधर के आदेश पर, उनके शिष्य चन्द्रकलावती को चुपचाप छुड़ा लाते हैं और जमदग्नि आश्रम पहुंचा देते हैं । चन्द्रकला, वहां जमदग्नि आश्रम में परशुराम को देखकर उन पर आसक्त हो जाती है, वह आत्मीयता दिखाते हैं, किंतु प्रेम से तो वह परे पहुंच गये थे अतः चन्द्रकला वहां परशुराम का मन अनुकूल करने का प्रयत्न करती रहती है । चन्द्रकलावती, आश्रम में शस्त्र विद्या सीखने लगती है, अश्वारोहण और धनुर्वेद भी ।

उधर माहिष्मती में अर्जुन को पता चल गया



कि चन्द्रकलावती को आचार्य चक्रधर के शिष्यों ने जमदग्नि आश्रम पहुंचा दिया है । राजा ने प्रतिशोध में चक्रधर को पकड़वाकर उसे हैहय दुर्ग में बंदी बना दिया और चक्रधर के शिष्य कपोतमुनि को मार डाला जो माहिष्मती से चन्द्रकला को निकालकर जमदग्नि आश्रम ले गया था । चन्द्रकला आचार्य चक्रधर को मुक्त कराती है । उधर परशुराम, ऋषि अगस्त्य के वंशज एक ऋषि के आश्रम में रहने लगे । वहीं राजा सुदास की कन्या लोम हर्षिणी अपने भाई वैश्वानर के साथ सप्तसिंधु प्रदेश से आयी हुई थी । वह भी राम पर मुग्ध हो गयी । वह राम के साथ भ्रमण के लिए गयी, किंतु राजा अर्जुन

द्वारा भेजे गये शंकु हैहय और सुबल हैहय ने कुछ सैनिकों के साथ लोमा के अपहरण और परशुराम की हत्या के लिए आक्रमण कर दिया। राम ने उन सबको युद्ध में हराया और शंकु और सुबल सदा के लिए उनके भक्त बन गये। लोमा, राम का पराक्रम देखकर उन पर और अधिक आसक्त हो गयी।

उधर माहिष्मती में राजा अर्जुन को इसके जासूस विचक्षु ने हैहयवंशजों के विद्रोह का समाचार दिया। पता चलता है कि राजा नृसिंह का चाचा हैहय, उसका पुत्र सिंधुराज तथा अन्य अर्जुन का सिंहासन छीनना चाहते हैं। राजा अर्जुन ने आदेश दिया कि चाचा नृसिंहराज को शम्बरों के वनराज्य पर आक्रमण के लिए भेजा जाए, ताकि वे जंगलिओं के विष बुझे बाणों से तड़प-तड़पकर मरें और बच जाएं तो उन्हें विष देकर धोखे से मार डाला जाए।

परशुराम की अनुपस्थिति में ऋषि चायमान ने नृसिंह हैहय को यह भेद बताया कि अर्जुन उन्हें आरण्यक असुरों के विषैले बाणों से मरवाना चाहता है। शम्बर के साथ संधि कर नृसिंह राजा हैहय, अवंती राज्य की सीमा के पार चले गये और वहां राज्य बनाकर रहने लगे। अर्जुन से असंतुष्ट लोग, वहां जाने लगे।

उधर राजा अर्जुन ने नृसिंहराज हैहय के उक्त कृत्य को राजद्रोह माना और नृसिंह के भाई संताप हैहय को निर्दयता से मार डाला।

तब राजा अर्जुन आखेट के बहाने जमदग्नि-आश्रम गया। जमदग्नि मुनि ने नंदिनी कामधेनु के बल पर राजा तथा उसकी सेना को भोजन कराया। राजा ने कामधेनु मांगी। ऋषि ने मना कर दिया। राजा ने आश्रम पर आक्रमण कर दिया, किंतु ऋषि चायमान ने सामना किया। अर्जुन ने अधर्म युद्ध कर चायमान को मरवा दिया, किंतु मरते-मरते ऋषि चायमान ने राजा को मर्मांतक चोट दी। चायमान के वध में अधर्म देखकर मेघवज्र शर्यात् नाम का सेनानी, जमदग्नि के पक्ष में आ गया। राजा हार गया और घायल अवस्था में माहिष्मती पहुंचा, पर उसने घातक भेजकर छलपूर्वक जमदग्नि की हत्या करवा दी।

जब परशुराम अघोर वन से लौटे, तो वहीं जमदग्नि और चायमान के वध का समाचार सुना। माता रेणुका छाती पीट रही थीं। तब राम ने अधर्मी क्षत्रियों के विनाश की प्रतिज्ञा की। जमदग्नि की अंतिम क्रिया में सप्तसिंधु के राजा और ऋषि आये। तब सबकी सहमति से योजना बनी कि परशुराम, पूर्व से पश्चिम तक, अविस्थान (अफगानिस्तान), वंक्षु (आमू दरिया), श्री (सीर दरिया) के देवलोक या वाल्हीक देश, बल्ख (बुखारा), कश्यप सागर प्रदेश आर्यायन (ईरान), शाकद्वीप (शक देश) तथा उत्तर कुरु (चीनी तुर्कस्तान) की यात्रा करें और उधर के आर्य-अनार्य जनगण को माहिष्मती पर आक्रमण के लिए प्रेरित करें, क्योंकि माहिष्मती के राजा के सैन्यबल का पार नहीं है। अतः संपूर्ण जम्बू द्वीप के आर्यगण, राजा, ऋषि तथा अनार्य इस धर्मयुद्ध में भाग लें। तब परशुराम सचमुच विश्वबाहु हो जाएंगे और वह सहस्रबाहु अर्जुन को हरा सकेंगे।

परशुराम प्रथम पूर्वोत्तर (असम-अरुणाचल, तिब्बत आदि) की यात्रा को चले। उनके साथ हठपूर्वक चन्द्रकलावती, लोमहर्षिणी भी चलीं। जमदग्नि को धोखे से

मारने और आश्रम विध्वस से क्रुद्ध राजा अर्जुन की माली मणिप्रभा तथा रानी की सहेली, चारुवल्लरी ने पक्ष बदल लिया था और वे खुलकर राजा अर्जुन के विरोध में रामभक्त बन गयी थीं। अतएव वे भी राम की महायात्रा में साथ गयीं।

महायात्रा पर जाने से पूर्व परशुराम ने ग्रामीण जनगण को सगठित किया और गांव-गाव में शस्त्र शिक्षा का प्रबध किया। राजा अर्जुन ने पहस्त नाम के हत्यारे को परशुराम का वध करने भेजा, पर वह पकड़ा गया। तब प्रचंड शर्यात के सेनापतित्व में हैहय सेना ने आक्रमण किया, किंतु प्रचंड हैहय युद्ध में मारा गया और अर्जुन का भेदिया विचक्षु भी पकड लिया गया। तब राजा सहस्त्रबाहु अर्जुन ने महासेनापति रुद्रदत्त की बड़ी सेना लेकर भेजा। किंतु परशुराम ने उसकी भुजा काट डाली और सेना पराजित होकर भाग गयी।

तब परशुराम, चन्द्रकलावती, मणिप्रभा, चारुवल्लरी और लोमा के साथ महायात्रा पर उत्तरपूर्व (असम) गये। परशुराम ने कैलाश मानसरोवर की यात्रा की, महादेव को प्रसन्न कर उनसे धनुष-बाण, परशु तथा पाशुपत अस्त्र प्राप्त किया। पुनः उन्होंने जल का अवरोध दूर कराया और ब्रह्मपुत्र नद को असम की ओर प्रवाहित किया।

परशुराम उत्तरपूर्व से लौटकर प्रयाग के ऋषि भरद्वाज के निर्देश से गंगा के मार्ग से सप्तसिंधु की ओर चले। मार्ग में उन्होंने निषादराज को हराया और निषाद सेना ने वचन दिया कि वह माहिष्मती युद्ध में राम का साथ देगी।



परशुराम सरस्वती नदी के तट पर पहुचे। वहां वह विश्वामित्र, वशिष्ठ आदि से मिले और उनसे दिव्य-अस्त्र उपलब्ध किये। उन्होंने राजा अर्जुन के आक्रमण की सूचना भी दी और प्रतिरक्षा के लिए सावधान किया। उन्होंने अपने भाई विश्वावसु को रुद्रास्त्र तथा सेना देकर आश्रमों की रक्षा के लिए नियुक्त कर दिया और स्वयं महायात्रा पर चले गये।

इधर राजा अर्जुन ने राम के चले जाने के बाद सप्तसिंधु पर आक्रमण कर दिया और एक सेना भेजकर कई आश्रम जला दिये। परशुराम

के भाई विश्वावसु ने आश्रम जलानेवाले हैहयों को परास्त कर दिया।

परशुराम ने यात्रा में बाधक विपाशा और शुतुद्री (सतलज) नदियों को पार करने के लिए विश्वामित्र द्वारा रचित नदी सूक्त पढ़ा। नदियों ने मार्ग दे दिया। राम ने अटक के पास सिंधु नदी को पार कर विश्वमना अगस्त्य ऋषि के वंशज के आश्रम के दर्शन किये। अगस्त्य ऋषि ने मार्गदर्शन के लिए सुदीप्त अगस्त्य को भेज दिया और युद्ध में सहयोग का भी वचन दिया। सुदीप्त के पथ-प्रदर्शन में परशुराम दलबल सहित परशुपुर (पेशावर) आये और वहां के तिरिंदर भार्गव राजा तथा उसके पुत्र युयुत्स को साथ लिया। कुभा-कपिशा के मार्ग में राजा अर्जुन के पक्षपाती तुर्वस यादवों ने अविस्थान (अफगानस्तान) के दस्युओं को साथ लेकर परशुराम के पड़ाव पर हमला कर दिया। परशुराम ने विकट युद्ध किया और तुर्वस तथा दस्यु भाग गये।

उधर राजा अर्जुन की बड़ी सेना का सप्तसिंधु के ऋषियों, राजाओं और ब्रह्मचारियों ने सामना किया। घोर युद्ध हुआ। अर्जुन के कई नायक मारे गये, किंतु ऋषिसेना कम थी, अतः उसे घेर लिया गया। किंतु विश्वावसु ने परशुराम का रूप धारण कर राजा अर्जुन को ललकारा। राजा ने विश्वावसु को आहत किया, किंतु उसने रुद्रास्त्र से अर्जुन को घायल कर दिया तथापि सैन्यबल अधिक होने से राजा अर्जुन युद्ध में जीत गया। उसने शेष आश्रम जला डाले, ऋषियों का संहार किया। उसने ऋषि पुत्रियों का शीलहरण करना चाहा, किंतु शंख और शाल्मली ने राजा को बलात्कार में सफल नहीं होने दिया।

उधर परशुराम कुभा (काबुल) पहुंच गये। वहां मनुपुत्र राजा गिरिवज्र धृष्ट, राजा करुष और राजा प्रांशु से परशुराम की मैत्री हो गयी। मनुपुत्रों ने युद्ध में सहायता का वचन दिया। तब परशुराम महागांधार (कंधार) को चले। वहीं इक्ष्वाकुवंशज युवनाश्वपुत्र चक्रवर्ती मांधाता का राज्य था और रेणुका इक्ष्वाकु कुल की ही थी। अतः मांधाता ने राम का स्वागत किया। और एक सेना के साथ परशुराम को सेनापति पर्जन्य गांधार तथा ऋषि कक्षीवान् के साथ वाल्हीक देश की यात्रा पर भेजा। तिरिंदर भार्गव तथा सम्भूत भासदस्यु के साथ वाल्हीक गये।

उधर विद्याधर ने नया षड्यंत्र रचा। उसने राका, रति और उनकी छोटी बहन पूर्णिमा को राक्षसी माया से रूप बदलकर जमदग्नि आश्रम भेजा ताकि वे वहां परशुराम के भाइयों को रिझाकर, उनका विश्वास प्राप्त कर, उन्हें भोजन में विष देकर समाप्त कर दें, किंतु वे आश्रम के वातावरण और राम के भ्राताओं के व्यवहार से छलकपट भूल गयीं और उनका हृदय परिवर्तन हो गया। उन्होंने अपना भेद बता दिया और वे परशुराम से क्षमा याचना करने तथा आत्मशुद्धि के लिए वहीं रुक गयीं।

परशुराम देवलोक या वाल्हीक देश पहुंच गये। वहां कश्यप सागर-क्षेत्र के देवल काश्यप ऋषि तथा अन्य ऋषियों के निर्देश पर परशुराम पार्थदेश (पूर्थिया) गये, जहां राजा पृथु का शासन था। उन्हें अनुकूल कर परशुराम आर्यायण या ईरान गये, जहां राजा यमि को राम ने प्रसन्न किया। वह राम का युद्ध

कौशल देखकर इतना प्रसन्न हुआ कि उसने एक बड़ी सेना के साथ अपने पुत्र यमि को राम के साथ भेज दिया।

ऋषि चायमान के वंशज भी ईरान में रहते थे। परशुराम चायमान गण से भी मिले, जो राम के साथ हो गये। चायमान के गणप्रमुख को परशुराम ने अपना सारथी बना लिया। ईरान की सेना, चायमानगण तथा राजा पृथु के योद्धाओं को वाल्हीक में छोड़कर परशुराम ऋषि कक्षिवान् मेघवज्र शर्यात् और मांधाता पुत्र देवभाता आदि के साथ शाकद्वीप (शकस्तान) के प्रसिद्ध रेशम मार्ग से उत्तरकुरु जा पहुंचे जहां पृथुपरशुवाहो भार्गवों का एक गण था। पुनः वह मेरुमंडल गये, जहां उन्होंने इंद्र को प्रसन्न किया और दिव्यास्त्र प्राप्त किये। पुनः मेरुमंडल से उत्तरकुरु के सैन्यबल लेकर तथा वहां के पणोलक्कों, उद्गरों आदि कबीलों के असंख्य अश्वारोहियों के साथ परशुराम वाल्हीक देश में वंक्षु नदी के तट पर वापस हुए।

परशुराम का टिड्डीदल अंततः सप्तसिंधु की ओर चला। सप्तर्षियों ने अचानक प्रकट होकर आशीर्वाद दिया। सरस्वती नदी पहुंचकर पड़ाव पड़ा। वहां ऋषि बालखिल्य से परशुराम को चक्र प्राप्त हुआ, जो दुर्लभ अस्त्र था। ऋषियों की सेना तथा सप्तसिंधु के राजाओं का सैन्यबल साथ लग गया। उधर हिमाचल से रेणुका के पिता राजा सुधन्वा इक्ष्वाकु भी सेनासहित आ गये। जमदग्नि आश्रम में रुककर परशुराम ने माहिष्मती के मैदानों में मोरचे लगाये, किंतु हैहयों ने नर्मदा तट पर अधिकार जमा रखा था। परशुराम, महासेनापति यमि ईरानी और ऋषि योद्धाओं के अग्रगण्य भूतांश काश्यप के आदेशों की उपेक्षा कर बल्लोची जनजातिगण मौलेयों और वृंगदों ने नर्मदा के तटों से हैहयों को भगाने के लिए हमला बोल दिया। उन्होंने राजकुमार अरिंदम का सिर काट लिया और शार्दूल हैहय नायक को अधमरा कर नर्मदा जलधारा को मुक्त कर लिया।

कार्तवीर्य अर्जुन ने दूसरे दिन अपनी भारी सेना के साथ परशुराम के टिड्डीदल के सामने मोर्चे स्थापित किये। रामादल में राजसेना कम थी, किंतु मगध और उत्कल के राजा भी

परशुराम आजीवन संपूर्ण देश में आश्रम और पीठ स्थापित करते रहे और जो हिंसा उन्हें विवश होकर करनी पड़ी थी, उसके पाप से मुक्त होने के लिए वह देश के अनेक स्थलों, पर्वतों, समुद्रतटों और अन्यत्र तपस्या करते रहे। उन्होंने ऐसी व्यवस्था की कि परशुराम द्वारा स्थापित आश्रमों और पीठों के ऋषियोद्धा जो परशुराम ही कहलाये, सदा अधर्मी, अत्याचारी शासकों और अन्य अन्यायी व्यक्तियों का सशस्त्र विरोध करते रहे।

गजसेना के साथ आ गये । भयंकर युद्ध हुआ और राजा अर्जुन के सेनानायकों व्याघ्र यादव, राजा वीतिहव्य, विद्याधर, श्रीलंका का अधिपति, राजा सोमदत्त, सुचन्द्र पुष्कराक्ष आदि मारे गये ।

उधर दूसरे दिन के युद्ध में हैहयवंशी कृतवर्मा, कृताग्नि और कृतौजा ने बड़ा पराक्रम दिखाया, पर वे मारे गये । विदर्भ का भीम यादव भिड़ा, पर वह घायल हो गया और अर्जुन के अपशब्द कहने पर उसका पक्ष छोड़कर युद्ध से विरत हो गया । अनूप, शर्यात् आदि भी तटस्थ हो गये । तब राजा अर्जुन ने परशुराम का सामना किया और मुनि दत्तात्रेय द्वारा प्रदत्त शक्ति (बरछी) से परशुराम को आहत कर दिया । वह मूर्च्छित हो गये, किंतु अघोर मुनि ने प्रकट होकर घाव को तांत्रिक अभिचार और औषधि से भर दिया और परशुराम के प्राण बच गये ।

द्वितीय दिन के युद्ध में राम के मूर्च्छित हो जाने के बावजूद राजा यमि, नाना सुधन्वा तथा ऋषियोद्धाओं ने राजकुमार सिंहध्वज तथा अन्य अर्जुनपुत्रों-पौत्रों को मार डाला और अब अर्जुन के पक्ष में कोई बड़ा लड़का शेष नहीं था तथापि अर्जुन सोचता था कि राम की मृत्यु हो जाने पर वह जीत जाएगा, किंतु परशुराम को अघोर मुनि ने बचा लिया ।

नये महासेनापति वायु वाहन ने रात में शूर्पारक और भृगुकच्छ से वभ्रु हैहय और सुबाहु हैहय के नेतृत्व में एक विशाल नौसेना को बुलवा लिया था । अतएव राजा अर्जुन का गिरता मनोबल पुनः बढ़ गया था । वह रामादल पर टूट पड़ा, परंतु वभ्रु और सुबाहु के साथ महासेनापति वायुवाहन भी अंततः खेत रहा । तब राजा अर्जुन सहस्त्रबाहु पुनः परशुराम के सम्मुख आया और उसने घमासान मचा दिया । राम ने उसके धनुष, रथ और सारथी को नष्ट कर दिया । परंतु वह पुनः नये रथ पर आ गया, तब परशुराम ने अर्जुन पर रुद्रास्त्र छोड़ दिया, किंतु वह उस महा-अस्त्र के सामने नतशीश हो गया, कातर हो गया, अतः बच गया ।

तब परशुराम ने देवाधिदेव रुद्रशिव का स्मरण कर महापरशु का अर्जुन की भुजा पर तिरछा प्रहार किया । भुजा कट गयी । पुनः राम ने राजा की दूसरी भुजा भी काट डाली और उस माहिष्मतीनरेश का सिर काटकर उसे महासेनापति यमि ईरानी की ओर फेंक दिया । और इस प्रकार सहस्त्रबाहु कहलानेवाला माहिष्मती का चक्रवर्ती राजा कार्त्तवीर्य अर्जुन मारा गया ।

परशुराम तथा अन्य सबने देखा कि हैहय सेना सिर पर पैर रखकर भाग रही है और माहिष्मती नगरी धू-धू जल रही है ।

परशुराम ने आग बुझायी जाए, ऐसा आदेश दिया और अर्जुन पुत्र जयध्वज को माहिष्मती के सिंहासन पर बैठाया और उसको कहा कि यदि उसने पुनः अधर्म का पंथ पकड़ा, तो वह पुनः यही दशा करेंगे ।

सब व्यवस्था कर तथा महायुद्ध में भागकर्त्ता अपने पक्ष के लोगों को आदर-सत्कार कर परशुराम ने विदा किया और धर्मक्षेत्र (कुरुक्षेत्र) में जमदग्नि आश्रम में महायज्ञ कराया । उन्होंने वहां के पांच सरोवरों में अर्जुन के रक्त को छिड़का और पिता जमदग्नि को

शत्रुरक्त का पिंडदान दिया।

इसी के आधार पर रोमहर्षक सूतों तथा पुराणकारों ने लिखा कि परशुराम ने इक्कीस बार क्षत्रियों का रक्त बहाया और कुरुक्षेत्र के पांच सरोवर उस रक्त से भर दिये।

परशुराम आजीवन संपूर्ण देश में आश्रम और पीठ स्थापित करते रहे और जो हिंसा उन्हें विवश होकर करनी पड़ी थी, उसके पाप से मुक्त होने के लिए वह देश के अनेक स्थलों, पर्वतों, समुद्रतटों और अन्यत्र तपस्या करते रहे। उन्होंने ऐसी व्यवस्था की कि परशुराम द्वारा स्थापित आश्रमों और पीठों के ऋषियोद्धा जो परशुराम ही कहलाये, सदा अधर्मी, अत्याचारी शासकों और अन्य अन्यायी व्यक्तियों का सशस्त्र विरोध करते रहे।

यही परशुराम की 'सशस्त्र-दृष्टि' थी, जो हमारी राष्ट्रीय और जातीय परंपरा बन गयी और जिसे प्रति वर्ष वैशाख मास शुक्ल पक्ष की तृतीया या 'अक्षय तीज' को आज भी स्मरण किया जाता है और सदैव याद किया जाता रहेगा।

अग्रतः सन्ति मे वेदाः
पृष्ठतः सशर धनुः
उभाभ्यां च समर्थोऽहं
शापादपि शरादपि ॥

परशुराम कहते हैं कि मेरे आगे वेद चलते हैं और पीछे मेरी पीठ पर धनुष और बाण (तथा परशु) हैं। मैं वेद और युद्ध दोनों में समर्थ हूं, शाप भी दे सकता हूं और बाण भी चला सकता हूं।

—'गया-प्रयाग', सात-ड-पच्चीस,
जवाहर नगर
जयपुर-४ (राजस्थान)।

दो गजलें

मंदिरों के देवता होते हैं पत्थर लौट आ
लौट आ कांधे पे फिर से, आ मेरे सर लौट आ

जन्म से ही मेरी किस्मत ने कहा मुझसे कि जा
इक खुशी के साथ रहकर और रोकर लौट आ

वो नहीं लौटेगा बाजू से अलग होने के बाद
चाहे फिर कितना ही कहना, आ, मेरे पर लौट आ

जिसके होने से रही इनसानियत दिल में मेरे
फिर मेरे दिल में खुदा के ऐ वही डर लौट आ

यूं ही पूरे दिन भटककर क्या मिला यह तो बता
शाम अब होने को है, अब तो 'कुंअर' घर लौट आ

(२)

हर बशर इक लफ्ज़ है लफ्ज़ों के मानी ढूंढिए
बूंद भर जल में, समंदर की कहानी ढूंढिए

जिंदगी को जलते सहरा से बचाने के लिए
आज के इनसान की आंखों में पानी ढूंढिए

दिल के बहलाने की खातिर कौन आएगा यहां
अपने ही दिल की कोई धड़कन पुरानी ढूंढिए

मैं नहीं कहता कि मिलना छोड़ दें औरों से आप
खुद से भी मिलने को कुछ शामें सुहानी ढूंढिए

ऐ 'कुंअर' बढ़ जाएगी, कुछ और आंखों की चमक
इस जमीं पर ख्वाब कोई आसमानी ढूंढिए

● कुंअर बेचैन
२ एफ, ५१ नेहरू नगर गाजियाबाद (उ.प्र.)

नयी कृतियां

चोर दरवाजे से: आशुतोष दुबे का प्रथम संग्रह होने के बावजूद इसमें कवि का रचनात्मक संकोच अलक्षित है । उलटे, उन्होंने जो कुछ कहा है, आश्वस्त भाव से बल देकर कहा है । उन्होंने बाहर की दुनिया को एक बच्चे की-सी दिलचस्पी से देखा है । हर तरह की हलचल में कविता की छिपी संभावनाओं को खोजने में उनका रचना-विवेक सक्षम है । तमाम चीजों को देखने तथा उनसे प्रतिक्रिया करने का कवि का एक अपना ढंग है । यह मौलिकता ही उनकी सबसे बड़ी सामर्थ्य है ।

इस संग्रह की प्रायः सभी कविताएं एकांतहीन और सांप्रतिक संदर्भों की कविताएं हैं । 'अमृत के बावजूद', 'संभवतः' आदि रचनाओं में स्थिर स्थितियों का सीधा विनियोग है । सर्जनात्मक सूझ के बिना ही इन्हें कविता का जामा पहना दिया गया है । वस्तुतः दृश्यों या दशाओं से सीधी प्रतिक्रिया में व्यक्त होना व्यंग्य का मिजाज है ।





एक बात 'चोर दरवाजे से' में शीर्षक से लेकर समग्र संकलन में है, वह है— व्यंग्य का अंतः प्रसार । 'वजह', 'खेदसहित', 'पेंशन शिविर', 'यहीं कहीं'—जैसी रचनाओं में व्यंग्यात्मक उठान आसानी से उपलब्ध है । 'यहीं-कहीं' में इसका विस्फोटक रूप उपस्थित है ।

प्रकाशकः मायाराम सुरजन फाउंडेशन रायपुर
पुस्तक सदन, नयी दिल्ली
पृष्ठ संख्याः ८८; मूल्यः ७० रु.

जीने के लिए : साहित्य की दुनिया में स्त्री और पुरुष लेखकों के बीच किसी आत्यंतिक भेद की कल्पना करना यद्यपि बहुत ठीक नहीं है, फिर भी इतना तो निश्चित है कि एक स्त्री लेखिका— स्त्री के जीवन की संवेदनाओं, आकांक्षाओं, सपनों और दुःस्वप्नों को अपनी संवेदना के सहारे अधिक गहरे ढंग से समझ-बूझ सकती है । समाज में अकसर स्त्री की सबसे बड़ी दुश्मन स्त्री होती है, लेकिन वह उसकी सबसे बड़ी मित्र भी होती है । वीरा चतुर्वेदी ने अपने साथ उस समाज को देखने और जानने की कोशिश की है, जो उनके भीतर बसा है । एक तरह से उनकी सभी कहानियां यथार्थ की पुनर्रचनाएं हैं ।

वीरा चतुर्वेदी गहरी संवेदना के स्पर्श से कथा बुनती हैं । जीवन का गतिमान यथार्थ, अपने आसपास के पात्र और संवेदना के उभरते तनाव— यही उनकी कथाओं की विशेषता है ।

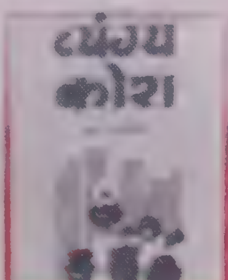
वीरा की कहानियों को धीरे-धीरे पढ़ा जा सकता है । वास्तव में वे तेज गति से बुनी कहानियां नहीं हैं । लेखिका के पास एक ऐसा शिल्प है, जो गति की नाटकीयता को तो उभारता है, लेकिन स्थिति की खोज को ओट में

ही रहने देता है । शायद इसीलिए मुखर होने की सारी संभावनाओं के बाद, वीरा की कहानियां मुखर कहानियां नहीं हैं । यह उनकी ताकत भी है और सीमा भी ।

प्रकाशक : मायाराम सुरजन फाउंडेशन रायपुर
पुस्तक सदन, नयी दिल्ली
पृष्ठ संख्या : ८६; मूल्य: ७० रुपये ।

ईश्वर के नाम पर : अनिल करमेले का पहला संकलन है । इसकी कविताएं जानी-पहचानी दुनिया से पाठक का साक्षात्कार इस तरह कराती है कि समूचा परिदृश्य नयी रंगत के साथ सामने आता है ।

युवा-लेखन का मुहावरा समग्र लेखन को दो फांक करने की दृष्टि से चाहे अच्छा प्रतीत न हो, किंतु इसकी अलग तासीर से इनकार नहीं किया जा सकता । यहां युवा-कवि की बदली हुई तासीर बहुत कुछ कहने की व्याकुलता, परिवेश का अतिक्रमण न करने जैसे रूपों में उजागर है । इसी तरह 'यहीं तय होगा सब कुछ' में कविता का 'आत्म' अनुपस्थित है, जबकि रचना जिससे सराबोर है, वह सच कहें तो युवकोचित आत्मविश्वास है । मगर इसमें संदेह नहीं कि कविता के बाहर का संसार कविता के भीतर के संसार से अलग क्यों है, अलग क्यों रहे; यह कवि की महत्त्वपूर्ण परेशानी है । सब कुछ के बावजूद अनिल करमेले का पहला संग्रह ध्यान खींचता है और





टिप्पणी के लिए विवश भी करता है ।

प्रकाशक: मायाराम सुरजन फाउंडेशन रायपुर
पुस्तक सदन नयी दिल्ली
पृष्ठ संख्या: ७९; मूल्य: ६० रुपये

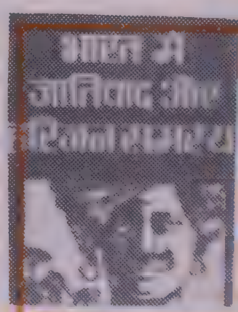
दीवारों के साये में: अमृता प्रीतम की दो कृतियां हाल में प्रकाशित हुई हैं, इनमें एक है— दीवारों के साये में तथा दूसरी है— खामोशी के आंचल में । दीवारों के साये में लेखिका ने संसार में नारी की स्थिति, पीड़ा और विडंबना तथा सामाजिक विसंगतियों को बड़े जोरदार ढंग से प्रस्तुत किया है । पुस्तक में नारी चरित्रों को लेकर अनेक कहानियां हैं । लेखिका ने समाज की और मन की दीवारों से आरंभ करके कारागार को दीवारों तक इन सभी में बंद स्त्री-पुरुषों का मार्मिक चित्रण किया है ।

लेखिका की रचनाओं में चिंतन की एक स्पष्ट झलक हमेशा मिलती रही है । 'खामोशी के आंचल में' यह चिंतन मुखर हो उठा है, लेकिन प्रश्न यह है कि चिंतन की कोई भाषा होती है, उसे शब्दों में बांधा जा सकता है ? वह तो कहीं भी, किसी भी पात्र के माध्यम से स्वयंमेव प्रस्फुटित हो जाता है । विडंबना यह है कि फिर भी उसे शब्दों का सहारा लेना पड़ता है, लेकिन चिंतन की सार्थकता यह है कि वह पाठक को, श्रोता को उसकी गहराई में डुबकी लगाने के लिए विवश करे । यह अनुभूति के धरातल पर ही संभव है । अमृता प्रीतम की

प्रस्तुत कृति यही काम करती है । 'आदिका' अंश के अंतर्गत 'दो हाथों की गाथा' इस चिंतन की भूमि भी है और दूसरे अर्थों में उसका निचोड़ भी । 'अर्द्धनारीश्वर' की अवधारणा में नारी रूपी हाथ का अपमान और पुरुष रूपी हाथ का वर्चस्व परंपरा हो सकती है, लेकिन मानव-समाज की आंतरिक साक्षी नहीं । इसी आधारभूमि से अमृता प्रीतम ने 'कुछ ऐतिहासिक दस्तावेज' के अंतर्गत ऐसे 'व्यक्तित्वों' का परिचय दिया है, जिन्हें परंपरागत नारीत्व के घेरे में बांधना संभव न होगा । लेखिका ने इन 'व्यक्तित्वों' से जुड़े जाने-अनजाने प्रसंगों का उल्लेख करते हुए इस बात की ओर संकेत किया है कि अटूट विश्वास के आगे पुरुष-प्रभुत्ववाला समाज सदा धराशायी होता रहा है । ऐसा ही एक प्रसंग मीरा के संदर्भ में है, जिसमें एक जवान ब्राह्मण को इस बात के लिए राजी किया गया कि वह 'भगवान के आदेश' का सहारा लेकर मीरा को सेज पर सुलाने के लिए राजी करे । मीरा ने उसे शाम को बुलवाया । वहां साधु-संतों के बीच एक सेज बिछी थी । मीरा ने कहा— 'मेरा परमात्मा सब जगह बसता है, सब-कुछ देखता है, इसलिए उससे परदा नहीं हो सकता । यह साधु-संत भी उसी का रूप हैं, इसलिए इनसे भी कोई परदा नहीं हो सकता ।'

दोनों पुस्तकों के प्रकाशक : राजपाल एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली-११०००६; दोनों का मूल्य: (प्रत्येक): एक सौ रुपये ।





२१वीं सदी का व्यंग्य कोश: हिंदी में अच्छे हास्य-व्यंग्य की कमी है, ऐसे में सरन माहेश्वरी की यह कृति २१वीं सदी का व्यंग्य कोश एक अच्छा प्रयास है । लेखिका ने देश की बदलती राजनीति तथा समाज में प्रचलित रोजमर्रा की अनेक बातें उठाकर यह कृति तैयार की है । इसमें उन्होंने बेहद चुटीले ढंग से उन बातों की परिभाषाएं और व्याख्याएं प्रस्तुत की है ।

इस कोश के माध्यम से लेखिका ने बताया है कि २१वीं सदी में जीवन का रूप किस प्रकार परिवर्तित हो जाएगा । उन्होंने इसकी मनोरंजक झांकियां प्रत्येक पृष्ठ में प्रस्तुत की हैं । पुस्तक बिलकुल नये ढंग से और नयी शैली में लिखी गयी है । 'अब से ५० वर्ष पहले के लोगों को हम पिछड़ा हुआ समझते है, शायद ५० वर्ष बाद के लोग हमें पिछड़ा हुआ समझेंगे'— यह शायद इस कोश का पाठकों के लिए संदेश भी है ।

प्रकाशक: शिक्षा भारती, कश्मीरी गेट, दिल्ली । पृष्ठ संख्या: १७४; मूल्य: १२५ रुपये ।

भारत में जातिवाद और हरिजन समस्या: प्रस्तुत पुस्तक जगजीवन राम के विचारों का संकलन है जो उन्होंने विभिन्न मंचों से व्यक्त किये हैं । पुस्तक की भूमिका में ही वह कहते हैं कि 'इस पुस्तक में मैंने जो विचार व्यक्त किये हैं उन्हें मैं पिछले कई वर्षों से अपने

भाषणों में व्यक्त करता आ रहा हूं। मैं इस बात पर बल देना चाहूंगा कि मेरी मंशा किसी वर्ग या जाति का दिल दुखाने की नहीं है, बल्कि यह रही है कि वैदिक काल से लेकर आज तक हिंदू समाज की समस्या का संक्षिप्त वक्ता रहा हूं।'

पुस्तक में अनुसूचित जनजातियों की वर्तमान समस्याओं तथा उनके समाधान का ब्यौरा दिया गया है। (पुस्तक के एक अंश को 'कादम्बिनी' के इसी अंक में 'जातिवाद के गंभीर खतरों को समझिए' शीर्षक से प्रकाशित भी किया जा रहा है।— सं.)

प्रकाशकः राजपाल एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली। पृष्ठ संख्याः १०४; मूल्यः ७० रुपये।

हम हिन्दुस्तानी: नानी पालखीवाला जाने-माने विधिवेत्ता हैं। यह पुस्तक भारतीय राजनीति, अर्थनीति, कानून, समाज तथा समय-समय पर उठनेवाले महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय विषयों पर सटीक विश्लेषण के साथ उनके विचारों का संकलन है। पुस्तक में उन्होंने तीखी चोट करनेवाली आलोचना के साथ-साथ अनेक समस्याओं का समाधान भी प्रस्तुत किया है।

उन्होंने पुस्तक में जो भी विषय उठाया है, उसे बड़ी स्पष्टता और सरलता से व्यक्त किया है — अकसर वे चुटकियां भी काटते जाते हैं, जो गंभीर से गंभीर समीक्षा को एकदम बोधगम्य बना देती है। देश की गहराती जा रही समस्याओं से चिंतित सभी जागरूक व्यक्तियों के लिए यह विचारोत्तेजक पुस्तक अवश्य पठनीय है।

प्रकाशकः राजपाल एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली। पृष्ठ संख्याः १४४; मूल्यः ९० रुपये।

प्राप्ति-स्वीकार

बोलो मेरे गीत (कविता संग्रह)
लेखक—वेद प्रकाश पाण्डेय, प्रकाशक: भारत प्रकाशन मंदिर, अलीगढ़, मूल्य— तीस रुपये।

फिर कब आओगे (कहानी संग्रह)
लेखक—डॉ. महेश चन्द, प्रकाशक: तूलिका प्रकाशन, महरौली, नयी दिल्ली, मूल्य—चालीस रुपये।

प्याले में प्रलय (कविता संग्रह)
लेखक— प्रकाश प्रलय; प्रकाशक: उत्तम बैंक, ५५०, सैक्टर-१०, फरीदाबाद-१२१००६; मूल्य—पचास रुपये।

अनचाहे दरवाजे पर (लघु उपन्यास)
लेखक—अभिज्ञात; प्रकाशक: नाद प्रकाशन, ब्राह्मण पाड़ा, पानुलिया, नीलगढ़-७४३१८८; मूल्य—पच्चीस रुपये।

जागे शब्द गरीब (काव्य संग्रह)
लेखक—दिनेश शुक्ल, प्रकाशक—अरिहन्त इंटरनेशनल, २३९, गली कुंजस, दरीबा, दिल्ली-११०००६, मूल्य—एक सौ रुपये।

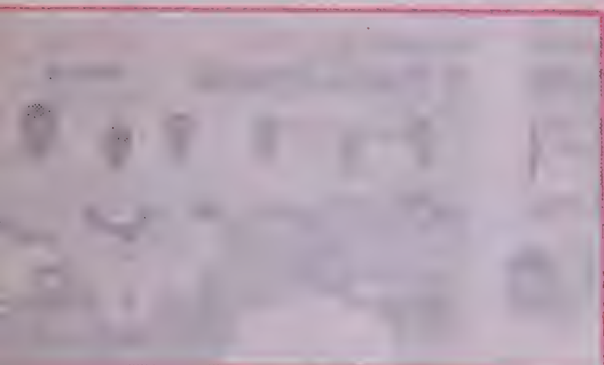
बच्चन गीतावली (काव्य संकलन)
लेखक—अनंत कुमार पाषाण,
प्रकाशक—जीवन प्रभात प्रकाशन, २२१, गुरु गोविंद सिंह इंडस्ट्रियल एस्टेट, गोरेगांव-पूर्व, बंबई-४०००६३, मूल्य—एक सौ रुपये।

खिड़कियों पर दस्तकें (काव्य संग्रह)
लेखक—अमर चतुर्वेदी, प्रकाशक—जीवन प्रभात प्रकाशन, गोरेगांव-पूर्व, बंबई-४०००६३, मूल्य—साठ रुपये।

कादम्बिनी क्लब समाचार

लोक गीतों की धूम रही

भटनी (देवरिया) । डॉ. आर.के. श्रीवास्तव के आवास पर संपन्न हुई क्लब की जुलाई माह की बैठक में इस बार लोक गीतों की धूम रही । आकाशवाणी गोरखपुर से जुड़े विजय कुमार मिश्र, भजन एवं गजल में अपनी पहचान बनाये श्री अशोक कुमार शुक्ल, अपने युगल स्वरों से लोक-संगीत को माधुर्य प्रदान करनेवाले संचीतन यादव एवं संजय कुमार मिश्र तथा लोक-संगीत में अपनी पहचान बना रहे किशोर कलाकार धर्मेन्द्र कुमार मिश्र जैसे आमंत्रित क्षेत्रीय कलाकारों ने कजरी, दहेज तथा परिवार नियोजन पर आधारित गीतों को प्रस्तुत कर उपस्थित जनसमूह को मुग्ध कर दिया । तबले पर संगत कर रहे १३ वर्षीय किशोर राजीव रंजन मिश्र ने श्रोताओं को और आकर्षित किया । सभी कलाकारों को नगर पंचायत अध्यक्ष रमेश चंद्र वर्मा ने माल्यार्पित कर सम्मानित किया ।



हरिप्रसाद मिश्र की अध्यक्षता एवं क्लब संयोजक शिवाकांत मिश्र 'शिवेश' के संचालन में संपन्न हुई इस बैठक के दूसरे चक्र में उपस्थित रचनाकारों में सत्येन्द्र कुमार शुक्ल, त्रिलोकीनाथ गुप्त, मुनेश्वर प्रसाद वर्मा, सतीश गुप्त, अशोक कुमार राय, प्रभात कुमार राय आदि ने हवाला, यूरिया घोटालों सहित सावन मास पर सामयिक रचना प्रस्तुत कर श्रोताओं को आनंद विभोर किया । बैठक को गोपाल पति त्रिपाठी तथा रमेश तिवारी आदि ने भी संबोधित किया ।

विचार गोष्ठी आयोजित

पिपरिया । स्थानीय जनता वाचनालय में श्री गोपाल पालीवाल की अध्यक्षता में कादम्बिनी क्लब पिपरिया की एक विचार गोष्ठी आयोजित की गयी, जिसमें मुख्य अतिथि श्री लक्ष्मी निवास काबरा थे ।

प्रारंभ में श्री शिवहरी व्यास शिक्षक का उनके पत्र 'तुम सम पुरुष' के अप्रैल अंक में प्रकाशन पर मुख्य अतिथि द्वारा सम्मान किया गया । इसके उपरांत जून अंक के काल चिंतन की समीक्षा की गयी । काल चिंतन 'कुरसी' पर आमंत्रित लिखित प्रतिक्रियाएं श्री रमेश कुमार राठी, राजन गोदानी, बद्रीप्रसाद परसाई, महेश शर्मा, हरीशंकर शर्मा व अनंत साहू ने प्रस्तुत की । श्री आशुतोष व्यास ने मौखिक समीक्षा रखी ।

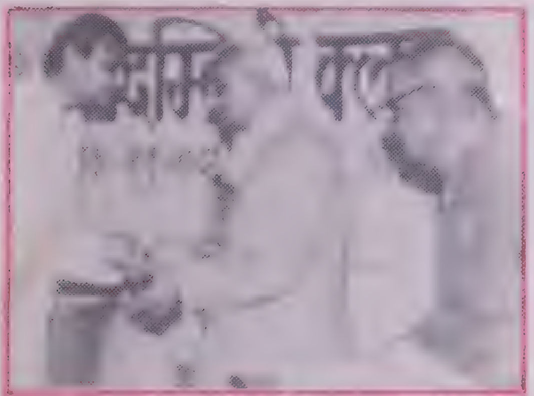
सर्वानुमति से यह भी तय किया गया कि १५ अगस्त को क्लब द्वारा आंचलिक कवि गोष्ठी और आर.एन. हाईस्कूल के अर्ध शताब्दी वर्ष के दौरान वहां लोककला मानस मंच व कादम्बिनी क्लब के संयुक्त तत्त्वावधान में संभवतः नवम्बर-दिसम्बर में कादम्बिनी के संपादक महोदय के मुख्यातिथ्य में त्वरित लेखन प्रतियोगिता, कवि सम्मेलन आदि का आयोजन किया जाए । कार्यक्रम का संचालन गोष्ठी के संयोजक श्री अनंत साहू ने किया और श्री रमेशकुमार राठी ने उपस्थित सदस्यों एवं आमंत्रितों का आभार व्यक्त किया ।

राज्यपाल कृष्णपाल सिंह सम्मानित

जबलपुर । कादम्बिनी क्लब जबलपुर द्वारा गुजरात के राज्यपाल श्री कृष्णपाल सिंह को सम्मानित किया गया । क्लब के संयोजक श्री मुकुंददास माहेश्वरी ने अपने निवास, वल्लभदास महल में आयोजित इस गोष्ठी में श्री सिंह का पुष्पहारों से स्वागत करते हुए क्लब की ओर से उन्हें बहुमूल्य

प्रतीक-चिह्न भेंट किया ।

समारोह में कथाकार डॉ. कैलाश नारद, पत्रकार श्री कुंज बिहारी पाठक, कवि श्री रामकृष्ण दीक्षित 'विश्व', संदीप सपन, साज जबलपुरी, राजेंद्र रतन, लीलाधर यादव, फिल्मकार



आकाशराज, उद्योगपति श्री कैलाश गुप्ता, भाषा समाचार एजेंसी के प्रभारी श्री एच.एस. वर्मा, साहित्य समालोचक श्रीमती चंद्रप्रभा पटोरिया आदि लगभग सौ प्रबुद्धों, शिक्षाशास्त्रियों एवं समाजसेवियों ने भाग लिया । गोष्ठी का संचालन कवि 'विश्व' ने किया ।

वयोवृद्ध समाजवादी विचारक श्री सिंह ने अपने उद्बोधन में समस्त आमंत्रितों को भाव विभोर करके [illegible] जबलपुर के पुराने साथी साहित्यकारों, समाजसेवियों एवं स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का जिक्र किया । उन्होंने आह्वान किया कि वर्तमान [illegible] की राजनीति में भी सत्साहित्य से प्रेरणा लेकर निरंतर सच्ची सेवा भावना से राष्ट्र का उत्थान करनेवालों की आवश्यकता है । श्री माहेश्वरी ने धन्यवाद ज्ञापन किया ।

रागिनी '९६ का सफल आयोजन

फर्रुखाबाद (उ.प्र.) । कादम्बिनी क्लब फर्रुखाबाद (उ.प्र.) द्वारा गजल का वृहद आयोजन 'रागिनी '९६' आयोजित किया गया, जिसमें अपनी आवाज के जादू से पाँच घंटे से भी अधिक समय तक श्रोताओं को बाँधे रखा गोष्ठी में पधारे गजल गायकों की जोड़ी ऋषभ मेहता एवं गायत्री मेहता ने । संगीत की स्वर लहरियों में श्रोता देर रात तक झूमते रहे । उन्होंने— *'तेरे लिए जहमत है मेरे लिए नजराना, जुगनूं की तरह आना खुशबू की तरह जाना; 'मेरा नशेमन अहले-चमन गुलशन में गुजारा करते हैं'; 'जिंदगी दुल्हन है एक रात की'; 'जालिम तेरी अदा क्या कमाल कर गयी'; 'देख लैला तेरे मजनूं का कलेजा क्या है, खाक होकर भी कहता है बिगड़ा क्या है ।'; 'गजलों के जो उसूल हैं...कदम दर कदम उनको दरिया मिला ।'* जैसी सुंदर गजलें पेश कीं । नवोदित गायक गुरमीतसिंह (धार) ने भी अपनी प्रतिभा का परिचय दिया ।

प्रारंभ में संस्था का परिचय एवं आगामी कार्यक्रमों के बारे में जानकारी संयोजक शीतलाप्रसाद गुप्ता ने दी । ऋषभ एवं गायत्री का स्वागत, प्रकाश भंडारी, नरेन्द्र कटकानी, मंजुला गुप्ता, ज्योति पटवा एवं संयोजक सहित गणमान्य नागरिकों ने किया । गजल की अपनी तरह की इस शानदार एवं बेहतरीन प्रस्तुति को नगरवासियों ने बेहद पसंद किया ।



कार्यक्रम श्री मनोहर भटेवरा की अध्यक्षता में [illegible] मेहता के पुष्प [illegible] में संपन्न हुआ । संचालन जितेन्द्र मेहता एवं आभार प्रदर्शन संयोजक शीतलाप्रसाद गुप्ता ने किया ।

'साहित्य दिशा एवं विचार देता है'

पटना । कादम्बिनी क्लब के तत्त्वावधान में विगत दिनों राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद के

सभागार में 'कथा-संगोष्ठी' का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता कलकत्ता से आये साहित्यकार कमलेश कुमार ने की एवं संचालन 'क्लब' के संयोजक डॉ. शिवनारायण ने किया।

आरंभ में 'वर्तमान कहानी की पठनीयता का संकट' विषय पर कृष्णानंद कृष्ण, नरेन्द्र प्रसाद 'नवीन', कपिलेश्वर शरण 'तरुण' एवं डॉ. शिवनारायण ने माना कि मानवीय संवेदना की पकड के बिना समस्या प्रधान कहानियां भी पाठकों के लिए रुचिकर नहीं हो सकतीं। युवा कथा-लेखिका रूबी भूषण ने अपनी कहानी 'न तब, न अब' का पाठ किया।

संगोष्ठी के दूसरे सत्र में हुए काव्य-पाठ में चुने हुए कवियों में श्री ललित कुमुद, कपिलेश्वर 'तरुण', आनंद रस्तोगी एवं राजकुमार प्रेमी ने अपनी दो-दो कविताओं का पाठ किया। अंत में, प्रबंध वैज्ञानिक श्री इंदु भूषण ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

सुमन जी को याद किया गया

मोदीनगर। हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि स्व. श्री वेदप्रकाश 'सुमन' (मुरादनगर निवासी) की प्रथम पुण्यतिथि के अवसर पर क्लब संयोजक डॉ. वी.पी. शर्मा के ५१ प्रोफेसर कॉलोनी आवास पर एक शोक सभा आयोजित की गयी। डॉ. शर्मा ने 'सुमन' जी के जीवन और उनके कृतित्व पर प्रकाश डाला। शोक सभा में डॉ. वी.के. कौशिक, प्रधानाचार्य शशि प्रभा शर्मा, प्रधानाचार्य कुसुम कपूर, डॉ. नरेन्द्र सांख्यायन, जगदीश पंकज, डॉ. बी.एम. द्विवेदी, दयाशंकर 'अश्क' आदि ने भी 'सुमन' जी को श्रद्धांजलि अर्पित की। शोक सभा में चौधरी उदय वीर सिंह, अशोक शर्मा, राकेश शर्मा, नरेश मित्तल, डॉ. रेणु शर्मा, डॉ. राजेश रस्तोगी, डॉ. सुधा शिशोदिया, श्याम सुंदर गोयल, डॉ. अतीश, श्रीमती किरन कुमार, डॉ. टी.एस. चौधरी, सुमनेश सुमन, ब्रजकण, पं. मलखान कौशिक, योगेन्द्र शर्मा, हरिशंकर इंजीनियर आदि लोग उपस्थित थे।

बुद्धि-विलास के उत्तर

१. क. अमरीकी डॉ. जे. मार्क केनोयर (विस्कांसिन विश्वविद्यालय से संबद्ध तथा जो हाल में हड़प्पाकालीन स्थलों की खुदाई में संलग्न रहे), ख. अनेक धर्मों और जातियों के लोग एक साथ रहते थे, शासन धर्म से नियंत्रित होता था और महिलाओं को पुरुषों के समान दरजा, २. क. लंबाई— २,५०० कि.मी.। चौड़ाई— पश्चिम में ४०० कि.मी. और पूर्व में १५० कि.मी., ख. ३२.८ लाख वर्ग कि.मी., ३. क. स्क्वाड्रन लीडर संजय थापर, गत २१ अप्रैल को, ख. हेलीकॉप्टर से १० हज़ार फुट की ऊंचाई से हवाई गोताखोरी की, ग. शून्य से ६८ डिग्री सेंटीग्रेड तापमान था और ४० कि.मी. प्रति घंटे की गति से बर्फीली हवा चल रही थी ४. पहला— दुर्घटनाओं से, दूसरा— दिल के दौरे से, तीसरा— रक्तवाहिनी नलिकाओं के फटने (हेम्परेज) से, चौथा— यकृत के रोगों से (विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार), ५. क. लगभग ६००, ख. १४० लोगों की मृत्यु, ६. क. तांबा, जस्ता, ख. क्रोमियम, निकिल, लोहा, ७. राष्ट्रपति, ८. क. मलयेशिया के प्रधानमंत्री डॉ. महातिर मोहम्मद, ख. सुश्री ललिता बालकृष्णन (पत्रकार तथा समाजसेवी), ग. पैट्रीशिया मुखीम (स्तंभ-लेखिका), ९. क. स्टेफी ग्राफ (जरमनी), ख. येवगेनी काफेलनिकोव १०. बॉम्बे की स्टॉक एक्सचेंज बिल्डिंग

क्लब रचनाएं

इक झलक के लिए रात जगते रहे

दीप जलते रहे, मन मचलते रहे ।
श्री, शुभालोक ! दीपदान करते रहे ।।

नरक तेल में स्नेह की बत्तियां
रंग रंजित रहीं आतिशी तीलियां,
पंक्तियों में खड़े पर अकेले लड़े
वायु वेगों में पड़ झिलमिलाते रहे ।
तिमिर चीरते, दीप जलते रहे ।।दीप.।।

अतिथि-दीप ले-दे चलीं मानिनी
स्नेह रिश्तों में गढ़ती रही यामिनी,
अंगुलियों के झरोखे से रजकण दिखे
पगध्वनि जब हुई प्राणपण से बढ़े ।
साधनारत तपे, दीप जलते रहे ।।दीप. ।।

मोतियों की कड़ी कंठ पर झूल रही
करधनी, कान की बालियां हिल रहीं,
पायजेबों की ध्वनि झनझनाती रही
कंगनों की कड़ी खनखनाती रही ।
दीप की ओट में नेह पलते रहे ।।दीप. ।।

रात ढलती रही तम भी बढ़ता गया
ज्योति में नेह का ज्वार उठता रहा,
रूप से प्रीति के राग झरने लगे
स्वर लहरियां उठीं, मन थिरकने लगे ।
इक झलक के लिए रात जगते रहे ।।दीप. ।।

— अनन्त साहू
अर्चना कृषि केंद्र
पिपरिया-४६१७७५
जिला— होशंगाबाद (म.प्र.)

मौत

मौत,
तू कितनी ही संगदिल क्यों न हो
पर यह सच है,
कि, तू शाश्वत तो है
तू प्रेमी की तरह बेवफा नहीं
सुख और दुःख की तरह
आनी-जानी नहीं
तू अपना वादा निभाती जरूर है
हर प्राणी के जीवन में, बस एक बार
आती जरूर है,
दे जाती है ऐसा क्षण
कि प्राणी पलटकर
आना चाहता नहीं, डूब जाता है पूर्णतया तेरे संग,
उन रसों में कि
सब कुछ भूल अपना,
रह जाता है वहीं,
माना कि तेरा संयोग और वियोग
दोनों ही मुक्तिदायक हैं
जीवन के नव निर्माण के,
पथ का,
मार्गदर्शक है,
माना कि मनुष्य के जीवन की
तू अंतिम घड़ी है,
पर तेरे बिना भी तो इस जग से,
मुक्ति नहीं है
हे मौत
तू ही शाश्वत है
अमर है तू,
नव-जीवनदायिनी ।
मौत
तू ही युक्ति है
मौत, तू ही मुक्ति है ।

— कामिनी अग्रवाल
२२, रुकमिनी रोड, कलाक्षेत्र कॉलोनी
बेसंत नगर, मद्रास-९० पिन-४९१२३६९



प्रथम पुरस्कार

शरण तुम्हारे हम पड़े, भगवन रखना ध्यान
खंड-खंड ना हो कभी, प्यारा हिंदुस्तान
प्यारा हिंदुस्तान, करोड़ों का दृग तारा
आशा भरे नयन से तेरी ओर निहारा
फंसी पंक में तरणि लगा दो उसे किनारे
आत्म समर्पण करने आयी शरण तुम्हारे

— मोहन सोनी
लखेरवाड़ी
उज्जैन (म.प्र.)—४५६००६

समस्या-पूर्ति—२०४

शरण तुम्हारे

द्वितीय पुरस्कार

सुधियां यादों की साधों की, दस्तक देतीं सांझ सकारे
सत्ता के मदमाते बादल, घिर आये हर आंगन द्वारे
घृणा, द्वेष, पाखंड, कपट के वातायन में सिसक रही हूं
जीवन पथ आलोकित कर दो, आयी हूं मैं शरण तुम्हारे

— केतकी तिवारी
बी-४०, मवाना मिल कॉलोनी
पोस्ट—मवाना
जिला—मेरठ—२५०४०२

तृतीय पुरस्कार

जीवन का आधार तुम्हीं हो
मेरा यह श्रृंगार तुम्हीं हो
तुमको पाकर पुलकित है मन
विरही मन का प्यार तुम्हीं हो
तुम्हें समर्पित सुख-दुःख सारे
आयी हूं मैं शरण तुम्हारे

—विनीता जोशी 'वीनू'
द्वारा—स्व. श्री एल. एम. जोशी
तिवारी खोला, पूर्वी पोटरखाली,
जिला—अल्मोड़ा—२६३६०१
(उत्तर प्रदेश)

दि हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राकेश शर्मा द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस १८/२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१ से मुद्रित तथा प्रकाशित



समस्या-पूर्ति—२०६

सहारा

समस्या-पूर्ति साहित्य की पुरानी विधा है। हमने उसे फिर से जीवित किया है। यहां प्रकाशित चित्र को ध्यान से देखिए और नीचे का शीर्षक पढ़िए, इसे लेकर आपको सिर्फ छंदबद्ध ही नहीं, अतुकांत कविता भी हो सकती है, लिखनी है, उसमें भावों का गांभीर्य आवश्यक है। रचना मौलिक तथा अधिकतम छह पंक्तियों की हो। समस्या-पूर्ति के परंपरागत नियमों के अनुसार चित्र के नीचे दिये शब्द कविता के अंत में ही आने चाहिए।

१. समस्या-पूर्ति केवल पोस्टकार्ड पर ही भेजें।
२. समस्या-पूर्ति संपादक के व्यक्तिगत नाम से नहीं भेजें।
३. एक बार पुरस्कृत व्यक्ति की रचना छह माह तक दोबारा पुरस्कृत नहीं की जाएगी।

पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है

प्रथम— २५० रु.; द्वितीय— २०० रु. और तृतीय— १५० रु.

अंतिम तिथि : २५ सितम्बर, १९९६

चित्र : जयतेग सिंह अनंत